प्रस्तावना

(१) इण जगतमांहे प्राणीमात्रने धर्ममार्गमांहे अवश्य प्रवर्त्तन हुवो चाहिजें. कारण इण दुःखमय संसारसमुद्रमांहे नरकादिक चारु गतिमांहे जीव, ज्ञानावरणीयादिक अष्टकर्मना योगें मोहादिक शत्रुका वश हुयने संसारिक धन कुटुंबादिकना अल्पपौद्गलिक सुखामांहे राच्यां थकां जन्म, जरा, मरणादिक अनेक प्रकारका दुःख सहन करी परिभ्रमण करतां अनंता पुद्गल परावर्त्तन काल व्यतीत हुइ गयो! परंतु सर्वोत्कृष्ट अनंत सुखमय एहवो अनादि श्रीवीतराग प्रणीत दयामय जैनधर्म केवारें पण जीव पामी शक्यो नहीं. ते श्रीजैनधर्म केहवो छे? के जेम आंधला पुरुषने मार्गें चालतां ज्येष्ठिका (लाकडी) आधारभूत होय छे, तेम जीवने मोक्षका अनुपम सुखांकी प्राप्ति होवण वास्ते श्रीजैनधर्म निश्चयें आधारभूत छे. अनादि मिथ्यात्वना योगें काम, क्रोध,लोभ, मोह,मत्सरादिकना धारण करणारा जीवांने ज्ञानावरणीयादिक कर्माथकी मुक्त करीनें पोताना स्वस्वभावमांहे रमण करणार ते एक उक्त धर्मनुं सेवन छे. ए धर्मने यथार्थ शुद्ध श्रद्धा पूर्वक आराधवाथी जीव,चतुर्गति रूप संसारको अंत करीनेजिहां जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, दुःख नहीं एहवा अकलंक, अक्रिय, अकर्मी, अक्षय, अवेदी, अणाहारी, अबंधक, अभोगी आदिक अनंत सुखमय सिद्धरूप स्थानक प्रत्यें पामे छे.

(२) हवे ते सिद्ध स्थानक पामवाने योग्य तो मात्र मनुष्य गतिमांज रहेला जीव छे; कारण के नरक तिर्यंचादिक गतिमांहेला जीवांने सिद्धपणुं पामवानो अभाव छे. ते मनुष्यपणुं पण जीव, अनंतीवार पाम्यो, पण अनार्य देशमांहे उत्पन्न होवणासुं अथवा आर्यकुलमांहे उत्पन्न हुवो तो आभिग्रहिकादिक मिथ्यात्वना

प्रसंगथी शुद्ध स्याद्वादरूप श्रीजैनधर्म पामी शक्यो नहीं, तेथी ते सर्व नव व्यर्थ गया. हवे इण समय शुन्न कर्मोदयें करी मोटी पुण्याइसुं मनुष्य गति, आर्यदेश, उत्तम कुल, संपत्ति, नीरोगी शरीर, दीर्घायु, सुगुरुनो संयोग, इत्यादि शुन्न सामग्री मिली छे, तेम छतां जो विषय कषायादिकमांहे तल्लीन हुइने समकित दर्शनरूप धर्मनी प्राप्ति करणमांहे प्रमाद करांला, तो प्राप्त हुवेला इष्ट संजोगको विनाश हुयने फेर घणा कालतांई संसारचक्रमांहे परिभ्रमण करणो पडसे. एहवो अवसर तथा सर्व प्रकारनो संयोग वारंवार मिलणो घणो मुष्कील छे. ज्ञानसंपादन करने आत्माको कल्याण करण वास्ते, पूर्वकृत दुष्कर्मनो बदलो देवण वास्ते, तथा सर्व साधर्मीन्नायामांहे ज्ञानको प्रसार जो (पंडित पुरुषांपासें सूत्रको व्याख्यान श्रवण करणासुं तथा ग्रंथ प्रसिद्ध करणासुं हुवे छे) ये होवण वास्ते धर्मकीज पूर्ण आवश्यकता छे; धर्म सरीखी प्रिय अने श्रेष्ठ वस्तु इण जगत्मांहे दूसरी कोइ पण नहीं छे. सांसारिक संतति अने संपत्ति केवल अनित्य छे. जिहां सुधी शुन्न कर्मांको उदय रेवे छे, तिहां सुधी सर्व इष्टवस्तुको संयोग आय मिले छे; जद अशुन्न कर्मांको उदय होवे, ते वखतें सर्व इष्ट वस्तुको वियोग हुयने अनिष्ट संयोगकी प्राप्ति हुवे छे. संसारमांहे विवाह आदि आरंन्निक कार्य प्रयोजनमांहे हजारां रुपिया मोटा उछरंगसुं खर्च कर देवांछां, सुंवो तो फक्त सांसारिक इणहीज नवकी यशःकीर्त्तिको कारण छे, अने धर्मनिमित्तें जो द्रव्य खर्च होवे तो इण नवना तथा परन्नवना सुखको तथा मोक्षना सुखनो पिण कारण छे. इण वास्ते समस्त जैन बंधुका अंतःकरणमांहे धर्मकी जागृत प्रेरणा निरंतर रेवण वास्ते तथा धर्मको उद्योत करण वास्ते प्रयत्न करने धर्मनिमित्त यथाशक्ति द्रव्य अवश्य खर्च होवणो चेहीजें. इतरीज हमारी सर्व जैन बंधुने विनति छे.

(३) ए पुस्तक छपायने प्रसिद्ध करतां वाचणारा सज्जनलोकांप्रतें इण पुस्तकमांहे दाखल करेला ग्रंथाकी हामे किंचित् सूचना करा छां.

(४) इण पुस्तककी आदिमें श्रावकांने नित्य उभयकाल करवा योग्य छे आवश्यककी करणीरूप प्रतिक्रमणसूत्र छे, तिको अर्थ सहित दाखल कीनो छे. कारण श्रावकने कोइ पण शास्त्र वाचणा भणीजणा, तिके सर्व अर्थ सहित भणीजणां चाहिजें. कारण यथार्थ अर्थ धारणामें होवे तोहिज वो ग्रंथ अनुभव सहित भणीयां कहेवाय, नहीं जरां सुवाका पाठ प्रमाणें समजवो. उणमांहे पण पडिक्कमणादिक छे आवश्यक तो नित्य सांझ सवार क्रिया करती वेलां काम आवे छे. इण वास्ते उणका अर्थ तो अवश्य धारणाइज चाहिजें. जिणसूं, मात्र मूलपाठ जाणनारा लोकांने जे कांइ क्रिया करणको अनुभव होवे, वा लोकांसुं, अर्थ सहित जाणनारा मांहे कितराक दरजे अनुभवकी वृद्धि होवे छे, अने उणका फल पण उलराज दरजे जादा होवे छे, इण प्रमाणें सिद्धांतमांहि भगवंत फुरमायो छे.

(५) ओर, क्रिया करणार पुरुषकां आत्माका अध्यवसाय आश्री पिण फलकी अधिक न्यूनता कही छे. तथापि अर्थ धारणार अने अर्थ न धारणार यां दोनुं जिणांका आत्माका अध्यवसाय (प्रणामकी धारा) सरीखा होय, तो पण अवश्य अर्थ न धारणारासुं अर्थ धारणाराने अत्यंत अधिक फल प्राप्त होवे छे. इण वास्ते अर्थकी धारणा करणी आवश्यक छे; इण हेतुसूं आवश्यक सूत्र तथा अन्यग्रंथ उपरसुं सामायिकादि सूत्रकी पाटीयां साथें पाठका अर्थ पण दाखल कराया छे, ए सर्व हमारा साधर्मी भाई अर्थसहित भणीजणको उद्यम करेला इणतरे हमे पूर्णआशा राखा छां.

(६) श्रीजैनधर्ममांहे महान् विद्वान् परम पंडित पूज्यश्री श्री १००८ श्रीकानजी रिखजी माहाराजनी संप्रदायना स्वामीजी

श्री १००८ श्री अयवंता रिखजी माहाराज तस शिष्य स्वामीजी श्री १००८ श्री तिलोकरिखजी माहाराज महाप्रभाविक हुवा. माहाराजसाहेबको जन्म संवत् १९०४ की चैत्र वदि ३ के दिन हुवो. संवत् १९१४ का माहावदि १ गुरुवारके दिन माहाराजसाहेब स्वामीजी श्री अयवंतारिखजी माहाराज पासें वैराग्य भाव पामीनें मोटा उत्साहसूं दीक्षा ग्रहण कीनी. संवत् १९३६ को चोमासो दक्षिण देश घोडनदीमांहे करीने अहंमदनगर, आंबोरी, हिवरो, पुना, सतारा, औरंगाबाद, धुलिया वगैरे अनेक ठिकाणे विचरतां भव्यजीवाने सम्यक्त्व प्रतिलाभी संसारसुं तारिया छे. संवत् १९४० को चोमासो करणवास्ते आषाढशुद ९ के दिन अहंमदनगर शहेरमांहे पधारिया, उणहिज दिन तप चढने सावणवदि २ रविवारके दिन माहाराजसाहेब देवलोक हुवा. एसा उत्तम पुरुषांको वियोग घणा भायाने दुःसह हुयने श्री जैनधर्मका महा पंडित पुरुष रत्नमांहेला एक अमुल्यरत्नकी खामी पड गई.

(७) स्वामिजी श्रीतिलोकरिखजी माहाराज अल्प आयुष्य मांहे, जेम पृथ्वीमंडलमांहे सूर्य प्रकाशकरी अंधःकारनो नाश करे छे, एम मिथ्यात्वरूप अंधःकारनो नाश करीने भव्य जीवरूप कमलने विकश्वर करण वास्ते, सिद्धांतानुसारें मोटा मोटा ग्रंथांकी रचना करी घणा भव्यजीवाने प्रतिबोधी परोपकार करणमांहे मोटो श्रेय लीनो छे. माहाराजसाहेबको स्वभाव चंद्रनी परें शीतल, समुद्रनी परे गंभीर, मिष्टवचनी, बालब्रह्मचारी करुणाका सागर, इत्यादिक गुणे करी सहित हुयने वां पुरुषांमाहे कवित्वशक्ति, वाक्चातुर्य, समयसूचकता श्रीजैनसिद्धांत तथा षट्शास्त्रना पारंगामी वगैरे अनेक गुण प्रशंसनीय हुता. माहाराज साहिबका गुणाकी स्तुतिकरां जितरी थोडीज छे.

(८) माहाराजसाहेब निरंतर साधु संबधी पडिलेहण, प्रमा

जैन त्रिकाल काउस्सग्ग ध्यान, तथा धर्मसंबंधि व्याख्यानादिक कार्य करीने परिवरिया पछे शेष रहेला वखतमांहे किंचित् मात्र पण प्रमाद सेवन करता नही थां, पण जैन सिद्धांतमांहेसुं आनंद श्रावकादिक महापुरुषांका चरित्रानुसारें चोढालिया, छे ढालिया वगैरेकी रचना करतां हुतां, तथा वैराग्य जावने दर्शावनारी अनेक लावणीया, पद, सवैया, तथा श्रीजिनेश्वरस्तुतिरूप घणां स्तवन, सझाय, छंद, श्रीचंद्रकेवली, श्रेणिकादिकना चरित्र, रास प्रमुख अनेक छोटा मोटा ग्रंथाकी रचना कीनी छे, अने वे इतरा तो रमणीय छे, के जे ग्रंथ वांचणासुं जेहवो जावार्थ वां ग्रंथामें दरसायो छे, तेवाज जावार्थकी हुवेहुव असर वाचणवालाका मन मांहे वसिया विना रेवेज नही, एसी खुवी माहाराजसाहेबकी कविता मांहे वापरी छे. थोडाकालमांहे माहाराज साहेब इणतरे प्राकृत जाषामें कवितारूपें साठ शीत्तरहजार ग्रंथकी जोड करी जिनधर्मने दीपायो छे.

(ए) उपर लिख्या मुजब माहाराज साहेबका रचेला ग्रंथ प्रत्येक जैनधर्मी श्रावकने बांचवा जणवा योग्य जाणीनें उणमां हेला केइ केइ ग्रंथ इण पुस्तकमांहे दाखल करिया छे, जिणने सर्व साधर्मि जाई बाचने जणीजने जरूर धारणा करेला, इणतरेकी हमारी अजिलाषा पूर्ण करणमांहे हमारा साधर्मी जाई पछात पडसी नही. जो जो ग्रंथ इण पुस्तकमांहे दाखल करिया छे, तिके सर्व हमारा साधर्मी जायाने घणाज उपयोगी छे. उर दूसरा श्रावक लोकां पासें माहाराजसाहेबकी जोडको ग्रंथ घणो शिलकमांहे पडियो छे, पण हाल वे प्रसिद्ध हुवा नही सुं मोटी दिलगीरी मालम पडे छे; कारण प्रस्तुतसमयमां विद्वान् पुरुष थोडा लाधे छे, जिणवास्ते पंमित पुरुषाका रचेला ग्रंथ जो प्रसिद्ध नही होसी तो ज्ञानकी वृद्धि किणं तरे होसी? इण वास्ते ज्यां श्रावक लोकां

पासे माहाराजसाहेबका रचेला ग्रंथ होसी वे प्रसिद्ध करणमांहे प्रमाद करेला नही, एसो हमांने नरोंसो छे.

(१०) ऊ पुस्तक श्रीजैन धर्मको उद्योत हुयने ज्ञानको प्रसार होवण वास्ते, तथा नव्यजनांकी समकित दृढतर होवण वास्ते, तथा श्री तिलोकरिखजी माहाराजका गुण प्रगटकरण वास्ते श्रीदेव गुरु धर्म प्रसारें उपायनु हमारा प्रिय सकल जैन बंधुआगल सादर करियो छे.

(११) इण प्रतिक्रमण सत्यबोधका पुस्तकने माहाराज साहेबका अतिशयका कारणसूं नीचें लिख्या मुजब ज्यां सज्ञनलोकां उदारमने करी श्रीजैनधर्मको उद्योत हुवणवास्ते आगाउ मदत दीनी छे, तीके बोहोत प्रशंसनीय छे. जैम हंस पक्षीकी चंचूमांहे एहवाज कोई जातना पुजल रह्या छे, के तेहथी तेहनी चंचू सदा काल दुग्धनेज ग्रहण करणका स्वनाववाली होय छे, तेम सद्गुणी जनाका अंतःकरणना परिणामने विषे एहवाज कोई उत्तमजातिना पुजल रहेला छे, के ते थकी तेहनी बुद्धि सदाकाल सत्कार्य करवाना विषेज प्रवर्तमानथकी रहे छे. इण प्रमाणेंज सर्व जैनबंधु आगासूं धर्मको उद्योत करणवास्ते हरएक प्रकारकी मदत करणकी उमेद जादा राखेला, इसीहामे पूर्ण आशा राखाछां.

नांव.	रूपिया.
मुता नवलमलजी किसनदास. अहमदनगर.	२२५
सांड विरदीचंदजी चुनीलाल. राहाता.	२२१
मुता मोकमदासजी हाजारीमल्ल. सातारा.	२२१
गुगलिया हुकमचंदजी नेमीदास. अहमदनगर.	११५
छत्तवाल पेमराजजी पन्नालाल. अहमदनगर.	१०१
गुंदेचा माइदासजी छोगमल. अहमदनगर.	६१
गुंदेचा मोतीचंदजी रतनचंद. अहमदनगर,	६१
मुणोत पनराजजी शिवदास. अहमदनगर.	६१

मुता हाजारीमलजी आगरचंद. अह्मदनगर.	६१
सींगी बनेचंदजी दोलतराम. अह्मदनगर.	६१
गांधी गुलाबचंदजी रतनचंद. आंबोरी.	५१
कोटेचा तिलोकचंदजी आसकरण. धुलिया.	५१
मुता खुबचंदजी लूणकरण. हिवडां खानरा.	५१
गांधी हिमतमलजी हामीरमल. माहादपटेलकी चिचोंडी.	५१
गांधी बछराजजी राजमल महादपटेलकी चिचोंडी.	४१
भंडारी माणकचंदजी मोतीचंद. अह्मदनगर.	४१
गांधी तेजमलजी राजमल. अह्मदनगर.	३१
नाहाटा नंदरामजी बालाराम. धुलिया.	२५
गांधी किस्तूरचंदजी निकनदास. माहादपटेल चिचोंडी.	२५
मुता नेमीदासजी श्रेमल. गुलेजगड.	२५
मुणोत हुकुमचंद जवानमल. हीवडा खानरा.	२५
गुंदेचा जितमलजी किसनदास. नांदूरबारागाव.	२५

क्षमापना.

(१२) इण ग्रंथमांहे कितराक शब्द हामे शास्त्रका बराबर जाण न होवणासुं वे सुधारणवास्तें असमर्थहुयां छां. पण सुज्ञविद्वान लोकां इण पुस्तकमांहेला सामायिक, प्रतिक्रमण, तथा पच्चख्काण वगैरेका पाठ अने अर्थमांहे तथा उर कोइ ठेकाणे चुका होइ होसी तो वे सर्व हमाने अज्ञ जाणी हमारा उपर दोष न राखतां आप वाचनें सुधारने हमाने लिखेला, एहवो सुज्ञ लोकामांहे एक प्रकारको स्वाभाविक गुणज होय छे; वास्ते इण बदल जादा लिखणको कांइज कारण नही छे; पिण भुल बदल मिछामि दुक्कडं देने हमाने आलोयणा कीवी चाहिजें. इण ग्रंथमांहेला मूल पाठको अगर अर्थको तथा स्तवन सझायादिक बाकी विषयको कोइ एक शब्द अगर अक्षर, न्यून, अधिक, अशुद्ध रीतें, आघो

पाठो, जाणतां, अजाणतां वगेरे कोइ प्रकारें नूलथी लिखिजग यो होसी तथा ग्रंथ छपावणमांहे कोइ प्रकारको दोष लागो होसी, तथा ग्रंथको अविनय अशातना जाणतां अजाणतां हमारी तरफसुं होइ होसी, तो ते सर्व मन वचनकायायें करी श्री अरिहंत सिद्ध केवली नगवंतनी साखें सर्व दोषप्रत्यें हमाने मिछामि डुक्कडं होजो. अपराधकी क्षमा होजो.

(१२) छे पुस्तक छपावणका काममांहे तथा शुद्ध करणका काममांहें हमारा प्रिय जैन बंधु नाई नीमसिंहमाणके घणी तसदी लीनी छे, जिण बदल उणारो आनार माना छां. श्रीजिनधर्मका उद्योत करणको उद्यम करने हमारा बंधु निरंतर श्रेय लेसी, इसी हामे चाहना राखा छां. किं बहु विलेखनेन शुनं नवतु.

विज्ञाप्ति.

(१) इण पुस्तकका ५७ पानमे पडिक्कमणाकी विधिमांहे संलेहणा आगारे पाप स्थानक कहीने इछामि ठामि कहिजें इणतरे लिख्यो छे सुं केइ श्रावक इण मुजबज केवे छे ने केइ संलेहणा आगारे पाप स्थानक कहीने दश प्रकारको मिथ्यात्व तथा केइ श्रावक २५ प्रकारको मिथ्यात्व तथा चौदे स्थानकिया जीवांरी आलोयणा करीने पछी इछामि ठामिनी पाटी कहे छे सु आप आपकी गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणे कहीजें.

(२) तथा सामायिक पारवानी विधिमांहे काउस्सग्गमांहे इरियावहीकी पाटी चिंतववी लिख्यो छे परंतु केइक श्रावक लोगस्सकी पाटी चिंतवे छे वास्ते आप आपकी गुरु आमना प्रमाणे करवो इण पुस्तकका डुजा पानमें तिखुत्ताकी पाटी मांहे " पयाहिणं करेमि वंदामि " लिख्यो छे सुं केइ नाया इणतरें केवे छे तथा केइ नाया " पयाहिणं वंदामि " केवे छे, सु आप आपकी गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणें केवणो.

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका.

॥ तत्र प्रथम सामायिक प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुक्रमणिका प्रारंभः ॥

अथ प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुक्रमणिका.

दश पच्चरकाणनी अनुक्रमणिका.

छंदोनी अनुक्रमणिका.

अथ स्तवन पदादिकनी अनुक्रमणिका.

लावणीनी अनुक्रमणिका.

सद्यायनी अनुक्रमणिका.

चोढालीयानी अनुक्रमणिका.

छत्रीशीयोनी अनुक्रमणिका.

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारंभः ॥

॥ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरिया णं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ए सो पंच णमुक्कारो; सव्व पावप्पणासणो ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति नमस्कारः ॥ १ ॥

अर्थः—(अरिहंताणं के०) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने हं ताणं एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप श त्रुनो नाश कर्यो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोभित तथा वाणीना पांत्रीश गुणोयें करी बिराजमान एहवा विहरमान श्रीअरिहंतने महारो (णमो के०) नमस्कार हो. (सिद्धाणं के०) जेणें सकल कार्य साध्यां, अने जे आठ कर्म खपावी, मोक्ष न गरें पहोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा सर्व श्रीसिद्ध भगवाननें महारो (णमो के०) नमस्कार हो. (आयरियाणं के०) जे पोतें पांच आचार पाले अने बीजाने पलावें छत्रीश गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो. (उवज्झायाणं के०) जे शुद्ध सूत्राक्षर पोतें भणे, अने बीजाने भणावें तथा पच्चिश गुणें करी सहित एहवा श्री उपाध्यायजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो. (लोए के०) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सव्वसाहूणं के०) थिविर कल्पादिक भेदोवाला सर्वे साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप

ना साधनार तथा जे सत्तावीश गुणें करीने सहित छे तेमने म्हारो (णमो के०) नमस्कार हो. (एसो के०) ए जे अरिहंतादिक संबंधी, (पंचणमुक्कारो के०) पांच प्रकारनो नमस्कार छे, ते केहवो छे? तो के (सवपाव के०) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप तेहनो, (प्प णासणो के०) प्रकर्षें करी विनाशनो करणहार छे. वली ते कहेवो छे? तो के (मंगलाणंच सवेसिं के०) सर्वमंगलमांहे (पढमं के०) प्रथम एटले मुख्य, (मंगलं के०) मंगल (हवइ के०) छे ॥१॥

॥ अथ तिरकुत्तारी पाटी प्रारंभः ॥

॥ तिरकुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ २ ॥

अर्थः—(तिरकुत्तो के०) त्रण वार (आयाहिणं के०) आदक्षिणतः एटले जिमणापासा थकी प्रारंभीने, (पयाहिणंकरेमि के०) प्रदक्षिणा प्रत्यें करुं छुं, (वंदामि के०) वांडुं छुं, पगे लागुं छुं, (नमंसामि के०) मस्तक नमाडीने नमस्कार करुं छुं, (सक्कारेमि के०) सत्कार दउं छुं, (सम्माणेमि के०) सन्मान दउं छुं, (कल्लाणं के०) कल्याणकारी, (मंगलं के०) मंगलकारी, (देवयं के०) धर्मदेव समान, (चेइयं के०) छकायका जीवने सुखदायक एवा ज्ञानवंत प्रत्यें (पज्जुवासामि के०) पर्युपासुं छुं एटले मन वचन कायायें करीने सेवा करुं छुं, (मत्थएण वंदामि के०) मस्तकें करी वांडुं छुं ॥१॥ इति तिरकुत्तारो अर्थ ॥२॥

॥ अथ इरियावहीनी पाटी प्रारंभः ॥

॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि, इछं इछामि, पडिक्कमिउं इरियावहियाए, वि

राहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरिय क्कमणे, उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदि या, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, व त्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परिया विया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउ ठाणं संकामिया, जीवि याउ विवरोविया, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥१॥ इति॥३॥

अर्थः—(इच्छाकारेण के०) तुमारी इच्छापूर्वक, (संदिसह के०) आज्ञा करो तो, (जगवन् के०) हे महाजाग्य ज्ञानवंत ! (इरि यावहियं के०) चालवानो जे मार्ग तेमांहे थइ एवी जे जीवबा धादिक सपापक्रिया तेथकी हुं (पडिक्कमामि के०) पडिक्कमुं निवर्तुं? इहां गुरु कहे, (पडिक्कमह के०) पडिक्कमो निवर्त्तो पाप टालो. तेवारें शिष्य कहे, (इच्छं के०) प्रमाण बे, हुं पण (इच्छामि के०) इच्छुं हुं. जे (इरियावहियाए के०) गमन बे प्रधान मुख्य जेमां एवो जे मार्ग तेने विषे थती एवी जे (विराहणाए के०) जंतुउनी विराधना तेथकी (पडिक्कमिउं के०) प्रतिक्रमवाने निव र्त्तवाने वांछुं हुं. हवे जीवविराधना शाथकी थाय? ते कहे बे. (ग मणागमणे के०) जातां ने आवतां, (पाण के०) प्राणीने (क्कम णे के०) पगें करी चांप्याथकी (बीय के०) बीजनें (क्कमणे के०) पगें करी चांप्याथकी, (हरिय के०) नीलवर्णवाली वन स्पति तेने, (क्कमणे के०) पगें करी चांपवाथकी (उसा के०) ठार एटले सूक्ष्म अप्काय आकाशथकी पडे ते, (उत्तिंग के०) कीडीयोनां नागरां, (पणग के०) पांच वर्णी नील फूल, (दग के०) पाणी, (मट्टी के०) काची माटी, (मक्कडा के०) मर्कट एटले कोलियावडाना (संताणा के०) संतान, ए सर्वेनें (सं

कमणे के०) पगें करी पीड्याथकी अथवा मसल्याथकी, घणुं शुं कहुं ? (जे के०) जे कोइ, (मे के०) में (जीवा के०) जीवो; (विराहिया के०) विराध्या होय दुःखमांहे पाड्या होय. ते कया जीवोने में विराध्या दुःखी कीधा होय ? तेनां नाम कहे छे. (एगिंदिया के०) जेहने शरीररूप एकज इंद्रिय होय ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिना जीव, (बेइंदिया के०) शरीर तथा मुख ए दोय इंद्रियवाला जे शंख, शीप, गंमोला, अलसीयां, एहवा जेहनें पग न होय ते, (तेइंदिया के०) तीन इंद्रियवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक होय ते, कुंथुवा, जू, लीख, मांकड, कीडी प्रमुख जेहना मुख उपरें शिंग होय ते (चउरिंदिया के०) चार इंद्रियवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक ने आंख होय ते, माखी, मछर, मांस, वींछी, जमरी, टीड, जे उडनारा जीव जेने आठ पग, तथा मस्तकें शिंग होय ते, (पंचिंदिया के०) पांच इंद्रियवाला जेने शरीर, मुख, नाक, आंख्य अने कान होय, ते जलचर, खेचर, ए सर्वतिर्यंच जाणवा तथा मनुष्य, देव, नारकी, ए सर्व पंचेंद्रिय जीव कहियें. हवे ए सर्व जीवोने केवी रीतें विराध्या होय? तेना प्रकार कहे छे. (अन्निहया के०) सामा आवतां हण्या, (वत्तिया के०) एक ढगले कस्या तथा धूलें करी ढांक्या, (लेसिया के०) नूमियें घश्या तथा लगारेक मसल्या (संघाइया के०) मांहोमांहे शरीरनें मेलववे करी एकठा कीधा, (संघट्टिया के०) थोडो स्पर्श करवे करी डुहव्या. (परियाविया के०) समस्त प्रकारें परिताप पमाड्या, पीड्या, (किलामिया के०) गाढी किलामणा उपजावीने मास्या नही, पण मृतप्राय कीधा, (उद्दविया के०) त्रास पमाडीने हाली चाली शके नही एहवा कीधा, (ठाणाउं के०) एक स्थानकथकी उपाडीनें (ठाणं के०) बीजे ठेकाणे (संकामिया के०) संक्रमाव्या मूक्या, (जीवियाउ के०) जीवित

थकी, (विवरोविया के०) चूकाव्या, मार्या, नाश कीधा. (तस्स के०) ते संबंधी जे अतिचार लाग्या ते (डुक्कडं के०) पाप कहीयें ते डुष्कृत (मिच्छामि के०)महारुं मिथ्या एटले निष्फल थाओ॥३॥

॥ अथ तस्सउत्तरीनी पाटी प्रारंभः ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं, अन्नच्छ उससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए,सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं,एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिउ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

अर्थः—(तस्स के०) ते पापनीज वली विशेष शुद्धिने अर्थे जे कांइ आगल करवुं तेने उत्तरीकरण कहीयें एटले तेनेज (उत्तरीकरणेणं के०) विशेषें करी वली उपर शुद्ध करवुं अर्थात् जे अतिचारोनुं आलोयण प्रमुख पूर्वें कीधुं छे, तेनी वली विशेष शुद्धिने अर्थें कायोत्सर्ग करुं छुं. ते कायोत्सर्गेतो (पायच्छित्तकरणेणं के०) शुद्ध प्रायश्चित्त ते पापनी आलोयणा करवाथकी होय. ते प्रायश्चित्त पण (विसोहिकरणेणं के०) विशुद्धि, निर्मलता करवे करीने होय, वली ते विशुद्धि पण विशल्य होय, तो थाय माटें (विसल्लीकरणेणं के०) मायाशल्य नियाणांशल्य मिथ्यात्वशल्य,ए तीन शल्य टालवाथकी थाय, ए उत्तरीकरणादिक चार हेतुयें करीने शुं करवुं छे? ते

कहे छे (पावाणंकम्माणं के०) संसारहेतुरूप जे पाप कर्म तेने (नि ग्घायणहाए के०) निर्घातन एटले उच्छेदन करवानें अर्थें (ठामि के०) कायाने एक ठामें करुं छुं, (काउस्सग्गं के०) कायाने हला ववी नही ते रूप काउस्सग्गप्रत्यें. करुं छुं हवे इहां काया हलाववी नही. एवी प्रतिज्ञा करी छे माटें शरीरनुं कांइपण हालवुं थवाथी प्रतिज्ञानो भंग थाय तेथी काउस्सग्गमां बार आगार मोकला राख्या छे (अन्नछ के०) उच्छ्वासादिक जे आगारो कहेशे, ते आगारो वर्जीने बीजे स्थानकें कायाने हलाववानो नियम करुं छुं. तेनां नाम कहे छे (ऊससिएणं के०) ऊंचो श्वास लेवाथी, (नीससिएणं के०) नीचो श्वास मूकवाथी (खासिएणं के०) खांसी आवे एटले खोखलो आव्या थकी, (छीएणं के०) छींक आया थकी, (जंभाइएणं के०) जां भली ते बगासुं लेवाथकी, (उड्डुएणं के०) उड्डकार आयाथकां, (वायनिसग्गेणं के०) वायु निकलतां थकां, (भमलिए के०) भम रीचक्री आववाथी, (पित्तमुछाए के०) पित्तरा कोपसुं मूछी आया थकां, (सुहुमेहिं के०) सूक्ष्म थोडोक, (अंगसंचालेहिं के०) शरीर हलाववाथी, (सुहुमेहिं के०) थोडो, (खेलसंचालेहिं के०) श्लेष्म तथा मूखना थूंकनुं चालववुं करवाथकी, कफ गलवाथकी (सुहुमेहिं के०) सूक्ष्म थोडी, (दिठिसंचालेहिं के०) चक्षुदृष्टि नो संचार थवाथी एटले चक्षु हलाववा थकी, (एवमाइएहिं के०) ए आदि करीने इहां आदि पदें बीजा पण (आगारेहिं के०) आगार लेवां पडे, ते लेतां थकां महारो काउस्सग्ग (अभग्गो के०) भांगे नही, खंडित हुवे नही, (अविराहिउ के०) अवि राधित अखंडित हानी पोहोंचे नही एवो (हुज्ज के०) होजो, (मे के०) महारो, (काउस्सग्गो के०) कायस्थिर राखवी ते रूप व्यापार ते (जाव के०) ज्यांसुधि, (अरिहंताणं भगवंताणं के०) श्रीअरिहंत भगवंतने, (नमुक्कारेणं के०) नमस्कार सहित

(नपारेमि के०) पारूं नही, ध्यान संपूर्ण न करूं, (ताव के०) त्यां सुधी (कायं के०) म्हारी कायाने, शरीरने, (ठाणेणं के०) एकठिकाणें स्थिरपणे राखीने, (मोणेणं के०) अबोलो रहीने, (झाणेणं के०) एकाग्र जे ध्यान तेणें करीनें, (अप्पाणं के०) म्हारी जे काया ते प्रत्यें, (वोसिरामि के०) हुं वोसिरावुं छुं तजुं छुं. आ पाटी कहीनें काउस्सग्ग करणो. इरियावहीकी पाटी मनमांहे कहेणी. पछी नवकार कहीनें काउस्सग्ग पारियें ॥ ४ ॥

॥ अथ लोगस्सकी पाटी लिख्यते ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तिच्छयरे जिणे ॥ अरिहं ते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मजियं च वंदे, संनव मन्निणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसं पि जिणवरा, तिच्छयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलान्नं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवर गंन्नीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥५॥

अर्थः—(लोगस्स के०) पंचास्तिकायात्मक लोकने (उज्जोय

गरे के०) उद्योतना करणहार, (धम्मतिब्धयरे के०) धर्मरूप तीर्थना करणार एवा, (जिणे के०) राग द्वेषना जितनार जे (अरिहंते के०) श्री अरिहंत तेनुं, (कित्तइस्सं के०) कीर्त्तन करीश तेमां (चउवीसंपि के०) ऋषनादिक चोवीस परमेश्वरनुं तो नामोच्चारण पूर्वक कीर्त्तन करीश. अने अपिशब्दथकी अन्य जिनोनुं पण कीर्त्तन करीश ते कहेवा छे ? तो के (केवली के०) केवलज्ञानी छे. ते तीर्थ करनो हुं कीर्त्तन करीश॥१॥ हवे ते चोवीश जिननां नाम कहे छे. (उसन्न के०) श्रीऋषनदेवस्वामी प्रत्यें (च के०) वली (मजियं के०) श्रीअजितनाथ प्रत्यें, (वंदे के०) वांडुं छुं, (संनव के०) श्रीसंनवनाथ प्रत्यें, (मन्निणंदणं के०) श्रीअन्निनंदननाथ प्रत्यें (च के०) वली (सुमइं के०) श्रीसुमतिनाथनें (च के०) वली (पउमप्पहं के०) श्री पद्मप्रनस्वामी प्रत्यें, (सुपासं के०) श्रीसुपार्श्वनाथजीनें (जिणं के०) रागद्वेषना जितनार, (च के०) वली (चंदप्पहं के०) श्रीचंद्रप्रनजीने, (वंदे के०) वांडुं छुं ॥ २ ॥ (सुविहिं के०) श्रीसुविधिनाथजीने (च के०) वली एमनुं बीजुं नाम (पुप्फदंतं के०) श्री पुष्पदंतजी छे, ते प्रत्यें, (सीयल के०) श्रीशीतलनाथजीने, (सिज्जंस के०) श्रीश्रेयांसनाथजीनें, (वासुपुज्जं के०) श्रीवासुपूज्यस्वामि प्रत्यें, (च के०) वली, (विमल के०) श्रीविमलनाथजीनें, (मणंतं के०) श्रीअनंतनाथजीनें, (च के०) वली, (जिणं के०) रागद्वेषना जीतणार, एहवा (धम्मं के०) श्रीधर्मनाथजीनें, (संतिं के०) श्रीशांतिनाथजीनें (च के०) वली, (वंदामि के०) वांडुं छुं ॥३॥ (कुंथुं के०) श्रीकुंथुनाथजीनें, (अरं के०) श्रीअरनाथजीनें, (च के०) वली, (मल्लिं के०) श्रीमल्लिनाथजीनें, (वंदे के०) वांडुं छुं, (मुणिसुव्वयं के०) श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रत्यें, (नमिजिणं के०) श्रीनमिजिनने, (च के०) वली, (वंदामि के०) वांडुं छुं. (रिठ्ठनेमिं के०)

श्रीअरिष्टनेमिजी प्रत्यें, (पासं के०) श्रीपार्श्वनाथस्वामी प्रत्यें, (तह के०) तथा, (वद्धमाणं के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्यें, हुं वांडं बुं, चकार पादपूर्णार्थि ले ॥ ४ ॥ (एवं के०) ए प्रकारें (मए के०) म्हारे जीवें जे, (अभिथुआ के०) नाम पूर्वक स्तव्या, ते चोवीशे परमेश्वर केह्वा ले ? तो के (विहुय के०) टाल्या ले, (रयमला के०) कर्मरूपी रज तथा मल जेणें एवा ले. वली (पही ए के०) अतिशयें करीनें क्षय कस्या ले,(जरमरणा के०) जरा तथा मरण जेणें एवा जे (चउवीसंपि के०) चोवीश तीर्थंकर तथा अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थंकर पूर्ववत् लेवा. ते सर्वे (जिण वरा के०) जिनवर, (तिज्ञयरा के०) तीर्थंकर ते, (मे के०) म्हारा उपर (पसीयंतु के०) प्रसन्न हो ॥ ५ ॥ (कित्तिय के०) कीर्त्तित ले (वंदिय के०) वंदित ले (महिया के०) पूज्य ले एह्वा, (जे के०) जे तीर्थंकर, (ए के०) ए प्रत्यक्ष (लोगस्स के०) लोकने विषे (उत्तमा के०) उत्तम एह्वा, (सिद्धा के०) सिद्ध थया एटले सिद्धि पाम्या निष्ठितार्थ थया एवा हे सिद्धनगवंत तमे मुजने, (आरुग्ग के०) रोग रहित निर्मल एवो सिद्धपणु जाणवुं ते सिद्धपणु तो (बोहिलानं के०) बोधबीज जे श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति थाय तेवारें प्राप्त थाय ले माटें श्रीजिनधर्मनी प्राप्तिनो लान थवाने अर्थें (उत्तमं के०) उत्कृष्ट ते उंची एह्वी (समाहिवरं के०) प्रधान समाधि ते प्रत्यें (दिंतु के०) दिउ आपो ॥ ६ ॥ (चंदेसु के०) चंइमाथी (निम्मलयरा के०) अत्यंत निर्मल, (आइच्चेसु के०) सूर्य समुदायथकी पण, (अहियं के०) अधिक, (पयासयरा के०) प्रकाशना करणहार (सागरवर के०) प्रधान, लेह्नो स्वयंनुरमण नामा समुइ तेनी पेरें, (गंनीरा के०) गुणें करी गंनीर, एह्वा जे (सिद्धा के०) सिद्धो ते, (सिद्धिं के०) मुक्ति जे तेने, (मम के०) मुऊ प्रत्यें, (दिसंतु के०) दिउ आपो ॥७॥ इति लोगस्स पाठः समाप्तः ॥५॥

॥ अथ सामायिक लेवणकी पाटी लिख्यते ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि, जाव नियमं, पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥ इति ॥६॥

अर्थः–(भंते के०) हे पूज्य ! (सामाइयं के०) समता परिणामरूप सामायिकने, (करेमि के०) हुं करूं छुं (सावज्जं के०) अवद्य जे पाप, तेणें करी सहित एवा (जोगं के०) मन वचन कायाना योग, ते प्रत्यें (पच्चख्खामि के०) हुं निषेध करूं छुं, (जाव के०) ज्यांसुधि, (नियमं के०) सामायिक व्रतना नियमने (पज्जुवासामि के०) हुं सेवुं, रहुं.त्यांसुधी, (दुविहं के०) दोयकरणसुं एटले करणो, करावणो ए दोयप्रकारका जो सावद्यव्यापार ते प्रत्यें (मणसा के०) मनें करी, (वयसा के०) वचनें करी, (कायसा के०) कायायें करी ए, (तिविहेणं के०) तीन जोगसुं (नकरेमि के०) हुं करूं नहि, (नकारवेमि के०) हुं दुजा पासें न करावुं, (तस्स के०) ते सावद्यव्यापाररूप पापने, (भंते के०) हे भगवंत ! आपनी समीप हुं (पडिक्कमामि के०) पडिक्कमुं छुं, (निंदामि के०) हुं आत्मानी साखें निंदुं छुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गहुँ छुं, एटले विशेषें निंदुं छुं, (अप्पाणं के०) माहरा आत्माने, ते दुष्ट क्रियायकी (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं, एटले विशेषें करीनें तजुं छुं ॥ १ ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री नमुथ्थुणंनी पाटी लिख्यते ॥

नमुथ्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तिथ्थयराणं, सयंसंबुध्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहा

णं, पुरिसवरपुंमरीयाणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं, लो गुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवा णं, लोगपज्जोयगराणं, अजयदयाणं, चरकुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, दिवोत्ताणं, सरणगइपइठाणं, अप्पडिहय वरनाणं दंसणधरा णं, विअट्ट छउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, ता रयाणं, बुद्धाणं, बोहियाणं, मुत्ताणं, मोयगाणं, सव्व न्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरकय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं सं पत्ताणं, नमो जिणाणं, जियजयाणं ॥१॥ इति ॥७॥

अर्थः—(नमुथ्थुणं के०) इहां नमोस्तु एटले नमस्कार हो अने णं कार जे छे, ते वाक्यालंकारने माटें छे, कोने नमस्कारहो, तो के (अरिं हताणं के०) श्रीअरिहंत देवने, (जगवंताणं के०) जगवंतने, (आइ गराणं के०) धर्मना आदिना करणारने (तिथ्थयराणं के०) तीर्थना स्थापनार एटले साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविका, ए चार जा तिना तीर्थना स्थापनारने, (सयंसंबुद्धाणं के०) पोतानीमेलें सम्यक् प्रकारें तत्त्वना जाण थया (पुरिसुत्तमाणं के०) पुरुषमांहे उत्तम (पु रिससीहाणं के०) पुरुषमांहे सिंहसमान, (पुरिसवरपुंमरीयाणं के०) पुरुषमांहे पुंमरीक कमल समान, (पुरिस के०) पुरुषमांहे, (वर के०) प्रधान, (गंधहत्थीणं के०) गंधहस्ती समान छे, (लोगुत्तमाणं के०) लोकमांहें उत्तम छे, (लोगनाहाणं के०) लोकना नाथ छे, (लोगहि याणं के०) लोकना हितकारी छे, (लोगपईवाणं के०) लोकने विषे

प्रदीप समान छे, (लोगपज्जोयगराणं के०) लोकमांहे प्रकर्षे करी उद्योतना करणार छे. (अभयदयाणं के०) अभयदानना देणार छे, (चक्खुदयाणं के०) ज्ञानरूप चक्षुना देणार छे, (मग्गदयाणं के०) मोक्ष मार्गना देणार छे, (सरणदयाणं के०) शरणना देणार छे, (जीवदयाणं के०) संयमरूप जीवतरना देणार छे, (बोहिदयाणं के०) सम्यकित रूप बोधना देणार छे, (धम्मदयाणं के०) धर्मना देणार छे, (धम्मदेसियाणं के०) धर्मना उपदेशना देणार छे, (धम्मनायगाणं के०) धर्मना नायक छे, (धम्मसारहीणं के०) धर्मरूप रथना सारथि छे, (धम्म के०) धर्मने विषे, (वर के०) प्रधान (चाउरंत के०) चार गतिनो अंत करवा माटे, (चक्कवट्टीणं के०) चक्रवर्ती समान छे, (दिवोत्ताणं के०) संसारसमुद्रमां द्वीप समान, दुःखना निवारण करणार छे, (सरणगइपइट्ठाणं के०) सरणगतिना स्थानक भूत शरणागत वत्सल छे. (अप्पडिहय के०) नही हणाय एवुं, (वर के०) प्रधान, (नाण के०) ज्ञान (दंसण के०) दर्शन तेने (धराणं के०) धरणार, (विअट्ट के०) गयुं छे, (छउमाणं के०) छद्मस्थपणुं एटले कर्मरूपी आवरण जेने एवा, (जिणाणं के०) रागद्वेषनें जीत्या छे जेणें, (जावयाणं के०) बीजाने रागद्वेषथकी मूकावे छे (तिन्नाणं के०) संसाररूपी समुद्र पोतें तस्या छे अने (तारयाणं के०) बीजानें संसारसमुद्रथी तारनार छे (बुद्धाणं के०) पोतें तत्त्वज्ञानने समज्या छे (बोहियाणं के०) बीजानें तत्त्वज्ञान समजावणार, (मुत्ताणं के०) पोतें चातुर्गतिक विपाकविचित्र कर्मथकी मूकाणा छे, तथा (मोयगाणं के०) बीजा भव्य प्राणीनें कर्मथकी मूकावणार छे, (सवन्नूणं के०) सर्वज्ञ छे, (सवदरिसिणं के०) सर्व पदार्थना देखणार छे, (सिव के०) सर्व उपद्रव रहित एवा (मयल के०) अचल (मरुय के०) अरुज रोग रहित (मणंत के०) अनंतज्ञानादि चतुष्टयें करी युक्त

छे माटें अनंत छे (मरकय के०) सर्वकाल निश्चल (मवाबाह के०) अव्याबाध एटले बाधा पीडा रहित (मपुणरावित्ति के०) जे गतिथकी फरी संसारने विषे अवतार लेवो नथी एहवी (सिद्धिगइ के०) सिद्धिगति एवुं छे (नामधेयं के०) नाम जेनुं एवा (ठाणं के०) स्थानकने (संपत्ताणं के०) पाम्या छे. अर्थात् मोक्ष नगर प्रत्यें पाम्या छे, एहवा अरिहंत जणी (नमो के०) महारो नमस्कार हो. ते जिन जगवान् केहवा छे? तो के (जिणाणं के०) कर्मरूपी शत्रुनें जीतणार, तथा (जियजयाणं के०) इहलोकादिक सात जयप्रत्यें जीतणार छे ॥ ७ ॥

॥ अथ सामायिक पारवानी पाटी लिख्यते ॥

नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, मण डुप्पणिहाणे, वय डुप्पणिहाणे, कायडुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणयाए, सामाइयस्स अणवुठियस्स करणयाए, तस्स मिछामि डुक्कडं. सामायिकने विषे दस मनना, दस वचनना, बार कायाना, ए बत्रीश दोष मांहेलो कोई दोष लागो होय तो मिछामि डुक्कडं. आहारसंज्ञा, जयसंज्ञा, मिहुणसंज्ञा, परिग्गहसंज्ञा, ए चार संज्ञामांहेली कोई संज्ञा करी होय तो मिछामि डुक्कडं. स्त्रीकथा, राजकथा, जक्तकथा, देशकथा, ए मांहेली कोई कथा करी होय तो मिछामि डुक्कडं. सामायिक समकाएणं, फासियं, पालियं, सोहियं, तिरियं, कित्तियं, आराहियं, आणाए अणुपालियं, न जवइ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति॥७॥

अर्थः—नवमा सामायिक व्रतना (पंच अइयारा के०) पांच अतिचार (जाणियव्वा के०) जाणवा योग्य, (नसमायरियव्वा के०) समाचरवा योग्य नही. (तंजहा के०) ते हवे कहे छे तेने (आलोउं के०) आलोचुं छुं, (मणदुप्पणिहाणे के०) मन माठुं वर्त्ताव्युं होय, (वयदुप्पणिहाणे के०) वचन माठुं वर्त्ताव्युं होय, (कायदुप्पणिहाणे के०) काया माठी प्रवर्त्तावी होय, (सामाइयस्स के०) सामायिकनें (अकरणयाए के०) कीधुं के नही कीधुं तेनी बराबर खबर न रही होय, (सामाइयस्स के०) सामायिकने (अणवुठियस्सकरणयाए के०) पूरी थयाविना पारी होय, तो (तस्स के०) तेनुं (दुक्कडं के०) पाप ते (मिच्छामि के०) मारुं निष्फल थाउ. (आहारसंज्ञा के०) खावानी इच्छा थइ होय, (भयसंज्ञा के०) भयनी संज्ञा थइ होय. (मिहुणसंज्ञा के०) मैथुननी इच्छा करी होय, (परिग्गहसंज्ञा के०) धन द्रव्यनी इच्छा करी होय, ए चार संज्ञा मांहेली कोइ संज्ञा करी होय तो ते दुष्कृत पाप (मिच्छामि के०) मारुं निष्फल थाउ. (सामायिकसमकाएणं के०) सामायिक कायायें बरावर रीतें (फासियं के०) स्पर्शी कर्युं फरस्युं, अंगीकार कर्युं (पालियं के०) तेवुंज पाळ्युं, (सोहियं के०) शोध्युं शुद्ध कर्युं (तिरियं के०) पार उतारियुं, (कित्तियं के०) कीर्त्त्युं (आराहियं के०) आराध्युं (आणाए के०) वीतराग देवनी आज्ञायें करी (अणुपालियं के०) पालेलुं, (नभवइ के०) न होय (तस्स मिच्छामिदुक्कडं के०) तेनुं दुष्कृत जे मने लागेलुं होय ते मारुं मिथ्या हो ॥ इति सामायिक पारवानी पाटीनो अर्थ संपूर्ण ॥ ८ ॥

॥ अथ सामायिकविधि प्रारंभः

॥ प्रथम श्री सीमंधर स्वामीजीनी आज्ञा लेइनें एक नवकार गुणीने “ इरियावहिनी ” पाटी भणवी; पछी त

स्स उत्तरीनी पाटी जणीने काउस्सग्ग करवो, काउस्स ग्गमांहि "इरियावहियाएश्री" मांमीने "जीवियाउ वव रोविया तस्स मिच्छामि डुक्कडं" सुधीनो पाठ मनमां बो लीने एक नवकार मनमां कहीने काउस्सग्ग पारवो. प छी प्रगट "लोगस्सकी" पाटी कहीने सामायिकनी आज्ञा लेईने "करेमि जंतेनी" पाटी "जावनियमं" सुधी कहीने आगल मुहूर्त्त (घालणो हुवे तिके) घाल णो, पछी "पज्जुवासामि" थकी "अप्पाणं वोसि रामि" सुधी पाठ कहीने सामायिक पच्चरकवो. पछे मावो गोडो उज्जो करीने दोयवार "नमुत्थुणं" नी पाटी केहवी. डजा नमुत्थुणंने छेहडे "ठाणं संपाविउ कामे नमो जिणाणं" एम केहवुं. अने सामायिक पारती वे ला "इरियावही, तस्स उत्तरी" नी पाटी जणीने का उस्सग्ग करवो, पछी काउस्सग्गमांहे इरियावहिनी पाटी कहिने एक नवकार गुणीने काउस्सग्ग पारवो. पछी "लोगस्स" जणी "नमुत्थुणं" दोय बार उ पर लिख्या मुजब कहीने नवमा सामायिकव्रतनी पाटी "अणुपालियं न जवइ तस्स मिच्छामि डुक्कडं" सु धी कहीने तीन नवकार गुणीने सामायिक पारवुं.

॥ इति श्री सामायिक अर्थ विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ श्री प्रतिक्रमण अर्थ विधिसहित प्रारंभः ॥

प्रथम "चोविस स्तव" कीजें. पनो रहीने "तिरकुत्तो" गुणीजें. देव, गुरु तथा बडा साधर्मीभाईनी पडिक्कमण गयवानी आज्ञा लेइने "इछामिणं भंते" नी पाटी कहीजें. ते लखीयें छैयें.

॥ अथ इछामिणंभंतेनी पाटी प्रारंभः ॥

इछामिणं भंते तुप्रेहिं अभणुं नायसमाणे देवसि पडिक्कमणुं ठाएमि देवसि नाण, दंसण, चारित्त, तप अतिचार चिंतवणार्थ करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थः—(इछामिणं के०) हुं इछुंछुं, (भंते के०) हे भगवन्! (तुप्रेहिं के०) तुमारी (अभणुंनायसमाणे के०) आज्ञा मागीने, (देवसि के०) दिवस संबंधी, (पडिक्कमणुं के०) पापनुं निवारण करवु ते प्रत्यें, (ठाएमि के०) गउंछुं (देवसि के०) दिवस संबंधि, (नाण के०) ज्ञान, (दंसण के०) दर्शन समकित, (चारित्त के०) कर्मरूपि शत्रुको नाशकरणार, ते रूप चारित्र तथा (तप के०) तपस्या ते संबंधि जे (अतिचार के०) व्रत भांगवाने तैयार थवुं, ते रूप अतिचार लाग्यो होवे तेनी (चिंतवणार्थ के०) चिंतवणा करवाने अर्थें, (काउस्सग्गं के०) कायोत्सर्ग प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं छुं ॥ १ ॥

पछी "नवकार" कहीजें. "तिरकुत्तारा" पाठसूं पहिला आवश्यकनी आज्ञा मागीने "करेमि भंते," की पाटी कहीजें. पछी "इछामि ठामि" नी पाटी भणीजें. ते लखीयें छैयें.

अथ इछामि ठामिनी पाटी प्रारंभ.

इछामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ अइयारो कउ काईउ, वाइउ, माणसिउ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अक

प्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाउ, दुव्विचिंतिउ, अणायारो, अ णिच्छियव्वो, असावग पाउग्गो, नाणे तह दंसणे, च रित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिन्हं गुत्तीणं, चउन्हं क सायाणं, पंचन्हमणुव्वयाणं, तिन्हं गुणव्वयाणं, चउ न्हं सिख्कावयाणं, बारसविहस्स सावग धम्मस्स, जं खंडियं, जं विराहियं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥

अर्थः–(ठामि के०) एक ठेकाणे रहीने, जे (काउस्सग्गं के०) कायानी स्थिरता करवी, तेने (इच्छामि के०) हुं इच्छुं छुं,(जो के०) जे, (मे के०) म्हारा जीवें, (देवसिउ के०) दिवस संबंधि, (अइयारो के०) अतिचार, (कउ के०) कीधो होय, (काईउ के०) काया संबंधी, (वाइउ के०) वचन संबंधि, (माणसिउ के०) मनःसंबंधि, (उस्सुत्तो के०) सूत्र विरुद्ध परूपणा कीधा थकी उपनो जे (उम्मग्गो के०) उन्मार्ग एटले जिनमार्ग उल्लंघीने दुजो मार्ग तेथकी नीपनो जे (अकप्पो के०) अकल्पनीय एटले चरण करण व्यापारथकी रहितपणुं तेनाथी उत्पन्न थयो जे (अकरणि ज्जो के०) करवा योग्य नही एवा कार्य तेने करवें करी. ए सर्वअति चारनुं स्वरूप कह्युं. हवे मनःसंबंधि अतिचारनुं स्वरूप कहे छे. (दुज्झाउ के०) दुर्ध्यान ते आर्त्त, रौद्र ध्यान ध्याववुं ते माटेंज (दुव्विचिंतिउ के०) दुष्ट अशुभ कार्यनुं मनमां चिंतववुं तेमाटेंज (अणायारो के०) अनाचार कहीयें. एटले जेथकी व्रतादिकनो सर्वथा भंग थाय जे माटें ते अनाचार आचरवा योग्य नही, ते माटेंज (अणिच्छियव्वो के०) इच्छवा योग्य नही, ते माटेंज (अ सावगपाउग्गो के०) श्रावकने उचित नथी, हवे ए सर्व अति चार शेने विषे लगाड्या होय? ते कहे छे. (नाणे के०) ज्ञानने विषे, (तह के०) तेमज, (दंसणे के०) समकित दर्शनने विषे,

(चरित्ताचरित्ते के०) कांइएक चारित्रनें कांइएक नहि चारित्र एहवुं जे श्रावकनुं चारित्र तेने विषे, (सुए के०) सूत्र सिद्धांतने विषे, (सामाइए के०) समतारूप सामायिकने विषे, (तिन्हं गुत्तीणं के०) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए तीन गुप्ति न पाळवे करी (चउन्हं कसायाणं के०) क्रोध, मान, माया ने लोभ, ए चार कषायने करवे करी (पंचन्हमणुवयाणं के०) (१) प्राणातिपात, (२) मृषावाद, (३) अदत्तादान, (४) मैथुन, (५) परिग्रह, ए पांच प्रकारना अणुव्रतने विषे, (तिन्हंगुणव्वयाणं के०) छठो, सातमो ने आठमो, ए तीन प्रकारका गुणव्रत मांहेथी, (चउन्हं सिरकावयाणं के०) चार प्रकारका शिक्षाव्रत, नवमो, दसमो, इग्यारमो, ने बारमो, ए मांहेथी घणुं शुं कहियें परंतु (बारसविहस्स के०) ए बारे प्रकारका व्रतरूप, (सावगधम्मस्स के०) श्रावक संबंधि जे धर्म. तिणमांहेसूं महारा जीवें, (जंखंडियं के०) जे देशथकी भंग कीधुं, (जंविराहियं के०) जे सर्वथकी भंग कीधुं (तस्स के०) तेहनुं (डुक्कडं के०) पाप (मिच्छामि के०) महारुं निष्फल थाउ ॥ २ ॥

पछो "तस्स उत्तरी" नी पाटी कहीने उभो रहीने काउस्सग्ग ठाईजें काउस्सग्गमांहे, १४ ग्यानका, ५ समकितका, ६० बारा व्रतका, १५ कर्मादानका, ५ संलेहणाका, एवं "एए अतिचार" नी चिंतवणा कीजें. ते अतिचार आ प्रमाणेः– तपस्या, अशक्तपणा वगेरे कारणसूं उभो रहीने काउस्सग्ग करणकी शक्ति न होय तो नीचें बेसीने काउस्सग्ग ठाईजें.

१४ ग्यानका आगमे तिविहे पन्नत्ते तं जहा, सुत्तागमे, अत्थागमे, तदुभयागमे, एहवा श्री ज्ञानने विषे जे कोई अतिचार लागा होय, ते आलोउं, जं वाइद्धं वच्चामेलियं,हीणरकरं, अच्चरकरं, पयहीणं, विनयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुठुदिन्नं, दुठुपडि

छियं, अकाले कउ सज्झाउ, काले न कउ सज्झाउ, असज्झाए सज्झा यं, सज्झाइए न सज्झायं, नणतां, गुणतां, चिंतवतां, अने विचार तां, ग्यान अने ग्यानवंतोनी आशातना कीनी होय ॥

(५ समकितना अतिचार) दंसण समकित ॥ परमत्र संथवो वा, सुदिठ परमत्र सेवणावावि ॥ वावन कुदंसण व, जणा सम त्त सद्दहणा ॥ १ ॥ एहवा समकितना समणोवासयाणं सम्मत्त स्स, पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, संका, कंखा, वितिगिछा, परपासंमी परसंसा, पर पासंमी संथुवो ॥

(६० व्रतांका अतिचार) पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतना पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं. बंधे वहे छविछेए, अइनारे नत्तपाणवुछेए ॥

बीजा थूल मृषावादविरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, सहस्सानरकाणे, रहस्सा नरकाणे, सदारमंतनेए, मोसोवएसे कूडलेहकरणे ॥

त्रीजा थूलअदत्तादान विरमणव्रतना पंच अइयारा जाणि यव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, तेनाहडे, तक्करप्पउगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूडतोले, कूडमाणे, तप्पडिरुवगववहारे ॥

चोथा थूल मेहुण विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न स मायरिवा तं जहा ते आलोउं, इत्तरपरिग्गहियागमणे, अपरिग्ग हियागमणे अनंगकीडा,परविवाहकरणे, कामनोगेसु तिव्वानिलासे॥

पांचमा थूल परिग्रह परिमाण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं. खित्तवछुपमाणाइक्कमे, हिरस सुवसपमाणाइक्कमे धण धन्नप्पमाणाइक्कमे, डुपद चउपद पमाणाइक्कमे, कुवियपमाणाइक्कमे ॥

छठा दिशि विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समाय

रियव्वा तं जहा ते आलोउं, उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे, अहोदिसि पमाणाइक्कमे, तिरियदिसि पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्ढी, सयंतरद्धा ॥

सातमा उवभोग परिभोग दुविहे पन्नत्ते तं जहा, भोयणाउय, कम्मउय, भोयणाय समणोवासयाणं पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, सचित्ताहारे, सचित्तपडिबद्धा हारे, अप्पोलसहिभक्खणया दुप्पोलसहिभक्खणया, तुच्छोसहिभक्ख णया, कम्मउणं समणोवासयाणं पन्नरस कम्मदाणाई, जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं.

(१५ कर्मादानका) इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडी कम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, लक्ख वाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदा वणया, सरदहतलायपरिसोसणया, असईजणपोसणया ॥

आठमा अनर्थदंडविरमणव्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, कंदप्पे, कुक्कुइए मोहरिए, संजुताहिगरणे, उवभोगपरिभोग अइरत्ते ॥

नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समाय रियव्वा तं जहा ते आलोउं, मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहा णे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणियाए, सामाइयस्स अणवुट्ठियस्स करणयाए ॥

दशमा देसावगासिक व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समा यरियव्वा तं जहा ते आलोउं, आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, स दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गलपक्खेवे ॥

अग्यारमा परिपूर्ण पोषध व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय स ज्झासंथारए, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सज्झासंथारए, अप्पडिले हिय दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणभूमि, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय

उच्चारपासवणभूमि, पोसहस्स, सम्मं अणणुपालणया ॥

बारमा अतिथिसंविभाग व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, सचित्त निख्खेवणिया, सचित्त पिहणिया, कालाइक्कम्मे, परोवएसे मच्छरियाए ॥

५ संलेहणारा ॥ अपच्छिम मरणांतिक संलेहणा झुसणा आराहणाना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरिव्वा तं जहा ते आलोउं, इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, कामभोगासंसप्पउगे ॥

१८ पापस्थानक १ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह, ६ क्रोध, ७ मान, ८ माया, ए लोभ, १० राग, ११ द्वेष, १२ कलह, १३ अभ्याख्यान, १४ पैशुन्य, १५ परपरिवाद, १६ रति अरति, १७ मायामोसो, १८ मिथ्यात्वदंसणशल्य. एवं १८ पापस्थानकमांहेलुं जे कोइ पापस्थानक मारे जीवें, मनें, वचनें कायायें करी, सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवता प्रत्यें भलुं जाण्युं होय.

एम " एए अतिचार, १८ पापस्थानक " काउस्सग्गमां चिंतवीने पछी " इच्छामिठामि " नी पाटी ' जं विराहियं ' सुधी चिंतवी ' नवकार ' भणीने काउस्सग्ग पारीयें ॥ इति प्रथम ' सामायिक आवश्यक ' संपूर्ण.

विधिः—पछी ' तिख्खुत्ता ' नो पाठ कही दूजा आवश्यकनी आज्ञा लइने प्रगट एक ' लोगस्स ' नी पाटी कहीजें ॥ इति दूजुं ' चउविसच्छो ' आवश्यक संपूर्ण.

पछी तिख्खुत्तो गुणी त्रीजा आवश्यकनी आज्ञा लेइने दोय वार " इच्छामिखमासमणा " नी पाटी कहीजें. पाटीमांहे प्रथम जिहां ' निसीहियाए ' शब्द आवे तिहां उभा गोडा करी, हाथ जोडीने बेसीजें. तथा ७ आवर्त्त करियें ते आ प्रमाणेंः—प्रथम " अ

होकायं काय " ए शब्द उच्चारतां तीन आवर्त्त हुवे छे, ते कहे छेः— दोनुं हाथ लांबा करी हाथनी दश आंगुली भूमि उपर लगावतां मुखसुं " अ " अक्षर कहेवो, पछी तेमज दश आंगुली आपणा मस्तकने लगावतां " हो " अक्षर कहेवो, ए दोनुं अक्षर कहेतां १ पहेलो आवर्त्त हुवो, इणहीज रीतिसूं " का " ने " यं " ए बे अक्षर उच्चारतां २ डुजो आवर्त्त हुवो. तथा " का " ने " य " ए बे अक्षर उच्चारतां ३ त्रीजो आवर्त्त हुवो. पछी " जत्ता, भे, जव णि ज्जं, च, भे " ए शब्द उच्चारतां ३ आवर्त्त हुवे छे, ते कहे छेः—प्रथम " ज " अक्षर मंदस्वरसूं "त्ता" अक्षर मध्यमस्वरसूं, ने "भे" अक्षर उंचा स्वरसूं उपरली रीतिसूं, मस्तकें हाथ लगावतां कहेवो. एम तीन अक्षर कहेतां प्रथम आवर्त्त, तथा (ज) (व) (णि) ए तीन अक्षर त्रिविध स्वरसूं उपर मुजब उच्चारतां डुजो आवर्त्त. तथा (ज्जं) (च) (भे) ए पण तीन अक्षर पूर्वली रीतें कहेतां त्रीजो आवर्त्त होय, एवं छ आवर्त्त एक पाटीमांहे थाय. एवी बे पाटी कहीजें तेवारें बार आवर्त्त थाय. तथा " तित्तीसन्नयराए " ए पाठ आवे तिहां पाछा उभा रहीजें. एवं ए दोय वार " खमा समणा " री पाटी संपूर्ण कहीजें, ते पाटी लखीयें छैयें.

अथ खमासमणारी पाटी प्रारंभः

इच्छामि, खमासमणो, वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिया ए, अणुजाणह, मे, मिउग्गहं, निसीही, अहो, कायं, कायसंफासं, खमणिज्जो, भे, किला[illegible] कलंताणं.

णाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिछाए, मणडुक्कडाए, वयडुक्कडाए, कायडुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए, सबकालियाए, सबमिछोवयाराए, सबधम्मा इक्कमणाए, आसायणाए, जो, मे, देवसिउ अइ यारो कउ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निं दामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ३ ॥

अर्थः–(खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण! (जावणिज्जाए के०) जेणें करी कालक्षेप करीयें तेवी शक्तियें करी सहित एवी (निसीहिआए के०) प्राणातिपातादिकथी निवृत्तिरूप प्रयोजन छे जेमां तेने नैषेधिकी तनु एटले शरीर कहीयें तेवा शरीरें करी तुमने (वंदिउं के०) वांदवाने (इछामि के०) हुं इछुं छुं, वांछुं छुं. माटें (मिउग्गहं के०) मित अवग्रह एटले प्रमाण करेला साडा त्रण हाथना अवग्रह मांहे प्रवेश करवानी (मे के०) मुफ ने (अणुजाणह के०) अनुज्ञा आपो एटले आज्ञा आपो.

पछी शिष्य (निसीहि के०) एक गुरुवंदन विना अन्य क्रिया रूप व्यापारने निषेध्यो छे जेणे एवो छतो मर्यादा करेला अवग्र हमांहे पेसीने गुरुप्रत्यें कहे के तुमारा (अहोकायं के०) अधःप्रदेश नो छेहलो नाग जे चरण ते प्रत्यें (कायसंफासं के०) महारी काया संबंधि हाथ अने मस्तकें करीने स्पर्शुं? एवी आज्ञा पामी ने गुरुना चरणने स्पर्शी पछी उंचो थइ मस्तकें बे हाथ चडावी 'खमणिज्जो ने' इत्यादि पाठ कहे. तेनो अर्थ लखीयें छैयें.

हे पूज्य! तुमारा चरण स्पर्शतां जे कांइ (मे के०) महारे जीवें तुमने (किलामो के०) ग्लानि एटले पीडा उपजावी होय खेद उपजाव्यो होय ते (ने के०) तमोयें (खमणिज्जो के०)

खमवा योग्य छे. एटलुं कहीने वली पण शिष्य, दिवससंबंधि क्षेम कुशलनुं स्वरूप पूज्यने पूछे, ते आवीरीतें:-

(बहुसुभेण के०) बहु शुभें करीने क्षेमकुशल समाधिभावें करीने (भे के०) तमारो (दिवसो के०) दिवस (वइक्कंतो के०) व्यतिक्रांत थयो एटले वीत्यो? तमें कहेवा छो? तो के (अप्पकिलं ताणं के०) अल्पकिलामणावाला छो एम शरीरसंबंधि सुखशाता पूछीने वली तप नियमादिक संबंधी वार्त्ता पूछे, तें आवी रीतें:-

हे पूज्य! (जत्ता के०) तप संयम रूप यात्रा ते (भे के०) तमारे अव्याबाध पणे वर्त्ते छे? (जवणिज्जं के०) इंद्रियोयें करी पीडित नही एवुं निराबाध शरीर (च के०) वली (भे के०) तमारुं छे?

(खमासमणो के०) हे क्षमावंत साधु! (देवसियं के०) दिवस संबंधि, (वइक्कमं के०) व्यतिक्रम एटले अवश्य करणीय विराधनारूप माहारो अपराध, ते प्रत्यें (खामेमि के०) हुं खमावुं छुं. हवे वली आ प्रमाणें कहे. (आवस्सियाए के०) अवश्य करणी करतां जे अतिचार लाग्यो होय, ते थकी (पडिक्कमामि के०) हुं निवर्त्तुं छुं, (खमासमणाणं के०) क्षमावंत साधुनी, (देवसियाए के०) दिवसने विषे थइ एवी जे, (आसायणाए के०) आशातना, खंमना, ते आशातनायें करीने, ते केवी आशातनायें करीने? तो के (तित्तीसन्नयराए के०) तेत्रीश आशातना मांहेली अनेरी कोइ एक पण आशातनायें करीने, (जं किंचि मिछाए के०) जे कांइ कूडुं आलंबन लइने मिथ्याभाव वर्त्ताव्यो होय (मणदुक्कडाए के०) मनःसंबंधि दुष्कृत जे पाप तेणें करी, (वयदुक्कडाए के०) वचनसंबंधी दुष्कृत जे पाप तेणें करी, (कायदुक्कडाए के०) काया संबंधि दुष्कृत जे पाप तेणें करी, (कोहाए के०) क्रोध भाव रूप आशातनायें करी, (माणाए के०) मान रूप अशातनायें करी, (मायाए के०) कपटरूप आशातनायें

करी, (लोहाए के०) लोनरूप आशातनायें करी, (सव्वकालियाए के०) अतीत, अनागत अने वर्त्तमान, एवं सर्वे कालने विषे,(सव्वमिच्छोवयाराए के०) सर्व,कूडकपट क्रियारूप जे मिथ्या उपचार ते रूप आशातनायें करीने, (सव्वधम्माइक्कमणाए के०) सर्व धर्मनी जे करणी, तेने उल्लंघवारूप आशातनायें करीनें, ए पूर्वोक्त सर्व प्रकारनी (आसायणाए के०) आशातनायें करी, (जो के०) जे, (मे के०) मह्वारे जीवें, (देवसिउ के०) दिवस संबंधी (अइयारो के०) अतिचार दोष, जे (कउ के०) कस्यो होय, सेव्यो होय, (तस्स के०) ते अतिचारने (खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण ! तमारी समीपें, (पडिक्कमामि के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं, मिच्छामि डुक्कडं दउं बुं, (निंदामि के०) ते डुष्टकर्मकारी आत्माने हुं निंडुं बुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं विशेषें निंडुं बुं (अप्पाणं के०) डुष्ट पापिष्ट आत्मा प्रत्यें, (वोसिरामि के०) हुं तजुं बुं, वोसिरावुं बुं ॥ ३ ॥ इति त्रीजुं वंदनावश्यकसंपूर्ण ॥

पछी 'तिरकुत्तारा' पाठसूं चोथा आवश्यकनी आज्ञा मागीजें, प्रथम काउस्सग्गमांहि एए अतिचार कह्या ते "आगमे तिविहे" नी पाटी थकी "इच्छामि ठामि" नी पाटी सुधी प्रगटपणे केहवा; जिएमांहि प्रत्येक पाटी तथा थूलने छेहडे "तस्स मिच्छामि डुक्कडं" कहेवुं. पछी "तस्स सव्वस्स" नी पाटी कहीजें. ते कहे छेः—

॥ अथ तस्स सव्वस्सकी पाटी प्रारंजः ॥

तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स डुप्भासियं डुच्चिंतियं आलोयंते पडिक्कमामि ॥४॥

अर्थः—(तस्स के०) ते पूर्वे चिंतव्या जे, (सव्वस्स के०) सर्व पण (देवसियस्स के०) दिवस संबंधी, (अइयारस्स के०) अतिचार, तेने तथा (डुप्भासियं के०) उपयोग रहित अनिष्ट जाषा बोलवा

थका जे थयो, वली (डुच्चिंतियं के०) डुष्टकार्य मनमां चिंतववा थकी जे, थयो तेने (आलोयंते के०) आलोचवामाटें, प्रगटपणें कहीने, ते थकी (पडिक्कमामि के०) हुं निवृत्तुं बुं ॥ ४ ॥

विधिः—पढी नीचें बेसीने जिमणो गोडो ऊनो करीने " नवकार, तथा करेमि नंते" नी पाटी कहीजें. तथा "चत्तारि मंगलं" नी पाटी कहीजें ते पाटी लखीयें बैयें.

॥ अथ चत्तारि मंगलकी पाटी प्रारंनः ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं. चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो. चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंता सरणं पवज्जामि, सिद्धा सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि. अरिहंताजीको सरणो, सिद्धाजीको सरणो, साधुजीको सरणो, केवलिपरूप्या दयाधर्मको सरणो ॥ डुहो॥ चार सरणां डुःखहरणां, ऊर न बीजो कोय ॥ जो नविप्राणी आदरे, तो अखय अचल गति होय ॥ ५ ॥

अर्थः—(चत्तारि के०) चार, (मंगलं के०) मांगलिक बे, ते मांहि एक तो, (अरिहंता के०) जेणें रागादिक अंतरंग वैरीने हण्या ते श्री अरिहंत (मंगलं के०) मांगलिक बे, दूजा (सिद्धा के०) अष्टकर्मने क्षय करीने जे सिद्ध पदने पाम्या बे एवा जे श्री सिद्ध, ते (मंगलं के०) मांगलिक बे, त्रीजा (साहू के०) सम्यक्ज्ञानें करी शिवसुखना साधक जे साधु ते (मंगलं के०) मांगलिक बे, चोथो (केवलि के०) श्री केवलि नगवंतनो, (पन्नत्तो

के०) प्ररूप्यो एवो जे श्रुतचारित्ररूप, (धम्मो के०) धर्म, ते (मंगलं के०) मांगलिक छे. (चत्तारि के०) चार, (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे, एक (अरिहंता के०) श्री अरिहंतजी छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे, बीजा (सिद्धा के०) सिद्ध जे छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे,त्रीजा (साहू के०) साधु जे छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे, चोथो (केवलिपसत्तो के०) केवली भगवानें प्ररूप्यो एवो, (धम्मो के०) धर्म जे छे, ते (लोगुत्तमो के०) लोकमांहि उत्तम छे, हवे (चत्तारि के०) चारे, (सरणं के०) शरणने (पवज्जामि के०) अंगीकार करूं छुं, एक (अरिहंतासरणं के०) श्री अरिहंतजीना शरणने, (पवज्जामि के०) अंगीकार करूं छुं, बीजो (सिद्धा सरणं के०) श्री सिद्धना शरणनें, (पवज्जामि के०) अंगीकार करूं छुं, त्रीजो (साहू सरणं के०) साधुशरण प्रत्यें, (पवज्जामि के०) अंगी कार करूं छुं, चोथो (केवलि के०) श्री केवलियें (पसत्तं के०) भांख्यो एवो, जे (धम्मं के०) धर्म तेना, (सरणं के०) शरण प्रत्यें, (पवज्जामि के०) अंगीकार करूं छुं. आगलनो पाठ तथा इहांको अर्थ सुलभ छे जिणसूं इहां लिख्यो नहिं हे ॥ ५ ॥

विधिः—पछी " इछामि ठामि" तथा "इरियावहि" नी पाटी क हाने 'तिस्कुत्तारा' पाठसूं "व्रत, अतिचार" भेला केहवानी आज्ञा मागीजें. तिहां "आगमे तिविहे" नी पाटी कहीजें,ते आ प्रमाणेंः—

॥ अथ आगमे तिविहे पसत्तेकी पाटी प्रारंभः ॥

आगमे तिविहे पसत्ते तं जहा,सुत्तागमे,अछागमे, तडुभयागमे, एहवा श्री ज्ञानने विषे जे कोई अ तिचार लागो होय, ते आलोउं, जं वाइद्धं, वच्चामे लियं, हीणस्करं अच्चस्करं, पयहीणं, विणयही

णं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुहुदिन्नं, डुहुपडिछियं, अकाले कउ सज्झाउ, काले न कउ सज्झाउ, असज्झाए सज्झायं, सज्झाए न सज्झायं, नणतां, गुणतां. चिंतवतां,ने विचारतां,ज्ञान अने ज्ञानवंतनी आशातना किनी होय तो तस्स मिछामि डुक्कडं ॥६॥इति॥

अर्थः–(आगमे के०) सूत्र सिद्धांत, (तिविहे के०) तीन प्रकारका, (पन्नत्ते के०) कहेला छे, (तंजहा के०) ते कहे छे, एक (सुत्तागमे के०) सूत्र आगम, बीजो (अछागमे के०) अर्थ आगम ते सूत्रना अर्थ समजवा, त्रीजो (तडुनयागमे के०) सूत्र तथा तेहनो अर्थ, ए दोय आगम जिहां होय ते त्रीजो तडुनय आगम. एहवा श्री ज्ञानने विषे जे कोइ अतिचार लागो होय ते (आलोउं के०) आलोचुं छुं. ते अतिचार कहे छे. (जंवाइद्धं के०) सूत्र आघां पाछां जमालीनी पेरें नण्यां होय, (वच्चामेलियं के०) अनेरां शास्त्रनां वचन मेल्यां होय जेम कोपलादिकनी खीर तेम पदसूं मेले (हीणक्खरं के०) हीनअक्षर बोल्यो होय, (अच्चक्खरं के०) अधिक अक्षर बोल्यो होय, (पयहीणं के०) पद उछुं नण्युं होय, (विणयहीणं के०) विनय रहित नण्युं होय, (जोगहिणं के०) मन वचन कायाना जोग ठाम राख्या विना नण्यां होय, (घोसहीणं के०) नारी अक्षरने हलको करी नण्यो होय, (सुहुदिन्नं के०) सिद्धांतादिकनुं ज्ञान अविनीतनें तथा मूर्खमिथ्यात्वीने दीधुं होय, (डुहुपडिछियं के०) अज्ञानपणे साचो छतां पण माठो पाडिवो नण्यो होय, (अकाले कउ सज्झाउ के०) चार संध्याकाल,चार महोत्सव, चार माहापाडिवा एवं १२ अकाल ते कालमां सद्याय कीधो होय, (कालेनकउ सज्झाउ के०) कालवेलायें सद्याय न कीधो होय, (असज्झाए सज्झायं

के०) दश औदारिक शरीरना अने दश आकाशना एवं २० अ सद्यायमांहि सद्याय कस्यो होय, (सज्झाए न सज्झायं के०) सद्या य करवा योग्य वेलायें सद्याय न कीधो होय, (तस्समिच्छामिड क्कडं के०) तेनुं डुष्कृत जे पाप ते मारुं निष्फल थाउ ॥ ६ ॥

पछी " दंसण समकित " नी पाटी कहीजें, ते कहे छेः—

दंसण समकित ॥ परमछ संथवो वा,सुदिठ परमछ से वणावावि ॥ वावस्नं कुदंसण वज्जणाय एवी सम्मत्त सद्द हणा ॥ एहवा समकितना समणोवासयाणं सम्मत्तस्स पंच अइयारा, पयाला, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं,संका कंखा, वितिगिछा,परपासंमी परसंसा, परपासंमीसंथवो, एवं पांच अतिचार मध्यें जे कोइ अतिचार लागो होय तस्स मिछामि डुक्कडं ॥७॥इति

अर्थः— (दंसण समकित के०) समकित दर्शन तेनुं स्वरूप कहीयें छैयें. (परमछ के०) परम अर्थ ते जीवादिक नव पदार्थनो (संछवोवा के०) संस्तव ते परिचय करवो, तेनो समागम करवो, तथा (सु के०) नला (दिठ के०) दीठा छे (परमछ के०) सूत्रना अर्थ जेणें एवा गुरुनी (सेवणावावि के०) सेवना करवी अपि शब्द निश्चय वाचक छे. (वावस्नं के०) समकित पामीनें पछी तेने वमी नाखे ते तथा (कुदंसण के०) कूडुं दर्शन जेनुं एट ले मूलथी समकित जेने नज होय तेने, (वज्जणा के०) वर्ज वो, एटले तेनो त्याग करवो (सम्मत्त के०) ए समकितनी (स द्दहणा के०) सद्दहणा, श्रद्धा, (एहवा समकितनासमणोवास याणं के०) एहवा समकितना धारक श्रावकने, (सम्मत्तस्स के०) समकित संबंधि, (पंच के०) पांच, (अइयारा के०) अतिचा

र, (पयाला के०) महोटा छे ते (जाणियव्वा के०) जाणवा पण, (न समायरियव्वा के०) आदरवा नहीं, (तं जहा के०) ते जेम छे तेम आगल कहीने (ते आलोउं के०) आलोउं छुं, १ (संका के०) जिन वचन तणो संदेह कीधो होय २ (कंखा के०) मिथ्यात्व मतनी इछा कीधी होय,सहुना मार्ग नला जाण्या होय, ३ (वितिगिछा के०) धर्म करणीना फलमांहि संदेह आण्यो होय, धर्मक्रियानुं फल होशे के नहीं ? एहवो संदेह धर्यो होय. साधु, साधवीनां मल मलीन वस्त्र देखी डुगंछा कीनी होय, ४ (परपासंमीपरसंसा के०) मिथ्यात्वीनी प्रनावना देखी प्रशंसा किनी होय, (परपासंम्हिसंथवो के०) मिथ्यात्वना प्ररूपकनो संस्तव परिचय कीधो होय, एवं पांच अतिचार मांहेलो जे कोइ अतिचार लागो होय, (तस्स के०) ते संबंधी, (डुक्कडं के०) डुष्कृत जे पाप ते मिछामि के०) मुजने निष्फल थाउ ॥ ६ ॥ इति ॥

पछी १२ बारे " व्रत अतिचार " कहीजें, ते कहे छेः—

(१) पहेलुं अणुव्रत थूलाउ पाणाइवायाउ वेरमणं त्रसजीव बेइंदिय, तेइंदिय चउरिंदिय पंचिंदिय, जाणी प्रीछी विण अपराधी आकुटी संकल्पी सलेसी हणवानिमित्तें हणवानां पच्चरकाण, जावजीवाए डुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा, एहवा पहिला थूलप्राणातिपात विरमण व्रतना पंच अइयारा, पयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं ॥ बंधे वहे छविछेए, अइनारे नत्त पाणवुछेए ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ७ ॥

अर्थः–(पहिलुं के०) पहिलुं (अणुव्रत के०) साधुना पंचमहा

व्रतनी अपेक्षायें छोटो व्रत, छे जेमां केटलुं एक अविरति पणुं मोकलुं रहे माटे एने (थूलाउ के०) थूल कहियें एवा, (पाणाइ वायाउ के०) प्राणीयोना प्राणनी अतिपात एटले हिंसा करवी ते थकी (वेरमणं के०) निवर्त्तुं छुं. (त्रसजीव के०) त्रस जीव; ते हालता चालता एवा, (वेइंदिय के०) दोय इंद्रियवाला, (ते इंदिय के०) तीन इंद्रियवाला, (चउरिंदिय के०) चार इंद्रियवा ला, (पंचिंदिय के०) पांच इंद्रिय वाला जीव; तेने (जाणी के०) जाणीने, (प्रीछी के०) ओलख्यांथकां; (विण अपराधी के०) निरपराधी जीवने (आकुटी के०) उदेरी (संकल्पी के०) सं कल्प करीने, (सलेसी के०) लेश्यासहित, (हणवा निमित्तें के०) हणवानी बुद्धियें करीनें, हणवानां पच्चरकाण कीधां छे तें आ प्रमाणें के (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी (डुविहं के०) दोय करण; अने (तिविहेणं के०) तीन जो गसूं (न करेमि के०) हुं करुं नहीं; (नकारवेमि के०) डुजा पासें हुं करावुं नहीं, (मणसा के०) मनें करी, (वयसा के०) व चनें करी, (कायसा के०) कायायें करी. हिंसा करुं नही एहवा प हिला थूल एटले महोटा,(प्राणातिपात के०) जीवनी हिंसा करवा थकी (विरमणव्रतना के०) निवृत्तवा रूप व्रतना (पंच अइया रा के०) पांच अतिचार, (पयाला के०) महोटा छे ते, (जाणि यव्वा के०) जाणवा, पण (न समायरियव्वा के०) आदरवा नही, (तं जहा ते आलोउं के०) ते जिम छे तिम तेनां नाम कहीने आलोउं छुं, (बंधे के०) जीवने गाढे बंधणे बांध्यो होय, (वहे के०) गाढा घाव घाल्या होय, (छविछेए के०) शरीरना अवयवो छेद्या होय, (अइभारे के०) अति भार भर्यो होय, (भत्त पाणवुछेए के०) अन्न पाणीनो व्युछेद कीधो होय, (तस्स

मिच्छामि डुक्कडं के०) ते अतिचार रूप डुष्कृत जे पाप ते म्हारुं निष्फल थाउ ॥ ८ ॥ इति ॥

(९) बीजुं अणुव्रत थूलाउ मोसावायउ वेरमणं कन्नालिए गोवालिए, जोमालिए, थापण मोसो, मोटकी कूडी साख, इत्यादिक मोटकूं जूठ बोलवा पच्चरकाण जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं, न करेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा बीजा थूल मृषावादविरमण व्रतना पंच अइयारा, जाणियवा, न समायरिवा तं जहा ते आलोउं, सहसाज्नरकाणे, रहस्साज्नरकाणे, सदारा मंतज्नेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ ए ॥

अर्थः—बीजुं अणुव्रत, (थूलाउ के०) म्होटा. (मोसावायउ के०) मृषावादथकी, एटले जूठुं बोलवाथी. (वेरमणं के०) हुं निवर्तुं बुं. (कन्नालिए के०) कन्या तथा वर संबंधि जूठ, (गोवालिए के०) गाय, ज्नेंष आदि ढोर संबंधि जूठ, (जोमालिए के०) जमीन संबंधि जूठ, (थापणमोसो के०) कोईनी स्थापण उलववी, (मोटकी कूडी साख के०) मोटी खोटी साक्षी ज्नरवी, (इत्यादिक के०) ए आदें करीनें, (मोटकूं जूठ के०) म्होटुं जूठ, (बोलवा के०) बोलवानुं (पच्चरकाण के०) पच्चरकाण, (जावजीवाए के०) जावजीव लगें, (डुविहं तिविहेणं के०) इत्यादिक नो अर्थ आगल लखाइ गयो बे, (सहसाज्नरकाणे के०) सहसात्कारें कोई प्रत्यें कूडुं आल दीधुं होय, (रहस्साज्नरकाणे के०) कोईनी रहस्य ते बानी वात प्रगट कीनी होय, (सदारामंतज्नेए के०) पोतानी स्त्रीना मर्म प्रकाश्या होय, (मोसोवएसे के०)

मृषा ते खोटो उपदेश दीधो होय, (कूडलेहकरणे के०) कूडालेखनुं करवुं एटले खोटा लेख लिख्या होय, (तस्स मिच्छामि डुक्कडं के०) ते पाप म्हारुं निष्फल थाजो ॥ ए ॥ इति ॥

(३) त्रीजुं अणुव्रत थूलाउ अदिन्नादाणाउ, वेरमणं, खातर खणी, गांठडी छोडी, तालुं परकुंचियें करी, पडी वस्तु धणीयाती जाणी लेवी, इत्यादिक मोटकूं अदत्तादान लेवानां पच्चरकाण, सगा संबंधी, व्यापारसंबंधी तथा निभ्रमी वस्तु उपरांत आदत्तादान लेवानां पच्चरकाण जावजीवाए डुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा त्रीजा थूल अदत्तादान विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउं. तेनाहडे, तक्करप्पउगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूडतोले, कूडमाणे, तप्पडिरुवगववहारे, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १० ॥

अर्थः–(त्रीजुं अणुव्रत के०) त्रीजुं अणुव्रत (थूलाउ के०) मोहोटुं, (अदिन्नादाणाउ के०) अण दीधेलुं लेवाथकी, एटले चोरी करवाथकी, (वेरमणं के०) निवर्तुं छुं (खातरखणी के०) कोइना घरमां खातर पाडी चोरी कीधी होय, (गांठडी छोडी के०) कोईनी गांठडी छोडी होय, (तालुंपरकुंचियेंकरी के०) कोईनुं तालुं बीजी कुंचीथी उघाडीहोय, (पडी वस्तु धणीयाती जाणी लेवी के०) कोईनी पडेली वस्तुनो, कोई धणी छे एम जाण्यां छतां ते लेवी, (इत्यादिक मोटकूं के०) ए आदि मोटकां, (अदत्तादान के०) धणीना दीधा विनानी वस्तुने (लेवानां पच्चरकाण के०) लेवानो

त्याग, अने पोताना सगां वाहालां संबंधी कोइ चीज होय अ थवा व्यापर संबंधी कोइ चीज नमुना दाखल तथा सोपारीनो कटको प्रमुख जे उपाडवाथकी तेना मालेकने कोइ भ्रम उपजे नही तेनी जयणा उपरांत पच्चरकाण (जावजीवाए के०) जा वजीव सुधी, डुविहं तिविहेणं, इत्यादिनो अर्थ सुलभ छे. एना पांच अतिचार कहे छे. (तेनाहडे के०) चोरीनी वस्तु लीनी होय, (तक्करप्पउगे के०) चोरने द्रव्य, उपगरण वगेरे कोइ स हाय दीनी होय, (विरुद्धरज्जाइक्कमे के०) राज्य विरुद्ध कार्य कीधुं होय,राजानुं दाण भांग्युं होय,तथा राजायें मना करेला गुन्हा कस्या होय, (कूडतोले के०) खोटां तोलां कीनां होय, (कूडमाणे के०) खोटां मापां कीनां होय, (तप्पडिरुवगववहारे के०) एक वस्तु मांहे ते वस्तु जेवीज बीजी वस्तुनी भेल संभेल कीनी होय, सर सी वस्तु देखाडीने नरसी वस्तु आपी होय, तो (तस्स मिच्छामि डुक्कडं के०) तेनुं पाप म्हारे निष्फल थाजो ॥१०॥इति॥

(४) चोथुं अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमणं, सदारा संतोसिए अवसेसं,मेहुणविहं पच्चरकाण,ए पुरुषने.अने स्त्रीने सभर्तारसंतोसिए, अवसेसं मेहुणनुं पच्चरकाण, अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाएं करी मेहुण से ववानुं पच्चरकाण होय, तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच सं बंधी मेहुणनुं पच्चरकाण, जावजीवाए देवता संबंधी डु विहेणं तिविहेणं,न करेमि,न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, मनुष्य तिर्यंच संबंधी एगविहं एगविहेणं न क रेमि, कायसा, एहवा चोथा थूलमेहुण विरमणव्रत ना पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं ज

हा ते अलोउं, इत्तरिय परिग्गहियागमणे, अपरिग्ग हियागमणे. अनंगकीडा, परविवाहकरणे, कामभो गेसु तिव्वाभिलासा, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥

अर्थः– (चोथुं अणुव्रत के०) चोथुं अणुव्रत (थूलाउ के०) महोटा (मेहुणाउ के०) मैथुन थकी (वेरमणं के०) निवर्तुं छुं, (सदारा के०) पोतानी स्त्रीथीज (संतोसिए के०) संतोष राखवो, (अवसेसं के०) ते शिवाय बीजा कोइनी साथें (मेहुणविहं के०) मैथुन सेववानां (पच्चख्काण के०) त्याग बंधी छे, ए पुरुष आश्रयी कह्युं अने स्त्रीने (सभर्तार के०) पोताना भर्तारथी (संतोसिए के०) संतोष राखवो. (अवसेसं के०) ते शिवाय बीजा कोइनी साथें (मेहुणनुं के०) मैथुन सेववानी (पच्चख्काण के०) बंधी, अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायायें करी मेहुण सेववानुं पच्चख्काण होय एटले मैथुन सेववानी बंधी होय, तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच संबंधी (मेहुणनुं के०) मैथुन सेववानुं (पच्चख्काण के०) त्याग, (जावज्जीवाए के०) ज्यांसुधी जीवुं, त्यां सुधी (देवतासंबंधि के०) देवतानी साथें डुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा अने (मनुष्य तिर्यंच संबंधि के०) माणस, तथा पशु वगेरेनी साथें (एगविहं के०) एक करण (एगविहेणं के०) एकजोगें (नकरेमि के०) हुं करूं नही, (कायसा के०) कायायें करी, एहवा चोथा (थूल मेहुणविरमणव्रतना के०) महोटां मैथुन त्यागकरवा संबंधि व्रतना (पंचअइयारा के०) पांच अतिचार, जाणियव्वा न समायरिव्वा तं जहा ते (अलोउं के०) आलोचुं छुं, (इत्तरिय परिग्गहिया गमणे के०) इत्वरते स्वल्पकाल मास छ मास पर्यंत कोइ वेश्या प्रमुखने राखी तेनी साथें, गमन कीधुं होय, (अपरि

ग्गहियागमणे के०) जे परणेली न होय, एवी कुमारिका, अथवा विधवा जेनो कोइ धणी न होय जेनुं कोइयें परिग्रहण कर्युं नथी तेने अपरिग्रहीता कहीयें तेनी सार्थे गमन कीधुं होय, (अनंग कीडा के०) अत्यासक्तियें स्वदेह परदेह अनंग जे काम तेनी चेष्टा कीधी होय हास्य, कुतूहल कीधां होय, (परविवाहकरणे के०) पोतानां गोरु टालीने परनां गोरु संबंधि विवाह, नात्रुं मेलव्युं होय, (कामभोगेसु के०) काम भोगने विषे, (तिव्वाभिलासा के०) तीव्र परिणामें अत्यंत अभिलाषा राखी होय, (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) तें संबंधि कीधेलुं पाप महारुं निष्फल थाजो ॥११॥इति॥

(५) पांचमुं अणुव्रत थूलाउ परिग्गहाउ, वेरमणं, खित्तवत्थुनुं यथापरिमाण, हिरण्णसोवन्ननुं यथापरिमाण, धनधान्यनुं यथापरिमाण, दुपदचउप्पदनुं यथापरिमाण, कुविय धातुनुं यथापरिमाण, ए यथापरिमाण कीधुं छे, ते उपरांत पोतानुं करी परिग्रह राखवानां पच्चक्काण,जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं, न करेमि,मणसा,वयसा, कायसा एहवा पांचमा थूलपरिग्रहपरिमाण व्रतना, पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, खित्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरण्णसोवन्नप्पमाणाइक्कमे, धनधान्नप्पमाणाइक्कमे दुपदचउप्पदप्पमाणाइक्कमे, कुवियप्पमाणाइक्कमे,तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥१२॥इति॥

अर्थः—पांचमुं अणुव्रत (थूलाउ के०) मोहोटुं परिग्रह जे दोलतने वगेरे ते (वेरमणं के०) तजवा विषेनुं ते कहेछे (खित्त के०) खेत्रादिक ते उघाडी जमीन,(वत्थुनुं के०) घरादिक ढांकी जमीननी

(यथापरिमाण के०) जेटली मर्यादा कीधी छे, (हिरम्र के०) रूपुं (सोवन्नुं के०) सोनानी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणे मर्यादा कीधी छे, (धण के०) मोरबंधनाणुं, (धान्नुं के०) शाल्यादिक धान्यनी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणें मर्यादा कीधी छे, (डुपद के०) बेपगां मनुष्यादिक (चउप्पदनुं के०) चोपगां ढोरादिकनी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणें मर्यादा कीधी छे (कुविय धातुनुं के०) सर्वे घरनी वस्तु ते घरवखरी वगेरेनी, (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणें मर्यादा कीधी छे, ए यथापरिमाण कीधुं छे. ते उपरांत पोतानुं करी परिग्रह राखवानां पच्चरकाण (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी, एगविहं इत्यादिनो अर्थ सुगम छे तेथी लख्यो नथी. एना पांच अतिचार कहे छे. (खित्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे के०) उघाडी जमीन तथा ढांकी जमीननुं प्रमाण, अतिक्रम्युं होय, (हिरम्रसोवन्नुप्पमाणाइक्कमे के०) रुपा तथा सोनानी मर्यादा उल्लंघी होय,(धणधान्नुप्पमाणाइक्कमे के०) रोकड नाणुं तथा दाणानी मर्यादा उल्लंघी होय, (डुपदचउप्पदप्पमाणाइक्कमे के०) बेपगां, चोपगांनी मर्यादा उल्लंघी होय, (कुवियप्पमाणाइक्कमे के०) घरवखरीनी मर्यादा उल्लंघी होय, (तस्स मिच्छामि डुक्कडं के०) तेनुं पाप म्हारो निष्फल थाजो ॥ १२ ॥ इति ॥

(६) छट्ठुं दिशिव्रत, ऊर्ध्वदिशिनुं यथापरिमाण, अधोदिशिनुं यथापरिमाण, तिरियदिशिनुं यथापरिमाण, ए यथापरिमाण कीधुं छे, ते उपरांत सइच्छायें, कायायें जइने पंच आश्रव सेववानां पच्चरकाण. जावजीवाए, डुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा छठ्ठादिशिव्रतना पंच अइयारा, जाणियव्वा न समायरियव्वा तं

जहा ते आलोउं, उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहो दिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्ढि सयंतरध्धाए, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ ३ ॥

अर्थः– (छठुं दिशिव्रत के०) छठुं, दिशाना मान बांधवानुं व्रत, ते (ऊर्ध्वदिशिनुं के०) उंचीदिशानुं (यथापरिमाण के०) जेम प्रमाण कीधुं छे, (अधोदिशिनुं के०) नीची दिशानुं (यथाप रिमाण के०) जेम प्रमाण कीधुं छे, (तिरिय दिशिनुं के०) तीर्छी जमीन, एटले उत्तर, दक्षिण, पूर्व अने पश्चिम ए चारे दिशानुं (यथापरिमाण के०) जेम प्रमाण कीधुं छे, ए यथापरिमाण कीधुं छे ते उपरांतनीभूमिमां स्वेच्छायें कायायें जइने पंच आश्रवसेववानां पाप जोगववानां,पच्चरकाण जावजीवाए डुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा,एवी रीतें कीधां छे,एहवा छठा (दिशि व्रतना के०) करेला मानथी उपरांत दिशाने तजी देवाना व्रतना पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आ लोउं, (उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे के०) उंची दिशानुं प्रमाण अति क्रम्युं होय, मर्यादा उल्लंघी होय, (अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे के०) नीची दिशानी मर्यादा उल्लंघी होय, (तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे के०) तीर्छी दिशानी मर्यादा उल्लंघी होय, (खित्तवुड्ढि के०) क्षेत्र जमीननी वृद्धि, एटले एक दिशा घटाडीने बीजी दिशा व धारी होय. (सयंतरध्धाए के०) संदेह पड्यां छतां आगल चाल्यो होय. (तस्स मिच्छामि डुक्कडं के०) तेनुं पाप कीधेलुं म्हारो निष्फल थाजो ॥ १३ ॥ इति ॥

(७) सातमुं व्रत उवजोग परिजोगविहं पच्चख्खायमाणे उल्लणियाविहं,दंतणविहं, फलविहं, अप्भंगणविहं, उवट्टणाविहं, मज्जणविहं, वत्थविहं, विलेवणविहं,

पुप्फविहं, आभरणविहं, धूपविहं, पेजविहं, भक्खणविहं, उदनविहं, सूपविहं, विगयविहं, सागविहं, माहुरविहं जिमणविहं, पाणीविहं मुखवासविहं, वाहनिविहं, वाहनविहं, सयणविहं, सचित्तविहं, दव्वविहं, इत्यादिकनुं, यथापरिमाण कीधुं छे, ते उपरांत उवभोग परिभोग भोगनिमित्तें भोगववा पच्चक्खाण. जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा सातमा उवभोग परिभोग डविहे पन्नत्ते तं जहा, भोयणाउय, कम्मउय, भोयणाउ समणोवासयाणं पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, सचित्ताहारे, सचित्तपडिबध्धाहारे, अप्पोलिउसहिभक्खणया, डुप्पोलिउसहिभक्खणया, तुछोसहिभक्खणया, कम्मउण समणोवासयाणं, पनरस कम्मादाणाइ, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्ज, लक्खवाणिज्ज, केसवाणिज्ज, रसवाणिज्ज, विसवाणिज्ज, जंतपिल्लणकम्मे, निलंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायपरिसोसणया, असईजण पोसणया, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १४ ॥ इति ॥

अर्थः— सातमुं व्रत (उवभोग के०) जे वस्तु एकज वार भोगवाय एवा जे अन्नादिक तेनो विधि प्रमुख (परिभोगविहं के०)

उपन्नोग वस्तु जे वारंवार न्नोगववामां आवे एवा वस्त्र आन्नरण प्रमुख तेनुं (पच्चरकायमाणे के०) पच्चरकाण करवुं, ते कहे वे (उल्लणि याविहं के०) शरीरनें लुहवानां वस्त्र ते अंगूबा तेना प्रकारनुं, (दंतणविहं के०) दातणना प्रकारनुं, (फलविहं के०) वृक्षनाफल प्र मुखना प्रकारनुं (अन्नंगणविहं के०) तेल प्रमुख शरीरें चोपडवाना प्रकारनुं, (उवट्टणविहं के०) मर्दन करवानी वस्तु प्रमुखना प्रकारनुं, (मज्जणविहं के०) न्हावाना पाणी प्रमुखना प्रकारनुं (वत्थविहं के०) वस्त्रना प्रकारनुं, (विलेवणविहं के०) चंदनादिक विलेपन करवाना तथा तिलक प्रमुख करवाना प्रकारनुं (पुप्फविहं के०) चंपादिकना फूल प्रमुखना प्रकारनुं, (आन्नरणविहं के०) घरेणाना प्रकारनुं (धूपविहं के०) धूप करवाना प्रकारनुं (पेजविहं के०) पीवानी वस्तु प्रमुखना प्रकारनुं, (न्नरकणविहं के०) सुखडी प्रमुख न्नोजन करवा योग्य वस्तुना प्रकारनुं, (उदनविहं के०) मव प्रमुखनी दालना प्रकारनुं, (सूपविहं के०) शाल चावलना प्रकारनुं (विगयविहं के०) घृत, तेल, दूध, दही, गोल, आदि विगयना प्रकारनुं (सागविहं के०) नीलां पत्र, शाक, प्रमुखना प्रकारनुं, (माहुरविहं के०) मधुरपदार्थना प्रकारनुं, (जिमणविहं के०) जिमवानो विधि जे अमुक आहार जमवो तेना प्रकारनुं, (पा णीविहं के०) पाणी प्रमुख पीवाना प्रकारनुं,(मुखवासविहं के०) सो पारी, लविंगादिक मुखवास वस्तुना प्रकारनुं, (वाहनिविहं के०) पगेपहेरवाना पगरखा प्रमुखना प्रकारनुं, (वाहनविहं के०) वाह नना प्रकारनुं, (सयणविहं के०) शय्या पलंग आदि सुवानी वस्तुना प्रकारनुं (सचित्तविहं के०) सचित्त वस्तु तेने खावाना प्रकारनुं, (दव्वविहं के०) आज म्हारे अमुक अमुक आटलांज द्रव्य खावां उपरांत न खावां तेहना प्रकारनुं, (इत्यादिकनुं यथापरिमाण कीधुं वे के०) इत्यादि वस्तुनुं जेम प्रमाण कीधुं वे, एटले

फलाणी वस्तु मारे आज आटली खावी, के पीवी तथा फलाणी वस्तु आज एटली जोगववी इत्यादि, (ते उपरांत के०) जे हद कीधी वे ते उपरांत, (उवजोग के०) जे वस्तु एक वार जोगववामां आवे ते, (परिजोग के०) जे वस्तु वारंवार जोगववामां आवे ते, (जोगनिमित्ते के०) जोगने कारणें, (जोगववापच्चरकाण के०) जोगववानी बंधी, (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी, एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा सातमा उवजोग परिजोग, (डुविहे के०) दोय प्रकारें, (पन्नत्ते के०) प्ररूप्या वे, (तंजहा के०) ते कहे वे, (जोयणाउय के०) एक जोजन संबंधि, (कम्मउय के०) बीजुं कर्म ते व्यापार संबंधि जाणवुं, तेमांथी (जोयणाउसमणोवासयाणं के०) जोजन व्रत संबंधिना श्रावकने (पंचअइयारा के०) पांच अतिचार वे,ते जाणियव्वा न समायरियव्वा (तंजहा तें आलोउं के०) ते जिम वे तिम कहे वे. (सचित्ताहारे के०) सचित्त वस्तु खावी एटले वनस्पति आदिक काचुं फल खाय, (सचित्तपडिबद्धाहारे के०) सचित्तनी साथें लागेली प्रतिबद्धित वस्तु एटले लींबडानो गुंदर इत्यादिक सचित्त सहित वस्तु होय तेने अचित्त जाणीने खाय, (अप्पोलिउसहिजरकणया के०) अपक्वौषधि ते जे वस्तुमां जीवना प्रदेश रही गया होय, एवी तत्कालनी वाटेली अथवा पीशेली वस्तु प्रमुख, (डुप्पोलिउसहिजरकणिया के०) डुःपक्वौषधि ते कांइक काचीने कांइक पाकी रही होय, जेने पूरुं अग्नि प्रमुख शस्त्र नथी प्रणम्युं एवी वस्तुनो जोग करें, (तुब्बोसहिजरकणया के०) ते खावुं थोडुं अने नाखी देवुं घणुं पडे, एवी वस्तु जे सीताफल, शेलडी प्रमुख ए पांच प्रकारनी वस्तु खाधी होय तो अतिचार लागे,ए जोजनथी पांच अतिचार कह्यो,हवे (कम्मउणं के०) व्यापारना, (समणोवासयाणं के०) श्रमणोपासक एटले श्रावकने (पनरसकम्मादाणाइ के०) प

न्नर प्रकारें कर्म आववाना स्थानकरूप पन्नर अतिचार ठे,ते जाणि यवा न समायरियवा (तंजहा ते आलोउं के०) ते जेम ठे तेम आलोचुं बुं, (इंगालकम्मे के०) अग्निनो व्यापार लोहकारादिकनुं कर्म कीधुं होय,(वणकम्मे के०) वननां जाड वृक्ष कपावी व्यापार कीधो होय, (साडिकम्मे के०) गाडादिक करावीने वेच्यां होय,धरी,उंध प्रमुखनो व्यापार कीधो होय (नाडिकम्मे के०) गाडां, घरादिक, उंट,घोडा, बेल प्रमुखना नाडानो व्यापार कीधो होय, (फोडिकम्मे के०) खाण खणाववी पत्रा फोडाववा कर्षण करवुं,इत्यादि पृथ्वीनां पेट फोडाववां, कूवा, वाव आदि कराववा संबंधि कर्म कर्यां होय, ए पांच कुकर्म, श्रावकने अत्यंतपणें वर्जवां, (दंतवाणिज्ज के०) आगरमां जइ हाथीदांत, नखला, कस्तूरी मृगचर्म, इत्यादि वस्तु लेवी, ते दांतनुं वाणिज्य एटले व्यापार कीधो होय, (लक्ख वाणिज्ज के०) लाखनो व्यापार करवो, (रसवाणिज्ज के०) म दिरादिक रसनो व्यापार करवो, (केसवाणिज्ज के०) द्विपद चउ प्पदजीवोनो व्यापार करवो,(विसवाणिज्ज के०) विष जे जेर, लोह, हथीयार, प्रमुख जीवघातक वस्तुनो व्यापार कीधो होय,ए पांच कुवाणिज्य श्रावकने वर्जवां, (जंतपिल्लणकम्मे कें०) घाणी, उ खल, मुशल, घंटी प्रमुखनो व्यापार, (निल्लंछणकम्मे के०) बल दादिकने अंकाववा, मांन देवराववा, खासी कराववी (दवग्गिदाव णया के०) दव देंवा, देवराववा, (सर के०) सरोवर, (दह के०) द्रह, कुंम (तलाय के०) तलावना पाणीने, (परिसोसणया कें०) समस्त प्रकारें शोषाव्युं होय (असईजण पोसणया के०) कुर्कुट, श्वान, मांजारादिक हिंसक जीवने पोष्या होय तथा डुराचारी दासदासी प्रमुखनुं पोषण कर्युं होय, ते असती जन पोषण कहियें, ए पांच सामान्य कर्म निश्चें वर्जवां, (तस्स मिल्लामि डुक्कडं के०) तेनुं डुष्कृत एटले पाप महारुं निष्फल थाजो ॥ १४ ॥

८ आठमुं अनर्थदंड विरमण व्रत. ते चउविहे, अ णठ्ठादंडे, पन्नत्ते, तं जहा, अवज्झाणायरिए, पमायाय रिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे, एहवा अनर्थदंड सेववा पच्चरकाण, जावजीवाए, डुविहं,तिविहेणं, न क रेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा आठमा अनर्थदंड विरमण व्रतना पंच अइयारा, जा णियव्वा, न समायरियव्वा; तं जहा ते आलोउं, कंद प्पे, कुक्कुइए, मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवभोगपरि भोग अइरत्ते, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १८ ॥ इति ॥

अर्थः— आठमुं (अनर्थदंड के०) जे अर्थ विना कर्मबंधनां कारण सेववां, कारण विना आत्मानें दंडाववो ते अनर्थदंड कहीयें तेथकि (वीरमण के०) निवर्त्तवुं. ते अनर्थदंड, विरमण व्रत करीयें ते (अणठ्ठादंड के०) अनर्थ दंडे, (चउविहे के०) चार प्रकारें (पन्नते के०) प्ररूप्यो, कह्यो (तं जहा के०) ते जिम छे तिम कहे छे, (अवज्झाणायरिए के०) अपध्यानाचरित ते खोटुं ध्यान धरवुं, माठी चिंतवणा करवी, (पमायायरिए के०) होड करवी, विकथा करवी, खेल करावबा, सर्व रात्रियें सुई रहेवुं घीतैलादिकनां ठाम उघाडां राखवा ते प्रमादाचरित, (हिंसप्पयाणे के०) जे थकी हिंसा थाय एहवा कोश कोदाल प्रमुख शस्त्र आपवां, ते हिंसप्रदान, (पावकम्मोवएसे के०) बलद समरावो,खेतर खेडो, गाडी जोडो, इत्यादि पाप कर्मनो उपदेश अर्थ विना करवो, ते हिंसप्रदान एहवा अनर्थदंड सेववा पच्चरकाण, जावजीवाए, डु विहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा, आठमा अनर्थदंडविरमणव्रतना पंच अइयारा, जाणि

यवा न समायरियवा, तं जहा, ते आलोउं (कंदप्पे के०) जे थकी काम वृद्धि थाय. एहवी वात कीधी होय, (कुक्कुइए के०) जांमनी पेरें कुचेष्टा कीधी होय, (मोहरिए के०) मौखर्य ते वाचालपणे जेम तेम बोल्यो होय, पारकी तांत कीधी होय, (संजुत्ताहिगरणे के०) उखल, मुशलादिक अधिकरण एकठां करी मूक्यां होय, (उवनोगपरिनोग अइरत्ते के०) उपनोग परिनोगमां अतिरक्त रहे, एटले नोगविलासमां बहु मची रह्या होइयें, (तस्स मिच्छामि डुक्कडं के०) तेनुं पाप मने निष्फल थाजो ॥ १५ ॥ इति ॥

नवमुं सामायिक व्रत, सावज्ज जोगनुं, वेरमणं, जावनियमं, पज्जुवासामि, डुविहं, तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करंतं नाणु, जाणइ, वयसा, कायसा, एहवी सद्दहणा, परूपणा, करियें तिवारें फरसनायें करी शुद्ध, एहवा नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा, ते आलोउं, मणडुप्पणिहाणे, वयडुप्पणिहाणे कायडुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइविहूणे अकरणियाए, सामाइयस्स, अणवुठियस्स करणयाए, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १६ ॥ इति ॥

अर्थः—नवमुं (सामायिक व्रत के०) समतारूप सामायिकनुं व्रत, (सावज्ज जोगनुं के०) सावद्य जे पाप तेणें करी सहित एवा मनादि योग तेनुं (वेरमणं के०) निवर्त्तवुं, (जावनियम के०) ज्यां सुधी सामायिकनी नियम एटले मर्यादा कीधी छे त्यां सुधी, (पज्जुवासामि के०) शुन जोगनें पर्युपासुं एटले सेवुं, (डुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा करंतं नाणुजाणइ, वयसा, कायसा, एहवी (सद्दहणा के०) श्रद्धा,

रुचि,प्ररूपणा, करियें त्यारें फरसनायें करीशुं ९,एहवा नवमा सामा यिक व्रतना,पंच अइयारा,जाणियव्वा,न समायरियव्वा,तं जहा,ते आ लोउं (मणदुप्पणिहाणे के०) सामायिक कीधुं छे तेमां मन मातुं व र्त्ताव्युं होय, (वयदुप्पणिहाणे के०) वचन मातुं वर्त्ताव्युं होय, (काय दुप्पणिहाणे के०) काया माठी प्रवर्त्तावी होय, (सामाइयस्ससइवि हूणे अकरणियाए के०) सामायिकने बराबर कीधुं के नही ? तेनी ख बर न रही होय,ते सइविहूणे एटले स्मृतिविहीन अतिचार, (सामाइ यस्स के०) सामायिकने (अणवुठियस्स करणयाए के०) पूरुं थया विना पाख्युं होय,ते अनवस्था दोष नामे पांचमो अतिचार जाणवो (तस्स मिच्छामि डुक्कडं के०) तेनुं पाप मनें निष्फल थाजो ॥ १६ ॥

१० दशामुं देसावगासिक व्रत, दिनप्रतें प्रभातथकी प्रारंभीने पूर्वादिक छदिशें जेटली भूमिका मोकली रा खी छे, ते उपरांत, सइच्छायें, कायायें,जइने, पांच आ श्रव सेववा पच्चक्काण,जाव अहोरत्तं,दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा करंतं नाणुजाणिज्जा,वयसा,कायसा,जेटली भूमिका मोकली राखी छे, तेमांहिज जे द्रव्यादिकनी मर्यादा कीधी छे, ते भोगववी ते उपरांत, उवभोग, परिभोग, भोगनि मित्तं, भोगववा पच्चक्काण, जावअहोरत्तं, एगविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, काय सा, एहवा दशमा देशावकाशिक व्रतना,पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा, ते आलोउं, आण वणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, ब हिया पुग्गलपक्खेवे, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥१७॥ इति॥

अर्थः—दशमुं(देसावगासिक व्रत के०) देशथकी दिशाउनो अव काश करवो संक्षेपवो तेमज सर्वे व्रतोना नियम संक्षेपवा एटले प्रथम घणी बूट राखी होय ते प्रतिदिवसें संक्षेपीने थोडी बूट रा खवी ते संबंधी व्रत ते दिनप्रत्यें प्रनातथकी प्रारंजीने बदिशें जेटली जूमिका मोकली राखी बे एटले सवारमां उठीने मान कर्युं बे के आज म्हारे दरेक दिशायें अटला गाउ उपरांत जावुं नही? ते उपरांत (सइबाइ के०) पोतानी इबायें करी कायायें जइने जीव हिंसादिक पांच आश्रव, सेववानां पच्चरकाण (जाव अहो रत्तं के०) यावत् दिवस ने रात्रि सुधी,डुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करंतं नाणुजाणिज्जा, वय सा कायसा, एवी रीतें करेला बे. तिहां जेटली जूमिका मोकली राखी बे, तेमांही जे इव्यादिकनी मर्यादा कीधी बे, के आज म हारे एटला पदार्थ उपजोगमां लेवा ते उपरांत उवजोग परिजोग एहवा बे प्रकारें जोगयोग्य वस्तुने जोगनिमित्तें जोगनी इबाएं जोगववानां पच्चरकाण (जावअहोरत्तं के०) यावत् एक दिवसरा त्रि सुधी (एगविहं के०) एक करणे, अने (तिविहेणं के०) त्रण जोगें, करी नकरेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एवी रीतें पच्चरकाण कर्यां बे. एहवा दशमा देशावकाशिक व्रतना पंच अइयारा,जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा,ते आलोउं (आ णवणप्पउगे के०) प्रमाण करेली जूमिथी बाहिरली जूमियें कोइ जनार माणसनी हस्तक कोइ पदार्थनुं आनयन एटले मगाववुं ते प्रथम आनयन प्रयोगनामा अतिचार जाणवो. (पेसवण प्पउगे के०) प्रमाण करेली जूमिथी उपरांत कोइ चाकर मोक लीने वस्तु मगाववी. क्रयविक्रयनो आदेश देवो ते बीजो प्रेषवण प्र योगातिचार. (सदाणुवाइ के०) सादनो उपाय ते कोइ माणसने खुंखारोकरीने हद उपरांतथी बोलाववो ते शब्दानुपाति अतिचार,

(रूवाणुवाइ के०) पोतानुं रूप देखाडीने कोईने बोलावे, (बहि यापुग्गलपरकेवे के०) निमेली नूमिकाथी बाहिर रहेला पुरुषने कांकरादिक नाखी बोलावे, ते पांचमो पुजलप्रक्षेपातिचार. ए पांच अतिचारमांहे कोइ अतिचार दोष लाग्यो होय तो (तस्स मिछा मि डुक्कडं के०) तेनुं पाप मने निष्फल थाजो ॥ १७ ॥ इति ॥

(११) इग्यारमुं पोषध व्रत, असणं, पाणं, खाइमं, साइमनुं पच्चरकाण, अबंनन्नुं पच्चरकाण, अमुक मणि सुवर्णनुं पच्चरकाण, मालावन्नग विलेपणनुं पच्चरकाण, सब मुसलादिक सावज्ज जोगनुं पच्चरकाण, जावअहोर त्तं पज्जुवासामि. डुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कार वेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करंतं नाणुजाणइ, वय सा, कायसा, एहवी सद्दहणा, परूपणा करीयें, तेवारें फरसनायें करी शुद्ध, एहवा इग्यारमा पडिपुन्नं पो षध व्रतना, पंच अइयारा, जाणियवा न समायरिय वा, तं जहा ते आलोउं, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारए, अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय सिज्जा संथार ए, अप्पडिलेहिय, डुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणनूमि, अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय उच्चार पासवणनूमि, पोसहस्स सम्मं अणणुपालणया, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १८ ॥ इति ॥

अर्थः— इग्यारमुं (पोषधव्रत के०) पाप रहित थई, संवरें करी आत्माने पोषवो ते संबंधि व्रत ते चार प्रकारें छे, (असणं के०) अन्न, (पाणं के०) पाणी, (खाइमं के०) मेवानी जात, (सा इमनुं के०) मुखवास सोपारी लविंग प्रमुख खावानुं (पच्चरका

ए के०) निषेधवुं ते प्रथम चार प्रकारें आहार परिहार पोसह तथा (अबंनतुं पच्चरकाण के०) अब्रह्मचर्यनी बंधी, ते बीजुं ब्रह्मचर्यपोसह (अमुक के०) जे आन्तरण सुखें उतार्यां न उतरे ते मूकीने उपरांत, (मणि के०) हिरा प्रमुख, (सुवर्ण के०) सुवर्ण प्रमुखना आन्तरण राखवानी (पच्चरकाण के०) बंधी तथा (मालाव न्नग के०) गुलाबनां फूल आदिकनी मालानुं अने वन्नग एटले वर्णक वस्तु ते अबीर, गुलाल, अलताादिक जाणवा. (विलेपणतुं के०) विलेपन करवानुं पच्चरकाण. ते त्रीजो शरीर सत्कारपरिहार पोसह. तथा (सब के०) शस्त्र,हथीयार (मुसलादिक के०) आयुध,लाकडी, सांबेलां वगेरे, सावज्ज जोगनुं पच्चरकाण एटले पापिष्ठ काम करवानी बंधी, ते चोथो सर्व सावद्ययोग व्यापार परिहार पोसह. एवुं व्रत (जाव अहोरत्तं के०) जाव रात्रि दिवस सुधी, (पज्जुवासामि के०) हुं पर्युपासुं एटले सेवुं. आचरुं, डविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि,मणसा, वयसा, कायसा, करंतं नाणुजाणइ, वयसा, कायसा, एहवी, (सद्दहणा के०) ए करवानी श्रद्धा थाय, (परूपणा करीयें के०) वात करीयें. तेवारें फरसनायें करी शुद्ध एटले ते वखत शक्ति मुजब शुद्ध होजो, एहवा इग्यारमा (पडिपुन्नं के०) प्रतिपूर्ण एटले आदिथी अंत पर्यंत समताभावें संपूर्ण एवुं (पोषधव्रतना के०) धर्मध्यानें तथा संवरें करी आत्माने पोषवानुं व्रत तेना, पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं (अप्पडिलेहियडुप्पडिलेहियं सिज्ञा संथारए के०) पाट प्रमुख शय्या तथा पथारीने, ए सद्या संथाराने अप्रतिलेपित एटले बराबर प्रतिलेख्यां न होय अने प्रतिलेख्यां तो कांइक प्रतिलेख्यां एटले कांइ जोयां कांइ न जोयां ते प्रथम अप्रतिलेपितडःप्रतिलेपितसद्यासंथारातिचार. (अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय सिज्ञासंथारए के०) सद्या संथाराने प्रमार्ज्यो न

होय अथवा प्रमार्ज्यों तो कांइ पुंज्यो प्रमार्ज्यों कांइ न पुंज्यो न प्रमार्ज्यों एम यद्वा तद्वा पुंजे, ते बीजो अप्रमार्जितदुःप्रमार्जितसद्या संथार अतिचार. (अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय उच्चारपासवण नूमि के०) एवी रीतेंज वडीनीत, लघुनीत परठवानी नूमिका तेनो त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा (अप्रतिलेखित दुःप्रतिलेखित अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय उच्चार पासवणनूमि के०) वडीनीत लघुनीत परठवानी नूमिका, पुंजी नही अथवा कांइ पुंजी कांइ नही पुंजी ते चोथो अतिचार. तथा (पोसहस्स के०) पोसह कीधो ढे तेने (सम्मं के०) सम्यक् प्रकारें एटले रूडे प्रकारें (अणणुपालणया के०) अनुपालना कीधी न होय पोसहमां नोजनादिक चिंता कीधी होय, जे क्यारें पोसह पूर्ण थाशे अने क्यारें हुं नोजन करीश ? इत्यादिक पांचमो अतिचार जाणवो. ए पांच अतिचारमां हेलो जे कोइ अतिचार लाग्यो होय (तस्समिच्छामिडुक्कडं के०) तेनुं कीधेलुं पाप मने निष्फल थाजो ॥ जातां तीन वार आवस्सही न कीधी होय, आवतां तीन वार निसही न कीधी होय, थोडी जायगा पुंजी होय, घणी जायगा न पूंजी होय, काजो परठीने तीन वार वोसिरे वोसिरे न कीधो होय, परठवतां नूमिना धणीनी आज्ञा न मागी होय, पोसहमां निज्ञ विकथादिक प्रमाद सेव्यो होय, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १७ ॥ इति ॥

१२ बारमुं अतिथि संविनागव्रत, समणे निग्गंथे, फासुअं एसणिज्जेणं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमेणं, वह, पडिग्गह, कंबल, पायपुछणेणं, पाडिहारिय, पीढ, फलग, सिज्जासंथारएणं, उसह नेसज्जेणं, पडिलानेमाणे, विहरामि, एहवी सद्दहणा, परूपणा, फरसनायें करी शुध्द, एहवा बारमा अतिथि

संविभाग व्रतना, पंच अइयारा जाणियव्वा, न स
मायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, सचित्तनिरकेव
णिया, सचित्तपिहणिया, कालाइक्कम, परोवएसे, म
च्छरियाए, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ए॥ इति ॥

अर्थः—बारमुं (अतिथि के०) जेने तिथिनुं तहेवारनुं कांइ मुकर नथी जे अमुक तिथियें अथवा अमुक तहेवारने दिवसें अहार लेवा आवशे, परंतु अणचिंत्या आवे एहवा साधुने वास्ते, (संविभाग व्रत के०) पोताने माटें निपजावेला आहारमांथी संविभाग करवो तेनुं व्रत एटले आहार करती वखत चिंतवणा करवी जे (समणेनि ग्गंथे के०) साधु निर्ग्रंथने, (फासुअं के०) प्राशुक एटले अ चित्त (एसणिज्जेणं के०) सूजतुं एटले दोष रहित साधुने कल्पे एवुं (असणं के०) अन्न, (पाणं के०) पाणी, (खाइमं के०) मेवो सुखडी प्रमुख, (साइमेणं के०) स्वादिम ते मुखवास, ए चार प्रकारनो आहार तेमज बीजां पण साधुने खपवायोग्य वस्तुनां नाम कहे छे. (वत्थ के०) वस्त्र, (पडिग्गह के०) पात्र, (कंबल के०) कांबली, (पायपुछणेणं के०) पगने लूंछवानुं पो छणुं (पाडिहारिय के०) जे वस्तु साधुने आपीने पाछी लेवाय तेवी वस्तु ते कहे छे; (पीढ के०) बाजोठ (फलग के०) पाटीयुं (सिज्ञा के०) वस्ती, पाट, स्थानक (संथारएणं के०) तृण प्रमु खनी पथारी, (उसह के०) एक वस्तु ते औषध, (भेसज्जेणं के०) घणी वस्तु मलवाथी थयेलां एवी गोली वगेरे औषधो तेने (पडिलाभेमाणे के०) प्रतिलाभतां थकां, आपतां थकां (विहरामि के०) विचरछुं, (एहवी सद्दहणा के०) श्रद्धा (परूपणा के०) उपदेश फरसनायें करी शुद्ध एहवा बारमा अतिथिसंविभाग व्र तना पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आ

लोगं, (सचित्तनिरकेवणिया के०) साधुनी गोचरीनी वेलायें, आपवा योग्य सूजती वस्तु होय तेने बीजी सचित्त वस्तुनी उपर राखी होय (सचित्तपिहणिया के०) आपवा योग्य अचित्त वस्तु होय, तेने सचित्त वस्तुयें करी ढांकी मूकी होय (कालाइक्कमे के०) कालातिक्रम ते साधुने वहोरवानो वखत टालीनें पछी अन्नपाननी निमंत्रणा करी होय (परोवएसे के०) दान देवा योग्य वस्तु पोतानी होय तेम छतां तेने न देवानी बुद्धियें पारकी कही होय, (मछरियाए के०) ईर्ष्याथी अनेरानुं दान देखी तेनी स्पर्द्धायें दान दीधुं होय (तस्स मिछामि दुक्कडं के०) तेनुं लागेलुं पाप मने निष्फल थाजो॥ १ए ॥ इति ॥

पछें " संलेषणा " को पाठ कहीजें, ते कहे छेः—

अपछिम मरणांतिय संलेहणा, झूसणा, आराहणा, पोषधसाला पूंजीने, उच्चार पासवण भूमिका, पडिलेहीने, गमणागमणे पडिक्कमिने, दर्भादिक संथारो संथारीने, दर्भादिक संथारो डुरुहिने, पूर्व तथा उत्तर दिशि, पल्यंकादिक आसणें बेसीने करयल संपरिग्गहियं, सिरसावत्तं मछए अंजली त्ति कट्टु, एवं वयासी नमोत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, जावसंपत्ताणं, एम अनंता सिद्धजीने नमस्कार करीने, जयवंता वर्त्तमान तीर्थंकरने नमस्कार करीने, पोताना धर्माचार्यने नमस्कार करीने, साधु प्रमुख चारे तीर्थ खमावीने, सर्व जीवराशि खमावीने, पूर्वें जे व्रत आदर्यां छे, तेना जे अतिचार दोष लाग्या होय, ते सर्वने आलोइ पडिक्क

मी, निंदी, निःशल्य थइने, सवं पाणाइवायं पच्चक्खामि, सवं मुसावायं पच्चक्खामि, सवं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, सवं मेहुणं पच्चक्खामि, सवं परिग्गहं पच्चक्खामि, सवं कोहं माणं जाव मिच्छा दंसण सल्लं, सवं अकरणिज्जं पच्चक्खामि, जावजीवाए, तिविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि नाणुजाणामि, मणसा, वयसा, कायसा. एम अढारे पाप स्थानक पच्चक्खीने, सवं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, चउविहंपि आहारं, पच्चक्खामि, जावजीवाए. एम चारे आहार पच्चक्खीने, जं पीयं, इमं सरीरं इठं, कंतं, पियं, मणुन्नं, मणामं, धिज्जं, विसासियं, समयं, अणुमयं, बहुमयं, भंम्फकरंम्फसमाणं, रयणकरंम्फगभूयं, माणसियं, माणं उन्हं, माणं खूहा, माणं पीवासा, माणं वाला, माणं चोरा, माणं दंसा, माणं मसगा, माणं वाहियं, पित्तियं, कप्फियं संभीमं, सन्निवाहियं, विवहारोगायंका, परिसहा, उवसग्गा, फासा फुसंति, एवं पीयणं चरिमेहिं, उस्सास निस्सासेहिं, वोसिरामि, त्ति कट्टु. एम शरीर वोसिरावीने, कालं अणवकंखमाणे, विहरामि, एहवी सद्दहणा परूपणा करियें, तिवारें फरसनायें करी शुद्ध, एहवा अपच्छिम मरणांतिय, संलेहणा, झूसणा, आराहणाना पंच अइयारा, पयाला जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउं, इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्प

उगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, काम न्नो गासंसप्पउगे तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १० ॥ इति ॥

अर्थः-(अपछिममरणांतिय के०) अपश्चिम मरणांतिक एटले पछी कांइ नथी करवुं,एवुं जे मरण ते पंमितमरण कहियें,ते पंमितमरणनी अंतें (संलेहणा के०) संलेषणा करवी अनशन करवुं आहारकषाय पातला करवा, (झूसणा के०) आत्माने झूसीने, (आराहणा के०) आराधना करीने, (पोषधसाला के०) संथारो करीयें ते स्थानकनें, (पुंजीने के०) पुंजी पडिलेहीने, (उच्चार के०) वडीनीत, (पासवण के०) लघुनीतनी (नूमिका के०) नूमिका जे तेनें (पडिलेहीने के०) प्रतिलेखी एटले जंतुप्रमुखने नजरें जोइने, (गमणागमणे के०) जातां आवतां कोइ जीव चं प्राणो होय तेने, (पडिक्कमिने के०) पडिक्कमिने (दर्नादिकसंथारो के०) माज वगेरेनो संथारो, (संथारीनें के०) संथारीने, (दर्नादिक संथारो के०) माजप्रमुखनी पथारी उपर, (डुरुहिने के०) बेसीने, (पूर्वतथाउत्तरदिशि के०) पूर्व अथवा उत्तर दिशा तरफ, (पल्यंकादिक के०) पलोंठी वगेरे जेवी पोतानी शक्ति हुवे तेवा, (आसणेबेसीने के०) आसने बेसीनें पछी (करयल के०) बे हाथ, (संपरिग्गहियं के०) जोडीने, (सिरसावत्तं के०) मस्तकें आवर्त्तन करीने, (मछए अंजली त्ति कट्टु के०) माथा उपर बे हाथ जोडेला राखी, (एवं वयासी के०) एम कहे जे, (नमुछुणं के०) नमस्कार हो, (अरिहंताणं के०) श्री अरिहंतने, (नगवंताणं के०) नगवंतने, (जावसंपत्ताणं के०) यावत् संपत्ताणं एटले मुक्तिने पाम्या. त्यां सुधिनो पाठ जे सामायिकने अंतें छे तेंटलो कहेवो, एम अनंता सिद्धजीने नमस्कार करीने पछी पोताना धर्माचार्यने नमस्कार करीने, साधु, साधवी,

श्रावक, श्राविकारूप चारे तीर्थनें खमावीने, सर्व जीवराशि खमा वीने, पूर्वें जे व्रत आदर्यां ठे,तेनां जे अतिचार दोष लागा होय ते सर्व संजारी संजारीने गुर्वादिक पासें (आलोइ के०) प्रकाशी तेथी (पडिक्कमि के०) निवृत्तिने (निंदी के०) तेनी आत्मानी साखें निंदा करीने, (निःशल्लथइने के०) शल्य रहित थइने (सव्वं पाणाइवायं के०) सर्व प्रकारें जीव हिंसा करवानां, (पच्चरकामि के०) पच्चरकाण करुं बुं, (सव्वं मुसावायं पच्चरकामि के०) सर्व प्रकारनुं जूठुं बोलवाना पच्चरकाणने, (सव्वं अदिन्नादाणं पच्च रकामि के०) सर्व प्रकारनुं अणदीधुं लेवाना पच्चरकाणने करुं बुं, (सव्वं मेहुणं पच्चरकामि के०) सर्व प्रकारें मैथुन, सेववानुं पच्च रकाण करुं बुं, (सव्वं परिग्गहं पच्चरकामि के०) सर्वथा नवप्रका रना परिग्रह राखवाने पच्चरकुं बुं, (सव्वं कोहं के०) सर्व क्रोध (माणं के०) सर्व मानथी मांमीने (जावमिच्छा दंसण सल्लं के०) यावत् मिथ्या दरिसण शल्य पर्यंत १८ पाप स्थानक (सव्वं अ करणिज्जं के०) सर्व नही करवा योग्य तेने, (पच्चरकामि के०) पच्चरकुं बुं, (जावजीवाए के०) जाव जीव सुधी, (तिविहं के०) तीन करणें करी, (तिविहेणं के०) तीन जोगें करी, (न करेमि के०) हुं करुं नहिं (न कारवेमि के०) बीजा पासें करावुं नही, (करंतंपिनाणुजाणमि के०) कोइ पाप करे तेने पण हुं रूडुं जाणुं नही, (मणसा के०) मनें करी (वयसा के०) वचनें करी (कायसा के०) कायायें करी एम अढारे पाप स्थानक प च्चरकीने (सव्वं के०) सर्व (असणं के०) अन्न (पाणं के०) पाणी (खाइमं के०) मेवो (साइमं के०) स्वादिम मुखवास ए (चउविहंपि आहारं पच्चरकामि के०) चार प्रकारना आहारने प च्चरकीने इहां निरागारी एटले साधु अनशन करतो होय तो ए रीतें पाठ कहे. अने सागारी एटले श्रावक जो अनशन करतो

होय तो पोतानी मरजी माफक जेह्वो करे, तेवो आगार राखे. (जावजीवाए के०) ज्यां सूधी जीवुं त्यां सूधी एम चारे आहार पच्चरकीने, (जं के०) जे (पियं के०) प्रिय, हतुं एवुं (इमं स रीरं के०) आ मारुं शरीर, (इठं के०) वारं वार वांछतुं हतुं माटें इष्टकारी, (कंतं के०) कांतिवंत, एटले विशिष्ट वर्णादिकें करी युक्त (पीयं के०) प्रीतिकारी एटले इंडियने हर्षनुं करणहार (मणुन्नं के०) मनोज्ञ एटले मननें गमतुं, (मणामं के०) मनने सदाइ अत्यंत वह्लन, लागे माटें मणामं ए पांच शब्दनो अर्थ एकार्थ जाणवो, (धिज्जं के०) धीरज देणार, (विसासियं के०) विश्वा सनुं उपजावनार, (समयं के०) मानवा योग्य, (अणुमयं के०) विशेषें मानवा योग्य, (बहुमयं के०) घणुं वारंवार मानवा योग्य, (नंमकरंमसमाणं के०) आनरणना माबला समान, व्हालुं (रयणकरंमगनूयं के०) रत्नना करंमीया समान, (माणसियं के०) रखे मने शीत लागे, एटले टाढवाय, एम मानतो (माणं उन्हं के०) रखे मने ताप लागे, एम मानतो (माणं खूहा के०) रखे मने नूख लागे, एम मानतो (माणं पिवासा के०) रखें मनें तृषा लागे, (माणं वाला के०) रखे मुजने व्याल एटलें सर्पादिक करडे, एम मानतो (माणं चोरा के०) रखें मने चो रनो नय उपजे, (माणं दंसा के०) रखे मने मांस करडे, (माणं मसगा के०) रखे मने मछर करडे, (माणं वाहियं के०) रखें मने व्याधि उपजे (पित्तियं कें०) रखे मने पित्त जागे, (सं नीमं कप्फियं के०) रखे मने नयंकर श्लेष्म कफ उपजे, (सन्नि वाइयं के०) रखे मनें सन्निपात ते त्रिदोष थाय, (विवहारोगायंका के०) रखे मने विवध प्रकारनो रोग उत्पन्न थाय, (परिसहा उवसग्गा के०) रखे मने बावीश जातिना परिसह तथा देवतादि कना करेला उपसर्ग उपजे, (फासा फुसंति के०) एवी रीतना

पूर्वोक्त स्पर्शथी माहारा शरीरनी रक्षा करतो हतो (एवंपियणं के०) एवुं जे माहारुं प्रिय एटले वाहालुं, शरीर तेने (चरमेहिं के०) छेहला, (उस्सासनिस्सासेहिं के०) स्वासोच्छास सुधि, जीवना संबंध आश्रयी (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं, तजुं छुं. (त्ति कट्टु के०) एम कहीने एम शरीर वोसिरावीने ए शरीरनो संबंध तजी देइने (कालं अणवकंखमाणे के०) कालने जीववानी आशा, तथा मरणनो नय अण वांछतो थको (विहरामि के०) विचरीश छे. एहवी सद्दहणा परूपणा करियें, तिवारें फरशनायें करी शुद्ध एहवा अपच्छिम मरणांतिय संलेहणा झूसणा आराहणाना पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं (इहलोगासंसप्पउगे के०) इह लोक संबंधि सुखनी वांछना करे के हुं चक्रवर्त्यादिक राजा थाउं, (परलोगासंसप्पउगे के०) परलोक संबंधि सुखनी इच्छा करे कें हुं देवता थाउं, इंद्र थाउं, (जीवियासंसप्पउगे के०) जीवितव्यनी इच्छा करे के लोको महारो घणो सत्कार करे छे, माटें झाझुं जीवुं तो सारुं, (मरणासंसप्पउगे के०) मरणनी इच्छा करे के दुःख पामुं छुं, माटें तरत मरी जाउं तो दुःखमांथी छूटुं. (कामभोगासंसप्पउगे के०) काम भोगनी वांछना करे जे आ तपना प्रभावें हुं रूडा रसादि सांसारिक कामभोग प्रामुं ! एवी रीतनी जे आशंसा एटले वांछारूप प्रयोग एटले जे मननो व्यापार तेने कामभोगाशंसप्रयोग अतिचार कहीयें (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) तेनुं पाप मने निष्फल थाउ ॥ २० ॥ इति ॥

एम समकित पूर्वक वारव्रत संलेषणा सहित एहने विषे जे कोइ अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अणाचार जाणतां अजाणतां मन वचन कायायें करी सेव्यो

होय, सेवराव्यो होय, सेवता प्रत्यें अनुमोद्यो होय, ते अनंता सिद्ध केवलीनी सारवें मिच्छामि डुक्कडं॥२१

अर्थः—एना अर्थमां नियम लीधेली वस्तुने फरी सेवनाना दोष चार प्रकारें छे, ते कहे छे. १ अतिक्रम ते नियम लीधेली वस्तुने फरी जोगववानी इच्छा करवी, २ व्यतिक्रम ते नियम लीधेली वस्तुने लेवा माटें चालवुं, ३ अतिचार ते नियम लीधेली वस्तु जोगववा माटें हाथमां लेवी, ४ अनाचार ते नियम लीधेली वस्तुने जोगववी॥२१॥

एम कहीने पछी १८ पाप स्थानक कहीजें; तेनो पाठ प्रथम लखायेलो छे, माटें अहीं अर्थज लखीयें छैयें. १ (प्राणातिपात के०) जीवनी हिंसा, २ (मृषावाद के०) जूठुं बोलवुं, ३ (अदत्तादान के०) चोरी करवी, ४ (मैथुन के०) मैथुन सेववुं, ५ (परिग्रह के०) परिग्रहनी वांछा, ६ (क्रोध के०) रोष, ७ (मान के०) अहंकार. ८ (माया के०) कपट, ए (लोज के० लोज, १० (राग के०) प्रीति, ११ (द्वेष के०) द्वेषजाव, १२ (कलह के०) क्लेश, १३ (अन्याख्यान के०) खोटुं आल देवुं, १४ पैशुन्य के०) पारकी चाडी करवी, १५ (परपरिवाद के०) अनेराना अवगुण बोलवा, १६ (रतिअरति के०) हर्ष शोक, १७ (मायामोसो के०) कपट सहित जूठुं बोलवुं, १८ (मिथ्या दंसण सल्ल के०) आजिग्रहिक अनाजिग्रहिकादिक पांच प्रकारनां जे मिथ्यात्व छे, तेने सेवनाना जे परिणाम ते. एवं अढारे पाप स्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें अनुमोद्यां होय, ते अनंता सिद्ध केवलीनी सारवें मिच्छामि डुक्कडं ॥ २१ ॥ इति ॥

विधिः— पछी “इच्छामि ठामि” नी पाटी कहीजें, आहीं सुधी जिमणो गोडो उचों राखीने वेसीजें; पछी उन्नो थइ हाथ जोडी ने “तस्स धम्मस्स” नी पाटी कहीजें, ते कहे छेः—

क्रोड केवली, उत्कृष्टा नव क्रोड केवली, केवल ज्ञान, केवल दर्शनना धरणहार, सर्व द्रव्य क्षेत्र काल भावना जाणणहार ॥ सवैय्या॥ नमुं सिरि अरिहंत, करमांको कियो अंत, हुवा सो केवलवंत, करुणा भंमारी हे ॥ अतिसे चोतीस धार, पेंतिस वाणी उच्चार, समजावे नर नार, पर उपगारी हे ॥ शरीर सुंदराकार, सूरज सो झलकार, गुण हे अनंत सार, दोष परिहारी हे ॥ केत हे तिलोकरिख, मन वच काय करी,लली लली वारं वार, बंदणा हमारी हे ॥ १ ॥ एसा अरिहंत भगवंत दीन दयाल महाराजको दिवस संबंधी अविनय, आशातना, कीधी होय तो हाथ जोडी, मान मोडी, काय संकोडी, वारं वार खमावुं बुं, मत्थएण वंदामि १००७ वार नमस्कार करुं बुं. " तिरकुत्तो आयाहिणं, पयाहिणं वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि " आप मांगलिक गो, उत्तम गो, हे स्वामि नाथ ! आपको इणभवें परभवें भवोभवें सदाकाल शरणो होजो ॥ २३ ॥ इति प्रथम पद संपूर्ण ॥

२ बीजे पदें श्री सिद्धभगवंत महाराज ते पन्नर भेदें अनंता सिद्ध ठे, आठ कर्म खपावीने मोक्ष पहोता ठे, १ तीर्थ सिद्धा, २ अतीर्थ सिद्धा, ३ तीर्थंकर सिद्धा, ४ अतीर्थंकर सिद्धा, ५ स्वयं बुद्ध सिद्धा, ६ प्रत्येक बुद्ध सिद्धा, ७ बुद्धबोधित सिद्धा, ८ स्त्रिलिंग सिद्धा, ९ पुरुषलिंग सिद्धा, १० नपुंसकलिंग सिद्धा, ११ स्वलिंग सिद्धा, १२ अन्यलिंग सिद्धा, १३ गृहस्थलिंग सिद्धा, १४ एक सिद्धा, १५ अनेक सिद्धा,जिहां जन्म नही,जरा नही, मरण नहि, भय नही,रोग नही, सोग नही,दुःख नही,दारिद्र नही,कर्म नही, काया नही, मोह नही, माया नही, चाकर नही, ठाकर नही, भूख नही, तृषा नही, ज्योतिमें ज्योति विराजमान, सकल कारज सिद्ध करीने चउदे प्रकारें पन्नरे भेदें अनंता सिद्ध भय

वंत हुवा, अनंत सुखमां लीन, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, क्षायिकसमकित, निराबाध, अटल अवगाहना, अमूर्त्ति, अगुरुलघु,अनंतवीर्य, आठ गुणें करी सहित ॥ सवैय्या ॥ सकल करम टाल,वश कर लियो काल, मुगतिमें रह्या माल,आतमाका तारी हे ॥ देखत सकल जाव, हुवा हे जगत राव, सदाही खायिक जाव, जये अविकारी हे ॥ अचल अटल रूप, आवे न वि जवकूप, अनुप सरूप ऊप, एसे सिद्धधारी हे ॥ केत हे तिलोकरिख, बतावो ए वास प्रखे, सदाही उगत सूर, वंदणा हमारी हे ॥२॥ एसा सिद्ध जगवंतजी माहाराज आपकी दिवस संबंधी अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी मान मोडी काय संकोडी वारं वार खमावुं बुं, तिरकुत्ताना पारुसूं मत्रएण वंदामि नमस्कार करुं बुं. जावत् जवोजव शरणुं होजो ॥ २५ ॥ इति ॥

३ त्रीजे पदें श्रीआचरजजी बत्तीस गुणें करी बिराजमान, पांच माहाव्रत पाले, पांच आचार पाले, पांच इंद्रिय जींते, चार कषाय टाले, नव वाड शुद्ध ब्रह्मचर्यना पालणहार, पांच समितियें समित्ता,तीन गुप्तियें गुप्ता,आठ संपदा सहित ॥ सवैय्या ॥ गुण हे बत्तीस पूर, धरत धरम उर, मारत करम क्रूर, सुमति विचारी हे ॥ शुद्धसों आचारवंत, सुंदर हे रूप कंत, जणिया सबि सिद्धंत, वांचणी सुप्यारी हे ॥ अधिक मधुरवेण, कोइ नही लोपे केण, सकल जीवाका सेण, कीरत अपारी हे ॥ केत हे तिलोकरिख, हितकारी देत सीख, एसा आचारज ताकुं, वंदणा हमारी हे ॥ १ ॥ एसा आचारज न्यायपक्षी, जद्रकपरिणामी, परमपूज्य, कल्पनिक अचित्त वस्तुका ग्रहणहार, सचित्तका त्यागी, वैरागी, महागुणी, गुणका अनुरागी, सोजागी, एहवा श्री आचारजजी माहाराज आपकी दिवस संवंधि अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी मान मोडी काया संकोडी वारं वार खमावुं बुं.

१००७ वार तिरकुत्ताना पाठथी मत्थएण वंदामि एटले नमस्कार करुं छुं. यावत् नवोनव शरणुं होजो ॥ २५॥ इति त्रीजुं पद संपूर्ण ॥

४ चोथे पदें श्री उपाध्यायजी महाराज पच्चीश गुणें करी सहित छे,ते पच्चीश गुण कहे छे? इगियारा अंगना जणणहार. ते अगीयार अंग कहे छे. श्री आचारंगजी, सुयगडांगजी, ठाणांगजी, समवायांगजी, जगवतीजी, ज्ञाताधर्मकथाजी, उपासकदसांगजी, अंतगडदसांगजी, अनुत्तरोववाईजी, प्रश्नव्याकरणजी, विपाकसूत्रजी ॥ ए इग्यारा अंगनो अर्थ पाठ संपूर्ण जाणे. (१२ उपांग जणे,ते.) उववाइजी,रायप्पसेणीजी, जिवाजिगमजी,पन्नवणाजी,जंबुद्दीपपन्नत्ती,चंदपन्नत्ती, सूरपन्नत्ती, निरयावलिया,कप्पविमंसिया,पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वन्हिदिशा (४ मूल सूत्र) उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नंदीसूत्र, अनुयोगद्वार (४ छेद ग्रंथ) दशाश्रुत स्कंध, बृहत्कल्प, व्यवहार, निशीथ अने बत्तीसमुं आवश्यक ॥ आदि देइ अनेक ग्रंथना जाणनार, चौद पूर्वना पाठी, सात नय,निश्चय व्यवहार,चार प्रमाणादिकें करी स्वमत तथा अन्यमतका जाण. मनुष्य अथवा देवता कोइ पण जेने विवादमां छलवानें समर्थ नही,जिन नही पण जिन सरिखा, केवली नही पण केवली सरिखा ॥ सवैय्या ॥ पढत इग्यारा अंग,करमासूं करे जंग, पाखंमीको मान जंग, करण हुस्यारी हे ॥ चऊद पूरवधार, जानत आगमसार, जविनके सुखकार, भ्रमता निवारी हे ॥ पढावे जविक जन, थिर कर देत मन, तप करी तावे तन, ममता निवारी हे ॥ केत हे तिलोकरिख, ज्ञानजानु परतिख, एसे उपाध्याय, ताकुं बंदणा हमारी हे ॥ १ ॥ एसा श्री उपाध्यायजी माहाराज मिथ्यात्वरूप अंधकारना मेटणहार, समकितरूप उद्योतना करणहार, धर्मथकी मगता प्राणीने थिर करे, सारए, वारए, धारए, इत्यादिक अनेक गुण सहित छे,एहवा जे श्री उपाध्यायजी माहाराज आपकी दि

वसंबंधी अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी मान मोडी, काया संकोडी, वारं वार खमावुं बुं. १००७ वार तिरकुत्ता नापाठथी मब्रएण वंदामि एटले नमस्कार करुं बुं. यावत् नवो नव शरणुं होजो ॥ २६ ॥ इति चोथुं पद संपूर्ण ॥ ४ ॥

(५) पांचमे पदें श्री साधुजी ते पोतारा धर्माचार्यजी (आ ठेकाणें आप आपका गुरु माहराजको नाम लेणो) आद देईने जघन्य तो दोय हजार क्रोड साधु साधवी, उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधु साधवी, अढाई द्वीप पन्नरे क्षेत्रमें जयवंता विचरे ठे, ते साधुजी केहवा ठे? पांच महाव्रतका पालणहार, पांच इंद्रियोंका जितणहार, चार कषायका टालणहार, नाव सच्चे, करणे सच्चे, जोग सच्चे, क्षमावंत, वैराग्यवंत, मन समाधारणीया, वयस माधारणीया, कायसमाधारणीया, नाण संपन्ना, दंसणसंपन्ना, चारित्तसंपन्ना, वेदणीसमा अहियासनिया, मरणांतिसमा अहियासनिया, एहवा सत्तावीश गुणें करी सहित, बारे नेदें तपका करणहार, सत्तरे नेदें संयमना पालणहार, तेत्तीस आशातनाका टालणहार, बेहेंतालीश दोष टालीने आहार पाणीका लेवणहार, सत्तेतालीस दोष टालीने नोगवणहार, बावन अनाचीर्णके टालणहार, तेड्या आवे नही, नेथ्या जिमे नही, सचित्तका त्यागी, अचित्तका नोगी, बावीस परिसहके जितणहार, अनेकलब्धिका धरणहार, लोचको करणो अणवाणेपगें चालणो, इत्यादिक काय क्लेशका करणहार, मोह ममता रहित ॥ सवैय्या ॥ आदरी संजम नार, करणि करे अपार, सुमति गुपतिधार, विकथा निवारी है ॥ जयणा करे ठ काय, सावद्य न बोले वाय, बुझाइ कषाय लाय, किरिया नंमारी है ॥ ज्ञान नणे आठो जाम, लेवे नगवंत नाम, धरमको करे काम, ममताके मारी है ॥ केत है तिलोक रिख, करमांको टाले विख, एसा मुनिराज ताकुं वंदणा हमारी है ॥ १ ॥

एह्वा श्री मुनिराज महाराज आपकी दिवस संबंधी अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी, मान मोडी, काया संकोडी, वारं वार खमावुं बुं. १००८ वार तिक्खुताना पाठसुं मत्थएण वंदामि एटले नमस्कार करुं बुं. जावत सदाकाल शरणुं होजो ॥ २७ ॥ इति पांचमुं पद संपूर्ण ॥ ५ ॥

विधिः– पढी उना थइ आयरिय उवज्झाए कहीजें,ते कहे बेः—

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ॥
जे मे केइ कसाया,सवे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव
स्स समणसंघस्स, भगवउ अंजलिं करिय सीसे ॥
सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥२॥ स
वस्स जीव रासिस्स, भावउ धम्म निहिय नियचि
त्तो ॥ सवं समावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥३॥

अर्थः–पंचाचार संपन्न अथवा बत्रीश गुणें विराजमान, अर्थ दानना दातार, तेने (आयरिय के०) अचार्य कहीयें. तथा समीप रह्या अने आव्या जे शिष्यादिक तेने सूत्रना भणावनार अथवा पच्चीश गुणें करी विराजमान तेने (उवज्झाए के०) उपाध्याय कहीयें, तथा ग्रहण शिक्षा अने आसेवना शिक्षाने योग्य होय,तेने (सीसे के०) शिष्य कहीयें, तथा श्रद्धा अने प्ररूपणादिक गुणें करीने जे आपण सरिखा होय, एवा सरखा धर्मना पालनार, होय तेने (साहम्मिए के०) साधर्मिक कहीयें,तथा जे एक आचार्य नो शिष्य संतान परिवार, तेने (कुल के०) कुल कहीयें. तथा घणा आचार्यना शिष्य संतान परिवार,तेने (गणे के०) गण एटले समुदाय कहीयें. (अ के०) अकार ते वली वली कहेवाने अर्थे बे, ए सर्वनी उपर (मे के०) म्हारे जीवें (जे के०) जे (केइ के०) कोइ पण (कसाया के०) क्रोधादिक कषाय कीधा होय,

ए कारणें (सवे के०) सर्व, ते आचार्यादिक प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अनें कायायें करी (खामेमि के०) हुं खामुं बुं ॥१॥ (सवस्ससमणसंघस्सन्नगवउ के०) सर्व श्रमण संघरूप नगवंतना कीधा जे अपराध ते (अंजलीकरियसीसे के०) मस्तकनी उपर बे हाथ प्रत्यें करीने एटले स्थापीने नम्रीनूत थइने (सवंखमावइत्ता के०) ते सर्व अपराध प्रत्यें खमावीने,वली एम कहे के (खमामि सवस्सअहयंपि के०) ते सर्वना करेला अपराध प्रत्ये हुं पण खमुं बुं,एटले सम्यक्प्रकारें सहन करुं बुं ॥२॥ (सवस्सजीवरासिस्स के०) एकेंड्रियादिक सर्व जीवनो राशि एटले समूह तेनो कीधो जे में अपराध, ते (नावउ के०) नावथी (सवंखमावइत्ता के०) सर्व अपराध प्रत्यें खमावीने, वली एम कहे के ते सर्व जीवोनी उपर समनाव ते रूप (धम्म के०) धर्म, तेनें विषे (निहिय के०) निधित कर्युं बे एटले स्थाप्युं बे, नावथकी आरोपण कर्युं बे, (नियचित्तो के०) निजचित्त एटले पोतानुं मन जेणें एहवो (अहयंपि के०) हुं पण (सवस्स के०) सर्व जीव राशिना कीधा जे अपराध, ते अपराध प्रत्यें (खमामि के०) खमुं बुं ॥ ३ ॥ इति ॥ २७ ॥

पबी अढाइ द्वीपनो पाठ कहीजें, ते कहे बे.

अढाइ द्वीप तथा पन्नर खेत्र मांहि तथा बाहेर,श्रावक श्राविका दान देवें, शील पाले, तपस्या करे, नावना नावे, संवर करे, सामायिक करे, पोसह करें, पडिक्कमणा करे,तीन मनोरथ,चउदे नियम चिंतवे,एक व्रतधारी, जाव बारेव्रतधारी थका जे नगवंतकी आज्ञामांहि विचरे,अमारायकी मोटाने हाथ जोडी,पगें लागीने,खमावुं हुं,गेटाने वारं वार खमावुं हुं॥२०॥इति नाषा॥

विधिः— पछी "चोराशी लाख जीवा योनि" खमाववानो पाठ कहीयें पछी "खामेमि सव्व जीवेनो" पाठ कहीयें, ते लखीयें छैयें.

अथ चोराशीलाख जीवायोनि प्रारंभः ॥

॥सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बेंद्रिय, बे लाख तेंद्रिय, बे लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौद लाख मनुष्य, एवं चोराशी लाख जीवायोनिमांहे म हारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मनें, वचनें, कायायें करी १८, २४, १२० आगरे लाख चोवीस हजार एकसोवीश प्रकारें तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३१ ॥ इति ॥ एनो अर्थ सुगम छे माटें लख्यो नथी

अथ खामेमि सव्वजीवेनो पाठ प्रारंभः ॥

॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥१॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ३२ ॥

अर्थः—(खामेमि सव्वजीवे के०) सर्व जीवो प्रत्यें हुं खमावुं छुं एटले अनंता भवने विषे पण अज्ञान मोहावृतत्वें करीने जीवोने जे पीडा कीधी होय, ते खमावुं छुं अने (सव्वेजीवा के०) ते सर्व जीवोपण (मे के०) महारा अपराध प्रत्यें, (खमंतु के०) खमो, माफ करो, ए क्षमनक्षमापनमां कारण कहे छे. के (सव्वभूएसु के०) सर्व भूतोने विषे (मे के०) महारे (मित्ती के०) मैत्रिभाव छे, (केणइ के०) कोइ जीवनी सायें (मज्झ के०) महारे

(वेरं के०) वैरन्नाव (न के०) नथी ॥ १ ॥ (एवं के०) एम (आलोइअ के०) पाप आलोच्युं प्रकाश कीधुं (निंदिअ के०) आत्म साखें निंद्युं, (गरहिअ के०) गर्ह्युं (ङुगंछिअं के०) डुगं ब्युं अत्यंत खोटुं जाएयुं, ते माटें (सम्मं के०) सम्यक् प्रकारें ए सम्यक् पद सर्व पदोनी साथें पूर्वमां योजवुं (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन वचन अने कायायें करीने (पडिक्कंतो के०) अतिचारादिक पापथकी प्रतिक्रांतथको, एटले पाबो फरतो थ को, अर्थात् पापने पडिक्कमतो थको, एवो जे (अहं के०) हुं ते (चउव्वीसंजिणे के०) चोवीश जिन प्रत्यें (वंदामि के०) वांडु बुं ॥

विधिः—पबी " अढारे पापस्थानक " कहीजें. इति सामायि क, चउविसब्बो, वंदणा, पडिक्कमणुं,चार आवस्सग्ग पूरां थयां.

हवे तिरकुत्ताना पाठसेंति पांचमा आवस्सग्गनी आज्ञा लीजें.

पबी " दैवसिकप्रायश्चित्त " कहिजें, ते कहे बेः—

दैवसिक प्रायश्चित्तविशुद्धनार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥२३॥

अर्थः—(दैवसिक के०) दिवस संबंधि, (प्रायश्चित्त के०) प्राय श्चित्त (विशुद्धनार्थं के०) शुद्ध करवा माटें (काउस्सग्गं के०) कायो त्सग्गें एटले कायानी स्थिरता प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं बुं॥२३॥

विधिः—पबी "नमो अरिहंताणंथी मांमी यावत् नवकारनो संपूर्ण पाठ" कहीजें, पबी " करेमि नंते सामाइयंथी मांमी. (अप्पाणं वोसिरामिनो पाठ कहीजें" " पबी इव्वामि ठामि काउस्सग्गथी मां मीने यावत् "तस्स मिब्बामि डुक्कडं" पर्यंत पाठ कहीजें " पबी त स्स उत्तरीकरणेणं " थी मांमीने अप्पाणं वोसिरामि " सुधीनो पा ठ कहीनें पबी काउस्सग्ग करवो, तेमां मनमां देवसि, राइसि (४ लोगस्स) नुं ध्यान कीजें. पक्की पडिक्कमणे (१२ लोगस्स) नुं ध्यान कीजें. चोमासी पडिक्कमणे (२० लोगस्स) नुं ध्यान की

जें, संवत्सरी पडिक्कमणे (४० लोगस्स) नुं ध्यान कीजें. संवत्सरी संबंधि चालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग लख्यो छे,परंतु एमां केटला एक नाश्यो न्यून काउस्सग्ग पण करे छे,माटें जेमना धर्माचार्यना आदेश उपदेश मुजब जेटला लोगस्सना काउस्सग्ग करवानी परंपरा चालती आवेली होय तेमणें तेटला लोगस्सनो काउस्सग करवो. पछी नमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारीजें. पछी काउस्सग्गमांहि आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायुं होय, धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्यायुं होय. तस्स मिछामि डुक्कडं, एम कहीजें. पछी प्रगटपणे (एक लोगस्स) कहीजें. पछी पूर्वेली पेरें "इछामि खमासमणाथी मांमीने अप्पाणं वोसिरामि" पर्यंतनो पाठ दोय वार कहीजें. इति सामायिक चोविसछो, वंदनक पडिक्कमणुं अने काउस्सग्ग ए पांच आवश्यक पूरां थयां.

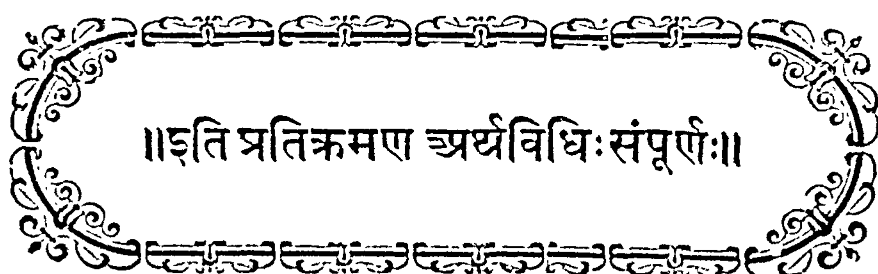
हवे छठा आवश्यकना कामी इम कही, पछी गुरु मुनिराज पासें तथा वडेरा पासें,इणारो योग न हुवे,तो आपणी मेलें पच्चरकाण धारणा प्रमाणें करीयें, ते कहे छेः—

गंठीसहि, मुठीसहि,नवकारसी, पोरिसी, साढ्ढ पोरिसी, आप आपनी धारणा प्रमाणें तिविहंपि,चउविहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सवसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ३४ ॥

विधिः—सामायिक, चउविसछो, वंदनक, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने छठुं पच्चरकाण. ए छ आवश्यकमांहि जाणतां अजाणतां जे कांइ अतिचार दोष लाग्यो होय,तथा पाठ उच्चारतां कानो, मात्रा, मींडुं, पद, अक्षर अधिको उंछो हलवो भारी आघो पाछो

कह्यो कहेवाणो होय, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ मिथ्यात्वनुं पडिक्कमणुं, अव्रतनुं पडिक्कमणुं, कषायनुं पडिक्कमणुं, प्रमादनुं पडिक्कमणुं, अशुभ जोगनुं पडिक्कमणुं, ए पांच पडिक्कमणामांहेलुं पडिक्कमणुं नही कीनुं होय, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ गया कालनुं पडिक्कमणुं, वर्त्तमान कालना संवर, आवता कालनां पच्चक्खाण, तेने विषे जे दोष लागो होय, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ ३५ ॥ थइ थुइ मंगलं ॥

हवे नीचें बीसी मावो गोडो उभो राखीने बे वार नमोत्थुणं कहीजें. पछी उभो थइने श्रीसीमंधरस्वामीजी प्रत्यें पांचे अंग नमावीने तिक्खुत्ताना पाठथी १००८ वार वंदना करुं छुं. एम कहीनें नमस्कार करवो. पछी पोताना धर्माचार्यजीने तिक्खुत्ताना पाठथी वंदना करीने उपाश्रयमां जो कोइ मुनिराज होय तो तेमने पण तिक्खुत्ताना पाठथी वंदना करीने खमाववुं. पछी तिहांज रहेला साधर्मिभाइउ मांहेला जे तपस्या करनार होय तेमने सुखशाता पूछीने खमत खामणां करवां. अने अन्य साधर्मिभाइउ सार्थें पण अविनय आशातना संबंधि खमत खामणां करवां. देवसिपडिक्कमणामांहे मिच्छामि डुक्कडं आवे. तिहां दिवस संबंधि मिच्छामि डुक्कडं दीजें. राइसीमें राइसी संबंधि, पक्खीमें देवसी पक्खी संबंधि, चोमासीमें, देवसी चोमासी संबंधि, संवच्छरीमें संवत्सरी संबंधि, मिच्छामि डुक्कडं. इम कहीजें ॥ ए पडिक्कमणविधि कह्यो, बीजो अंतर विधि वडेराथी जाणवो ॥



॥ अथ अर्थ सहित दश पच्चरकाण प्रारंभः ॥

॥ तिहां प्रथम नमुक्कारसहिअंनुं पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चरकामि चउविहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नब णाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥

अर्थः-(उग्गएसूरे के०) सूर्यना उदयथी मांमीने बे घडी प्रमाण एटले रात्रिभोजननो दोष निवारवाने अर्थें, बे घडी पछी (नमुक्कारसहिअं के०) नवकार कहीने पारवुं तिहां सुधी (पच्चरकामि के०) पच्चरकाण छे, एटले नियम छे. अहींयां नवकार कहीने पच्चरकाण पारवुं छे, माटें ए पच्चरकाणनुं नाम नवकारसी कहेवाय छे. अहींयां गुरु, जे पच्चरकाणनो करावनार होय ते पच्चरकाइ कहे, तेवारें शिष्य जे पच्चरकाणनो करनार होय ते पच्चरकामि कहे. एम सर्व पच्चरकाणोने विषे जाणी लेवुं. तथा संपूर्ण पच्चरकाणें गुरु, वोसिरइ कहे, अने शिष्य जे पच्चरकाणनो करनार होय ते वोसिरामि कहे. ए नवकारसीनुं पच्चरकाण बे घडी प्रमाण काल पर्यंत चउविहारोज होय, एवो आम्नाय छे, एटले रात्रिना चार पहोर जे रात्रिभोजननो नियम कर्यो हतो. तेना तोरण रूप एटले शिखारूप ए पच्चरकाण छे. ए पच्चरकाणमां बे घडी सूधी चउविहार होय, माटें बे घडी वीत्या पछी नवकार गणे, तो पहोंचे, पण बे घडी वीत्यानी अगाउ नवकार गणे, तो न पहोंचे.

हवे शेनुं पच्चरकाण करे? ते कहे छे. (चउविहंपिआहारं के०) चारे प्रकारना जे आहार तेनुं पच्चरकाण करे, ते आहारनां नाम कहे छे.

एक (असणं के०) अशन एटले शालि, ज्वार, गोधूम, बंटी प्रमुख तथा सर्व जातिना उदन एटले भात तथा मग, मठ अने तूवर प्रमुख सर्व कठोल तथा साथुआदिक सर्व जातिना लोट, त

था मोदकादिक सर्व जातिनां पक्कान्न, तथा सूरणादिक सर्व जाति नां कंद, तथा मांम्फा प्रमुख सर्व जातिनी केलवेली वस्तु, ए सर्वने अशन कहियें. तेमज वेशण, वरियाली, धाणा, सूआ, आदें देइने बीजी पण केटलिएक वस्तुउने अशनज कहीयें.

बीजुं (पाणं के०) पाणी ते कांजी, यव, चोखा अने काकडी प्रमुखनां धोयण तथा नदी प्रमुख सर्व जलाशयनां पाणी, ए सर्व पाणी कहीयें. तथा शाकरवाणी, डाक्वाणी, आंबिलवाणी अने शेलडीरस प्रमुख ए सर्व, यद्यपि पाणीमांहे आवे ठे, तथापि एने व्यवहारथी अशनज कहियें.

त्रीजुं (खाइमं के०) खादिम ते खारेक, बदाम, शिंगोडां, खजूर, कोपरां, डाक्, तथा अखोडादिक सर्व जातिनो मेवो, तथा काकडी, आंबां, फणस अने नालियेर प्रमुख सर्व जातिनां फल तथा शेकेलां धान्य, जेवां के धाणी, पहुआ प्रमुख तथा पापड प्रमुख ए सर्वने खादिम कहियें.

चोथुं (साइमं के०) स्वादिम ते दंतकाष्ठ, शुंठ, हरडे, पींपर, मरी, अजमो, जायफल, कसेलो, कायो, खसखस, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलची, लविंग, जावंत्री, सोपारी, पान, बीड लवण, आजो, अजमोद, कलिंजण, पिंपलीमूल, चिणिकबाब, कचूरो, मोथ, कांटासेलीयो, कपूर, संचल, वेहेडां, आमलां, हिंगाष्टक, हिंग, त्रिविंसो, पुष्करमूल, जवासामूल, बाबची, बावलठाल, धवठाल, खेरठाल, खिजडाठाल, पान, पंचकूल, तुलसी, जीरुं. ए जीराने केटलाएक सूत्र सिद्धांतोमां स्वादिम कह्युं ठे, अने केटला एक सूत्र सिद्धांतोमां खादिम कह्युं ठे, तथा अजमाने पण केटला एक आचार्य खादिम कहे ठे. तथा कोठपत्र, कोठवडी, आमलगंठी, लिंबुइपत्र, आंबागोटली प्रमुखने स्वादिम कहियें. ए चार प्रकारना आहार कह्या.

एम ए पूर्वोक्त चारे प्रकारना आहारनो नियम लेवाय. हवे नियमभंग थवाना भयने लीधे अहींयां नोकारसीना पच्चरकाणने विषे बे आगार मोकलां मूके छे, ते कहे छे.

१ (अन्नछणाभोगेणं के०) अन्यत्रानाभोगात् एटले विसरवा थकी. ते अहींयां पच्चरकाणनो उपयोग विसरवाथकी अजाणपणे अनुपयोगें कोइ वस्तु मुखमां प्रक्षेप कस्याथी पच्चरकाणभंग न थाय, परंतु वचमां पच्चरकाण सांभरे,तेवारें तरत मुखथी त्याग करे,थूंकी नाखे तो पच्चरकाण न भांगे, अथवा अजाणपणे मुखथकी हेतुं उतस्या पछी कालांतरें सांभस्युं, अथवा तरत सांभस्युं,तो पच्चरकाण न भांगे, पण शुद्धव्यवहार माटें फरी निःशंक न थाय तेथी यथा योग्य प्रायश्चित्त लेवुं, ए रीतें सर्व आगारोने विषे जाणी लेवुं.

२ (सहसागारेणं के०) जे पच्चरकाण कस्युं छे,तेनो उपयोग तो विसस्यो नथी, पण कार्य करवामां प्रवर्त्ततां योग्य लक्षण सहसात्कार एटले स्वभावेंज मुखमध्यें प्रवेश थाय, जेम दधि मथतां छांटो उडी मुखमां पडे, अथवा गाय, भेंश प्रमुख दोहोतां थकां तथा घृतादिक मथतां तथा घृतादिकनो तोल करतां अचानक छांटो उडी मुखमां पडे, अथवा चउविहार उपवासें वर्षाकालें मेघना छांटा मुखमां पडे, तेथी पच्चरकाण भंग न थाय, ए रीतें पूर्वोक्त बे प्रकारना आगारें करी (वोसिरामि के०) बे घडी सुधी चारे आहारने वोसिरावुं छुं,एटले अपच्चरकाणी आत्माने छांडुं ॥इति॥१॥

॥ अथ बीजुं पोरिसि साड्डपोरिसिनुं मच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चरकामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥

एवं साड्ढपोरिसियं पच्चक्खामि पण कहेवुं.

अर्थः–(पोरिसिं के०) प्रहर दिवस सुधी अने साड्ढपोरिसिनुं पच्चक्खाण लीये तो सार्द्ध पोरिसि एटले अर्द्ध प्रहर सहित एक प्रहर अर्थात् दोढ प्रहर सुधी (पच्चक्खामि के०) नियम करुं बुं. इहां पुरुष प्रमाण शरीरनी ठाया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय तेनें पोरिसि कहियें, अथवा पुरुष जमणे काने सूर्यनुं बिंब राखीने, दक्षिणायनने प्रथम दिवसें ढीचणनी ठाया जे वखतें बे पगलां होय, ते वखतें पोरिसि थाय तिहांसुधी पच्चक्खाण करे.

(असणंपाणंखाइमंसाइमं के०) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम, ए चार प्रकारना आहारनो नियम करुं बुं.

हवे आगार कहे बे, एक (अन्नबणाभोगेणं के०) अनाभोगें एटले अजाणते विसरवाथकी, बीजो (सहसागारेणं के०) सह सात्कारें, त्रीजो (पच्छन्नकालेणं के०) कालनी प्रच्छन्नता ते मेघा दि, ग्रहादि, दिग्दाह, रजोवृष्टि तथा पर्वत अने वादल प्रमुखें करी सूर्य ढंकाइ जाय, तेणें करी वखतनी बराबर खबर न पडे. एवां अजाणपणायें करी अधूरी पोरिसियें पण पोरिसि पूर्ण थइ, एवुं समजीने पच्चक्खाण पारवामां आवे, तो तेथी भंग नहीं, अने कदापि ए रीतें अधूरी पोरिसियें जमवा बेठा एटलामां तडको जोयो, अने जाण्युं जे हजी सवार बे, पोरिसिनो वखत पूर्ण थयो नथी, तेवारें जे मुखमां कोलीयो होय, ते राखमां परठवीने बेसी रहे, अने यावत् पोरिसि पूर्ण थया पठी जमवा बेसे, तो पच्चक्खाण भांगे नहीं.

चोथुं (दिसामोहेणं के०) दिशिने मूढपणे एटले दिशिविप र्यास थयाथी अजाणते पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे. एम अजाणतां वेहेलुं पलाय तो पच्चक्खाण भंग नही, अने थोडुं जम्या पठी कोइना कह्याथी जाणवामां आवे, तो मुखमांनो को

लीयो थूंकी नाखे. ए रीतें दिशिनो मोह टल्या पछी, अर्ध जम्यो बेसी रहे तो भंग नहीं.

पांचमुं (साहुवयणेणं के०) उग्घाड पोरिसि एवा साधुना वचनें करी पोरिसि भणी, सांभलीने पाले, तो पच्चक्खाण भंग नहीं, पछी ज्यारें जाणवामां आवे के साधु तो छ घडीनी पोरिसि भणे छे, तेवारें पूर्वली रीतें तेमज बेसी रहे, तो पच्चक्खाण भांगे नहीं. ए पाछला बे आगार भ्रमतानां छे.

छठुं (सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं के०) सर्व प्रकारें शरीरमा असमाधि ते अस्वस्थता रहे, एटले पच्चक्खाण कर्या पछी तीव्र शूलादिक रोग उपने थके अथवा सर्पादिकें मश्यो होय, ते वेदनाथी जीव आर्त्तिमां पडे, अथवा जेवारें अकस्मात् कष्ट थाय, तेवारें सर्व इंद्रियोनी समाधिने अर्थें अपूर्ण पच्चक्खाणे पण पथ्य औषधादिक लेवां पडे,तो तेथी पच्चक्खाणभंग न थाय, अने समाधि थया पछी तेमज पाछलो विधि करे. इहां पण पच्चक्खाणनो आपनार,गुरु वोसिरइ कहे, अने शिष्य पच्चक्खाणनो करनार होय, ते वोसिरामि कहे.

॥ अथ त्रीजुं पुरिमढ्ढनुं पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमढ्ढं पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि ॥ ३ ॥

अर्थः– (उग्गए सूरे के०) सूर्यना उदयथी मांमीने नवकार सहित (पुरिमढ्ढं के०) पहेला बे प्रहर सुधि पुरिमार्ध कहियें एटले बे प्रहर सुधी अशनादिक चारे आहारनुं पच्चक्खाण छे एना अन्नछणाभोगेणं इत्यादि आगारोना अर्थ सर्व प्रथम लखाइ गया छे अने महत्तरागारेणंनो अर्थ प्रथम नथी लखायो, तो तेनो

अर्थ (महत्तर के०) कोइ महोटा कार्यें एटले पच्चरकाणमां जेटलो कर्मनिर्जरानो लाज्ञ थाय छे, ते करतां पण अत्यंत महोटो निर्जरानो लाज्ञ जे कार्यमां थतो होय, अर्थात् कोइ ग्लानादिकना, वैयावच्चने अर्थें कोइ बीजा पुरुषथी ते कार्य न थइ शकतुं होय, त्यारें गुरु तथा संघना आदेशथी पुरिमढ्ढनो वखत पूर्ण थया विना जो पालवामां आवे, तो पच्चरकाण नंग न थाय. अने ते कार्य पूर्ण थया पछी पाछलोज विधि समजवो ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथुं विगइ निविगइनुं पच्चरकाण ॥

विगइन निविगइन पच्चरकामि अन्नछणान्नोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहछसंसठेणं उरिकत्त विवेगेणं पडुच्च मरिकएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥४॥

अर्थः— ज्ञोजन करतां जेथकी कामादिक उन्मादरूप विकार थाय, तेने विगइ कहीयें, ते निवीनां पच्चरकाण ग्रहीने विगयना प्रमाणनी संख्या करे एटले दूध, दहिं, घृत, तेल,गोल प्रमुख विगइमांथी एक पण विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं, तेने विगइनुं पच्चरकाण कहियें, अने समस्त विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं, तेने (निविगइउं पच्चरकामि के०) निविनुं पच्चरकाण करुं छुं.

हवे पच्चरकाण नंगना नयथी जे आगार मोकलां मूके छे, ते कहे छे. एक अन्नछणान्नोगेणं, बीजुं सहसागारेणं. ए बेना अर्थ लखाइ गया छे.

त्रीजुं (लेवालेवेणं के०) लेपालेप ते आवी रीतें के घृत प्रमुख जे विगयनो नियम साधुने होय तेवी घृतादिक विगइयो गृहस्थनो हाथ खरडायेलो होय, पछी तेने लूंछी नाख्यो होय, ते

वा हाथथी अथवा खरडायेला चाटुवाने लुंछीने ते चाटुवाथी व होरावे अथवा पीरसे, तो पच्चखाणभंग न थाय.

चोथुं (गिहत्थसंसठेणं के०) गृहस्थनुं जे वाटकी प्रमुख भाजन ते विगइ प्रमुखें खरड्युं होय, तेवा भाजनथी जे गृहस्थ अन्न आपे, ते अन्न जमे, तो पच्चखाण भांगे नही.

पांचमुं (उक्खित्तविवेगेणं के०) गाढी विगइ जे गोल प्रमुख छे तेना कटका रोटली उपर नाखी करी पछी उपाडी परहा कस्या होय, तेवी रोटली प्रमुख लेतां पण पच्चखाण भंग न थाय.

छठुं (पडुच्चमक्खिएणं के०) रोटला प्रमुखने लगारेक सुंहाला राखवाने अर्थें मोण दीधुं होय, अथवा लगारेक हाथ चोपडी कीधी होय, ते रेचवाली रोटली प्रमुख तथा पुडलादिक लेतां पच्चखाण भंग न थाय.

सातमुं पारिठावणियागारेणं, आठमुं महत्तरागारेणं, अने नवमुं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, ए त्रण आगारनो अर्थ, बीजा प्रथम लखाइ गयेला पच्चखाणोथी जाणवो ॥४॥

॥ अथ एज चोथुं निविगइनुं एकासण सहित पच्चखाण ॥

॥ उग्गए सूरे निविगइ एकासणं पच्चखामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसठेणं उक्खित्त विवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥४॥

अर्थः—एमां कहेला आगरादिकोनो अर्थ सर्व आगलना पच्चखाणोमां लखाइ गयो छे. इहां निवीना पच्चखाणमां जो पिंडविगइ अने द्रव्यविगइ, ए बेहु विगइनुं पच्चखाण करे, तो तेणें एमां कहेला नवे आगार कहेवां, अने जे एकली द्रव्यविगइ मा

त्रनो नियम करे तेणें उक्खित्तविवेगेणं ए आगार मूकीने बाकीनां आठ आगार कहेवां ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमुं एकासणांबियासणांनुं पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे एगासणं बियासणं पच्चरकामि, डुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नबणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउट्टण पसारेणं गुरुअब्भुठाणेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

अर्थः– उग्गए सूरे इत्यादिकनो अर्थ प्रथमना पच्चरकाणोमां लखाइ गयो छे, ज्यां एक वार (असण के०) नोजन करवुं. तेने एकासणुं कहीयें अथवा ज्यां एकज आसन छे, ते एकासण कहेवाय छे, अने बेवार नोजन करवुं तेने बिआसणुं कहीयें,तेनुं (पच्चरकामि के०) पच्चरकाण करुं छुं. एकासणुं अथवा बियासणुं कख्या पछी जो स्वादिम अने पाणीयें बे आहार लेवा होय तो डुविहंपि आहारं कहे एटले अशन अने खादिम ए बे आहारनुं पच्चरकाण करे अने जो एकासणुं करी रह्या पछी एकज पाणी मोकलुं राखे तो तिविहंपि आहारं एटले अशन, खादिम अने स्वादिम, ए त्रणे आहारनुं पच्चरकाण करे, अने जम्या पछी एक पाणी मोकलुं राखे, तेवारें असणं खाइमं साइमंनो पाठ कहियें. हवे एनां आगार कहे छे. त्यां एक अन्नबणाभोगेणं अने बीजो सहसागारेणं, एना अर्थ लखाइ गया छे.

त्रीजुं (सागारिआगारेणं के०) साधु जमवा बेठा पछी त्यां कोइ सागारिक जे गृहस्थ ते आव्यो, पछी ते चाल्यो जतो होय तो क्षण एक सबूर करे, बेशी रहे, अने जो तेने त्यां स्थिर रहे तो जाणे, अने गृहस्थनी नजर पडे,तो साधु त्यांथी उठीने बीजे

स्थानकें जइ आहार लीये. केम के गृहस्थनी देखतां जमे तो प्रवचनोपघातादिक माहादोष सिद्धांतमां कह्या छे,ते लागे. ए साधु आश्री कह्युं, अने गृहस्थ आश्री तो गृहस्थ एकासणुं करवा बेठा पछी जेनी दृष्टि पडतां अन्न पचे नहीं, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टि पडे, अथवा सर्प आवे, चोर आवे, बंदीवान आवी उनो रहे,अकस्मात् अग्नि लागे, घर पडवा मांडे, तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे, इत्यादिक कारणें ते स्थानकथी उठीने बीजे स्थानकें जइ एकासणुं करतां पच्चरकाण नांगे नहीं.

चोथुं (आउट्टणपसारेणं के०) जमवा बेठा पछी हाथ पग जंघादिक अंगोपांग पसारतां तथा संकोचतां कांइ आसन चलायमान थाय तो पच्चरकाण नंग न थाय. पांचमुं (गुरुअभ्रुठाणेणं के०) पच्चरकाणें जमवा बेठां छतां गुरु जे आचार्य उपाध्याय तथा साधु आवे, तेमना विनय साचवाने अर्थे बे पगने ठामें राखी उठवुं पडे, तो पच्चरकाण नंग न थाय.

छठुं (पारिठ्ठावणियागारेणं के०) विधियें निर्दोषपणे ग्रहण करेलुं अने विधियें वेहेंची आप्युं जे अन्न तेने साधुयें विधियें नुक्त कर्यां थकां कांहिं उगर्युं एवुं पारिष्ठापनयोग्य जे अधिक अन्न ते स्निग्ध अन्नने परठवतां जीव विराधनादि घणा दोष उपजे छे,एवुं जाणीने तेवुं अन्न तथा विगयादिकने गुरुनी आज्ञायें एकासणादिकथी मांडीने उपवास पर्यंत पच्चरकाणवालाने वधेला आहारने जमतां पच्चरकाण नंग न थाय, ए आगार यतिने होय, पण श्रावकने न होय,तथापि आलावो तूटे माटें गृहस्थने एकज पाठ संलग्न कहेतां दोष नथी.

सातमुं महत्तरागारेणं, अने आठमुं सव्वसमाहिवत्तियागारेणंना अर्थ लखाइ गया छे. (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं ॥५॥

अर्थः—सूर्यना उदयथी मांमीने (अन्नत्तठं के०) अन्नकार्थं एटले आत पाणी खावा नहीं तेने अर्थें. (चउव्विहंपिआहारं के०) चारे आहारनो (पच्चक्कामि के०) नियम करुं बुं. ते चार आहारनां नाम कहे बे. एक अशन, बीजुं पान, त्रीजुं खादिम, अने चोथुं स्वादिम, हवे एनां आगार कहे बे. एक अन्नबणाभोगेणं, बीजुं सहसागारेणं, त्रीजुं पारिठावणिआगारेणं, चोथुं महत्तरागारेणं, अने पांचमुं सवसमाहिवत्तिआगारेणं, एनो अर्थ लखाइ गयो बे.

तथापि पारिठावणिआगारेणंना अर्थमां विशेष एटलुं बे के,पाणी अने आहार ए बे वानां कोइ परठवतो होय तो गुरुनी आज्ञायें आहार कीधो कल्पे, पण एकलो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते आहार कीधो कल्पे नहीं, केम के ? चउविहारमां पाणीनो नियम बे, अने पाणी विना मुख शुद्ध न थाय. माटें पाणी अने आहार ए बे वानां परठवतो होय तो चउविहार उपवासमां ली धा कल्पे, अने तिविहार उपवासमां तो पाणी मोकलुं बे, माटें एकलो आहार कोइ परठवतो होय तो पण गुरुनी अज्ञायें लीधो कल्पे ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमुं तिविहार उपवासनुं पच्चक्काण ॥

उग्गए सूरे अन्नत्तठं पच्चक्कामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नबणाभोगेणं सहसागारेणं पारिठावणि आगारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणहा र पोरिसिं पच्चक्कामि ॥ अन्नबणाभोगेणं सहसागारेणं पछ न्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवस माहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछेण वा, बहुलेवेण वा,ससिछेण वा, असिछेण वा वोसिरामि ९ए

अर्थः-(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी आरंभीने (अभत्तठं के०) अभक्तार्थ एटले उपवासनुं (पच्चक्खामि के०) पच्चक्खाण करुं छुं, ए त्रिविहारमां एक पाणीनो आहार मोकलो राखीने बाकीना (असणं के०) अशन अने (खाइमं के०) खादिम, तथा (साइमं के०) स्वादिम ए (तिविहंपिआहारं के०) त्रण आहार तेनो नियम करुं छुं. हवे एनां आगार कहे छे.

एक अन्नछणाभोगेणं, बीजुं सहसागारेणं, त्रीजुं पारिठावणिआगारेणं, चोथुं महत्तरागारेणं, पांचमुं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एना अर्थ सर्व प्रथमना पच्चक्खाणोमां लखाणा छे.

ए पच्चक्खाणमां पोरिसी साढपोरिसी अथवा पुरिमार्ध पछी (पाणहार के०) पाणीनो आहार मोकलो छे. तेनां आगार कहे छे.

(पाणस्स के०) पाणी पीवानां छ आगार छे, ते कहे छे, (लेवेणवा के०) लेपजल ते खजूरनुं तथा आछण, बीजुं (अलेवेणवा के०) अलेपजल ते धोयण प्रमुख, त्रीजुं (अछेण वा के०) निर्मल उष्ण पाणी, चोथुं (बहुलेवेण वा के०) मोलुं तांदूलनुं धोयण प्रमुख, पांचमुं (ससिछेण वा के०) सीथ सहित पीछनुं धोअण, छहुं (असिछेण वा के०) सीथ रहित फासु जल, ए टलां टाली बाकीनां पाणीने (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं.

॥अथ दशमुं रातें चउविहार करवो,तेनुं पच्चक्खाण तथा भवचरिमनुं॥

दिवसचरिमं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ए॥

अर्थः- (दिवसचरिमं के०) दिवसना छेहेडाथी मांमीने एटले संध्या समयथी मांमीने ज्यां लगें नवो सूर्य उगे नहीं त्यां सुधी पच्चक्खाण जाणवुं अने जे जावजीव पर्यंत संथारो करवानी

वेलायें चार आहारनुं पञ्चरकाण करे, तेने नवचरिम एवो पाठ कहीयें शेष " चउविहंपि " इत्यादिनो अर्थ सुलन्न ठे ॥ १० ॥

॥ अथ गंठसहियं मुठसहियादि अन्निग्रहोनुं पञ्चरकाण ॥

सूरे उग्गए गंठसहिअं मुठसहिअं पञ्चरकामि चउविहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नबणान्नोगेणं सहसागरेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ इति ॥

अर्थः—गांठ सहित पञ्चरकाण ते कोइ दोरा प्रमुखनी गांठ बांधी राखे तिहां सुधी पञ्चरकाण करुं छुं, गांठ ठोड्या पठी मोकलो एमज मूठ बांधी राखे ते मुठसहियं. तथा मुरवच्चें अंगुठो राखे, ते अंगुठ सहियं इत्यादि अन्निग्रह जाणवा. पाठलो अर्थ सुलन्न ठे ॥११॥

॥ अथ चउदनियमधारनारने देसावगासिक अन्निग्रहनुं पञ्चरकाण ॥

देसावगासिअं उवन्नोगं परिन्नोगं पञ्चरकामि अन्नबणान्नोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ॥ ॥

अर्थः— (देसावगासिअं के०) दिशिना अवकाशनुं व्रत अथवा बहु नियम आश्री तो (देस के०) थोडामां अवकाश आपे तेने देशावकाशिक व्रत कहियें. एटले इहां कोइ एकली दिशिनुंज पञ्चरकाण करे, तेवारें उपन्नोग परिन्नोगनो पाठ न कहियें तेने देसावगासिअं पञ्चरकाइज कहियें. हवे (उवन्नोग के०) जे वस्तु एकवार न्नोगवीयें एवा आहार तथा विलेपनादिकनुं परिमाण करे, तेने उपन्नोग कहियें. अने (परिन्नोग के०) वारंवार न्नोगवियें एवी वस्तु जे आन्नरण, स्त्री, वस्त्रादिक तेनुं परिमाण करे, एटले जे चौद नियम संन्नारे, तेने ए उपन्नोग परिन्नोगनो पाठ कहियें. एना आगारनो अर्थ आगल लखाइ गयो ठे ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकने चार शरणां लेवानो पाठ प्रारंभः ॥

॥ चत्तारि सरणं पडिवज्जामि, अरिहंता सरणं पडिवज्जामि, सिद्धा सरणं पडिवज्जामि, साहू सरणं पडिवज्जामि, केवलिप न्नत्तं धम्मं सरणं पडिवज्जामि ॥ पहिलुं सरणुं श्री अरिहंत भगवंतजीनुं उत्पन्न विमल केवलनाणें करी, सूर्यनी परें प्रकाशना करणहार, मिथ्यात्वरूप तिमिर अंधकारना मेटणहार, समकित शुद्धधर्मना दयणहार छे, अनंत ज्ञानी छे, अनंतचारित्र, अनंतलोचन, अनंतगुण, अनंतजीवना रक्षपाल, जगगुरु, जगत्जीवन, जगत्लोचन, परमआल्हादक, हर्षआनंदना उपजावणहार, मोक्षमारगना देखाडणहार, अनयदानना दयणहार, शरणना दयणहार, संयम जीवितव्यना दयणहार, जगत्ना मित्र, जगदीश्वर, जे समोसरणमां बिराजमान थइने पुष्करावर्त्त मेघनी पेठें धर्मना वचनोने वरसावीने भविक जीवोना संदेहने भांजता थका विचरे छे. एवा निर्विकारी जेमनी शांतमुद्रा जोवाथी काम, क्रोध लोभ अने मोहादिक अनादिना दोष मटे, अंतरमां संवरनी शैली प्रगटे, सर्व समकेती जीवना प्राणाधारक, सकलमुनि मनमोहन. एवा श्रीअरिहंत भगवंत पांच भरत पांच ऐरवत, पांच माहाविदेह क्षेत्रनेविषे अनंते कालें अनंता अरिहंत भगवंत थया अने हमणां माहाविदेह क्षेत्रने विषे संख्याता अरिहंत भगवंत केवली घणा भव्यजीवोने तारता विचरे छे. एहवा श्री अरिहंत भगवंतजीनुं पहिलुंसरणुं पडिवज्जुं छुं ॥ इति प्रथम शरणं ॥१॥

॥ अथ द्वितीय शरणुं श्रीसिद्ध भगवंतजीनुं प्रारंभः ॥

सिद्ध भगवंतजी इकतीस गुणें करी शाश्वत शोभे छे, ते गुण कहे छे, पांच भेदें ज्ञानावरणीय कर्मने क्षयना करणहार, नव भेदें दर्शनावरणीय कर्मने क्षयना करणहार, बे भेदें वेदनीय कर्म ते

ने क्षयना करणहार, बेहु नेदें मोहनीय कर्म तेना क्षयना करणहार, चार नेदें आयुःकर्म तेना क्षयना करणहार, बे नेदें नाम कर्मतेना क्षयना करणहार,बेहु नेदेंगोत्रकर्मना क्षयना करणहार, पांच नेदें अतराय कर्मना क्षयना करणहार,वली घणा अतिशयें करी बिराजमान ते अतिशय कहीयें बैयें. ण दीहे,ण हस्से,ण वट्टे, ण तंसे,ण चउरंसे,ण परिमंमले, ण किल्हे,ण निल्ले,ण लोहिए,ण हली द्दे,ण सुकिल्ले,ण सुरहिगंधे, ण डुरहिगंधे,ण तित्ते,ण कडुवे,ण कसाये ले,ण अंबिले,ण महुरे,ण कक्कडे,ण मउए,ण गुरुए,ण लहुए,ण सीए, ण उल्हे, ण सनिध्दे,ण लुरके,ण काउ,ण रूवे,ण संगेहणे,ण इत्ती,ण पुरिसे,ण नपुंसगे,ण मोहे. एहवा चवदे नेदें पनरे प्रकारें करी सिध्दन गवंत केवलज्ञान, केवलदरिसण, क्षायिक समकितना धरणहार, अनंत अतिशयें करी बिराजमान, सिध्दे, बुध्दे, परंपारगते, अजर, अमर, अरकय, अव्याबाध, निःकलंक, निराकार, निरंजन, अशरीरी, जीवस्वरूपी, जिहां एकसिध्द, तिहां अनंता सिध्द, लोकाग्र नागने विषे विराजी रह्या ठे, सर्व कर्म चकचूर करी खपावीने ज्ञानानंदें करी नरपूर थकां मोक्षनगरनुं राज्य नोगवे ठे. अनंतें कालें अनंता मोक्ष पहूता. हवडां वर्त्तमान कालें संख्याता मोक्ष पहूंचे ठे, आगामिककालें, अणंता मोक्ष पहूंचशे. एहवा अतींद्रिय, अविनाशी,अनुपाधि, अबंधी, अक्लेशी, अमूर्त्ति, शुध्दचैतन्य,ज्ञान दर्शन चारित्रादि अनंतगुण नाजन, सच्चिदानंद स्वरूपी एवा अनंता सिध्द नगवंतनुं शरणुं पडिवज्जुं ठुं ॥ इति बीजुं शरणुं समाप्त ॥

हवे त्रीजुं शरणुं साधु नगवंतजीनुं कहे ठे. साधु नगवंतजी केहवा ठे? अनंत ज्ञानी अनंतदरसी जघन्य दोय क्रोड उत्कृष्टा, नव क्रोड केवली. वली गणधर, आचार्य,उपाध्याय बहुश्रुत, द्वादशांगीना नणणहार, रुजुमति,विपुलमति, अवधिज्ञानी, वैक्रिय लब्धिना धणी, तपस्वी, महोटा माहानुनाव,ज्ञानवंत, दरिसणवंत,

चारित्रवंत, ज्ञानदरिसणना धरणहार, बारे भेदें तप करी कर्मना क्षयना करणहार, इरियासमिया, भासासमिया, एसणासमिया, आयाणभंमत्त निरकेवणासमिया, उच्चारपासवण खेलसिंघाण जलपारिठावणियासमिया, मणगुत्ता, वयगुत्ता, कायगुत्ता, गुत्ता, गुत्तेंदिया, गुत्तबंभयारी, जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जिय लोहा, जियनिंदा, जियपरिसहा, जियइंदिया, जीवियमरण भय विमुक्का, अमम्मा, अकंचणा, आमोसहिपत्ता, खेलोसहिपत्ता, जल्लोसहिपत्ता, सव्वोसहिपत्ता, बीजबुद्धि, कोठबुद्धि, पदानुसारिणी, मणबलीया, वयबलीया, कायबलीया, नाणबलीया, दंसणबलीया, चारित्रबलीया, खीरोसवा, महुसवा, सप्पिसवा, अखिणमाणसिया, चारणविज्जाहारा, चउत्थभत्तिया, छठ भत्तिया, अठम भत्तिया, दसमभत्तिया, दुवालस भत्तिया, चउदस भत्तिया, अद्धमासिया, मासिया, दुमासिया, तिमासिया, चउम्मासिया, पंचमासिया, छमासिया, अंत चरगा, पंत चरगा, लुह चरगा, समदाण चरगा, अंतआहारी पंतआहारी, अरसआहारी, विरस आहारी, लुह आहारी, तुछ आहारी, अंतजीवी, प्रांतजीवी, लूहजीवी, तुच्छजीवी, उवसंतजीवी, पसंतजीवी, आयंबीलीया, पुरिमढीया, एगासणीया, नीविगईया, अमग्ग जमग सासीणो, णोणीगामरसभोइ, एहवा मूल उत्तरगुणना सेवनारा, मोक्षमार्गना साधनारा, भावनिर्ग्रंथ, समतारूपी शुभध्यानाग्निवडे कर्मरूपी काष्ठने बालता, अनादि परिचितविभाव परिणतिने वमता, जेने नहीं माया नहीं ममता, नवी नवी तपक्रियाना करनार, चारित्र पालनरूपप्रवहणें करी संसार समुद्रने तरता, शत्रु मित्र समचित्त दृष्टि, एवा साधु भगवंतजीनुं त्रीजुं शरणुं पडिवज्जुं छुं ॥ इति त्रीजुं शरणुं॥

हवे चोथुं शरणुं श्री केवलिभाषित दया धर्मनुं. जेमां प्रधान भावदया छे, त्रस, थावर, सूक्ष्म, बादर अपर्याप्ता, पर्याप्ता, पृथ्वी,

अप्, तेउ, वाऊ, वनस्पति, बेइंडी, तेंडी, चौरिंडी, पंचेंडी, ए सर्व जीव लोकने विषे राखवा पण काई जीव विराधवो नही, एहवो श्रीकेवलिनाषित दया धर्म सत्य नित्य शाश्वतो संदेहरहित छे, संसार समुद्रमां पडता जीवने द्वीप समान छे, प्रवहण समान छे, तारण शरण गतप्रति आधार छे, जीवादिक पदार्थ राखवा नणी दीपक समान छे, एहिज कल्याणक छे, एहिज मांगलिक छे. धर्म ते किशुं कहियें? जे डुर्गति पडता जीवने धरे, तेनें धर्म कहियें, जे धर्म,पापरूप जलमांथी तारवाने नाव समान छे, जेनें परमेश्वरें परमसुखनो हेतु कह्यो छे. एह धर्म अतीतकालें अनंता तीर्थंकरें कह्यो, वर्त्तमान कालें संख्याता कहे छे, आगामिक कालें अनंता तीर्थंकर कहेशे. एहवो श्रीजिनधर्म अतीतकालें विराधीने अनंताजीव नमता हुवा, वर्त्तमान कालें संख्याता नमे छे, आगामिककालें अनंता जीव नमशे, एहवो श्री तीर्थंकरजीनो मार्ग आराधीने गये कालें अनंता जीव तस्या, वर्त्तमान कालें संख्याता तरे छे, आगामिक कालें अनंता जीव आराधीने तरशे. एहवा श्री केवलिप्ररूपित दयाधर्मनुं शरणुं पडि वज्जु छुं ॥ इति चार शरण संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक नीचें लखेला त्रण मनोरथनें चिंतवतो थको माहा ॥ महोटी निर्जरा करे, संसारनो अंत करे, ते लखियें छैयें ॥

॥ तिहां पहेलो मनोरथ कहे छे. श्रमणोपासक श्रावक एम चिंतवे जे केवारें हुं, बाह्य तथा अन्यंतर एवो आरंन अने परिग्रह थोडो ने घणो,न्हानो अने महोटो, सचित्त, अचित अने मिश्र, हलवो ने नारी, जे महापापनुं मूल, डुर्गतिने वधारनारो, महा काम, क्रोध, मान, माया, लोन, विषय अने कषायनो स्वामी, माहाडुःखनुं कारण, महा अनर्थकारी, महा डुर्गतिनी

शिला, माठी लेश्याना अध्यवसायनो परिणामी, माहा अज्ञान, मोह, मत्सर, राग अने द्वेषनुं मूल, दशविध यतिधर्मरूपकल्प वृक्ष तद्रूप वननो दावानल, ज्ञान, क्रिया,क्षमा, दया,सत्य, संतोषनो नाश करनारो, तथा बोधबीजरूप समकितनो नाश करनारो, संयम व्रत अने ब्रह्मचर्यनो घात करनारो, माहा कुमति तथा कुबुद्धिरूप दुःख दारिद्रनो देवावालो, सुमति अने सुबुद्धि रूप सुख सौभाग्यनो नाश करनारो, महा तप संयम रूप धनने लूंटनारो, महा लोभ क्लेशरूप समुद्रनो वधारनारो, महा जन्म जरा अने मरण भयनो देवावालो, महा माया एटले कपटनो भंडार, मिथ्यात्व दर्शनरूप शल्यें भरेलो, महा मोक्षमार्गनो विघ्नकारी, महा कडवा कर्मविपाक फलनो देवावालो, अनंत संसारनो वधारनारो, महा पापी, पांच इंद्रियना विषयरूप वैरीनी पुष्टिनो करनारो, महोटी चिंता शोक गारव अने खेदनो करनारो, महा संसाररूप अगाध वृक्षनो सिंचवावालो, महा कूड कपटनुं आगर, महा बंध परम क्लेशनो आगर, मोहोटा गारव खेद अने कर्म बंधना मंदिरनो करावनारो, महा मंदबुद्धिनो आदरयो, उत्तम पुरुष साधु निर्ग्रंथोयें जेनें निंद्यो छे, अने सर्व लोकमां सर्व जीवोने एना सरिखो बीजो कोइ विषम नथी, मोहरूप पाशनो प्रतिबंधक, इहलोक तथा परलोकना सुखनो नाश करनार, महापापी, पांच आश्रवनुं आगर, महा अनंत दारुण कर्कश कठोर अछता एवा दुःख अने भयनो देवावालो, महोटा सावद्य व्यापार कुवाणिज्य कुकर्मादाननो करावनारो,माहा अध्रुव, अनित्य अशाश्वतो, असार, अत्राण, अशरण, एवो जे आरंभ अने परिग्रह तेने हुं केवारें छांमीश! जे दिवसें छांमीश,ते दिवस माहारो धन्य छे! एवी रीतें प्रथम मनोरथ श्रावक करे ॥ १ ॥

२ हवे दुजा मनोरथमां श्रमणोपासक श्रावक एम चिंतवे

जे केवारें हुं मुंम थइने दश प्रकारें यतिधर्म धारी, नववाडें विशुद्ध ब्रह्मचारी, सर्व सावद्यपरिहारी, अणगारना सत्तावीश गुण धारी, पांच समिति त्रण गुप्तियें विशुद्धविहारी, महोटा अनिग्रहनो धारी, बेहेंतालीश दोषरहित विशुद्ध आहारी, सत्तर नेदें संयमधारी, बार नेदें तपस्याकारी, अंत आहारी, प्रांत आहारी, अरस आहारी, विरस आहारी, लुरक आहारी, तुब आहारी, अंतजीवी, प्रांतजीवी, अरसजीवी, विरसजीवी, लुरकजीवी, तुबजीवी, सर्वरसत्यागी, ठकायनो दयाल, निर्लोनी, निःस्वादी कुक्षीसंबल, पंखी तुल्य, वायरानी पेरें अप्रतिबंधविहारी, वीतरागनी आज्ञासहित, एहवा गुणोनो धारक, जे अणगार ते हुं केवारें थईश ! जे दिवस हुं पूर्वोक्त गुणवान् थाइश ते दिवस धन्य ठे ! ए रीतें बीजो मनोरथ श्रावक करे ॥

३ त्रीजा मनोरथमां श्रमणोपासक श्रावक एम चिंतवे जे केवारें हुं सर्व पापस्थानक आलोई, निंदी, निःशल्य थइ, सर्व जीव राशि खमावीने, सर्व व्रत संन्नारीनें, अढार पापस्थानकथी त्रिविधें त्रिविधें करी वोसिरीनें, चारे आहार पच्चरकीने, आ इठं, कांतं, पीयं, माणं, मणाणं, धीजियं, वेसासियं, समयं, अणुमयं, बहुमयं, नंमकरंमगसमाणं, रयणकरंमगनूयं, माणंसिया, माणं उन्हा, माणं खुआ, माणं पीवासा, माणं वाला, माणं चोरा, माणं दंसमसगा, माणं वाइयं, पित्तियं, सब्वेसन्निवाइयं, विविहारोगायंका, परिसहा उवसग्गा, फासा फुसंति. एहवुं महारुं शरीर ठे तेने, ठेहेलें श्वासोश्वासें वोसिरावीने, त्रण आराधना आराधतो थको, चार मांगलिकरूप चार शरण मुखें उच्चरतो थको, सर्व संसारनें पूंठ देतो थको, एक अरिहंत, बीजा सिद्ध, त्रीजा साधु अने चोथो केवलिप्ररूपितदयाधर्म, तेना ध्यानने ध्यावतो थको शरीरनी ममता रहित थयो थको, पादोपगमन संथारा सहित,

पंडित मरणना पांच अतिचार टालतो थको, मरणने अणवांछतो थको,एहवुं पंडित मरण अंतकालें मुजने होजो ॥ ए त्रीजो मनोरथ॥

ए त्रण मनोरथने समणोपासक श्रावक, मन, वचन अने कायायें करी शुद्धपणे ध्यावतो थको पडि जागरणमाणे करतो थको सर्व कर्मनी निर्जरा करीने संसारनो अंत करे. मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्यें पामे ॥ इति तीन मनोरथ संपूर्ण ॥

॥ अथ आनंदमंदिरनाम मंगल स्तवनछंद प्रारंभः ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं ॥ ए देशी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नमो श्री अरिहंत ए, टालो संकट सहु शत्रु डुर्दंत ए ॥ घनघातिक चउ कर्म कियो अंत ए, ध्याइयो शुकल ध्यान महंमंत ए ॥ १ ॥ पाया प्रभु विमल ज्ञान केवल सही, द्वादश पर्षदा वंदवा आवही ॥ करुणाके सिंधु उपदेश फरमावहीं, सुणत नवि प्राणी मन तन हुलसावहीं ॥ २ ॥ अथिर जग जाणके संजम आदरे, केइ बारात्रत निर्मल उच्चरे ॥ केइ विशुद्ध समकीत समाचरे, तिण दिने चतुर्विध संघ स्थापन करे ॥ ३ ॥ विचरे नूमंमलें नविकजन तारवा,जन्म जरा मरणना संकट वारवा ॥ प्रथम्म मंगल इम नित प्रतें वंदियें, नवनव डुःकृत दूर निकंदियें ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नमो सिद्ध ऊर्ध्वराजके, सिद्ध करो सर्व मनोवंछित काजकें ॥ अजर अमर अविनाशी अविकारय, सुख अनंत अनंत गुण धारय ॥ ५ ॥ राग रंगित नही कर्म संगत नही, निर्नय स्थान अवगाहन अटल लही ॥ अखंम अमंम प्रभु जगत शिरोमणि, अमग धर्म ऊंम में वंडुं त्रिजगधणी ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सब साधु उमायकें, तारे नव प्राणी उपदेश बतायकें ॥ नोग किंपाकसा जाण के त्यागीया, धन्य जे संत गुणवंत सोनागिया ॥ ७ ॥ ॐ नमो जिन अवधि परमावधि, ॐ नमो केवली उग्र तपस्यानिधि ॥ ॐ नमो कोठ

नमो बिज बुद्धिया नणी, पदानुसारी संन्निन्न सोया मुनि ॥ ८ ॥ वंदूं रिजु मति विपुल मत्तिके, पूर्व दिशि चतुर्दश अष्ट नैमतिके ॥ वैक्रिय लब्धि धरा जंघा विद्याचरा ॥ प्रश्न श्रमण वली गगन गामीधरा ॥ ए ॥ उग्र तप घोर तप दीप्त तपस्याधरा, घोर पराक्रमी शीलवंता खरा ॥ रीश आणे नही करत कोइ निंदणा, हरख आणे नही जो करे बंदणा ॥ १० ॥ अनशन तप कोइ करत ऊणोदरी, वृत्तिसंक्षेप रस त्याग निक्षाचरी ॥ काय किलेश संलीनता आदरे, प्रायश्चित्त विनय वेयावच्च मनशुं करे ॥ ११ ॥ सद्याय ध्यान काउस्सग्ग ठावहीं, कंचन कंकर एक सम नावहीं ॥ जघन्य पृथकत्वशय सहस्र कोडी जती, उत्कृष्ट पदें रिख वंदूं में शुनमति ॥ १२॥ ॐ नमो धर्म श्री जैन जिन नांखियो, डुर्गति पडत नवनव थिर राखियो ॥ दया नगवती सब शास्त्रमें वरणवी, हिरदे अणुकंपा सो दाख्यो जिनजी नवि ॥ १३ ॥ निज आतम सम जाण सब प्राणीने, पालो दया अणुकंपा चित्त आणीने ॥ जीव अनंत तस्या ईण प्रनावथी, जेम उदधितणो पार लहे नावथी ॥ १४ ॥ हिंसामय धर्म सो दूर निवारजो, चोथुं मंगल एह धरमनुं धारजो ॥ तन धन जोवन अथिर करि जाणजो, चारुहिं मंगल उत्तम मानजो ॥ १५ ॥ चारेनुं शरण नित्य लीजो थें पल पलें, एह परनावथी सर्व संकट टले ॥ डुशमन चोर धूरत कोई नहि ठले, सिंह सर्पादिक देखि दूरा टले ॥ १६ ॥ गड गुंवड रोग महा कष्ट असाध्य सो, एह सरणाथकी लहे समाधसो ॥ ताव ते जारी त्रूटे इण ध्यावतां, विघन व्यापे नही पंथमें जावतां ॥ १७ ॥ नूत ऊोटिंग अरु मंकणी शंकणी, विघन करे नही देवी विहंकणी ॥ नरेंड सुरेंड फणिंडदिक देवता, सकल वश थाये चउ सरण शुद्ध लेवतां ॥ १८ ॥ अहि जिम गरुडना शब्दथी थरहरे, तेम चउ सरणथी पाप आघो मरे ॥ ईणमांही शंका रति मत आणजो, सत्रु

रु कहेण प्रमाण पीडाणजो ॥१ए॥ रिस्क तिलोक वे धोक चउस रणने, आरोग्य समकित अरु नवजलतरणने ॥ नणशे गुणशे ए ह स्तवन नावें करी, सोहि नवि जीव लेहेशें अविचल सिरी ॥२०॥ ॥ कलश ॥ हरिगीत बंद ॥ अरिहंत सिद्ध, महाराज साधु, धरम केवली, जाणीयें ॥ ए चारु मंगल,चारु उत्तम, चारु सरणां,मानी यें ॥ इह लोक संपत्ति,सुख बहुलां, आगें सुख,श्रीकार हे ॥ तिलो क रिख, कहे सुणे सरदे, होय सदा, जयकार हे ॥ २१ ॥ इति आणंद मंदिरनामा मंगलबंदएकविशी संपूर्ण ॥

॥ अथ मंगल स्तवन बंद प्रारंनः ॥

॥ देशी मंगलकी ॥ ढाल ॥ जे जे अरिहंत जिणंदा,मुख पूनम पूर णचंदा ॥ सेवे सुर असुर नरिंदा, प्रनु नविजनके सुखकंदा ॥१॥ त्रूटक ॥ हरिगीत बंद ॥ सुख कंद साहिब नए सबके, तप महा डुक्कर कीयां ॥ धनघातिके सब कर्म हण कर, ज्ञान केवल पा इया ॥ चोतिस अतिशय प्रगट दीसे, अमृत वाणी उच्चरे ॥ प्रति हार अष्ट विशेष जिनके,संघ चउ स्थापन करे प्रनुसं० ॥२॥ ढाल॥ जग गुरु जग नायक सामी, जगतारक अंतरजामी ॥ प्रनु मुक्ति जावणके कामी, नित नित प्रणमुं शिर नामी ॥ ३ ॥ त्रू टक ॥ शिर नामि प्रणमुं करुणासिंधु, जघन वीश जिनेश्वरु ॥ उ त्कृष्ट एक शत सित्तर जामें, होय तस बंदण करुं ॥ उपगारी इण सम नहीं जगमें, मन वचन तन ध्याइयें ॥ होय संपति विपत्त नासे, प्रथम मंगल गाइयें ॥नित्य०॥४॥ ढाल॥ जे जे सिद्ध सदा सुख कारी,अष्ट कर्म किया सब डारी ॥ प्रनु तीनुंही जोग निवारी, पाय शिवपुरके सुख नारी ॥ ५ ॥ त्रूटक ॥ सुख नारी जिनके हे अनुपम, आतमिक अविचल सदा ॥ निरंजन निराकार जि नके, डुःख नहि व्यापे कदा ॥ अजर अमर अविकार ईश्वर, अ

टल अवगाहन धणी ॥ अविकार करुणावंत वंडं, सकल लोक शिरोमणि ॥ ६ ॥ ढाल ॥ त्रसनालीके उपर जाणो, जहां मुक्ति शिला सुवखाणो ॥ चेतुं छत्र शशीने संठाणो, पेंतालिश लक्ष योजन परमाणो ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ परमाण दलमें अष्ट यो जन, अधिक पतली अंतसों ॥ तिण उपरें पंच दश नेदें, सीधा सिद्ध अनंतसो ॥ सकल कारज सिद्ध जिनके, नाव नक्ति सराइ यें ॥ पाइयें सिद्ध पद जिणसुं,सिद्ध मंगल गाइयें ॥नित्य०॥२॥८॥ ढाल ॥ जे जे सब साधु सोनागी, आरंन परिग्रहके त्यागी ॥ तप जप किरिया अनुरागी, उनकी सुरता मुगतिसुं लागी ॥ ए ॥ त्रू० ॥ लागि सुरता शिववधूशुं, असंजम सेवे नही ॥ माहाव्रत पाले इं डी जीते, कषाय चारु हठावहीं ॥ वैराग नावें अधिक क्रम्या, जोग तीनुं सम करे ॥ ज्ञान दरिसण चरण पूरण,रोग मरणसुं नही मरे ॥ मुनि रो०॥१०॥ ढाल ॥ केइ चउदे पूर्वके धारी, केइ द्वादश अंग नंमारी ॥ केइ अवधि मनःपर्यवज्ञानी, तेजोलेश्या लब्धि करी ठानी ॥११॥त्रू०॥ करी ठानी,लब्धि वैक्रिय आहारक,ध्यान शुकल ज ध्याइया ॥ घनघातिक केइ कर्म काटी,ज्ञान केवल पाइया ॥ पृथ क्कोडी सहस्र मुनिवर,उत्कृष्ट जघन्य मनाइयें ॥ वंदियें शुद्ध ना व नविका, साधु मंगल गाइयें ॥३॥१२॥ ढाल ॥ जे जे जैन धर्म जयकारी, केवलि प्ररूपित हितकारी ॥ इणमें जीवदया अगवा नी, यातो सर्व सिद्धांतें वखानी ॥ १३ ॥ त्रू० ॥ वखाणी सर्व सिद्धांतमांही, शंका नहीं इणमें रति ॥ निज प्राण सम सब प्रा णी जाणो, सोचो इम निर्मलमती ॥ शाश्वतो त्रिहुं कालमांही, सकल जिन दाख्यो सही ॥ ए शुद्ध शरधा धारिया विण, करणी लेखामें नही ॥ १४ ॥ ढाल ॥ जाके जीव दयारुचि जागी, सो जाणो हलुकर्मी सोनागी ॥ निरवद्य शुद्ध करणीधारी, इणसुं त रिया अनंत संसारी ॥ १५ ॥ त्रू०॥ संसारी तरिया अनंत इणसुं,

आदरो इम जाणीने ॥ लही अविचल सुरक संपत, दुःख द्यो मत प्राणीने ॥ ज्ञान दरिसण चरणमांही, धर्म हिरदे लाइयें ॥ सरव आगम सार चउथो, धर्म मंगल गाइयें ॥नित्य धर्म०॥४॥१६॥ढाल॥ अरिहंत सिद्ध साधु धर्म ए चारी, लोकोत्तम एह विचारी ॥ शरणागत ए चउमानो, इणमें शंका मत आणो ॥१७॥ त्रू०॥ मत आणो शंका शरण लेतां, दुःख नहीं व्यापे कदा ॥ चोर दुशमन रोग नासे, लहो अविचल संपदा ॥ कहे रिरक तिलोक मुझने, सरण होजो सर्वही ॥ सुणे सरहे तेहि जनने, होशे सुख शाता सही ॥ सदा होशे० ॥ १८ ॥ इति चार मंगल स्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ परमेष्ठिपरमानंदस्तव छंद प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो अरिहंताणं,इम पांचुं पदमांय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रौं वाहा,जपतां ह्रीं श्रीं थाय ॥१०८॥१॥ अ० सि० आ० उ० सा०॥

॥ छंद त्रिभंगी ॥

॥ प्रणमुं सरसती, होय वरमति, चित्त हुलसे अति, गुण थुणवा ॥ शुद्धभावें ध्यावे, सो सुख पावें,एकचित्त चावे,यश सुणवा ॥ जयजय परमेष्ठी,जगमें श्रेष्ठी,दे पद ज्येष्ठी,जगधारं ॥ त्रीजग मझारं, नाम उदारं,जयसुखकारं,नवकारं ॥१॥ ए टेक ॥ बारे गुणवंता,श्रीअरिहंता, लोग महंता,गुणगहेरा ॥ घनघातिक कर्म,मिथ्याभर्म,त्याग अधर्म, विष लहेरा ॥ शुकल मन धाया, केवल पाया,इंदर आया, तिणवारं ॥ त्रि० ॥ २ ॥ वर प्रषदा बारे, हर्ष अपारे, सुणि अवधारे, जिनवाणी ॥ अमृतसं प्यारी, जगहितकारी, सुर नर नारी, पहेचाणी ॥ केइ संजम धारे, केइ व्रत बारे, कर्म विदारे, शिव त्यारी ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ दुतिय पद ध्यावो, सिद्धगुण गावो, फिर नही आवो, जिहां जाइ ॥ जे अलख निरंजन, भविमन रंजन,

कर्मके भंजन, शिव सांइ ॥ पुजलदा फंदा, दूर निकंदा, परमानं दा, अविकारं ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ अठगुणके धारे, जगत निहारे, का ल न मारे, उनतांइ ॥ जिहां सुख अनंता, केवलवंता, गुण उच रंता, वे नाई ॥ निजवास बताइ,द्यो मुज तांइ, तुमसा नांइ, दा तारं ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजें, सेवा कीजें, हर्ष धरी ॥ पंच महाव्रत पाले, दूषण टाले, गज जिम माले, शूर हरी ॥ पांचुं वश करते, पंच उच्चरते, पांचुंइ हरते, दुःखकारं ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ शीतल जिम चंदा, अचल गिरिंदा, गनपति इंदा, शिरदा रं ॥ सागर जिम गहेरा, ज्ञान लहेरा, मिथ्या अंधेरा, परिहारं ॥ संपद वसु पावे, न्याय बढावे, पाले पलावे, आचारं ॥ त्रि० ॥७॥ गुरुसेवा साधी, विनय आराधी, चित्त समाधि, ज्ञान भणे ॥ बा रे अंग वाणी, पेटी समाणी, पूरव नाणी, संशोहणे ॥ निरवद्य सत भाखे, शास्तर साखे, गुण अभिलाखे, निजसारं ॥ त्रि० ॥८॥ उवझाया स्वामी, अंतर जामी, शिवगतिगामी, हितकारी ॥ शीख णने आवे, जोग शिखावें, न्याय बतावे, उपगारी ॥ दुर्गतिमां पडतो, कादव गडतो, चित करे चडतो, तिण वारं ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ कंचुक अहि त्यागे, दूरै भागे, तिम वेरागें, पाप हरे ॥ जूगपर वंदा, मोहनी फंदा, प्रभुका बंदा, जोग धरे ॥ सब माल खजीना, त्यागन कीना, माहाव्रत लीना, अणगारं ॥ त्रि० ॥ १० ॥ पाले शुद्ध करणी, भवजल तरणी, आपद हरणी, दृष्टि रखे ॥ बोले स तवाणी, गुप्ति गाणी, जगका प्राणी,सम्म लखे ॥ शिव मारग ध्या वे, पाप हणावे, धर्म वढावे, सत सारं ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ ए प्रणमे भावें, विघन हणावे, अरि हरि जावे, दूर सही ॥ जे तपतेजारी, दुःख विमारी, सोग सवारी, आत नही ॥ ग्रहपीडा भागे, दृष्टि न लागे, शत्रु न जागे, लीगारं ॥ त्रि०॥ १२ ॥ एह मंतर नीको, तारक जीको, त्रिजग टीको, सुखदाता ॥ ए मंत्र करारी, महिमा

नारी, लहे नर नारी, सुख शाता ॥ सरजी घनवेली, दे धन ठेली, नवनव केली, यह सारं ॥ त्रि० ॥ १३ ॥ पद्मासन वाली, रंग निहाली, आरत टाली, ध्यान धरे ॥ तिलोक पयंपे,जावसुं जंपे,शुद्ध सिद्ध संपे, जेह धरे ॥ एह छंद त्रिभंगी,गावे उमंगी, नवनवरंगी, जयकारं ॥ त्रि० १४ ॥ इति परमेष्ठिपद आराधनस्तवनं ॥ २ ॥

॥ अथ भयभंजण अरिहंतजिको स्तवन छंद प्रारंभः ॥

॥ चोपाइ ॥ जे जे विश्वनाथ जसवंत, प्रणमुं श्री अरिहंत महंत ॥ कुशलवेलि जलपुष्कर धार, दुरित तिमिर भानु संसार ॥ १ ॥ चित्रवेल चिंतामणि पास, कल्पवृक्ष जिम पूरण आश ॥ आरत हरण करण सुखसंत, चरण सरण धारो मनखंत ॥ २ ॥ क्रोध मान छल लोभ निवार, भए केवल पद तुम संसार ॥ इंद नरिंद सुरासुर देव, मन वच काय करे तुम सेव ॥ ३ ॥ लिपटे सर्व चंदनतरु भाल,गरुडशब्द सुणि नासत व्याल ॥ जंतुवृक्ष कर्म अहि जाण, तुम समरणतें होत प्रयाण ॥ ४ ॥ कोटि वृंद नारी जणे पुत्त,तुमसो अवर न प्रसवें सुत ॥ उगे नक्षत्र चउदिशि मांय, दिनकर पूरव दिशि प्रगटाय ॥ ५ ॥ तुम निर्मल गुण आगर देव, क्षमासागर आप अछेव ॥ धर्मधुरंधर सारथवाह, धर्मचक्री प्रभु त्रिजगनाह ॥ ६ ॥ अविनाशी अविकारी अरूप, निर्भय करण परमसुखरूप ॥ जगगुरु जगबंधव जगईश, त्रिकरण शुद्ध नमावुं शीश ॥ ७ ॥ जनम जरा मरण दुःख सोग, एह अनादि लग्यो भवरोग, तुम सुमरण उषध जो लेत, भवभय व्याधि रंच न रेत ॥ ८ ॥ तुम जग वछल करुणावंत, शांतिकारक श्री भगवंत ॥ में मतिहीण अलप मोय बोध, तुम गुण कैसें वरणवुं शोध ॥ ८ ॥ केइक हरि हर जपत महेश, केइक सरस्वति गोरी गणेश ॥ केइक रवि शशि नव ग्रह देव, केइक जल थल अगनी

सेव ॥ १० ॥ केइक ईसा पेगंबर पीर, केइक देवी भैरव वीर ॥ में मन निश्चें कियो निरधार, तुम सम उर न को संसार ॥ ११ ॥ कियां सरशव किहां मेरु उत्तंग, किहां केशरी बलवंत कुरंग ॥ राधामणि वैडूर्य फेर, जेसें अमृत अंतर जहेर ॥ १२ ॥ जेसें वसतर कंबल हीर, निशिदन अंतर कायर वीर, आक दूध किहां धेनु खीर, खीरसागर किहां खारुं नीर ॥ १३ ॥ पुण्य पाप फल रंक ने राय, परगट द्रव्य सुपनकी माय ॥ सत्य जूठ तस्कर साहुकार,आगियातेज रविझलकार ॥ १४ ॥ जेसें कर्म घाती कर्मवंत, प्रत्यक्ष अंतर भासे अनंत ॥ विश्व विख्यात सदा सुखकार, ज्युं उदधिमें द्वीप आधार ॥ ६ ॥ भूख्या ॥ भोजन प्यासा नीर,रोगी औषधथि मन धीर ॥ पंखी भन नट वंश विचार, तिम तुम नाम तणो आधार ॥ १६ ॥ बालक जननी गउ वछ हेत, हंस सरोवर आशरे रेत ॥ ज्यों हस्ती कझलवन प्रीत,अंब कोयल चकवी आदीत ॥ १७ ॥ सति भरतार बपैया मेह, मधु कर मालति अधिक सनेह ॥ लोभी मनमें धनको जाप, तैसें हुं समरुं प्रभु आप ॥ १८ ॥ हिंसा जूठ चोरी उन्माद, सेव्यो परि ग्रह क्रोध अनाद ॥ मान माया त्रसना अति कीध,राग द्वेषने क्लेश प्रसिद्ध ॥ १९ ॥ आल दीयां करि चाडी कूड, परअपवाद किया भरपूर ॥ विषयकषाय रतारत आण, वांध्यां निकाचित कर्म अ जाण ॥ २० ॥ कपट सहित कही मरषावाद, मिथ्या मत क रणी आल्हाद ॥ करण करावण करी में मोद, पाप अढारा धर्म विरोध ॥ २१ ॥ इणविध करियां करम करूर, यह तो नरक समां डुःख पूर ॥ परमाधामी दीनी त्रास,नही मानी किंचित अ रदास ॥ २२ ॥ तिरियंच वेदन सागर रूप, जंगम थावर पडियो कूप ॥ छेदन भेदन कष्ट महंत, जनम मरण डुःख सह्यां अनंत ॥२३॥ नर भव नीच जाति कुल हीन, डुःखी दरिद्रि भयो अति

दीन ॥ जन जन आगें जोड्या हाथ, पूरण नहि मिलियो जल जात ॥ २४ ॥ पाप उदय नाटकियो देव, नयो में करी सुरनी सेव ॥ पाड्यां नाटक तोडी तान, करम उदे में नयो हेरान ॥ २५ ॥ चउगतिभ्रमण महा दुःख लीन, तुम शरणा विण नव नव दीन ॥ कीधा में अपराध अपार, नरियो हुं अवगुण भंमार ॥ २६ ॥ खोय दियो में निरर्थक काल, मोहनी कर्म नर्म जंजाल ॥ सर्प अंधारे जेवडी जेम, छीपखंम रूपुं ग्रहे तेम ॥ २७ ॥ मृगमरीचिका जाणत तोय, प्यास बुझावण हिरणां सोय ॥ धावत धावत छोडे प्राण, तेसे में नमियो अन्नाण ॥ २८ ॥ जेसें ज्वर तन प्रबलता होय, अन्नरुचि नहिं व्यापे सोय ॥ तेसें कुकर्म उदय गत जीव, धर्म रुचि नहि आवत ईव ॥ २९ ॥ जब तन ज्व रको मिटत विकार, तब सोइ वंछ्या करत आहार ॥ अशुन्न कर्म जब होत प्रयाण, तब तुम सरण ग्रहे नवियाण ॥ ॥ ३० ॥ जाणी में आगम अनुसार, किंचित तुम मारगकी कार ॥ ज्ञान दर्शन पूरण चारित्र, पले नही मुज शुद्ध पवित्र ॥३१॥ पण एक चरण शरणकी आश, धारी में अव हीये विमास ॥ आश निराश करण नही रीत, तुमसूं लागी पूरण प्रीत ॥ ३२ ॥ तुम सम उंर न कोइ कृपाल, अधम उद्धारण दीन दयाल ॥ तुम विन कोन मो होत सहाय, तुम विन कोन नविक सुखदाय ॥ ॥ ३३ ॥ गज मदवंत माहा विकराल, सन्मुख आवे न नरकूं नाल ॥ मारण आवे नरतो फाल, तुम जपतां हरि होवे शियाल ॥ ३४ ॥ कलपंत काल समीर अदंम, जले दावानल धूम्र प्रचंम ॥ एसे कष्ट नजे जन कोय, तुम कीरत जल शीतल सोय ॥३५ ॥ श्याम रंग दृगलाल कराल, क्रोध उद्धत ध्यावे विकराल ॥ नाग दमण तुम नाम विशाल, रटतां विघन करे नही व्याल ॥३६॥ नूपसुं नूप करे संग्राम, रक्त खाल वहे तिण गाम ॥ एसें संकट

ध्यावे आप,लहे रण विजय टले संताप ॥३७॥ अथाग जल वहे वाय कुवाय, उठे किल्लोल वाहण कंपाय ॥ एसी विपत ध्यान करनार, सो सहि पावे सागर पार ॥ ३८ ॥ सास खास ज्वर गुंबड दाह, कुष्ट भगंदर रोग अगाह ॥ जो तुम प्रणमे भाव निःशंक, ततक्षण प्रलय होत आतंक ॥ ३९ ॥ पावन बेडी हथकडी हाथ, रोके भाखसी रुंधे भात ॥ एसी आपदा समरे आप, बंधण टूट टले संताप ॥ ४० ॥ तुम्ह रणमोचन गरिब निवाज, बंधण छोडे श्रीजिनराज ॥ तुम त्रिहुं लोकमें तिलक समान, तुम नामें दिन दिन कल्यान ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नमो नमो अरिहंत,ऋद्धि सिद्धि वृद्धि सुख संत ॥ देजो दीनदयानिधि मोय, भव भव सरणो वंछुं तोय ॥ ४२ ॥ हय गय रथ दल प्रबलता पूर, वेरी डुशमन नासे दूर ॥ पूत सपूत कलत्र गुणवंत, मिले संजोग रहे सुख जंत ॥ ॥ ४३ ॥ डुशमन बल नहिं लागे दाव, वैर मीटी होय सज्जन भाव ॥ जहां जावे तिहां आदर होय, मोहनी मंत्र नाम तुम जोय ॥ ४४ ॥ जड मूरख नर जे मतिहीण, पण तुम समरणमें रहे लीण ॥ बुद्धि प्रबल सो पंमित थाय, जगमें पूजा होत सवाय ॥ ॥ ४५ ॥ आभको कागद मशी सब नीर, लेखणी लेवे सुदर्शन गीर ॥ जो लिखे सरस्वति गुण विस्तार, सागर कोडि लहे नहिं पार ॥ ४६ ॥ अल्पमति हुं प्रमादी जीव, केसें तुम गुण कहुं अतीव ॥ तुम वालेश्वर जीवन प्राण, राज राजेश्वर गुणनिधि खाण ॥ ४७ ॥ तिलोक रिख करे अरदास, अंतरजामी तुम गुण रास ॥ आपके पास न मागुं लेश, मोय बतावो निज प्रदेश ॥४८॥ एतिक अरजी लीजो मान, कबहुं न भूलुं तुम एसान ॥ नीठ नीठ जाण्या तुम देव, भव भव दीजो याहरी सेव ॥ ४९ ॥ सवंत उगणीशें बत्तिस मान, ज्येष्ठ कृष्ण तिथि दूज प्रमान ॥ वार शनी सिद्धि जोग विचार, भयभंजन स्तव कियो उच्चार ॥ ५० ॥

शहेर शाहजापुर मालव देश, सुखशाता चउ तीर्थ हमेश ॥ नणे गणे सुणे जे नर नार,तस घर वर्त्ते मंगल चार ॥ ५१ ॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश जिनस्तोत्रछंद प्रारंभः ॥

॥ छंद त्रिभंगी ॥ श्रीआदिजिनंदं, समरसकंदं, अजितदिनंदं, भज प्राणी ॥ संभवजगत्राता, शिवमगराता, द्यो सुखशाता, हित आणी ॥ अभिनंदन देवा, सुमति सुसेवा, करो नितमेवा, रिपुघाता ॥ चोविश जिनराया, मनवचकाया, प्रणमुं पाया, द्यो शाता ॥१॥ श्रीपद्मसुपासं,शशिगुणरासं, सुविधि सुवासं, हितकारी ॥ श्री शीतलसामी, अंतरजामी, शिवगतिगामी, उपकारी ॥ श्रेयांसदयाला, परमकृपाला, भवजनवाला, जगदाता ॥ चो० ॥ २ ॥ वासुपूज्य सुकंतं, विमल अनंतं, धर्म श्रीसंतं, संतकारी ॥ कुंथु अरनाथं, तज जगसाथं, मल्लीसुआथं, संग धारी ॥ मुनिसुव्रत सुनमी, आतमाने दमी, दुर्मतिने वमी, तप राता ॥चो०॥३॥ रिष्ट नेमि बडाई, नार न व्याही, तोरण जाइ, छटकाई ॥ नाग नागण तांई, दिया बचाई, पारस सांइ, सुखदायी ॥ जय जय वर्द्धमानं, गुणनिधिखानं, त्रिजग भानं, शुद्ध आता ॥चो०॥४॥ संसारका फंदा, दूर निकंदा, धर्मका छंदा, जिण लीना ॥ प्रभु केवल पाया, धर्म सुनाया, भव समजाया, मुनि कीना ॥ कहे रिख तिलोकं,सदा तस धोकं, द्यो सुखथोकं, चित्त चाता ॥ चो० ॥ ५ ॥ इति संपूर्णः ॥

॥ अथ श्रीपंचपरमेष्ठि छंद ॥

॥ अर्धनाराच छंद ॥ त्रिलोक्य संत श्रेष्ठिकं, नमामि पारमेष्ठिकं ॥ भजे भजे उदंगलं, भवामि सदा मंगलं ॥ १ ॥ सर्वांग अंग सुंदरं, मारंत मार दुर्धरं ॥ सहस्त्र अष्ट लंछनं, समस्त शुद्ध स्वछनं ॥ २ ॥ तितिक्ष जे चतुष्टकं, हणंत कर्म दुष्टकं ॥ तपश्चर्या सपुष्टकं, धरंत ध्यान सुष्टुकं ॥३॥ सुज्ञान पूर्ण धारकं, अज्ञान मर्म वारकं॥

सुअष्ट प्रातिहारकं, सुजव्यजीव तारकं ॥ ४ ॥ प्रमादवाद खंमितं, अनंतगुण मंमितं ॥ अशुज योग दंमितं,नमामि परम पंमितं ॥५॥ सुजानु कोटि जास्करं, जवाब्धि तारकं परं ॥ विकारदृष्टि मोचनं, नमामि शांतिलोचनं ॥ ६ ॥ सर्वत्र पाप खंमनं, सुजैनधर्म मंम नं ॥ अनंतसुख दायकं, नमामि संघनायकं ॥ ७ ॥ विशिष्टगुण अष्टकं, समस्त शत्रु नष्टकं ॥ अरूपरूप रासकं, सदैव स्थीरवासकं ॥ ८ ॥ अनंत सुख सुस्थितं, रहंत सद्मनिर्मितं ॥ जवौघसर्व वार कं, नमामि निर्विकारकं ॥ए॥ छत्रीश गुण शोजितं, कषाय चउ अ क्षोजितं ॥ सुसंपदाष्ट माचकं, नमामि नित्य वाचकं ॥ १० ॥ प्रमा ण नय संश्रुतं, पचीश गुण संयुतं ॥ सुज्ञान अन्य दायणं, नमामि उपाध्यायणं ॥ ११ ॥ तजंत जगतजालकं, परप्राण रक्षपालकं ॥ वर्जंत पाप कारणं, गर्जंत धर्मधारणं ॥ १२ ॥ तर्जंत काम क्रोधकं, लर्जंत सो विरोधकं ॥ वितराग आण शोधकं,नमामि संत जोधकं ॥ १३ ॥ अज्ञानता प्रहारणं, अखील सुरककारणं ॥ हणंत मोह फेणतं, नमामि जिनवैणतं ॥ १४ ॥ मिथ्यांधकार जंजणं, ददामि ज्ञान अंजणं ॥ प्रमाद दुःख चूरणं, नमामि सत्यगूरुणं ॥१५॥ ति लोकरिक संस्तवे,शरणुं सदा जवोजवे ॥ कृपार्णव मया करी, सदैव द्यो हिरी सिरि ॥१६॥कलश ॥ दोहो॥ जयजय श्रीपरमेष्ठिने,जयजय श्रीजिनवेण ॥ जय जय श्रीगुरुकी रहो, दियो सुमारग जेण ॥१७॥

॥ अथ अतीत अनागत वर्त्तमान चतुर्विंशति जिन स्तवन छंद प्रारभ्यते ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥ प्रणमुं परमेष्टीगौतमस्वाम, जिनवाणी स रस्वती सुखधाम ॥ गुरुचरणांबुज प्रणमुं जाव, कहुं त्रिहुंकाल चो वीशी नांव ॥ १ ॥ अतीत चोवीशी जइ हे अनंत, ते वंदूं में शिवपुरकंत ॥ पण एक वर्त्तमानथी अतीत, नाम कहुं तस मन

धरि प्रीत ॥ २ ॥ प्रथम केवलज्ञानी जिनराज, निर्वाणी सागर तारणी जाऊ ॥ महाजस विमलजिणंद सुखकार, सर्वानुभूति श्रीधर उद्धार ॥ ३ ॥ दत्त दामोदर जपुं जिनदेव, सुतेज स्वामी हरि कर्मखेव ॥ मुनिसुव्रत सुमतिजिन ईश, शिवगति स्वामी नमुं निश दीस ॥ ४ ॥ अस्तंगजी नेमीश्वर जाण, अनल नम्या होवे जन्म प्रमाण ॥ जसोधर कृतारथ दोइ जिनराज, जनेश्वरजी हो गरिब निवाज ॥५॥ शुद्धमतिजी शिवकर नमुं,नव नव संचित पातक गमुं ॥ स्यंदन चंदन जेम सुभाव, संप्रतिजी प्रणमुं चित चाव ॥ ६ ॥ अतितचोवीशी नाम ए जाण, प्रातें नित जपजो भवियाण ॥ अब कहुं वर्त्तमान जिन भान, इणहिज भरत क्षेत्र भये स्वाम ॥ ७ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंद, सुमति कुमति करि दूर निकंद ॥ पदम सुपारस जिन सुखकंद, चंद्रप्रभ पारतिख भीम चंद ॥८॥ सुविधि शीतल श्रेयांस सुधीर,वासुपूज्य विमल जगपीर ॥ अनंत धरम शांति कुंथु दयाल, अर मल्लि मुनिसुव्रत कृपाल ॥ ए ॥ एकविशमा नमिनाथ उदार, रिष्टनेमी तजि राजुल नार ॥ पार्श्वप्रभू वंदूं वर्द्धमान, ए वर्त्तमान चोविशी जाण ॥ १० ॥ कर्म हणी केवलपद पाय, चोविशजिन पहुता शिव मांय ॥ महेर करो मुज पर अरिहंत, रविशशिसागर उपमावंत ॥ ११ ॥ तुम दरिसणकी मुज चित चाय, पल पल वंदूं शीश नमाय ॥ अनागत चोविशी भरत मझार, तेहनां नाम सुणो नर नार ॥१२॥ पदमनाभ सुरदेव सुपास, स्वयंप्रभ शिव करशे वास ॥ सर्वानुभूति देवश्रुत जिणेश, उदय करम नही राखशे रेस ॥ १३ ॥ पेढाल पोटिल सत्यकीरति जाण, सुव्रत अमम होशे जग भाण ॥ तेरमा निःकषाय खुलास,चउदमा जिणवर तो निष्पुलाक ॥ १४ ॥ निर्मम चित्रगुप्त समाधि, तरशे भवजल जेह अगाध ॥ संवर जिनेश अढारम जोय, यशोधर विजय मल्लि जिन होय॥१५॥

देव जिन अनंतविरज सुचंग, जद्रकृत द्रव्य भाव उत्तंग ॥ अनागत होशे दीनदयाल, दया धरम उपदेश रसाल ॥ १६ ॥ ते पण थापशे तीरथ चार, तरशे कई भवियण नर नार ॥ अतीत अनागत ने वर्त्तमान, बहोंतेर तीर्थंकर ए प्रमाण ॥ १७ ॥ आगमग्रंथ तणे अनुसार, संवत् उगणीशें त्रीस मझार ॥ भणतां गुणतां सुखसुविशाल, तिलोकरिख कहे मंगल माल ॥१८॥इति॥

॥ अथ अरिहंतजिनस्तवनछंद प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं जे मुनींद्र जिनेंद्र भणी, जस सेवे नरेंद्र सुरेंद्र फणी ॥ कीर्त्ति अनंत संत स्वामी तणी, त्रिहुं लोकमें साहेब आप धणी ॥१॥ गृहवास तजी प्रभु सुमति करी, तपरूप हुताशणी कर्मधरी॥ शुद्धभाव धमण करि मेल हरी, प्रभु केवल कमला वेग वरी ॥२॥ ॥ जेह दीपे अतिशय चोतिस करी,नैरोग्य महादिव्य देह धरी ॥ सं घेण संठाण प्रथम पावे, जलमेल कलंक जो नहिं थावे ॥ ३ ॥ निर्लेप निर्दोष शरीर रहे, तनुकांति उद्योत प्रकाश पहे ॥ शिर अगर कुंट आकार दिसे, निध कज्जलकुंचिय केश शिशें ॥ ४ ॥ दाडिम फूल तवणिज केशभूमी, संचित पुण्य पूरण नांही कूमी ॥ निलाड दीपें अर्धचंद्र टीको,उडुपति पूरण सो मुख नीको ॥ ५ ॥ परमाणुपेत श्रवण सोहे, भमुह तणु निर्ख मन मोहे ॥ नयनांबुज विकस्वर श्वेत भलां, उत्तंग दीरघ नासा सरला ॥ ६ ॥ अधरारुण विद्रुम रंग दीपें,दंतश्रेणी धवल शशि तेज छीपे ॥ रसनारत अमृत जल वरषे, दाडीमुछ सुंदर केश इसे ॥ ७ ॥ गिरुवा खंध भुज जस पुष्ट वली, फणीजिम प्रभुवाहा दीसे भली ॥ अछिद्र सकोमल शुभ पाणी, पुष्टांगुलि ताम्र रंग नख जाणी ॥ ८ ॥ रवि शशीदिक रेखा करमांही, सब एक सहस अठ दरसाई ॥ उतरता पासां उस उदरी,गंगावृत विकस्वर नाभि खरी ॥ ९ ॥ सिंहकटि वृत्ताकार स

ही, शुंढादंम उरुपिंमी शोन्न रही ॥ कूरम सम पृष्ट चरण दोइ, अंगुली नखमें कछु खोड नही ॥ १० ॥ पगथलीमें पद्म कमल सोहे,प्रभु निरखत सुर नर मन मोहे ॥ प्रभु आगें तेज मंद दिनकरका, मर्यादिक केश नख जिनवरका ॥११॥ लोहि मांस उजल गउ खीर करी, केतकी जिम स्वासा सुगंध भरी ॥ आहार निहार अदृष्ट सदा, नही देख सके चर्म दृष्टि कदा ॥१२॥ धर्मचक्र त्रिछुं छत्र आकाश चले, दिव्यशक्ति खग श्वेत चमर ढले ॥ पादपीठिका सिंहासन नन्नमांही,सो रतन फिटक वर छबि छाई ॥१३॥ सहस्रध्वजा परिवार करी,सो इंद्रध्वजा लहकंत खरी॥ छय ऋतु अशोक तरु सम वरते, अंधकार भामंमल नीवरते ॥ १४ ॥ सम भूम हुवे प्रभु जिहां बिचरे,कंटककी अणिया उलट करे ॥ जोजन लगे छ ऋतु सुखकारी, अचेत वायुरज परिहारि ॥१५॥ बरसे जलमंमल रज्जजमे, बरसे फुलकापुंज अनेक गमे ॥ दुर्गंध टले शुन्न वास रमे, अर्धमागधी न्नाषा लोक गमे ॥ १६ ॥ बारे प्रषदा मध धर्म कहे, निज निज न्नाषा सब अर्थ गहे ॥ वैरन्नाव न जागत सिंह अजा, वादी जन वाद करंत नजा ॥ १७ ॥ ईति होवे नहीसो कोश लगे, मरि मारीसो सब दूर न्नगे ॥ स्वपरचक्री दुःख देत नही, सो कोश दुष्काल न आवे कही ॥ १८ ॥ अधिक अणगमतो नही बरसे,थोडो पण नही ज्युं जन तरसे ॥ १९ ॥ आतंक जिरण सब टल जावे, नूतन वेदन नहि संतावे ॥ प्रभु चोतिश अतिशय करी छाजे,वाणी पेंतिस जिम घनगाजे ॥२०॥ चोसठइंद्रो जिनन्नक्ति करे,सुर नर सेवा मन हरष धरे ॥ पास्वंमसत खंमण मान न्नणी, त्रिगडो रचे करवामहिमा घणी ॥ २१ ॥ प्रथम प्राकार सो रूपा तणो, कंचन कोसीसा पीत न्नणी ॥ तोरण मणि रत्नमें चंग कह्यो, पावडी दश सहस्र प्रमाण लह्यो ॥ २२ ॥ दुजो गढ सोवनके मांहि, रतन कोशीसां छबि छाही ॥ रतनगढ त्रीजो प्रवर घणो, कोशीसां मणीके मां

ही जणो ॥ २३ ॥ पावडीया चारुहि पोजनतणी, पांच पांच हजा
र रसाल वणी ॥ नितियां तिनुंही कोटिगणी, अर्द्धसहस्र धनुष उर
त्तंग जणी ॥२४॥ धनुष तेत्रीश बतीस अंगुली, उपर वली ग्रंथाका
खुली ॥ पावडीया उंचां चोडापणे, एक रयणीके परमाण बने
॥२५॥ लंबां तो धनुष पंचाशी सही, पीठकामध्य जागे शोन रही ॥
आयाम विष्कंज छविश तणी, दोयशें वली धनुष उंचाई जणी ॥२६॥
कोट कोटको अंतर सो तेरे, जोजन मंमल परकाश करे ॥ पीठिका
पर स्फाटिकरतन केरो, सिंहासण सोहे अधकेरो ॥२७॥ तिण उप
र विराजी धर्मकहे, वारे पर्षदाकी बेठक कहे ॥ श्रावक श्राविका
देश विरितिधणी, कल्पवासिक देव इशाण अणी ॥ २८ ॥ विमाणि
क सुरि साधु समणी, ए तीनुंही अगनिकूण जणी ॥ विंतर ज्योतिषी
अरु जवणपति, नैरीत कूण बेठत देव अति ॥२९॥ देवीवली तीनु
ही देवतणी, वाव्य कुणमें बेठत सेव जणी ॥ ३० ॥ इणविध बे
ठी उपदेश सुणे, शुद्धजावथकी अघमेल धुणे ॥ एक जोजन लगे
अमृतधारा, वैरागपणे ग्रहेव्रत सारा ॥ ३१ ॥ ग्रहगण उगे नित
दिशचारी, एकविश प्रगटे रवि हद धारी ॥ प्रसवे नंदन केई जग
नारी, धन धन जिन धन महेतारी ॥ ३२ ॥ जे रवि शशी मेरु
उपमा सिंधु, गुणकहि न शकूं मुजमति बिंडु ॥ जिनगुण महिमा
पार न पावे, सुरगुरु सरस्वति स्वयगुण गावे ॥ ३३ ॥ प्रजु समरण
जो करे जाव पके, अरि करि हरि जोर न लाग सके ॥ जल जल
ण जलोदर रोग हठे, वध बंधण परवश दुःख कटे ॥ ३४॥ रीद्धिसि
द्धि जरपूर जंमार घणो, परताप ते प्रजुजी नाम तणो ॥ प्रथमपद
मंगल अतिजारी, तिलोक कहे सेवाचो चरणारी ॥ ३५ ॥ संवत्
उगणीशें संवत्सर त्रिशें, ए छंद स्तवना करी जगीशें ॥ शुद्धजा
वें जणे गुणे नर नारी, ते पावे जवजल निधि पारी ॥ ३६ ॥ कलश ॥
इमदेव अरिहंत सेव कीरति, करियें एक चित्त चावसू ॥ तरियें ज

वजल दुःखसागर,बेठ कर जिमनावसुं॥तुम नाम मंगल टले उदंगल, करुणा मुजपर कीजीयें चरणसरणकी सेव साहेब, अचल पद वी दीजियें, प्रभु अब तो महेर करिजीयें ॥१॥ इति अर्हंतस्तोत्र ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनछंद प्रारंभः ॥

॥ त्रिभंगीछंद ॥ जिनसासन स्वामी, अंतरजामी, शिवगतगामी, सुखकारी ॥ जगमें जसवंता, श्रीभगवंता, सुगुण अनंता, उपगारी ॥ सिद्धार्थकुल आया, जगत सुहाया, शुभपल जाया, गुणधारी ॥ धन त्रिसलानंदन, कुलध्वज स्यंदन, जिनचरननकी बलिहारी ॥ १ ॥ आसण कंपाया, सुरपति आया, सीस नमाया, शुं भभावें ॥ वैक्रियकी पासें, मेलि हुलासें, ले जिन तासें,गिरि आवे ॥ तीहां प्रभुजीनो, महोछव कीनो, फिर मुंक दीनो, ज्यां महतारी ॥ ध० ॥ २ ॥ युगबंदणा करकें, निद्रा हरकें, स्तवन उच्चरकें, घर जावे ॥ भइ रवि उगाइ, भूधव ताइ, दासी बधाइ, दरसावे ॥ नृप मोछव कीयो, दानज दीयो, हर्षेत हीयो, नीहारी ॥ ध० ॥ ३ ॥ यौवन वयमांही, नारी व्याही, अवसर पाही, जोग ग्रहें, तपस्या तन तावे,शम दम भावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रभु क्षमासागर, ज्ञान उजागर, गुणरत्नाकर, अघवारी ॥ ध० ॥ ४ ॥ शुद्धसंजम पाले, दूषण टाले, शिवमग चाले, जगत्राता ॥ क्रोध मान ने माया, लोभ हगाया, मोह भगाया, अरिघाता ॥ शूकल मन ध्याया, कर्म खपाया, केवल पाया, जिण वारी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सुणि नाथ बडाइ, मन अकडाइ, आया चलाइ,प्रभु पासें ॥ विस्मय अति पाया, चित्त लजाया, गर्व गमाया, वीमासे ॥ प्रभु भमें मिटाया, जिनमग आया, संजम ठाया, तिण सारी ॥ ध०॥ ६ ॥ परथम इंद्रभूति, पूरवधर श्रुति, त्रिपदी संयुति, फरमाया ॥ गणधरपद लीना, परम प्रवीना, शम दम भीना, तन ताया ॥ चुमा

लीशें लारा, गणधर ग्यारा, नय अणगारा, व्रतधारी ॥ ध० ॥ ७ ॥ चार तीरथ थाप्यां, पाप उथाप्यां, सुव्रत आप्यां, नर नारी ॥ केइ स्वर्ग सिधाया, केइ शिव पाया, श्रीजिनराया, हितकारी ॥ शैले शी न्नावें, प्रज्ञुशिव पावे, जगमें नावे, अविकारी ॥ ध० ॥ ० ॥ प्रज्ञु अलख निरंजन, नवदुःख नंजन, नवजन रंजण, कृपाला ॥ जे शुद्धमन ध्यावे, दुःख पलावे, सुख उपावे, प्रतिपाला ॥ कहे री ख तिलोका, नीरत धोका, दिजो शिवथोका, नव पारी ॥ध०॥ए॥

अथ अरिहंतस्तोत्र छंद प्रारंज्ञः ॥

॥ मोतीदाम छंद ॥ सदा जगनायक स्हायक हंस, सुकायकवा यक लायक वंस ॥ सुश्रेष्ठ विशेष्ट सुज्येष्ठ कहंत, अहो अरिहंत करो सुखसंत ॥ १ ॥ सुतात सुमात सुन्रात सुजात, सुगात सुवात सुपा त सुआत् ॥ लंठन सुअष्ट सहस्र कहंत ॥ अहो० ॥ २ ॥ विशालि सुन्नाल सुवाल अवाल, दयाल मयाल अजाल कृपाल ॥ सुमाल सु लाल नवीक इछंत ॥ अहो० ॥ ३॥ अखंम अमंम अचंम अतंम, अगंम अवंम असंम सुसंम ॥ अफंमण ठंम नये गुणवंत ॥ अ० ॥ ४ ॥ माहावीर गंन्नीर ध्यान सुस्थीर, अचीर विचीर अगीर सुगी र ॥ अपीर सुपीर सुबोध कहंत ॥ अहो० ॥ ५ ॥ अरीश विरीश शत्रुदल पीस, जगीश मगीश गुणीश वरीश ॥ अखेह अठेह अनेह रहंत ॥ अहो० ॥ ६ ॥ उयापक पाप तीर्थंकर आप, जपंत जिनंद वधंत प्रताप ॥ अनंत गुणातम श्रीन्नगवंत ॥ अहो० ॥ ७ ॥ अने ह विनेह अगेह सुगेह, अमेह विमेह अदेह विदेह ॥ अलेप सुले प सदा दरसंत ॥ अहो० ॥ ० ॥ न कर्म न नर्म न गर्म उन्नाह, अक्रोध अमान अमाय अदाह ॥ अरोग असोग अन्नोग तरंत ॥ अ हो० ॥ ए ॥ सुध्यान अराध समाधि प्रणाम, विहार करंत नवी हि तकाम ॥ नजंत सुरासुर सामि महंत ॥ अहो० ॥ १० ॥ कहंत स

दा उपदेश रसाल, हणंत मिथ्यातम बंधन जाल ॥ आराधक होय तिरंत अनंत ॥ अहो० ॥ ११ ॥ रटंत कटंत दुरीत समस्त, लहंत सुखामृत वंछित वस्त ॥ उद्धारक वृद्ध सहित हितवंत ॥ अहो० ॥१२॥ त्रिजोग निवार वसे शिवलोक, चरणांबुज धोक, ते रिख ति लोक ॥ विलोक सुदेव जपोजग कंत ॥ अहो० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाष्टक छंद प्रारंभः ॥

॥ नाराच छंद ॥ प्रसिद्ध सिद्ध शिव कंत, संत श्रेष्ठ देव हो ॥ झट्टक दी सकल पाप, खेव नीरलेव हो ॥ कलंक बंक झंक अंक, रंच त्वं न झंबरं ॥ कृपाकरो दया निधी, रिद्धि वृद्धी सिद्धी करं ॥ १ ॥ अरूप रूप स्वअनूप, भूपधू अखंड हो ॥ अफंड भंड झंड गंड, छंडके प्रचंड हो ॥ अनंत ग्यान रूप तोय, पाप मेल संहरं ॥ कृपा० ॥२॥ प्रमाद क्रोध मानमाय, लोभलेशसो नही ॥ अनंत कालस्थित है, अनंत सुख रासही ॥ अष्ट माहागुण मूल, त्वं सदा सुसंवरं ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ विकार खार दूर टाल, राग द्वेष संहऱ्या ॥ अगाध जो भवोधि सो, धर्मपोतथी तऱ्या ॥ प्रत्येक एकमेक आप, व्याप हो गुणागरं ॥कृपा०॥ ४ ॥ अलेख रेख रूप नांही, पाप फंदबंध सो ॥ आहार भार हास्य त्रास, नाशकाम धंध सो ॥ अभंग ज्ञान संग चंग, गुप्त ना उजागरं ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ अलोक लोक द्रव्य क्षेत्र, काल भाव जाण हो ॥ त्रिलोकनाथ त्रात भ्रात, मंद चंद भाण हो ॥ विनाश किया रोग शोग, भोग भाव भंगुरं ॥ कृपा० ॥ ६ ॥ जपंत जाप आगनाग, सिंह चोर सो हटे ॥ कटंत बंध द्रव्य भाव, रोग दुःख जे मिटे ॥ विषय कषाय जाय जाय, आय सुख सागरं ॥ कृ० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख हस्त जोड, कर्ते नित्य वंदना ॥ निरोगबोध लाभ चहाय, कर्मकी निकंदना ॥ नहिं जक्तमांहि उर, आपसो विश्वंभरं ॥कृपा०॥८ ॥ नित्य मेव

ए सिद्धाष्टकं, पठंति जे मनोहरं ॥ विज्ञान मुक्तिसुखद्रव्य, जाव होत नागरं ॥ नान्यत्र देवलोक मांहि, सिद्धस्थान उपरं ॥ कृपा० ॥ ए ॥ दुहो ॥ अजर अमर अविकार हो, सिद्ध निरंजन देव ॥ किंकर पर करुणा करो, दीजो अविचल सेव ॥ इति सिद्धाष्टकस्तोत्र छंदः संपूर्णः ॥

॥ अथ आचार्यस्तोत्र छंद प्रारंभः ॥

॥ छंद मरहट्टामें ॥ जें ज्ञान महंता, समकितवंता, चारित रत पतधार ॥ उत्कृष्टी करणी, भवजल तरणी, पंचम वीर्य आचार ॥ स्वय पाले पलावे, पाप हणावे, उपदेशे नर नार ॥ गणिवर पद त्री जे, नित्य नमीजें, कीजें सफल जमार ॥ १ ॥ सव हिंसा टाले, दया सो पाले, निरवद्य बोले विचार ॥ दत्त व्रत ब्रह्मधारी, परिग्रह टारी, पंच जाम शुद्धधार ॥ सुरत चखुनासा, रसना फासा, इंद्रिय जितणहार ॥ गणि० ॥ २ ॥ पशु पंडग नारी, थानक टारी, नारिकथा परिहार ॥ अंग निरखवा वारे, आसन टारे, करे नही अधिको आहार ॥गणि०॥३॥ अंगशोभा टाले, वाड ए पाले, क्रोध न करे लगार ॥ अभिमान तजंता, कपट तजंता, ममतादी सव मार ॥ कषाय एह चारी, महा दुःखकारी, भरमावे संसार ॥ गणि०॥ ४ ॥ कर्मनका फंदा, दूर निकंदा, चाले ईर्या विहार ॥ निरवद्य मुख वाणी, ले शुद्ध अन्न पाणी, दोष बयालीस टार ॥ जयणा करि लेवे, विधिसुं परठवे, समितिए सुखकार ॥ गणि० ॥ ५ ॥ मन वचन काया, गुप्ति त्रिहुं माया, गुण छत्तीस उदार ॥ शुध किरियाधारी, ज्ञान भंडारी, करता पर उपगार ॥ उपदेश सुणावे, भर्म उडावे, तारे भवि नर नार ॥गणि०॥ ६ ॥ वर रूप दीपंता, महाबलवंता, वाणी अमृत धार ॥ अक्षर शुध बोले, सातू नय खोले, मोले नही लगार ॥ विद्यानिधाना, युगप्रधाना, गुणगण रत्नाकार

॥ गणि० ॥ ७ ॥ कुपक्ष नदी ताणे, सब मत जाणे, अन्यमतको परिहार ॥ शीतल शशि जीपे, रवि जिम दीपे, साथें बहु अणगार ॥ पाखंम हणावे, जैन दिपावे, पाले संजम भार ॥ ग० ॥ ८ ॥ आचारज नाणी, गुणनिधि खाणी, आचारज सुखकार ॥ सुमरण सुखकारी, महिमा भारी, अरि करी भय परिहार ॥ दुःख जावे दूरें, संकट चूरे, पूरण रहे भंमार ॥ ग० ॥ ए ॥ आचारज स्वामी, अंतरजामी, सिद्ध पदके दातार ॥ गुणिवर गुण गावे, पार न पावे, रसना रचे हजार ॥ अलप गुण गाया, मन समजाया, तिलोक करें नमस्कार ॥ ग० ॥ १० ॥ संवत् कगणीशें, वर्ष चोतीशें, वैशाख पूनम शशिवार ॥ जो जपशे नावें, सोही सुख पावे, छंद मरहगधार ॥ प्रातें उठ वंदे, डुरित निकंदे, रिध सिध जय जय कार ॥ ग० ॥ ११ ॥ इति ॥ १४३ ॥

॥ अथ उपाध्यायछंद प्रारंभः ॥

॥ हाटकीछंद ॥ संसारसागर, दुःखआगर, जाणे नागर, धीर ए ॥ ततकाल त्यागे, दूर भागे, शूर सागे, वीर ए ॥ मुनिराज पासें, ग्रहे दीक्षा, ज्ञान शिक्षा, आप ए ॥ चउथे पद उवकाय सुखकर, कीजें नित्यप्रत्यें जाप ए ॥ १ ॥ आचारंग चंग, अंग सुयेगड, ठाणायंग, सुखकार ए ॥ चउथो समवायंगनीको, जगवइ ज्ञाता, सार ए ॥ उपासंगअंत, गड अंग अष्टम, अनुत्तरोववाई, आप ए ॥चउ०॥२॥ प्रश्न व्याकरण, नव्यापूरण, अंगविपाक, रसाल ए ॥ गुरुदेवपासें, अर्थ धाखा, चउदे दूषण, टाल ए ॥ ग्यारा अंगसंगो, पांग शीख्या, अति चित्त, चालए ॥ चउ० ॥ ३ ॥ उत्पातअग्नी, वीर्य तृतीय, अस्ति ज्ञान सत्त, जाणीएं ॥ आतम प्रवाद, अरु कर्म पूरव, प्रत्याख्यान, वखाणीयें ॥ विद्या अबंध, प्रवाद पूरव, धारंत तोहि, न धाप ए ॥च०॥ ४ ॥ प्राण क्रिया, विशालपूरव, लोकबिंड,

सार ए ॥ चतुर्दश पूरव, अंग ग्यारा, पाठ अर्थ, सुधार ए ॥ अभिमान तज कहे, वेण चारू, नहिं करत कूडी, थाप ए ॥च०॥५॥ भविकजन जो,प्रश्न पूछे,नव पदारथ, भाव ए ॥ सूक्ष्म बादर, द्रव्य खटनो, पूछे कोइ, प्रस्ताव ए ॥ तब देत उत्तर, शोध सुत्तर, दे जिनागम, छाप ए ॥ च० ॥ ६ ॥ ज्ञानदाता, धर्मराता, बोले निरवद्य, वेण ए ॥ मिथ्यातखंमण, जैनमंमण, पाले जिनवर, केण ए ॥ गणिपदने, जोग सोहे, नामकर्म, आताप ए ॥ च०॥७॥ महाव्रत पाले, दोष टाले,चाले इरजा, शोध ए ॥ कर्मरूपी, शत्रुघातक, परम शूरा, जोध ए ॥ मनवचन काया,करण तीनुं, करत नही, सो पाप ए ॥च०॥८॥ उपाध्यायभक्ति, करतजुक्ति, ज्ञानगर, जीवंत ए ॥ मिथ्यात जावे,बोध आवे, थावे शिवपुरकंत ए ॥ जैनमारग, तरण तारण, अवर सब, कलाप ए ॥ च० ॥ ए ॥ जिन नही, जिनराज सरखा, वेण सत, सुखकार ए ॥ देशजिनपद, मांहि विचरे, करता पर, उपगार ए ॥ मिथ्यात्वअंधा, कर्मफंदा, ज्ञान असिकर, काप ए ॥च०॥१०॥ भवप्राणी तारे, संशे टारे,बहु सूत्र, विस्तार ए ॥ उत्तराध्ययन, इगियार मांसें, कह्यो वर्णव, जहार ए ॥ तिलोक रिख, कर जोडि वंदे, सदापुण्य प्रताप ए ॥ च० ॥ ११ ॥

॥ अथ साधुस्तोत्रछंद प्रारंभः ॥

॥ कामनी मोहनानी देशी ॥ साधु निर्ग्रंथने वंदणा किजीयें, मानवको भव सफल करीजीयें ॥ धन जे संत गुणवंत सोभागिया, भोग किंपाकसा जाणके त्यागीया ॥ १॥ पंच माहाव्रत समकित पालता, चार कषाय दावानल टालता ॥ भावसच्चे मुनि वंदूं में नित्त ए ॥ कर्णसच्चे जोग सच्चे सुकित्त ए ॥२ ॥ धन जे क्षमा वैरागमें राचिया, द्रव्य छ नव पदारथ जाचिया ॥ मन वचन काया सम धारता, ज्ञानदर्शन चरण शुद्ध सारता ॥ ३ ॥ समभा

वें करी वेदनी खमता, मरण आयाथकी जे करे समता ॥ गुण सत्तावीश संजम जे धरे, राग अने द्वेष जे किंचित् नहिं करे ॥४॥ तिनहिं शल्यसों मूल निकंदिया, मोहनी कर्मसूं ते नही फंदिया ॥ नही करे विकथा धर्म सुध्यावता, शुक्लध्यान धरकर्म खपावता ॥ ५ ॥ दया छक्कायकी पालता जे मुनि, क्रियाभेद मद सो नही करे महागुणी ॥ नववाड मुनिधर्म पाले अखंड ए, सकल मिथ्यातको छंडयोअ फंद ए ॥ ६ ॥ बावीस परिसह जिंतिया ते सही, बावन प्राणरक्षक विचरे मही ॥ बावन अन्ना चीरण टालता, चोराशी उपमा युक्त वै चालता ॥ ७ ॥ एक एक चउथादि षष्ट मासी करे, एकावली रतनावली आदरे ॥ गुणरतन संवछ धारता, प्रतिमादिक संलेषणा उहारता ॥ ८ ॥ तप उणोदरी छे अति मोटको, भिक्षाचरी रस त्याग नही छोटको ॥ काय किलेशनें पिंडसंलीनता ॥ षष्ट तप धारके तन करे क्षीणता ॥ ९ ॥ प्राश्चित्त विनय वैयावच्च जे करे, सझाय ध्यान काउसग्ग आदरे ॥ प्रछन्न खट तप साधे अणगार ए, टाले सहीजिके कर्मको खार ए ॥ १० ॥ चंद्र ज्यूं सोमदृष्टें करी दीपता,तप तेजें रवि किरणने जीपता ॥ सागर जेम गंभीर कहीजीएं, कुंजर जेम धीरजता लीजीएं ॥ ११ ॥ लब्धि पाया भली प्रगट तपस्या फली, खेलोसही जलोसही प्रसिद्ध प्रगटी भली ॥ वप्पोसही केही आम्मोसही पत्तिया, सव्वोसही कोठबुधि केइ मत्तिया ॥ १२ ॥ बिजबुद्धी वली पदानुसारिया, एकेक मुनिवर वैक्रिय धारिया ॥ चारणा विद्याधरा मुनिराजिया, रुजुविपुलमति संशय भांजिया ॥ १३ ॥ एकेक मति श्रुति अवधि धणी, मनःपर्यव केवल शोभा घणी ॥ केवली दोय क्रोडी सुखकार ए, नवकोडी उत्कृष्ट विचार ए ॥ १४ ॥ जघन्य दोय सहस्र कोडी जती, सहस्र प्रत्येक उत्कृष्ट पदें संजती ॥ आज्ञा जिणंदकी पालता जे सदा, धन जे जगतमें सकल छोडे अदा

॥ १५ ॥ डुरित टले मुनि नावच्चुं जंपता, तम दलित होवे जिम रवि तपतां ॥ कर्म शत्रु जीके करत निकंदना, रिख तिलोकजी करे तस वंदना ॥१६॥ संवत् उगणीशें तीस मझारए, ज्येष्ठ आदि छठ सूरज वार ए ॥ कामनीमोहना छंदमें जाणी ए, सुखवेली ज ले पुष्कर मानीयें ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम रूद्धि वृद्धि, समृद्धि कांरण, जपो मुनिवर,नावच्चुं ॥ धर्मदेव, महंत प्रणमुं, थूण्या सुगुरु, पसावसूं ॥ एम जाणी, सेवो प्राणी,सुसाधू, मनखंत ए ॥ ते लहे शिवपद, रूप निश्चें, निश्चयशिव सुख, संत ए ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिननामनमोथुणं युक्त स्तवन छंद प्रारंभः ॥

॥ जय जय आदीश्वरजी अजित नणी, संनव अनिनंदण मोक्ष धणी ॥ सुमति पदम सुपासमणी, चंदाप्रनकी जग महिम घणी ॥ १ ॥ पुष्पदंत शीतल हण्या कर्म अरी, श्रेयांस वासुपूज्य आर्तिहरी ॥ श्रीविमल अनंत धर्मजितकरी, शांतिनाथ प्रनु हत्यो रोग मरी ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि जिनसुखदाता, मुनिसुव्रत नमीश्वर जगताता, रिष्टनेमी करुणारस माता, पारस पारस सम विख्याता ॥ ३॥ वर्द्धमान जिणंद सासणराया, अतिक्षमा कर केवल पाया ॥ चोविश जिनेश्वर मन नाया, प्रणमुं वंदूं मन वच काया ॥४ ॥ अरिहंत धर्म आदितिर्थंकरे, स्वयमेव बोध शुद्ध ध्यान धरे ॥ पुरपोत्तम हरी जिम नांहि मरे, पुरपोत्तम पुंमरीक पंकसिरे ॥ ५ ॥ पुरुपोतम प्रनूगंधहस्ति नले, जिन विचरे जहां पाखंमी गले ॥ लोकोत्तम नाथ हितकार फले, दीपक ज्यों मिथ्या तम सर्व दले ॥ ६ ॥ उद्योत करे नविलोक हिये,अनयज्ञानरूपी प्रनु नेत्र दिये ॥ शुद्धमारग नूले जग जे प्राणी, मोक्षपंथ बतावे सुखदाणी ॥ ७ ॥ कर्मशत्रुयुं त्रास्या नव आवे, तिनकूं जिणस

रणागत थावे ॥ संयमजित वदायक स्वामी, बोध बीजदाता नमुं शिर नामी ॥ ८ ॥ धर्मदायक देशक नायगाणं, धम्मसारही जिन चक्रवर्त्ती जाणं ॥ अरिहंत अपडिहय वरनाणं,दंसणधरा वियट्टछउ माणं ॥ ९ ॥ रागद्वेष जिन्नाणं जावयाणं, नवउध तिन्नाणं तार याणं ॥ धन जिन बुध्दाणं बोधकाणं, अठकर्म मुत्ताणं मोयगाणं ॥ १० ॥ सब नाणदंसणशिव अचल थया, आरोग अणंत अखय अबाध रह्या ॥ आवे नहिं फिर इण जगमांई, सिध्दगति नामधेयं कहाई ॥ ११ ॥ जिण थानक प्रभु संप्राप्त थया,निजगुण संपूरण आ ठ कया,असुर सुर गरुड भुयंग देवा,इंद चंद करे प्रभुकी सेवा ॥ १२ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणिथी भारी,जिनवर महिमा अपरमपारी ॥ नरक निगोद गतिका ताला,जिननामथकी मंगलमाला ॥ १३ ॥ करि केस री सावज दुष्ट जिके,वली उदक अगनि भय दुःख तिके॥दुर्जन छल बल नहिं चालि शके,जो प्रभु समरण करे भाव पके ॥ १४ ॥ वध बंधण परवश दुःख कटे, वली चोर चरड भय दूर हटे ॥ गड गुंबड ज्वरादिक रोग मिटे,जो एक चित्त जिन नाम रटे ॥ १५ ॥ रूध्दि सिध्दि परिवार भंडार अति,तस आदर दे सुरराज पती ॥ जिन समरण थी प्रशस्त मती, दिन दिन वधे महिमा पुण्यरती ॥ १६ ॥ आभ कागद लेखिणी मेरु तणी,उदधि जल जेति मसी आणी ॥ सुर गुरु गुण गावे प्रेम भणी,अनंत गुणातम त्रिजग धणी ॥ १७ ॥ तिलोक रिख कहे शिर नामी, मुझ दरिसण द्यो अंतरजामी ॥ भव भव सरणुं आप तणुं, जब लग नहिं द्यो मुझ सिध्दपणुं ॥ १८ ॥ संवत् उगणीशें वर्ष त्रिशें, जिनस्तवन कियो चित्त जगीशें ॥ पढे सुणे जो नर नारी, तस घर वरते मंगल चारी ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ अथ जिनवाणिस्तवन छंद ॥

॥ त्रिभंगी छंद ॥ जय जय जिनराया,सूत्र सुणाया,धर्म बता या, हितकारी ॥ गणधरजी जीली, संधि सुमेली, नयरस केली,

विस्तारी ॥ रचे द्वादश अंगं, भंग तरंगं, भूव अभंगं, अतिभारी ॥ धन धन प्रभुवाणी,सब सुखदानी, भवजन प्राणी, उर धारी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ यहां नहिं तीर्थंकर, केवल गणधर, अवधिमुनिवर, मनज्ञानी ॥ जंघाविद्याचारी, पूरवधारी, आहारक सारी, माहा ध्यानी ॥ नहि गगणगमणी, पद अनुसरणी,वैक्रिय करणी, परिहारी ॥ध०॥२॥ देवर्द्धि खमासमण, तारण भवियण,उद्यम लेखण, जिण कीनो ॥ इणहिज आधारें, पंचम आरे, धर्मज धारे, जिनजीनो ॥ आलंबण महोटो,सूत्रको उंटो, रंच न खोटो,हितकारी ॥ ध०॥३॥ शुद्ध सम्यकृतरुवर, अतिदृढ परवर, वाणी सुधाकर, जलधारा ॥ या दया वधारण,हिंसा वारण,शिवसुख कारण,भवप्पारी ॥ ए बुद्धि वढावे, भर्म कढावे, पाप बुडावे, शुभचारी ॥ ध० ॥ ४ ॥ जे चिंता उच्चाटण, मोहणी दाटण, त्रिशल्यकाटण, कातरणी ॥ अरिकंद कुदाली, वंधण पाली, सुरतरु माली, सुत जरणी ॥ भवोदधिके मांई, जाऊ कहाई, वेगो जाइ, नर नारी ॥ ध०॥ ५ ॥ संशय विपर्याय, अने अध्यवसाय, तिहुअणमांय, होय नही ॥ त्रिदोष रहितं, त्रिगुणसहितं, त्रिपदीरीतं, भेद सही ॥ शुद्ध न्याय आराधी, शिववधू साधी, कर्म उपाधि, जिण वारी ॥ ध० ॥ ६ ॥ या विराधन करकें,यहांसें मरकें, उपज्या नरकें, दुःख पाया ॥ वलि गर्भमें लटक्या, चौगति भटक्या, जक्तमें अटक्या, भय भारी ॥ध०॥ ७ ॥ जिण हितकर जाणी, श्रीजिनवाणी, सो भवि प्राणी,सुख पाया ॥ समकित शुध करणे, मिथ्या हरणे, भवजल तरणे, शिव पाया ॥ तिलोकरिख जाची, शारदा साची, मन तन राची, जयकारी ॥ध० ॥ ८ ॥ कलश ॥ दोहा ॥ जिनवाणी जयकार है, अनुभवरसको सार ॥ नय प्रमाण विचारजो,पक्षपात परिहार ॥ ९ ॥ शम दम उपशम भावजुं,जे साधे नर नार ॥ तिलोकरिख तिणने सदा,प्रणमे वार वार ॥ १० ॥ इति जिनवाणीस्तवनछंदः संपूर्णः ॥

॥ अथ ॥

॥ चोवीश तीर्थंकरका लेखाकी चोवीशी प्रारंभ : ॥

॥ तेमां प्रथम एकसो पच्चीश बोल संख्याकी गाथा ॥ श्री वीर जिणंद सासण धनी, जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं निरंतर नित्य, जिनचोविशी वर्त्तमानो ॥ नाम १ बोध भव संख्या, २ द्वीप ३ क्षेत्र ४ दिशा ५ पहिचानो ॥ विजय ६ पूर्वभवनाम ७, पदवी ८ तिहां ज्ञान ए जणाउं ॥ सेव्या स्थानक संख्या १०, सर्ग गति ११ तिथि बताउं ॥ च्यवन तिथि १२ नक्षत्र १३ समे ए १४, सुपन १५ संख्या १६ विचार १७ ॥ जनमतिथि १८ वेला भली १९, उगणीश बोल विचार ॥ १ ॥ विशमामें जन्म देश, २० नगर २१ माता २२ पिता २३ गति २४।२५ ॥ दिशा कुमारी २६ इंद संख्या २७, गोत्र २८ वंशकी रीती २९ ॥ नाम स्थापन ३० प्रभु चिन्ह ३१, देहका लक्षन ३२ दाखुं ॥ वर्ण ३३ बल ३४ अवगाहना ३५, उछेद आत्मांगुल ३६ भाखूं ॥ प्रथम आहार ३७ विवाहनो ३८ ए, लोकांतिक ३९ दान सुधार ४० ॥ कुमार पद स्थिति ४१ राजनी ४२, शिबिका नाम विचार ४३ ॥ २ ॥ दीक्षातिथि ४४ वय ४५ तप ४६, दीक्षा परिवार ४७ पुर जाणो ४८ ॥ वन ४९ तरु ५० दीक्षा समय, ५१ लोच मुष्टि परमाणो ५२ ॥ संजम ज्ञान ५३ दुष्यमोल ५४, थिति ५५ वलि प्रथम आहारो ५६ ॥ पारणा काल ५७ पुर नाम, ५८ वली परथम दातारो ५९ ॥ दातार गति ६० वृष्टि दिव्यक ६१ हुय, वसुधारा संख्या ६२ जाण ॥ विहार भूमि ६३ तपस्या ६४ परम, पेंसठमो अभिग्रह परिमाण ६५ ॥ ३ ॥ उपसर्ग ६६ प्रमादको काल ६७, छद्मस्थको काल ६८ जे आणुं ॥ गुणसित्तेरमे केवल, तिथि ६९ केवल पुर ७० वन वखाणुं ७१ ॥ केवल तप ७२ वृक्ष नाम ७३ मान; ७४ वेला ७५ तीरथ ७६ तीर्थविछेदो ७७॥

वर्जित दोष ७७ अतिशय ७ए वाणी, ७० प्रातिहार्य ७१ सुर सेव७२ नमेदो ॥ प्रथम गणधर ७३ वली साधवी ७४ ए, नक्तिवंत नृप नाम ७५ ॥ सासणाधिष्ठ जक्ष ७६ जक्षणी, ७७ गणधर ७७ संख्यानिराम ॥४ ॥ साधु ७ए साधवी ए० श्रावक, ए१ श्राविका ए२ केवल ज्ञानी ए३ ॥ मनःपरजव ए४ अवधि धार, ए५ पूर्व धारक ए६ पडिगानी ॥ वैक्रियवंत ए७ वादी ए७ प्रत्येक बुध, एए प्रकीर्ण संख्या १०० परिमाणो ॥ माहाव्रत १०१ संजम १०२ आवसग्ग, १०३ सर्व आयु १०४ तिथि निर्वाणो १०५ ॥ मोक्ष नक्षत्र १०६ स्थानक १०७ वली ए, मोक्ष आसण १०७ तप धार १०ए ॥ मोक्षवेला ११० परिवार तस, १११ युगांतकृत नूमि ११२ विचार ॥ ५ ॥ पर्यायांतकृत नूमि, ११३ मुनि प्रकृति ११४ वस्त्र वर्णो ११५ ॥ जन्म ११६ दीक्षा ११७ केवल, नक्षत्र ११७ श्रावक व्रत गणो ११ए ॥ आचार १२० आरो नत्पत्ति, १२१ धर्म नेद १२२ संजम गुण १२३ अणगारो १२४ ॥ सासण थिति १२५ इम बोल, एकसो पच्चीश सारो ॥ केइक चोथा अंगथी ए, केइक ग्रंथ विचार ॥ श्रोता ते अवधारजो, जिम टले कर्म विकार ॥ वरते मंगल चार ॥ ६ ॥

॥ हवे एकशो पच्चीश बोलमांथी प्रथम बोलें चोवीशे जिननां नाम कहे ठे ॥

॥ जय जय आदि जिणंद, अजित संनव सुखकारी ॥ श्री अनिनंदन सुमति, पद्म सुपास विचारी ॥ चंदप्रन श्रीसुविधि, शीतल श्रेयांस दयाला ॥ वासुपूज्य धन विमल, अनंत जिन धर्म रूपाला ॥ शांति कुंथु अर मल्ली नमुं ए, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्वनाथ वर्द्धमानजी, प्रणमुं मन धरि प्रेम ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ हवे समकित प्राप्त थया पछी चोविशे जिननी भवसंख्या कहे छे.

॥ रिखभ जिणंद भव तेरा, चंद प्रभु सात लहीजें ॥ डुवादश शांति जिणंद, मुनि सुव्रत नव लीजें ॥ रिष्टनेमि नव पार्श्व, नाथ दश भव अधिकारो ॥ सत्तावीस वर्द्धमान, महोटा भवतणो विस्तारो ॥ शेष जिन त्रिहुं त्रिहुं भणो ए, ग्रंथमांहे अधिकार ॥ समकित पाया तिहांथकी, भव संख्या सुविचार ॥ ८ ॥२॥

॥ हवे चोविश तीर्थंकरना पूर्वभव द्वीपनां नाम कहे छे ॥

॥ प्रथम चार वली सोलमासुं, चरम जिनवर लग जाणो ॥ जंबुद्वीपके मांय, तीर्थंकर गोत्र बंधाणो ॥ नवमासुं बारमा जाण, अर्ध पुष्करके मांही ॥ शेष सात जिनराज, धातकी खंम लहाई ॥ तृतीय बोल इम द्वीपनो ए, आगममें अधिकार ॥ सुगुणा जन हिय धारजो, अनुभव दृष्टि विचार ॥ ए ॥ ३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां जन्मक्षेत्रनां नाम कहे छे ॥

॥ पहेलासुं बारमा सुधी, पूर्व विदेह क्षेत्र कहीजें ॥ विमल धर्मजिन भरत, धातकी खंम ग्रहीजें ॥ जंबु पूर्व विदेह क्षेत्र, शांति कुंथु अर जाणुं ॥ जंबु पश्चिम विदेह, मल्लि जिनराज बखाणुं ॥ अनंत ऐरवय धातकी ए, जंबु भरत मझार ॥ विशमासुं छेला लगें, सईहो क्षेत्र सुमार ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ पूर्वोक्त क्षेत्रमां चोवीश तीर्थंकरनी जन्म दिशा कहे छे ॥

॥रिखभ सुमति सुविधि, शांति कुंथु जिनराया ॥ ए सितांशु उत्तर मल्लि, सितोदा दक्षिण पाया ॥ विमल धर्म विशमाथी, छेला मेरु दक्षिण मांई ॥ मेरुथी उत्तर दिशा, अनंतजिन ऋद्धि उपाई ॥ शेष दिशी जगदीशजी ए, सीताथी दक्षिण मांय ॥ वर करणी पर भावथी, गोत्र तीर्थंकर पाय ॥ ११ ॥ ५ ॥

॥ ते पूर्वोक्त दिशामां पण चोवीश तीर्थंकरना जन्म संबंधि विजयनां नाम कहे छे.

पुखलावती वत्रा रमणिजा, मंगलावती विचारो ॥ पंचमासुं आठमा सुधि,चार एहि नाम उच्चारो ॥ वली चारे एही रीत, नव मासुं बारमा धारो ॥ माहापुरी रिष्ठा नहिल,पुंमरिक गणि खगपुरी सारो ॥ सुसमा वीतसोगा चंपापुरि ए, कोसंबी राजगृही जाण ॥ अयोध्या अहिछत्ता चर्म जिन,विजयपुरी नाम प्रमाण ॥१२॥६॥

हवे चोवीश तीर्थंकरोनां पूर्व नवना नाम कहे छे.

॥वज्रनान १ विमलवाहन,२ विपुलबल ३ माहाबल ४नामें॥ अतिबल ५ अपराजित, ६ नंदि ७ पदम ८ गुणधामो ॥ महाप दम ए पउन्न, १० नलिणी गुल्म ११ पद्मोत्तर १२ ॥ पद्मसेन १३ पद्मरथ, १४ दृढरथ १५ मेघरथ १६ नरवर ॥ सिंहावह १७ धन पति १८ वेश्रमणजी १ए ए, श्रीवर्म २० सिद्धारथ २१ सुप्रतिष्ठ २२ ॥आनंद २३ नंदन २४ नामथी,करणी कीनी विशिष्ट ॥१३॥७॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनी पूर्वनव पदवी तथा पूर्वनव ज्ञान तथा विशस्थानकमें कितरा सेवन कीनां ? ते कहे छे.

॥पूरव नव जिनरिखन्न,एकछत्र पदवी पाया॥ नणीया चउदा पूर्व, करणी करि मन वच काया ॥ शेप तेवीश मंमलीक,नण्या सहु अंग इग्यारा ॥ पेला छेला प्रन्नु वीश, बोल सेवन किया सारा ॥ बावीश जिन एक दोय त्रिहुं ए, सेव्यां स्थानक सार ॥ गोत्र तीर्थं कर बांधियुं, धन धन रूपावतार ॥ १४ ॥ ८ ॥ ए ॥ १० ॥

हवे ते चोवीश तीर्थंकरनी सर्गगति कहे छे.

॥सर्वार्थ सिद्ध १ विजय २ ग्रैवेयक,३ जयंत ४ अन्निनंदन ५ सु मति ॥ नमो छठो६ ग्रैवेयक,७ विजय ८ आण ए अच्चुत १०उत्पत्ती॥

॥ अच्चु ११ प्राण १२ सहसार १३,प्राणत १४ वलि विजय १५ वि
माणो॥ शांति १६ कुंथु १७ अर सर्वार्थ १८ सिद्ध,१ए मल्ली जयंत
प्रमाणो ॥ अपराजित२०प्राणत वली २१ए,अपराजित२२रिठ नेम
॥ पार्श्व २३ वीर प्राणतसुरें,२४ उत्कृष्टस्थिति सुख खेम ॥१५॥११

हवे चोवीशे तीर्थंकरनी च्यवन कल्याणतिथि कहे छे.

॥आषाढमास वदि चोथ१, वैशाख शुद्ध तेरश जाणो २ ॥ फा
गुण आठम शुक्ल,३ वैशाख शुद्ध चोथ प्रमाणो४॥ श्रावण उजली
बीज,५ माघ वदि छठ कहीजें ६ ॥ अष्टमी भादव कृष्ण,७ कृष्णचै
त्र पंचमी लीजें ८ ॥ वदि फागुन नौमी तिथि ए ए, वदि छठ वै
शाख१०तिम ज्येष्ठ११॥ वासुपूज्य च्यवण कल्याणसों,ज्येष्ठ शुदि
नवमी विशिष्ट ॥१२॥१६॥ उजली बारस वैशाख,१३ श्रावण वदि
सातम १४ आई ॥ वैशाख शुदि १५ भाद्रवकृष्ण,१६ दोईमें तिथि
सातम गाई ॥ नौमी श्रावण कृष्ण,१७ फागुण शुदि बीज उजाली
१८॥ फागण श्रावण १ए शुदि,चोथ २० पूनम सुविशाली ॥ चउ
दश उज्जल आसोज नी २१ए,कात्तिक वदि बारस २२जाण॥ चौथ
चैत्र वदि२३अशाढशुदि,छठ तिथि २४ च्यवन कल्याण ॥१७॥१२॥

हवे चोवीशे तीर्थंकरना च्यवन नक्षत्रनां नाम कहे छे.

॥ उत्तराषाढा १ रोहिणी नक्षत्र २,मृगशीर ३ पुनर्वसु ४ आ
यो ॥ मघा ५ चित्रा ६ विशाखा, ७ अनुराधा ८ मूल ए वतायो॥
पूर्वाषाढा १० श्रवण ११, शतभिषा १२ भाद्रपद उत्तरा १३ ॥
अनंत रेवती १४ पुष्य, १५ भरणी १६ शांति जिनें कहि सुतरा ॥
कृत्तिका १७ रेवती १८ अश्विनी १ए ए,श्रवण २० अश्विनी २१
धार ॥ चित्रा २२ विशाखा २३ हस्तोत्तरा, २४ च्यवन जिन नक्ष
त्र विचार ॥ १८ ॥ १३ ॥

हवे चोवीशे तीर्थंकरना च्यवन समय तथा स्वप्न तथा स्वप्न संख्या तथा स्वप्न संबंधि विचार केने पूछ्यो? ते कहे छे.

॥ सहु जिनवरनुं च्यवन, थयुं आधीनिशि विरियां ॥ सहु दिनां चउदें स्वप्न, उत्तम उत्कृष्ट उच्चरियां ॥ निजपतिसूं कह्यां स्वपन, नाभि कह्यो इंद्रनी आगें ॥ स्वपन पाठकसुं तेवीस; नृप परसन विधि थाजे ॥ दान मान देई नेजिया ए, आनंद अंग अपार ॥ पुण्य दशा परन्नावथी, सुखें रह्या गर्नमकार ॥१ए॥१४॥१५॥१६॥१७॥

॥ चोवीश तीर्थंकरनी जन्म तिथि तथा जन्मवेला कहे छे.

॥ चैत्र वदि १ महा शुद्द, २ दोईमें अष्टमी सारो ॥ महा शुद्द चउदश ३ दूज, ४ मास पक्ष सोहि विचारो ॥ अष्टमी शु कल वैशाख, ५ कार्तिक वदि ६ बारस धारो ॥ बारस उजाली ज्येष्ट, ७ पोष वदि बारसज द्दारो ८ ॥ मगशिर ए माहा वदि १० पंचमी बारस ए, बारस फागुण वदि ११ जाण ॥ चउदश फागण वदि १२ शुद्द त्रीज माहा,१३ वैशाख वदि तेरश१४ प्र माण ॥ २० ॥ त्रीज महा शुद्द १५ ज्येष्ठ, वदि तेरश १६ दर साई ॥ वदि चउदश वैशाख, १७ मृगशिर शुद्द दशमी १८ थाई ॥ मृगशिर शुद्द इग्यारस १ए, ज्येष्ठ वदि अष्टमी गाणो २० ॥ अ ष्टमी श्रावण वदि २१, श्रावण शुद्द पंचमी २२ जाणो ॥ पोष वदि तिथि दशमी २३ ए, चैत्रवदि तेरश मांय २४, अर्धरात छलीयां सहु, जन्म्या श्री जिनराय ॥ २१ ॥ १८ ॥ १९ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना जन्मदेशनां नाम कहे छे.

॥ पहेलासुं पंचमा लगें, देश कोशल। १। २। ३। ४। ५। वछ ६ काशी ७ ॥ पूर्व देश ८ प्रसिद्ध ९, मलय १० वलीअ प्रसिद्ध ११ विमासी ॥ अंगदेश १२ पांचाल १३, कोशल १४ धर्मजिन

भ प्रसिद्धो १५ ॥ शांति १६ कुंथु १७ अरनाथ, जन्म कुरु १८ देशमें लीधो ॥ विदेह १९ मगध २० विदेहमें २१ ए, कुशावर्त्त २२ काशी २३ विशाल ॥ पूर्वदेश २४ आरज विषे, जन्म्या दीनदयाल ॥ २२ ॥ २० ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी नगरी कहेछे.

॥ इक्कागभूमि १ अयोध्या २ जाण, सावत्थि ३ अयोध्या ४ कहीयें ॥ कंचनपुर ५ कोसंबी, ६ बणारसी ७ चंदपुरी ८ लही यें ॥ काकंदी ९ भद्दिलपुर १०, सिंहपुर ११ चंपा १२ जाणो ॥ कंपिलपुर १३ अयोध्याय १४, रत्नपुर १५ नाम बखाणो ॥ हथिणापुर १६ गज १७ नाग ए, १८ मिथिला १९ राजगृहि २० गाम ॥ मथुरा २१ सोरीपुर २२ वाराणसी, २३ कुंमलपुर २४ जन्म धाम ॥ चोवीश जिन जन्मधाम ॥ २३ ॥ २१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी मातानां नाम कहे छे ॥

॥ मरुदेवी १ विजया २ सेना, ३ सिद्धार्था ४ नामें देवी ॥ मंगला ५ सुसीमा ६ पृथिवी, ७ लखमणा ८ रामा ९ केवी ॥ नंदा १० विष्णु ११ जया, १२ श्यामा १३ सुजसा १४ जाणी ॥ सुव्रता १५ अचिरा १६ श्रीनाम, १७ देवी माता १८ गुणखाणी॥ प्रभावती १९ पद्मावती २० ए, वप्रा २१ शिवा २२ सुखकार ॥ वामा २३ त्रिशला २४ जाणीयें, प्रभु जननी सुविचार ॥ २४ ॥ २२ ॥

॥ हवे चोवीशा तीर्थंकरना पितानां नाम कहेछे.

॥ नाभि १ जितशत्रु २ जितारि, ३ संवर ४ मेघ ५ श्रीधर ६ राया ॥ प्रतिष्ठ ७ महासेन ८ सुग्रीव ९, दृढरथ १० विष्णु ११ कहाया ॥ वासुपूज्य १२ कृतवर्म, १३ सिंहसेन १४ भानु कहीयें॥ १५ ॥ विश्वसेन १६ सुरराय १७ सूदर्शन १८ कुंभसुं लहीयें १९॥

सुमित्र २० विजय नरपति २१ कह्या ए,समुद्रविजय २२सुविख्यात ॥ अश्वसेन २३ सिद्धारथ जी,२४ ए चोविश जिन तात ॥ २५ ॥२३ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना पितानी गति कहे छे

॥ रिखभ जिनेश्वर तात, नागकुमारनी मांई ॥ ईशान कल्पनी मांय, डुजासुं आठमा तांई ॥ नवमासुं सोलमा जाण, गया कल्प सनत्कुमारो ॥ सतरमासुं तेवीसमा तणा, गया महेंद्र म झारो ॥ सिद्धारथ सर्गे बारमा ए, रिखभदत्त शिववास ॥ अजर अमर सुख पाइया, प्रणमुं नित्य उल्लास ॥ २६ ॥ २४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी मातानी गति कहे छे ॥

॥ प्रथमसुं अष्टमा लगें, वरजिन नंदा माई ॥ पहोती मुक्ति म झार, नवमासुं सोलमा तांइ ॥ पहोती सनत्कुमार, त्रिशला अचु सर्गमझारो ॥ सत्तरमाथी त्रेवीश, जिनंदजननी सुविचारो ॥ महेंद्र कल्पें गइ महासती ए, पाइ सुख श्रेयकार ॥ केइ हवे जाशे शिवपुरी, केइ गइ मुक्ति मझार ॥ २७ ॥ २५ ॥

हवे चोवीशे तीर्थंकरनां जन्म कल्याणकमां दिक्कुमारिका तथा इंद्रो आव्या ते तथा चोवीशे तीर्थंकरनां गोत्र, अने वंश कहे छे ॥

॥ जाणी प्रभुनो जन्म,छपन्न कुमारी आई ॥ सहुना चोसठ इंद्र, मोछव मेरु गिरि कियो जाई ॥ मुनि सुव्रत रिष्ट नेमि, गोत्रवर गौतम पाया ॥ हरिवंश अवतंस, जगमें प्रसिद्ध कहाया ॥ काश्यप गोत्री शेष जिन सहु ए, इक्ष्वाकु वंश तस जाण ॥ वसुधर कुल जातमें, जन्म लियो जगभाण ॥२८॥ २६ ॥ २७ ॥२८॥२९॥

हवे चोवीश जिननां यथागुण विशेषनाम कहे छे.

॥ प्रथम वृषभनुं स्वपन, देखि जननी हरखाणी ॥ तिणथी रि

खन्न कुमार, नाम स्थापनविधि जाणी ॥ गर्नमांय जिनराय, पा सा रमतां राय राणी ॥ राणी जीत बिचार,अजित जिन नाम पहि ठानी ॥ प्रन्नुजी गर्नमें आविया ए,डुष्काल टल्यो तिण वार ॥ धा न्यसंनव थयो ते नणी, संनव नाम उदार ॥ २ए ॥ गर्नमांय जिण वार, इंड् जयकार उच्चार्यो ॥ उपनो आनंद ताम, नाम अनिनंदन धार्यो ॥ सुमति उपनी मात, शोक्यपुत्र न्याय सुकी नो ॥ जाणी गर्न प्रनाव, सुमति सुत नामज दीनो ॥ पद्म कम ल शय्यापर ए, सुवर्णनो दोहलो थाय ॥ नाम पद्मप्रन्नुजी तणुं, थयुं प्रसिद्ध जगमांय ॥ ३० ॥ पासा खरधरां मात, सुंदर थयां गर्न प्रनावें ॥ दियो सुपारस नाम, मात चंड् पिवण उमावे ॥ चंड्लन्न चंड्वर्ण, चंड्प्रन्न नाम कहावे ॥ सुविधि थपाणो स हेर, सुविधि जिन नाम विख्याता ॥ नूप दाहज्वर जाण, राणी कर फरसथी शाता ॥ तिणथी शीतल कुमरसुं ए,नाम दियो हित धार ॥ ड्व्य नाव शीतल प्रन्नु, नामथकी निस्तार ॥ ३१ ॥ कू रदेव मणिपीठ, जननि दोहलो तिहां खेलण ॥ जावतां श्रेय थयो देव, श्रेयांस सुत नाम सुमेलण ॥ विकट देवघर वास, व सण दोहलो थयो माई ॥ वसतां पूज्यां नो सुरें, वासुपूज्य नाम थपाई ॥ तन मति विमल थई मातनी ए,दियो विमल सुत नाम ॥ मात देखी अनंतमणिमालथी, अनंत अनंत गुणधाम ॥ ३२ ॥ धर्म इछा गर्नपरन्नाव, धर्म जिन नाम प्रसिद्धो ॥ शांति करी पुर मांय, शांति प्रन्नु नामज दीधो ॥ अरि थया कंथुआ जेम, कुंथु प्रन्नु नाम थपाणो ॥ रत्नमय आरो दिख्यो, अरह जिन नाम कहाणो ॥ फूलसेजें सोवण दोहलो ए, मल्ली सुनाम उदार ॥ मुनि जिम माता नावथी, मुनि सुव्रत सुविचार ॥ ३३ ॥ शत्रु न माडया सर्व, नमी जगमांही कहाया ॥ अरिष्ट रत्न देख्यो चक्र, अरिष्टनेमिनाथ सुहाया ॥ कृष्ण सर्प विंटी सेज,माता निज हाथे

हगाया ॥ पार्श्वनाथ पुरिसादाणी,प्रसिद्ध खट मतमें गाया ॥ वृद्धि थई ऋद्धि संपदा ए, तिण कारण वर्धमान ॥ इंद्र दियो महावीर, जय जय जय जगभान ॥ ३४ ॥ ३० ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनां चिन्ह तथा लछन कहे छे.

॥ वृषभ १ गज २ हय ३ कपी ४, भारंडपंखी ५ चिन्ह सोहे ॥ पद्म ६ साथीयो ७ चंद्र ८, मकर ९ श्रीवछ १० मन मोहे ॥ गेंडो ११ महिष १२ वाराह,१३ सिंचाणो १४ वज्र १५ कहीजें॥ हरिण १६ बकरो १७ नंदावर्त्त, १८ कलश १९ काछवो २० सुण लीजें ॥ नीलोत्पल २१ शंख २२ सर्प २३ ए,सिंह २४ चिन्हथी उलखाण ॥ एक सहस्र अष्ट लछन भलां,सहु जिननुं परिमाण ॥ ३५ ॥

हवे चोवीश जिनना वर्ण तथा बल कहे छे ॥

॥ चंद्रप्रभजी ने सुविधि, दोय जिन शुक्ल सुहावे ॥ पद्मप्रभ वासुपूज्य, देहद्युति रक्त कहावे ॥ मल्लिनाथ श्रीपार्श्व, नीलवर्ण दमके काया ॥ मुनिसुव्रत रिष्ट श्याम, रंगें अधिक सुहाया ॥ शेष शोल जिनवर सहु ए,कंचन वर्ण शरीर ॥ अनंतबल सहु जिन तणुं, धन धन साहस धीर ॥ ३६ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी अवगाहना उछेदांगुल तथा आत्मांगुलें कहे छे.

॥ धनुष पांचसे १ उछेदांगुल,साडी चारसो २ जाणो ॥ चारसें ३ साडीतिनसें,४ तिनसें ५ अढिसें ६ वखानो ॥ दोयसें ७ देढसें ८ सोय ९, नेउ एंशी कह्या ईसो ॥ सित्तेर साठ पचास, पंतालीस चालीस पंतीसो ॥ तिस पचीस विस पंनरा दश ए,हस्त नव सात विचार ॥ एकसो वीश आत्मांगुलें, जाणो जग किरतार ॥ ३७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने आहार, तथा विवाह, तथा लोकांतिक देवोनी स्तुति तथा दान दीधुं, ते कहे छे.

॥ प्रथम कल्पतरु आहार, शेष विशिष्टज लीनो ॥ मल्ली रिष्ट नेमि वर्जि, शेष सहु व्याहज कीनो ॥ सहुने लोकांतिक देव, कह्युं प्रभु नविजन तारो ॥ जाण्यो संजम समय,प्रभु दियो दान उदारो ॥ सोनईयो सोल मासानो ए,तिनसें अठ्याशी कोड ॥ एंशी लाख उपर वली, एक संवछर जोड ॥३०॥३७॥३८॥ ३९ ॥४०॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी कुमारस्थिति कहे छे ॥

॥ पूरव विश लक्ष १ अढार २,पनरा ३ साडीबारा ४ दशो ५ ॥ साडिसात ६ पंच ७ अढी ८, पूरव सहस्र पच्चासो ९ ॥ पूर्वसहस्र पच्चीस १०, वर्ष एकविश ११ लक्ष जाणो ॥ अढारे १२ पनरा १३ साडी सात १४, अढीलक्ष १५ धर्म बखाणो ॥ सहस पचीश १६ तेवीस १७ एकवीस १८ ए, सो १९ साडि सात २० हजार ॥ अढाई सहस्र २१ तीनशें २२ त्रीश २३ त्रीश २४, बरस रहिया स्वामि कुमार ॥ ३९ ॥ ४१ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी राजस्थिति कहे छे.

॥पूरव त्रेसठ लाख १ त्रेपन २, चुमालीश ३ साडी छत्रीशो ४॥ गुणतिस५ साडी एकवीश ६ चउदे ७,खट ८ एक ९ एक १०जगीशो ॥ पूरव पचास हजार ११ बरस, बयालीस लाखो १२ ॥ वासुपूज्य बर्जित त्रिश १३,वीश१४ पंदर१५पंच१६ दाखो ॥ पचास सहस्र १७ साडिसहेंतालीस १८, बह्यालीस ए १९, मुनिसुव्रत पंदर हजार २० ॥ नमी पंच २१ शेष तिहुं मेली २२ २३ २४, राजपदनो परिहार ॥ ४० ॥ ४२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी शिविकानां नाम कहे छे ॥

॥ सुदंसणा १ सुप्रजा, २ सिद्धार्थो ३ अर्थ सिद्धा ४ कहीयें॥ अन्नयंकरा ५ निवृत्तिकरा ६, मनोहरा ७ मनोरमा लहियें ८ ॥ सुप्रजा ए शुक्लप्रजा १०, विमल प्रजा ११ नाम वखानी ॥ पृथि विनाया १२ देवदिन्ना १३,नागदत्ता १४ नागदत्ता १५ जाणी ॥ सर्वार्था १६ विजया १७ विजयंतीका ए १८, जयंती १ए अपरा जिता २० धार ॥ देवकुरा २१ धारावती २२, विशाला २३ सु चंद्रप्रजा २४ शिविका सार ॥ ४१ ॥ ४३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी दीक्षातिथिनां नाम कहे छे ॥

॥ चैत्र वदि आठम १ नोम, महा २ पूनम मार्गशिरकी ३ ॥ महा शुद्ध द्वादशी ४ शुद्ध, वैशाख नोमी ५ जिनवरकी ॥ कार्तिक वदि ६ जेठ शुदि ७ पोष वदि ८,त्रिहूं तेरश तिथि जाणो॥ मार्गशिर वदि तिथि छठ,माघ ए वदि बारस १० गणो ॥ फागण वदि तेरश तिथि ए ११, फागण अमावस १२ जाण ॥ माघ शुक ल तिथि चतुरथी १३, विमल जिन दीक्षा कल्याण ॥ ४२ ॥ वैशाख कृष्ण चउदश १४, माघ शुद्ध तेरश धारो १५ ॥ ज्येष्ठ वदि चउदश १६,वैशाख शुद्ध पंचमी १७ सारो ॥ इग्यारस १८ शुद्ध माघ, १ए मल्लिजिन एह तिथि आई ॥ फागण शुदि बाद शी, २० आषाढ वदि नोमी २१ कहाई ॥ श्रावणशुद्ध छठ २२ नेमजी ए, पोष वदि दशमी २३ जाण ॥ मार्गशिर वदि दशमी २४ इम, जिन दीक्षा कल्याण ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां वय तथा दीक्षा तप कहे छे ॥

॥ वासुपूज्य मल्लि नमी, नेमी पार्श्व वर्धमानो ॥ प्रथमवय की दीक्षा, शेष जिन अंत वय मानो ॥ वासुपूज्य तप चोथ, अ

छम तप मल्लि जिन पासो ॥ सुमति जिन कर आहार, दीक्षा लिनी सुउल्हासो ॥ शेष वीश जिनेश्वरू ए, छठ तप संजम धार ॥ दीक्षा ली जगदीश जी, धन धन प्रभु अवतार ॥ ४४॥४५॥४६॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनो परिवार कहे छे ॥

॥ चार सहस्र नर साथ, रिखभ प्रभु दीक्षा धारी ॥ छशें श्री वासुपूज्य, मल्लि तिनशें परिवारी ॥ तिनशें पारस नाथ, चरम जिन एकलविहारी ॥ शेष उंगणीश जिनराज, एक एक सहस्र उच्चारी ॥ इणविध चोवीश जगदीशने ए, दीक्षासमय परिवार ॥ तप जप करी जिण शिव वरी, प्रणमुं वारं वार ॥ ४५ ॥ ४७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां दीक्षापुर दीक्षावन कहे छे ॥

॥ रिखभ अयोध्या नेम द्वारका, शेष जन्म पुरमें धारी ॥ आदि जिनंद सिद्धार्थ, वनमें भये अणगारी ॥ दूजाथी ग्यारमा लगें, सहस्राम्र वन विचारी ॥ विहार गृह दोय सहस्राम्रवप्र, शांतिथी मल्लि उच्चारी ॥ ए चिहूं सहसावन कह्यां ए, नील गुहान सहसावन जाण ॥ आश्रमपद ज्ञात खंडमें, दीक्षावन पहिचान ॥४६॥

॥ हवे चोवीश जिननां दीक्षातरु, तथा दीक्षावेला. दीक्षा लेती वखत कया तीर्थंकरें केटली मुष्टिनो लोच कर्यो ते, तथा तेमनुं संयमज्ञान, डुष्यमोल, डुष्यस्थिति कहे छे ॥

॥ सर्व अशोक तरुतलें, संयम समे ज्ञानज चारो ॥ रिखभ जिनंद चउमुष्टि, शेष पंच मुष्टि उच्चारो ॥ सुमति श्रेयांस नेमी पार्श्व, पूर्वान्हें दीक्षा कालो ॥ शेष पश्चिमान्ह समे, दीक्षा लीनी उजमालो ॥ प्रथमसुं त्रेविशमा लगें ए, देव डुष्य सदा जाण ॥ वर्ष जाजेरो वीरने, लेखामें परिमाण ॥४७॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरमां कया तीर्थंकरें शेनो दिव्य आहार कर्यो तथा कया तीर्थंकरनो केटलो पारणाकाल ? ते कहे ॥

॥ रिखन्न जिनंदे आहार, प्रथम इखुरसनो कीयो ॥ शेष जिनंदने खीर तणो, नोजनवर लीयो ॥ रिखन्न जिनंदनो पारणो, आयो बारे मासी ॥ शेष जिनंदनो पारणो, आयो डुजे दिन विमासी ॥ धन धन दीन दयालजी ए, जगतपति जगदीश ॥ शम दम उपशम सागरू, वंदूं में निश दीश ॥ प्रणमुं मे० ॥ ४८ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पारणानां नगर कहे ठे ॥

॥ गजपुर १ अयोध्या २ सावछि ३, अयोध्या ४ विजय ५ पुर चीनो ॥ ब्रह्मस्थलें ६ पाटली ७, पद्म खंम ८ श्वेतपुर ए कीनो ॥ रिष्ट १० सिथछ ११ महापुर, १२ धनक १३ वर्धमान पुरमांइ १४ ॥ सोमणस १५ ग्राममंदिर १६, चक्रराज १७ पुरगाई १८ ॥ मिथिला १ए राजगृहि २० वीरपुर २१ ए, द्वारिका २२ कोप कटग्राम २३ ॥ कोल्लाग सन्निवेश २४ माहावीर इम, पारणा तणां पुर धाम ॥ ४ए ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना प्रथम दातार कहे ठे.

॥ सिझंस १ ब्रह्मदत्त २ नाम, सुरिंददत्त ३ इंददत्त ४ वखाणो ॥ पद्म ५ सोम देवनाम, ६ महिंद ७ सोमदत्त ८ सो जाणो ॥ पुष्प ए पुनर्वसु १० नंद ११, सुनंद १२ जय १३ जसधारी ॥ विजय १४ धर्म सिंह १५ सुमित्र १६, व्याघ्रसिंहनाम १७ विचारी ॥ अपराजित १८ विश्वसेनजी १ए ए, ब्रह्मदत्त २० दिन्न २१ उदार ॥ वरदिन्न २२ धन २३ वहुल २४ कह्या, प्रथम दान दातार ॥ ५० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रथम दान देनारनी गति तथा पंचदिव्य तथा वसुधारा, तथा क्षेत्र विहार कहे ठे ॥

॥ पहेलासुं आठमा तणा दातार, तिणनव शिव पाई ॥ नव

मासुं छेला लगें, मुक्ति त्रीजा नव मांइ ॥ पंच दिव्य सहुने जाण, साडी बारा कोडी वसुधारो ॥ रिखन्न छेला जिन तीन, आर्ज अ नार्ज विहारो ॥ शेष वीश जिन राजजी ए, आरज देश मकार॥ विचख्या दीनदयाल जी, करवा पर उपगार ॥ ५१॥ ६० थी ६३॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां, उत्कृष्ट तप, तथा अभिग्रह, उपसर्ग अने प्रमाद काल कहे छे ॥

॥ रिखन्न जिनंद शासन उत्कृष्ट, तप बारें मासी ॥ बिजासुं त्रेविशमा लगें, तप अठमासी विमासी ॥ वर्धमान खटमासी सर्व, अभिग्रह इव्यादिक चारो ॥ उपसर्ग पारस वीर, शेष सहुने परिहारो ॥ प्रमाद काल श्रीरिखन्नने ए, एक अहोरात्र उच्चार ॥ अंतर मुहूर्त्त श्रीवीरने, शेष सहुने परिहार ॥ ५२ ॥ ६४ थी ६७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनो छद्मस्थकाल कहे छे ॥

॥ सहस्र वर्ष १ बारा २ चउदा, ३ अगारा ४ वीश विवेको ५ ॥ मास ६ छ ७ नव ८ चार ९ तीन, १० दोईने ११ एक १२ एको १३ ॥ तिन १४ दोय १५ एक १६ एक १७ नव, १८ मल्ली जिनने एक १९ पहेरो ॥ इग्यारा मास २० नव जाण, २१ चोपन दिन नेमजी हेरो २२ ॥ रात्रि त्र्याशी पारस प्रभु २३ ए, साडीबारा वरस विचार ॥ उपर पंदरा दिन चरम २४, छद्मस्थकाल सुमार ॥५३॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनी केवलज्ञाननी तिथि कहे छे.

॥ फागण वदि १ पोष शुद्ध, तिथि इग्यारस २ आइ ॥ पंचमी कार्त्तिक कृष्ण ३, पोष शुदि चौदश ४ गाई ॥ चैत्र शुद्ध इग्यारस, ५ चैत्रकी पूनम ६ कहीयें ॥ फागण वदि छठ सातम ७।८, कार्त्तिक शुद्ध तीज सुगहियें ९ ॥ पौष वदी चउदश १० माघ अमावास ११ ए, बिज माघ शुकल बखाण १२ ॥ शुद्ध पौष छठ १३ श्रीविम

कहावे ॥ पाडल १२ जंबू १३ अश्वत्थ १४, दहीवन १५ नंदि १६ तिलककी गया १७ ॥ आम्र १८ अशोक १९ चंपक २०, बकुल २१ वेडस तलें आया २२ ॥ धातकी २३ शाली २४ ऊंच पणे ए, देहथी बार गुणा जाण ॥ शासनपति श्रीवीरने, एक विश धनुष्य प्रमाण ॥ ५८ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनी केवलज्ञाननी वेला, तथा प्रथम समवसरणमें तीर्थ स्थापन तथा जिनांतरें तीर्थविछेद कहे छे.

॥ रिखव जिनंदसें पार्श्व लगें, केवल पूर्वान्हें ॥ महावीर गुण धीर, केवलवेला पश्चिमान्हें ॥ प्रथम समोसरण मांय, तीरथ थाप्यां तेवीशो ॥ छेला दूजा मांय, तीर्थ थाप्यां जगदीशो ॥ नव मासुं सोलमा विचें ए, सात अंतरा मांय ॥ तीर्थविछेद थयो तिहां, भांख्यो श्रीजिनराय ॥ ५९ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने दोष वर्जितपणुं तथा अतिशय तथा वाणी तथा प्रातिहार्य तथा देवसेवा कहे छे.

॥ अढरा दोष वर्जित, सकल जिनवर सुखदाता ॥ चोत्रीश अतिशयधार, पेंतिस वाणी सुविख्याता ॥ सहुने प्रातिहार्य आठ, ठाठ माहा पुण्यसें पाया ॥ एक कोटी सहुनें देव, सेव करे तनमन उलसाया ॥ धन धन दीन दयानिधि ए, अनंत गुणातम देव ॥ मन वच काय करी सदा, द्यो प्रभु अविचल सेव ॥ ६० ॥ ७८ थी ८२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना प्रथम गणधर कहे छे ॥

॥ पुंडरिक १ सिंहसेन २, चारु ३ वज्रनाभ ४ कहीजें ॥ वरम ५ प्रद्योतन ६ विदर्भ ७, दीन ८ वराहक ९ गहिजें ॥ नंद १० कछप ११ सुभूम १२, मंदर १३ जस १४ अरिष्ट १५ गुणवंता ॥ चक्रायुध १६ सांब १७ कुंभ १८, अभिक्षक १९ मल्लि २० म

हंता ॥ शुंन २१ वरदत्त २२ आर्यदिन्न २३ ए, इंद्रनूति २४ गण धार ॥ ए चोवीश जिनना प्रथम, प्रणमुं नित अणगार ॥ ६१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी प्रथम साधवी कहे छे ॥

॥ ब्राह्मी १ फल्गुणी २ श्यामा, ३ अजिता ४ काश्यपी ५ जाणो ॥ रति ६ सोमा ७ सुमना, ८ वारुणी ए सुजसा १० वखाणो ॥ धारणी ११ धरणी १२ धरा १३, पद्मा १४ आर्यशिवा १५ सती ॥ सूचि १६ दामिनी १७ रक्षिता, १८ वंडुं बंधुमती १ए पुष्पवती २० ॥ अनिला २१ जक्षदिन्ना २२ पुष्फचुला २३ ए,चंदन बाला २४ नाम ॥ ए चोविश वडि समणीने, नित नित होजो प्रणाम ॥ ६२ ॥ ८४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना नक्तिवंत राजा कहे छे ॥

॥ नरत १ सगर २ अमितसेन ३, मित्रवर्य नृप ४ सारो ॥ शतवीर्य ५ अजितसेन, ६ दानवीर्य ७ मघवा ८ धारो ॥ बुद्धिवीर्य ए सिमंधर १०,त्रिपृष्ट११द्विपृष्ठ १२ नृप जाणो ॥ स्वयंत्रु१३पुरुषोत्तम नाम १४, पुरुषसिंह १५ कोणाल१६वखाणो ॥ कुबेर १७ सूनूमजी १८ जित १ए विजय २० ए, हरिषेण २१ कृष्ण २२ उदार ॥ प्रसेनजित २३ श्रेणिक २४ चरम, नक्तिवंता नृप धार॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना शासनना यक्ष कहे छे ॥

॥ गोमुख १ महायक्ष,२ त्रिमुख ३ नायकमुख ४ कहियें ॥ तुंबुरु ५ कुसुम ६ मातंग ७, विजय ८ जित ए ब्रह्मा १० लहीयें ॥ जक्षट ११ कुमार १२ षण्मुख, १३ पाताल १४ किंनर १५ गरुड १६ धारो ॥ गंधर्व १७ यक्षट १८ कुबेर, १ए वरुण यक्ष २० नृकुटि २१ विचारो ॥ गोमेद २२ पार्श्व २३ मातंग २४ ना

में ए, सासणाधिष्ठ यक्ष जाण ॥ प्रभु समरण करे भावशुं, हरे संकट हित आण ॥ ६४ ॥ ७६ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनी अधिष्ठायिका यक्षणी कहे छे.

॥ चक्केसरी १ अजितबला २, दुरितारि ३ कालिका देवी ४ ॥ माहाकाली ५ श्यामा ६ शांति, ७ भृकुटी ८ सुतारिका ए लेवी ॥ अशोका १० मानवी ११ चंडा १२, विदिता १३ अंकुशा १४ जक्षणी ॥ कंदर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७, धणा १८ धरणी प्रिया १९ प्रभु यक्षणी ॥ नरदत्ता २० गंधारी २१ अंबिका ए २२, पद्मावती २३ सिद्धायिका २४ नाम॥ सासणाधिष्ठ ए जक्षणी, सारे वंछित काम॥६५॥

॥ हवे चोवीशतीर्थंकरना गणधरनी संख्या कहे छे ॥

॥ चोरासी १ पंचाणूं २ जाण, एकसो दोय ३ सुज्ञानी ॥ एक ला। ईग्यारा ४ सोय, ५एकसो सात ६ पिछानी ॥ पचाणुं ७ त्राणुं ८ गिणत, अठ्याशी ए बैयासी १० सामी ॥ सत्तोतेर ११ गुण सित्तेर १२ सत्तावन १३, पचास १४ सो ते नमुं शिर नामी ॥ पेंतालीस १५ छत्तीस १६ पेंतीस १७ वली ए, तेंतिस १८ अठाविश १९ अढार २० ॥ सतरे २१ इग्यारे २२ दश २३ इग्यारे २४ ते, प्रणमुं प्रभु गुणधार ॥ ६६ ॥ ७८ ॥

॥ हवे तीर्थंकरना साधुनी संख्या कहे छे.

॥ सहस्र चोराशी १ एकलक्ष २, दोय ३ तिनलक्ष ४ विचारो ॥ तिनलख पर सहस्र वीश ५, तीनलक्ष तीस हजारो ६ ॥ लक्ष तिन ७ अढी ८ दोय ए एक १०, चौरासी सहस्र ११ अणगारो ॥ बहोंत्तर १२ अडसठ १३ छासठ १४, चोसठ १५ बासठ १६ रिखधारो ॥ साठ १७ पचास १८ चालीस १९ वली ए, त्रीश २०

वीश २१ अढार २२ ॥ सोला २३ चवदा २४ सहस्र सव, वंदूं प्रभु अणगार ॥ ६७ ॥ ७ए ॥

हवे तीर्थंकरनी साधवीनी संख्या कहे छे ॥

॥ तिन १ लक्ष तिन २ तिन ३ खट ४ पांच ५, चउ ६ चउ ७ तिन ८ एक ए एक १० एको ११ ॥ डुजासुं ग्यारमा लगें, सहस्र अनुक्रमें विवेको ॥ त्रीश २ छत्रीश ३ त्रीश ४ त्रीश ५, वीश ६ त्रीश ७ अशी ८ वीशो ॥ ए खट १० तिन ११ सहस्र एक लाख १२, एकलख १३ आठसें श्रमणीसो ॥ बासठ १४ बासठ सहस्रपरचारशें ए १५, इगसठ १६ सठ १७ छछशें धार ॥ साठ १८ पचावन १ए पचास, २० इगतालीश २१ चालीस २२ कही, अडतिस २३ छत्तीस २४ धार ॥ प्रभु श्रमणी परिवार ॥ ६८ ॥ ए०

हवे चोवीश तीर्थंकरना श्रावकोनी संख्या कहे छे.

॥ आदिनाथ तिन लाख, डुजासुं पंदरमा तांई ॥ श्रावक दोय दोय लाख, (१६ मासुं २४ मा लगें एक लाख छे) उपर एक एक लाख कहाई ॥ सहस्र पच्चाश अढाणुं, त्राणुं अछ्याशी इक्याशी ॥ छिहंतर सतावन पचास, गुनतिश नेव्याशी उगण्यासी ॥ पन्नर आठ छ चार नेउं ए, नेव्याशी चोरासी धार ॥ त्र्यासी बहोत्तर सित्तर गुणसितरा, चोसठ गुणसठ सार ॥ समजो उपर हजार ॥ ६ए ॥ ए१

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी श्राविकानो परिवार कहे छे ॥

॥ लक्ष पंच पंच छ पंच, पंच पंच उपरंत चारो ॥ (सोलमासूं २४ मा तांई त्रण लाख उपरांत हजार छे) सोलमासूं तिन तिन लक्ष, उपरंत संख्या चोपन हजारो ॥ पेंतालीस छत्तिस सत्तावीस, सोला पंच त्राणुं नेव्याशी ॥ एकोतेर अगवन अडता

लीश, छतीस चोविस चउदे विमासी ॥ तेरे त्राणुं इक्यासी ब
होत्तेर ए,सित्तेर पचास अडतालीश ॥ छत्रीस गुणचालीस अगारा,
सहस्र, श्राविका कहि जगदीश ॥ ७० ॥ए२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने केवलीनो परिवार कहे छे.

॥ सहस्र वीस १ बावीस,२पंदरा ३ चउदा ४ तेरा ५ ॥ बारे
६ इग्यारे ७ दश,८ सहस्र साडीसात ए नलेरा ॥ सात १०साडी
छ ११ खट १२,साडीपंच १३ पंच १४ साडीचारो १५ ॥ त्रेंता
लीशें १६ बत्तिशें १७, अट्ठाविशशें १८ बावीससें १ए धारो ॥
अगारासें २० सोलासें २१ पंदरासें ए २२, पारस एक हजा
र २३ ॥ सातशें २४ केवली वीरने, प्रणमूं ते सुखकार ॥ ७१ ॥

हवे चोवीशे तीर्थंकरना मनःपर्यव ज्ञानीनी संख्या कहे छे.

॥ पुनि तेरा १ हजार बार २ सहस्र, पर पांचशे पचासो ॥
बारा ३ सहस्र पर म्हेढसो, इग्यारा ४ सहस्र साडी छशे विमा
सो ॥ दश ५ सहस्र साडी चारशें, सहस्र दश ६ तिनशें उपर ॥
एकाणुसें ७ पचास, एंसीसें ८ शत पंचोत्तर ए ॥ पिचंतर १०
साठ ११ पेंसठ १२ वली ए, पंचावनशें १३ जाण ॥ पचा
स १४ पेंतालीस १५ सेंकडा, मुनि मनःपरजव नाण ॥ ७२ ॥
शांति जिनंद सहस्र चार, १६ तेत्रीशसें चालीस १७ उपर ॥ प
चीसशें एकावन, १८ साडीसत्तरशें १ए मुनिवर ॥ पंदरासें २०
साडीबारासें २१, नेमि प्रज्ञु एक हजारो २२ ॥ पार्श्वप्रज्ञुके जाण,
साडी सातशें अणगारो २३ ॥ वर्धमानजीके पाचशें २४ ए,अढाई
दीप मझार ॥ जाणे सहु मन वारता, प्रणमूं ते अणगार ॥ ७३॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना अवधिज्ञानी साधु कहे छे.

॥ सेंकडा नेउं १ चोराणुं २,छन्नुं ३ अट्ठाणुं ४ जाणी ॥ सहस्र

इग्यारा ५ दश ६ नव ७, आठ ८ अवधि नाणी ॥ सेंकडा चोराशीए बोहोंतेर, १० साठ ११ चोपन १२ अडतालीसो १३ ॥ त्रेंतालीश १४ बत्तीस १५ तीस १६, वली पच्चीश १७ छवीशो १८ ॥ बावीश १९ अगारा २० षोडश ए २१, पंदरा २२ दश २३ सत सात २४ ॥ अवधि नाणी जिनवर तणा, वंदूं उठि परजात ॥ ७४ ॥ ९५ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरना पूर्वधरोनी संख्या कहे छे.

॥ छेंतालीसशें पचास १, सेंतिससें वीश २ विचारो ॥ इक विशशें पचास ३, पंदेसें ४ चोविशशें ५ धारो ॥ तेविशशें ६ विशशें परत्रीश ७, चंदा प्रज्जु दोय हजारो ८ ॥ सेंकडा पंदरा ए चउदा १०, तेरा ११ बारा १२ इग्यारो १३॥ दश १४ नव १५ आठ १६ छशें सित्तर १७ए, छशें दश १८ छशें अडसठ १९ ॥ पांचशें २० साडी चार २१ चारशें, २२ साडी तिनशें २३ तिनशें विशिष्ट २४ ॥ पूरव धारक श्रेष्ठ ॥ ७५ ॥ ९६ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरना वैक्रिय लब्धिवंत मुनि कहे छे.

॥ छशें वीश सहस्र, चारशें वीश हजारो ॥ उगणीश सहस्र शत आठ, उगणीश सहस्र वैक्रिय धारो ॥ अगारा सहस्र सत चार, सोला सहस्र एक शत आगे ॥ पंदरा सहस्र शत तीन, सहस्र चउदा तेरे पागे ॥ बारा इग्यारा दश सहस्र ए, नव आठ सात जाण ॥ खट सहस्र एकावनशें, वैक्रियधारी प्रमाण ॥ ७६ त्रहोंत्तरशें गुणतिससें, सहस्र दो पंच विचारो ॥ पंदराशें इग्यारासें जाण, सातशें वीर प्रज्जु धारो ॥ महा तपस्या परजाव, वैक्रिय लब्धि जिण पाइ॥ गोपवी राखी तेह, लोकने खबर न कांइ ॥ इम मुनि चोवीश जिन तणा ए, सत्ताविश गुण धार ॥ प्रणमुं मन तन कायसूं, नित्यप्रत्यें वारं वार ॥ ७७ ॥ ९७॥

हवे चोवीश तीर्थंकरना वादीमुनिनी संख्या कहे छे ॥

॥ बारा सहस्र साडीछशें, चार सत बारा हजारो ॥ बारा इग्यारा सहस्र दश, उपर शत चारो ॥ छन्नुं शत चोराशी, छहोंत्तर साठ अठावन ॥ पचास सेंतालीश छत्तीश, बतिश अठाविश चोवीश न न ॥ विश सोला चउदा बारे दश ए, आठशें छशें सत चार ॥ शें कडा संख्या समजीयें, जिनवादी अणगार ॥ ७८ ॥ए८॥

हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रत्येक बुधमुनि, तथा प्रकीर्ण, तथा माहाव्रत, तथा चारित्र, तथा पडिक्कमण कहे छे.

॥ साधुसंख्या प्रत्येक बुध, तेता प्रकीर्ण बिचारो ॥ आदि अंत पंच जाम, शेष माहाव्रत कहे चारो ॥ प्रथम चरम के पंच, चारित्र करे अंगीकारो ॥ दूजो त्रीजो चारित्रसो, मध्यजिनने परिहारो ॥ प्रथम चरम जिनसासणें ए, पडिकमणुं उन्नयकाल ॥ शेष बावीश प्रायछित समे, करे आवश्यक उजमाल ॥ ७ए ॥ एए श्री १०३

हवे चोवीश तीर्थंकरनुं सर्वायु कहे छे.

॥ पूर्वचोराशी १ लाख, बहोत्तर २ साठ ३ पचासो ४ ॥ चालिश ५ तिश ६ विश ७ दश, ८दोयएएक१०पूर्व विमासो ॥ वर्ष चौराशी ११ लाख, बहोंत्तर १२ साठ १३ वलि त्रीशो १४ ॥ दश१५ एक १६ लक्ष कुंथु, पचाणुं १७ सहस्र गहीसो ॥ चौराशी १८ पचावन १ए तिश २० वलि ए, दश २१ नेमी एक हजार २२ ॥ सो २३ वली बहोत्तर २४ वर्षनुं, प्रभु आउखुं सुविचार ॥ ८० ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनी निर्वाण तिथि कहे छे.

॥ माघ वदि तेरश १चैत्र, उन्ने शुद्ध २ पंचमी ३ आई ॥ शुद्ध अष्टमी वैशाख ४, शुक्ल चैत्र नौमी ५ कहाई ॥ ईग्यारस मार्गशिर्षवदि, ६ फागण वदि सातम ७ गाई ॥ नाद्रवा वदि सातम, ८ नोम

नाद्रवा शुद्ध ए मांई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसुं ए, तिज श्रा वण वदि ११ जाण ॥ आषाढ शुद्ध चउदश १२ बारमा, दाखी तिथि निर्वाण ॥ ७१ ॥ सातम आषाढ वदि १३, चैत्र १४ जेठ शुद्ध पंचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ठ वदि तेरश तिथि, १६ वैशाख वदि पडिवा १७ ठानी ॥ मागसिर फागुण शुद्ध, दशमी १८ बारस १९ कहीयें ॥ ज्येष्ठ वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सु गहीयें ॥ आषाढ श्रावण शुद्ध अष्टमी ए, नेमी पार्श्व २२।२३ जिन जाण ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४, पाया पद निर्वाण ॥७२॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनां निर्वाण नक्षत्र कहे छे.

॥ अभिजित १ मृगशिर २ आर्दरा ३, पुष्य ४ पुनर्वसु ५ आयो ॥ चित्रा ६ अनुराधा ७ ज्येष्ठा, ८ मूल ९ पूर्वाषाढा १० गायो ॥ धनिष्ठा ११ उत्तराभाद्र, १२ दोयके रेवती १३ जाणो ॥ १४ पुष्य १५ भरणी १६ कृत्तिका १७, रेवती १८ भरणी १९ व खाणो ॥ श्रवण २० अश्विनी २१ चित्रा २२ वली ए, विशाखा २३ स्वाति २४ विचार ॥ इन नक्षत्र निर्वाणपद, पाया शिव सुखसार ॥ प्रणमुं वारं वार ॥ ७३ ॥ १०६॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्षस्थान तथा अणसण तप कहे छे.

॥ रिखभ अष्टापद शिखर, वासुपूज्य चंपा जाणो ॥ नेमि नाथ गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ शेष समेत शिखर, गीरि पर अणसण लीना ॥ छ दिन रिखभ जिणंद, वीर छठ्ठम तप कीना ॥ शेष जिनंद एकमासनो ए, ठायो अणसण सार ॥ होय अजोगी मुक्ति गया, प्रणमूं वारं वार ॥ जय जय परम दातार ॥७४॥१०७॥१०८॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्ष आसन तथा मोक्ष वेला कहे छे.

॥ रिखन्न जिणंद रिष्ट नेमि,चोविशमा वीर जिनंदा ॥ पल्यंक आसण संथारो, शेष काउसगमें करंदा ॥ त्रीजा छठा नवमा बारमा, अपरान्हें धारो ॥ तिण बिचला जे अठ, जिन पूर्वान्हें बिचारो ॥ धर्म कुंथु नमि वीर प्रज्ञु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगजाण ॥ ७५ ॥ १०ए ॥ ११०॥

हवे चोवीश तीर्थंकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे छे॥

॥ आदिजिनंद दश सहस्र,पद्म प्रज्ञु तिनशें आगे ॥ पांचशें सुपारस संग, वासुपूज्य छशें पागे ॥ विमलसंगें खट सहस्र, अनंतजिके सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें सात बिचारो ॥ पाचशें छत्रिश मल्लि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रज्ञु लार ॥ माहावीर एका एकी, शेष सहस्र परिवार ॥ प्रज्ञु साथें अणसण धार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ७६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी युगांतकृत जूमि तथा पर्यायांतकृत जूमि कहे छे ॥

॥रिखन्न जिनंद असंख्यात,पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ चउ पार्श्व,चरम जिन तीन बताया ॥ शेष जिनंद संख्यात,युगांतर जूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि,अंतरमुहूरत लगें लहीयें॥ नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहूं ए,वर्द्धमान वर्ष चार॥ शेष एक दिनांतरें, मुक्ति गया अणगार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥७७॥११२॥११३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनामुनियोनी केवी प्रकृति,तथा वस्त्र रंग,तेमज जन्म नक्षत्र,दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्षत्र तथा केटलाश्रावक व्रत,पंचाचार,ते सर्व कहे छे.

॥ आदिजिणंद मुनिराज,प्रकृति रक्षु जड जाणो ॥ चरम प्रज्ञुका

वक्रजड, शेष रूजु सरल वखाणो ॥ आदि अंत श्वेतवस्त्र, शेष पंचरंगा गणो ॥ च्यवन नक्षत्र जेह,तेहि जन्मदीक्षा नाणो ॥ स हुने श्रावक व्रत द्वादश ए,सहुने पंच आचार ॥ जे पाली शिव पुर गया, प्रणमुं ते वारं वार ॥ ७७ ॥ ११४ थी १२०

हवे चोवीश तीर्थंकरनी उत्पत्तिना आरानो समय,धर्म भेद तथा संयमभेद अने मुनिउना गुण कहे छे.

॥ त्रीजा आरानी अंतें,रिखन्न जिनवर प्रगटाया ॥ चोथा आरा मध्य अजित,शेष अंतें दरसाया ॥ श्रुत अरु चारित्रधर्म,सकल दो भेद बताया ॥ संजम सतरा प्रकार, पाले सहु जिन मुनिराया ॥ गुण सत्तावीश धारणा ए, तारण तरण मुनिंद ॥ ते प्रणमुं मनव च करी, आणी अधिक आनंद ॥ ७ए ॥ १२१ थी १२४

हवे चोवीश तीर्थंकरनुं केटलो काल शासन रह्युं?ते कहे छे.

॥ सागर पचास लक्ष कोड १, आदिजिन सासण कहीयें ॥ इम त्रिश २ दश ३ नव ४ लाख, कोडी सागर सर्दहियें ॥ हजा र नेउं ५ नव ६ जाण, नवशें कोडी सुपासो ७ ॥ नेवुं ७ नव कोड एसागर, शीतल एक १० कोडि विमासो ॥ तिणमें सो साग र ग्रहो ए, वर्ष छासठ लक्ष जाण ॥ सहस्त्र छवीश कमती कह्यो, दशमा सासण प्रमाण ॥ए०॥ सागर चोपन ११ त्रीश, १२ नव १३ चउ १४ धरम तिहुं सागर १५ ॥ तिणमें पूणो पल घाट,शांति अर्ध पल १६ उजागर ॥ कुंथु जिन पाव पल,१७ कमति वर्षकोडि हजारो ॥ अरह कोडि हजार १७, चोपन लक्ष १ए मल्लि विचा रो ॥ षट २० पंच २१ लक्ष पोणी २२, चोरासी सहस्त्रज ए, अ ढाईशें २३ एकविश हजार २४ ॥ समण समणी शासन प्रभु,प्रण मुं ते वारं वार ॥ ललि ललि वारं वार ॥ ए१ ॥ १२५ ॥

॥ अथ स्तवन आरति प्रारंभः ॥

॥ जे जे श्री जगदीश, रोष अरु तोष मिटाई ॥ जे जे श्री जगदीश, कर्म कण पीसे सांई ॥ जे जे श्री जगदीश, ध्यायो प्रभु शुकल ध्यानो ॥ जे जे श्री जगदीश, पाया सब केवल ज्ञानो ॥ जे जे श्री जगदीशजी ए, करवा पर उपगार ॥ दीधि महा धर्म देशना, तार्यां बहु नर नार ॥९०॥ जे जे श्री जगदीश, केइ सम दृष्टि करिया ॥ जे जे श्री जगदीश, केइ श्रावक उद्धरिया ॥ जे जे श्री जगदीश, केई कीना अणगारो ॥ जे जे श्री जगदीश, केइ कीना केवल धारो ॥ जे जे श्री जगदीशजी ए, आप तर्या परतार ॥ शिव सुख अविचल संपदा, पाया पद अविकार ॥ ९३ ॥ जो समरे एक चित्त, वित्त नित वंछित आवे ॥ जो समरे एक मन, जन तन रोग मिटावे ॥ जो समरे चित्त चाव, भाव तस निर्मल थावे ॥ जो समरे एक ध्यान, ज्ञान केवल प्रगटावे ॥ इन कारण भवियन सहु ए, नाम गम शुभ काम ॥ गुणग्राम लेखा विधि, रचि रुचि शुचि हितधाम ॥ ९४ ॥ अल्पश्रुति प्रमादी, आलसी में अति भारी ॥ श्रीगुरुने परसाद, भक्ति वश शक्ति सुधारी ॥ बाल ख्याल जिम ग्रंथ, निजमति लायक बणायो ॥ हीण अधिक विपरीत, जोडमें शब्द जो आयो ॥ मिछामि डुक्कडं सब साखसुं ए, श्रीजिन वाणी हेत ॥ अशुद्ध जो देखो बुधजना, शुद्ध कर लीजो सुहेत ॥ ९५ ॥ संवत उगणीशशें चालीस, मास मधु नाम विचारो ॥ शुद्ध पक्ष पंचमी तिथि, वार गुरु जोग उदारो ॥ देश दक्षिण प्रसिद्ध, अहंमद नगर मझारो ॥ किनो यह महास्तवन, सवाशें बोल विस्तारो ॥ अनुक्रमें समकित दृढ भणी ए, बोल तोल अमोल ॥ धारो भविजन भावशुं, गाथा संधिशुं खोल ॥ ९६ ॥

॥ हवे पट्टावली लिख्यते ॥

॥ पूज्यश्री कान्हजी रिखि, बीज शशि जेम परतापी ॥ दीपायो दयाधर्म, कुमतिमति दूर उछापी, तस पाटोधर पूज्य, तारा रिख जी जस धारक ॥ काला रिखजी तस शिष्य, बक रिखजी सुविचारक ॥ तस शिष्य पूज्यगुण आगला ए, धनजी रिखजी महाराय ॥ तस शिष्य श्रीगुरु मम तणा, श्रीयवंताजी रिखराय ॥ तास तणोजी सुपसाय ॥ ए७ ॥ शिशु सम थो हूं अज्ञानी, गुरु उपगारज कीनो ॥ दीनो धर्मको बोध, शोध हिरदे लय लीनो ॥ जाणी किंचित रीत, प्रीत हित निज पर कारण ॥ तिलोकरिख कहे जैन, येन नवजलनिधि तारण ॥ जो समरे जगगुरु नणी ए, यथा जोग विधि धार ॥ जगगुरु पद पावे सही, वरते मंगल चार ॥ ए८॥

॥ कलश ॥ जे जे जिनंद, सुखकंद साहेब, नक्तपति जग, रंजणं ॥ अजर अमर, अविकार निर्नय, करम रिपुदल, गंजणं ॥ तिलोकरिख कहे, धर्म पति तुम, बिघन सब, दूरें हरो ॥ हित सुख खेम, कल्याण शिवपद, तास नुक्ति दो, जय करो ॥ प्रन्नु नव नव सरणो आपरो ॥ एए ॥ इति चोविश जिनराज, गरीबनिवाज तरण तारण ऊाजको एकशो पच्चीश बोल नामादिक लेखागर्भित महास्तवन समाप्त ॥

॥ अथ मुनिगुण मंगलमाला प्रारंन्नः ॥

॥आदर जीव क्षमा गुण आदर॥अथवा धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥ समरूं श्रीअरिहंत सिद्ध साधु, धर्मजिण आणा मऊार जी ॥ चारुहि मंगल उत्तम सरणो, होजो सदा सुखकार जी ॥ प्रणमूं ते गुणवंत त्रिकालें, त्रिकरण मन वचकाय जी ॥ ऋद्धि सिद्धि सुखसंपत्ति शाता, नित नित देवे सवाय जी ॥ प्र० ॥ ॥१॥ अतित अनंत चोवीशी वंदूं, केवली अनंत अपार जी ॥ व

र्त्तमान चोविशी साहेब, नाम कहुं सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपासजी ॥ चंदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल द्यो शिववास जी ॥ प्र० ॥४॥ श्रीश्रेयांस वासुपूज्य वंदूं, विमल अनंत धर्मदेव जी ॥ शांति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, नमि नेमी करूं सेव जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पारस अने वर्धमान जिनेश्वर, ए चोविश जिनराय जी ॥ कर्म खपाई केवल पाया, मुक्ति विराज्या जाय जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जयवंता सीमंधर स्वामी, युगमंधर सुखकार जी ॥ बाहु सुबाहु ए चउ विचरे, जंबुद्वीप मझार जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ सुजात स्वयंप्रभ ने रुषभानन, अनंतवीरज जगभाण जी ॥ सूरप्रभु विशाल वज्रंधर, चंद्रानन गुणखाण जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ पूरव पश्चिम चार चार जिन, धातकीखंम मझार जी ॥ विचरे गाम नगर पुर पाटण, करता पर उपगार जी ॥ प्र० ॥ ए ॥ चंद्रबाहु भुजंग ईश्वर जी, नेमीश्वर शिवकंत जी ॥ वीरसेनने श्रीमहाभद्र जी, देवजस जी जसवंत जी ॥ प्र० ॥ १० ॥ विशमा अजितवीरज जगनायक, चार चार जिन राय जी ॥ पुष्कराधमें विचरे साहिब, नामें नवनिधि थाय जी ॥ प्र० ॥ ११ ॥ उत्कृष्टें पदें एक सो सित्तेर, जघन्य केवली कोडी दोय जी ॥ उत्कृष्ट पदें पृथकत्व कोडी तिनमें, वर्त्तमान जे होय जी ॥ प्र० ॥ १२ ॥ अष्ट गुणातम पंदरा भेदें, सिद्ध सदा सुखकार जी ॥ अलख निरंजन भवदुःख भंजण, समरतां सुखकार जी ॥ प्र० ॥१३॥ आचारज अष्ट संपदा धारक, वारक मिथ्या भर्म जी ॥ गुण छत्रिश ईश चउ तीरथ, दीपावे जैनधर्म जी ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इंद्रभूति अग्नि भूति वंदूं, वायुभूति गुणवंत जी ॥ चोथा व्यक्त सुधर्मा स्वामी, मंडितजी जसवंत जी ॥ प्र० ॥ १५॥ मौर्यपुत्र अकंपित अचल जी, मेतारज गुणधार जी ॥ इग्यारमा परभासजी वंदूं, चुम्मालिशशें परि

वारजी ॥ प्र० ॥ १६ ॥ चोविश जिनना गणधर वंदूं, चउदशें वावन जाण जी ॥ चउदा पूरव धारक सारा, पहूंता सहु निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ १७ ॥ ऋषभ सेनादिक सहस्र चोराशी, मुनिवर गुण भंमार जी ॥ धीर वीर गंभीर गुणातम,नमता जयजयकार जी ॥ प्र० ॥ १८ ॥ अरिसाभवनमें श्रीभरतेश्वर, पाया केवल ज्ञान जी ॥ अनुक्रमें आठ पट्टोधर इणविध, पाया पद निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ १९ ॥ बाहुबल मुनिवर महा बलीया, बार मासी तप ध्यान जी ॥ मान मेलिने पग उठायो, पाया केवल ज्ञान जी ॥ प्र० ॥ २० ॥ जूझ करतां पुत्र अठाणुं, श्रीआदीश्वर स्वामि जी ॥ समजाई दियो संजम तेहने, पहोता ते शिवधाम जी ॥प्र०॥२१॥ सागर मघवा खट खंम त्यागी, चक्री सनत्कुमार जी ॥ रूप देखवा सुर उल कीधो, लीधो संजम भार जी ॥ प्र० ॥ २२ ॥ पदम हरी खेण जयनामें रिख, चक्री दश ऋद्धि छोड जी ॥ शम दम उपशम धीर गुणागर, कर्मबंधण दिया तोड जी ॥ प्र० ॥२३॥ अचल विजय भद्ररिख वंदूं,सुभद्रमुनी रिखि राय जी ॥ सुदर्शन आनंदन नंदन, राम गया शिवमांय जी ॥ प्र० ॥ २४ ॥ हलधर बलिभद्र जी पहोता, पंचम सर्ग मझार जी ॥ उत्तम पुरुष ए पुण्य प्रतापी, वली कहुं अंगनुसार जी ॥ प्र० ॥ २५ ॥ आर्द्रकुमार माहाबुद्धिवंता, जीत्या महा पंचवाद जी ॥ संयम पाली शिवपद पाया, जिन आणा मरजाद जी ॥ प्र० ॥२६॥ उदय पेढालपुत्रें करी चर्चा, गौतमस्वामीसुं जाय जी ॥ कुमारपुतिया नाम लेइने, सूत्र सुयगडांगनीमांय जी ॥ प्र० ॥ २७ ॥ दश दशांग त्रीजे अंग चाल्या, कह्या तिहां मुनिवर नाम जी ॥ ते सहु शिवगामी गुणधामी, कीनां उत्तम काम जी ॥ प्र० ॥ २८ ॥ सूत्रसमवायांग मांही प्रकाश्यां, नाम केई प्रसिद्ध जी ॥ गणधर मुनिवर चउद पूर्वधर, नाम लियां ऋद्धिसिद्ध जी ॥ प्र० ॥ २९ ॥ पिंगल नाम

निर्ग्रंठें पूछ्या, प्रश्न पंच रसाल जी ॥ खंधक संन्यासी सुणिके तत क्षण, वीर पासें गया चाल जी ॥ प्र० ॥ ३० ॥ संशय निवर्त्या संजम लीनो, कीनो तप श्रीकार जी ॥ अणसणधारी स्वर्ग बार मे, थया एका अवतार जी ॥ प्र० ॥ ३१ ॥ वीर जिनेश्वर तात वखाणुं, रिखभदत्त गुणधार जी ॥ शेठ सुदर्शन राज रुषीश्वर, धन गंगियो अणगार जी ॥ ३२ ॥ ए चारें रुषि मुगतें पहोता, धन धन भगवंत मात जी ॥ देवानंदा धन सति जयवंती, पूछ्या प्रश्न विख्यात जी ॥ प्र० ॥ ३३ ॥ वीर प्रभुजीनी नंदिनी वंदूं, सती सुदर्शना जाण जी ॥ दीक्षाधारी कर्म निवारी, पाई पद निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ ३४ ॥ पंचमी पडिमा कार्त्तिक शेठें, धारी तिण सो वार जी ॥ तापस खीर जम्यो मोरा पर, जाण्यो अथिर संसार जी ॥ प्र० ॥ ३५ ॥ सहस्र अष्टोत्तर गुमास्ता सार्थें, आदर्यो संजमभार जी ॥ शेठ थया शक्रेंद्र सौधर्में, जाशे मोक्ष मझार जी ॥ प्र० ॥ ३६ ॥ शोला देश तजि संजम लीयो, दियो भाणेजने राज जी ॥ करी क्षमा धनराय उदाई, सार्यां आतम काज जी ॥ प्र० ॥ ३७ ॥ गंगदत्त आणंद कोसल रिखरोहा, सुनक्षत्र नाम अणगार जी ॥ श्रवणभूति आराधक थईने, पहोता स्वर्ग मझार जी ॥ प्र० ॥३८॥ तिहांथी चवीने मुक्ति सिधाशे, इत्यादिक अण गार जी ॥ नाम ठाम तप जपको वर्णव, विवहारपन्नत्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ३९ ॥ धारणीसुत श्रेणिक नृपनंदन, धन धन मेघ कुमार जी ॥ आठ अंतेउर छिनमें छोडी, त्याग दियो संसार जी ॥ प्र० ॥ ४० ॥ गुणरतन भिक्खु पडिमा तप, अंतें अणसण कीध जी ॥ विजयविमानमें जाय बिराज्या, होशे विदेहमें सिद्ध जी ॥ प्र० ॥ ४१ ॥ बत्रीश नार तजी रंभासी, धन थावच्चा कुमार जी ॥ नेम प्रभुयें संजम लीधो, सहस्र पुरुष परिवार जी ॥ प्र० ॥ ४२ ॥ थावच्चा मुनिसूं चर्चा कीनी, शुकदेव संन्यासी

जाण जी ॥ एक सहस्र शिष्य साथें संजम, लीधो गुणनिधि खा
ण जी ॥ प्र० ॥ ४३ ॥ पंथकादिक परधान पांचशें, श्रेणिक राय
नी लार जी ॥ अढाइ सहस्र पुंमरीकगिरि सिद्धा ॥ धन जिणरा
अवतार जी ॥ प्र० ॥ ४४ ॥ रेणा देवीकी केण न कीधी, रत्नद्वी
पसूं आय जी ॥ संजम लीनो चंपा नगरी, जिनपाल मुनिराय जी
॥ प्र० ॥ ४५ ॥ तीन धन्नायें धास्यो संजम, सुगुरु थिविरनी पास
जी ॥ तीनुं परथम स्वर्गें सिधाया,माहाविदेह शिववास जी ॥ प्र०
॥४६ ॥ ठए मित्र मल्लि जिनवरना, महाबलादिक गुणवंत जी ॥
गणधर पद ग्रही मुक्ति बिराज्या, थया सिद्ध नगवंत जी ॥ प्र० ॥
॥ ४७ ॥ सुबुधि प्रधानजीयें नलि विधें, पाणी परचो बताय जी ॥
जितशत्रु नृपको नर्म मिटायो, दोइ गया शिवमांय जी ॥ प्र०
॥ ४८ ॥ तेतली मुनिवर गुणना दरिया, पोट्टिला दियो प्रतिबोध
जी ॥ केवल पामी मुक्ति बिराज्या, तजियो सकल विरोध जी
॥ प्र० ॥ ४९ ॥ युधिष्ठिर अर्जुन अने नीमजी, सहदेव नकुल अ
णगार जी ॥ मास मास तप अनिग्रह कीनो, नेम वंदण सुविचा
र जी ॥ प्र० ॥ ५० ॥ हस्तिकल्पपुर गोचरी करतां, नेम तणुं नि
र्वाण जी ॥ सुणिने पांमव पांच शत्रुंजे, संथारो लियो जाण जी
॥ प्र० ॥ ५१ ॥ दोय मास संलेषणा सिद्धा, श्रमणी द्रौपदी सो
य जी ॥ संजम पाली स्वर्गे पंचमे, एकावतारी होय जी ॥ प्र०
॥ ५२ ॥ धर्मघोष शिष्य धर्मरुचि जी, किड्यां पर करुणा आण
जी ॥ कडवा तुंबानो आहारज कीधो, खीर खांम सम जाण जी
॥ प्र० ॥५३॥ क्षण अंतरमें वेदना प्रगटी, रिख समता मन धार
जी ॥ सर्वार्थसिद्धमें जाय बिराज्या, च्यवि गया मुक्ति मजार जी
॥ प्र० ॥ ५४ ॥ कुंमरिक नाईने मगियो जाणी, पुंमरिक संजम धा
र जी ॥ सर्वार्थसिद्ध लियो तीन दिवसमें, धन जिणरो अवतार
जी ॥ प्र० ॥ ५५ ॥ सुव्रतादिक श्रमणी महासतियो, पाली प्रत्रु

नी आण जी ॥ ते वर्णन भिन्न भिन्न करि देखो, ज्ञाता अंग प्र
माण जी ॥ प्र० ॥ ५६ ॥ गौतम समुद्र सागर अने गंभीर, थि
मितने अचल कुमार जी ॥ कपिल अक्षोभ प्रश्नसेन ने विष्णु,
अक्षोभ सागर जसधार जी ॥ प्र० ॥ ५७ ॥ सागर समुद्र हेमवंत
नामें, अचलधरण गुणवंत जी ॥ पूरण अभिचंद्र एह अगारा,भ्रा
ता जाणो सहु संत जी ॥ प्र० ॥ ५८ ॥ अंधक वृष्णिसुत धार
णी अंगज, आठ अंतेउर मेल जी ॥ नेम समीपें लीनो संजम,
करि मुगतिमें सहेल जी ॥ प्र० ॥ ५९ ॥ वसुदेवसुत देवकी जाया,
अणियसेण अनंतसेण जी ॥ अजितसेण अणिहय रिपुनामें, देव
सेण शत्रुसेण जी ॥ प्र० ॥ ६० ॥ सुलसाघर वधिया छे बंधव,
बत्रीश बत्रीश नारि जी ॥ तजिने नेम प्रभुपें संजम, लेइने छठ
छठ धार जी ॥ प्र० ॥ ६१ ॥ पूरवधारी कर्म निवारी, पहोता मो
क्ष मझार जी ॥ वसुदेवसुत धारणी अंगज, सारण थया अवि
कार जी ॥ ६२ ॥ गजतालव जिम कोमल काया, धन धन गज
सुकुमाल जी ॥ वसुदेवसुत देवकी अंगज, छोड्यो जग जंजाल
जी ॥ प्र०॥ ६३ ॥ एकाकी समशानमें जाइ, उभा ध्यान लगाय
जी ॥ ससरो देखी रीषें भराणो, माटीकी पाल बणाय जी ॥ प्र०
॥ ६४ ॥ धग धगता खेराना खीरा, मेल्या शिखने शीश जी ॥
महावेदना सहि सम परिणामें, मुक्ति गया तजि रीश जी ॥ प्र०
॥ ६५ ॥ सुमुख दुर्मुख वली उवय कुंवर, दारुण अनाधिष्ठ जा
ण जी ॥ जाली मयाली उवयाली ऋषि, पुरुषसेन वखाण जी ॥
॥ प्र० ॥ ६६ ॥ वारिषेण प्रद्युम्न ऋषि संब, अनिरुद्ध वैदर्भिनंद
जी ॥ सत्यनेमी दृढनेमी ए सब, पाम्या शिवसुखकंद जी ॥ प्र०
॥ ६७ ॥ पद्मावती गौरी गांधारी, लखमणा सुसमा नार जी ॥
जांबुवती सत्यभामा रुक्मिणी, कृष्णरामा सुविचार जी ॥ प्र०
॥ ६८ ॥ मूलसिरी मूलदत्ता श्रमणी, सांबकुमरनी नार जी ॥

जाण जी ॥ एक सहस्र शिष्य सार्थे संजम, लीधो गुणनिधि खा ण जी ॥ प्र० ॥ ४३ ॥ पंथकादिक परधान पांचशें, श्रेणिक राय नी लार जी ॥ अढाइ सहस्र पुंमरीकगिरि सिद्धा ॥ धन जिणरा अवतार जी ॥ प्र० ॥ ४४ ॥ रेणा देवीकी केण न कीधी, रत्नद्वी पसूं आय जी ॥ संजम लीनो चंपा नगरी, जिनपाल मुनिराय जी ॥ प्र० ॥ ४५ ॥ तीन धन्नायें धार्यो संजम, सुगुरु थिविरनी पास जी ॥ तीनुं परथम स्वर्गें सिधाया,माहाविदेह शिववास जी ॥ प्र० ॥४६ ॥ उए मित्र मह्लि जिनवरना, महाबलादिक गुणवंत जी ॥ गणधर पद ग्रही मुक्ति बिराज्या, थया सिद्ध नगवंत जी ॥ प्र० ॥ ॥ ४७ ॥ सुबुधि प्रधानजीयें नलि विधें,पाणी परचो वताय जी ॥ जितशत्रु नृपको नर्म मिटायो, दोइ गया शिवमांय जी ॥ प्र० ॥ ४८ ॥ तेतली मुनिवर गुणना दरिया, पोट्टिला दियो प्रतिबोध जी ॥ केवल पामी मुक्ति बिराज्या, तजियो सकल विरोध जी ॥ प्र० ॥ ४९ ॥ युधिष्ठिर अर्जुन अने नीमजी, सहदेव नकुल अ णगार जी ॥ मास मास तप अनिग्रह कीनो, नेम वंदण सुविचा र जी ॥ प्र० ॥ ५० ॥ हस्तिकल्पपुर गोचरी करतां, नेम तणुं नि र्वाण जी ॥ सुणिने पांमव पांच शत्रुंजे, संथारो लियो जाण जी ॥ प्र० ॥ ५१ ॥ दोय मास संलेषणा सिद्धा, श्रमणी डौपदी सो य जी ॥ संजम पाली स्वर्ग पंचमे, एकावतारी होय जी ॥ प्र० ॥ ५२ ॥ धर्मघोष शिष्य धर्मरुचि जी, किड्यां पर करुणा आण जी ॥ कडवा तुंबानो आहारज कीधो, खीर खांम सम जाण जी ॥ प्र० ॥५३॥ क्षण अंतरमें वेदना प्रगटी, रिख समता मन धार जी ॥ सर्वार्थसिद्धमें जाय बिराज्या, च्यवि गया मुक्ति मजार जी ॥ प्र० ॥ ५४ ॥ कुंमरिक नाईने नगियो जाणी, पुंमरिक संजम धा र जी ॥ सर्वार्थसिद्ध लियो तीन दिवसमें, धन जिणरो अवतार जी ॥ प्र० ॥ ५५ ॥ सुव्रतादिक श्रमणी महासतियो, पाली प्रज्ञ

भइनंदी गंभीर जी ॥ प्र० ॥ ७२ ॥ महचंद वरदत्त ए दश मुनिवर, पूरव दान प्रभाव जी ॥ ऋद्धि संपत्ति पाया अति सुंदर, संजम लियो चित्त चाव जी ॥ प्र० ॥ ७३ ॥ केइक तिण भव मुगति सिधाया, केइ पंदर भव धार जी ॥ मुगतिसिरी वरशे वडभागी, सुखविपाक अधिकार जी ॥ ७४ ॥ पउमादिक दश श्रेणिक पौत्रा, वीर जिनेश्वर पास जी ॥ दीक्षा लेई स्वर्ग सिधाया, पामशे अविचल वास जी ॥ प्र० ॥ ७५ ॥ निखडादिक बलभद्रजीका नंदन, बाराही गुणवंत जी ॥ पांच पांचसें त्यागि अंतेउर, सर्वार्थसिद्ध पोहंत जी ॥ प्र० ॥ ७६ ॥ सूत्र निरावलियानीमांही, भाख्या भाव जिनंद जी ॥ एकावतारी छे रिख सारा, टालशे भवदुःख फंद जी ॥ प्र० ॥ ७७ ॥ दो मासा सुवर्णकी इछा, आई तृष्णा अपार जी ॥ समताथी केवल पद पाया, धन कपिल अणगारजी ॥ ॥ प्र० ॥ ७८ ॥ धन वलि नेमी राजऋषीश्वर, त्यागी रमणी हजार जी ॥ इंदरसूं प्रति उत्तर कीना, पाया भवजल पार जी ॥ प्र० ॥ ७९ ॥ हरिकेशी चित्तमुनि गुणसागर, संजयति ऋषिराय जी ॥ गर्दभाली क्षत्री राजऋषि धन, दशारण भद्र कहाय जी ॥ ८० ॥ करकंडू दुमुह नमी राजा, निग्गाई एह चार जी ॥ एक समय चउ संयम धार्यो, एक समे भवपार जी ॥८१॥ माहाबल मृगापुत्र मुनीश्वर, मुनि अनाथी जाण जी ॥ समुद्रपाल प्रतिपाल दयानिधि, रहे नेमी उजमाल जी ॥प्र०॥८२॥ केशी गौतम चर्चा कीनी, जय विजय घोष रसाल जी ॥ गर्गाचार्य उत्तराध्ययनें, मेट्यो शिष्य जंजाल जी ॥ प्र० ॥८३॥ धन्ना शालिभद्र रिख जोडी, तडके तोड्यो नेह जी ॥ मास मास तप धारण कीनो, त्यागी ममता देह जी ॥ प्र० ८४॥ आठ अंतेउर रातें परण्या, सोनैया नन्याव कोड जी ॥ दिन उगा लियो संजम भावें, पांचशें सत्यावीश जोड जी ॥ प्र० ॥८५॥ ढंढणऋषि लियो अभिग्रह दुःकर, चूर्या कर्म करूर जी ॥ खंधक

ऋषिनी खाल उतारी, क्षमा करी जरपूर जी ॥ प्र० ॥ ए६ ॥ खं
धक ऋषिना शिष्य पांचशें, पील्या घाणी मांय जी ॥ क्षमा करि
केवल पद पाया, मुगति गया मुनिराय जी ॥ प्र० ॥ ए७ ॥ थूलि
नद अरणिक सिऊंजव, श्रीजिन आज्ञा मांय जी ॥ वरत्या वरते
ते सहु मुनिवर, थूणतां पातक जाय जी ॥ प्र० ॥ ए८ ॥ मरुदें
वी गज होदे पाम्यां, निर्मल केवल ज्ञान जी ॥ ब्राह्मी सुंदरी चं
दनबाला, ध्यायुं शूकल ध्यान जी ॥ प्र० ॥एए॥ राजिमती द्रौप
दी सुजद्रा, सीता कौशल्या जाण जी ॥ मृगावती अंजना मृग
लेखा, मलया शीलनी खाण जी ॥ प्र० ॥ १०० ॥ चेलणा सु
ज्येष्ठा शिवा कुंती, मयणरेहादिक जेह जी ॥ संकट पडिया शी
लज राख्युं, आण्यो संजम नेह जी ॥ प्र० ॥ १०१ ॥ इण चो
वीशी मांही जिनना, मुनिवरनो परिवार जी ॥ लाख अघाविश उ
पर जाणो, अडतालीश हजार जी ॥ प्र० ॥ १०२ ॥ श्रीजिनवर
ना शासनमांही, केवली थया अपार जी ॥ साधु साधवी थया
असंख्या, नामथकी जयकार जी ॥ प्र० ॥१०३॥ जघन्यपदें दोय
सहस्र कोडी, उत्कृष्ट पृथक् सहस्र कोड जी ॥ वर्त्तमान जे वर्त्तें
मुनिवर, जग माया सब बोड जी ॥ प्र० ॥ १०४ ॥ पंच जरत पं
च ऐरवय जाणो, पंच महाविदेह मकार जी ॥ अढाइ द्वीपके मां
ही वरते, सत्ताविश गुण धार जी ॥ प्र० ॥१०५॥ तप जप साधे
धर्म आराधे, बालक वलि वृद्ध संत जी ॥ ममता टाले समता जा
ले, पाले संजम खंत जी ॥ प्र० ॥ १०६ ॥ एहवा मुनिना जे गुण
गावे, मुख जयणा सुविचार जी ॥ पाप पलावे संपत आवे, कटें
कर्मको खार जी ॥ प्र० ॥ १०७ ॥ इम जाणी जवियण नित ज
णजो, थावे शुद्ध परिणाम जी ॥ उगणीशें सेंतीस माहावदि आ
ठम, तिलोकरिख कीया गुणग्राम जी ॥ प्र० ॥ १०८ ॥ अधि
को उंबो जो जोडाणो,मिछामि डुक्कडं मोय जी ॥ पंच परमेष्ठी स

रणो मुझने, मनवंछित फल जोय जी ॥ प्र० ॥ १०ए ॥ कलश ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य त्रीजा, उपाध्याय अणगार ए ॥ मति श्रुत रिख अवधि ज्ञानी, मनपर्यव सुखकार ए ॥ केवलज्ञानी लब्धि धारक, चारित्र पंच प्रकार ए ॥ तिलोकरिख कहे वर्त्या वर्त्ते, वंदूं वारं वार ए ॥ सदा देजो शिवसुख सार ए ॥ ॥ इति तिलोकरिखजी कृत मुनि गुण मंगलमाला संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीगौतमस्वामि इंद्रभूतिजीको रास प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्रजीनें पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ प्रणमूं श्रीवर्धमान सुहंकर, सतगुरु शीश नमाउं ॥ ज्येष्ठ शिष्य श्रीगौतम स्वामी, शुधभावें गुण गाउं रे ॥ भविका, गोयम गुणधर वंदो, भव भव दुःख निकंदो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १ ॥ गोवर गाम आराम मनोहर, वसुभूति विप्र जाणो ॥ तस घर प्रथ्वी नारि सुलक्षण, शीलगुणें मृदु वाणो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २ ॥ एकदिन सुखसिद्यामांहे सूती, इंद्रभवन झलकंतो ॥ दीठं स्वप्न हरष अति पामी, कंतसुं कह्यो विरतंतो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥३॥ सवा नवमास पूरण थया जनम्या, दान मान बहु कीनो ॥ इंद्रभुवन देख्यो तिण कारण, इंद्रभूति नाम दीनो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ४ ॥ रूप अनुपम कनक सी काया, झलक झलक तन दमके ॥ पंच धावें करि वध्या दिन दिन सो, दुशमन देखीने चमके रे ॥ भ० ॥ गो० ॥५॥ चार वेद ढ शास्त्र सो भणीया, अरथ तरक विधि सारी ॥ चउदे विद्या निधान सो पंडित, विस्तरी महिमा सो भारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥६॥ मध्य पापापुर सोमल ब्राह्मण, यज्ञ करण सो बुलाया ॥ अग्निभूति वायुभूति संगें, अति आडंबरें आया रे ॥ भ० ॥गो० ॥७ ॥ विद्या पात्र ढात्र नर संगें, एक एकने लारें ॥ पांच पांचसें आया विचक्षण, यज्ञ मांड्यो तिणवारें रे ॥ भ०॥ गो०॥८॥ श्री म

हावीर अति धीर गुणातम, तप कियो डुःकर कारी ॥ ऋजुवालु का नदि तीर ठठ तपस्या, गोडुज आसण करारी रे ॥ न०॥गो० ॥ए॥ वैशाख शुद्ध दशमी दिन जाणो,ध्यान शुकल मन ध्यायो ॥ परम नरम पणे करम नरमकूं,टालि केवल पद पायों रे ॥ न०॥ गो०॥१०॥ मध्य पापापुरि बाहिर पधास्या,केवल महोत्सव काजें॥ इंड् चोसठ मिल आया उमंगसूं, त्रिगडा तणी विधि साजे रे ॥न० ॥ गो० ॥ ११ ॥ तिण अवसर चार जातिना आवे, देव देवी केइ कोडी ॥ अमर विमाणसूं अंबर ढायो, सेवा करे कर जोडी रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १२ ॥ यज्ञ उपर थई देवता जावें, इंड्नूति तव बोले ॥ यज्ञ लगें आई किहां जावे, किणे पाड्या सुर नोले रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १३ ॥ एटलें कोई कहे पुर बारे, आया ठे दीनद याला ॥ त्रिसलानंद जिनंद दिवाकर, खटकाया प्रतिपाला रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १४ ॥ तेहना दरिसण काजें असुर सुर, आया ठें इहां चलाई ॥ इंड्नूति इम सुणि जन वाणी,आणे मान अकडाई रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १५ ॥ मुफसूं कवण अधिक जगमांई, विद्या गुण बलधारी ॥ इंड्जालसूं सुर वश कीधा, आमंबर रच्यो नारी रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १६ ॥ मुफ आगल सो कदि नही ठेरे, इम सोची तिण वारें ॥ वेग पालखी मान धरीने, पांचशे ढात्र परिवारें रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १७ ॥ समोसरण तणी देखी रचना, मनमांही ताम विचारे ॥ ए सकलाइ नहि मुफमांहि, वश किम आवशे म्हारे रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १८ ॥ पाढो फिरूं तो निंदना थावे, पगपग शोच घणेरो ॥ देख्या श्री जिनराज नयणसूं, विस्मय थया बहुतेरा रे ॥ न० ॥ गो० ॥१ए॥ हरि हर ब्रह्मा नहिं रवि इंदर, दिखे प्रताप सवायो ॥ इणसूं विवाद करी नहि जीतूं, नाहक में चल आयो रे ॥ न०॥गो०॥२०॥ साहामा ऊना अण बोला रह्या तव, श्रीजगदीश उच्चारे ॥ इंड्नूति सुखें आया चला

ई, तब मनमें सो विचारें रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २१ ॥ दिनकरनें सब जाणे जगतमें, तिम मुज नाम ए जाणे ॥ पण मुज मन शंका जो निवारे, तो सवि जाव पिछाणे रे ॥ ज० ॥ गो०॥२२॥ परमेश्वर कहे तुज चित्त शंका, वेदमें तीन दकारो ॥ दया दान दमणो इंडिय मन, तत्त्व शुज एह विचारो रे ॥ ज०॥ गो०॥२३॥ जीव छे निश्चें ए त्रिहुं पदसें, वेद साक्षी इण ज्यावे ॥ इम सुणी पंचसयां परिवारें, संजमको पद गावें रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २४ ॥ अग्निजूति वायुजूति पण आया, संजम लियो त्रिहुं जाई ॥ त्रिप दी ज्ञान लब्धि थइ परगट, गुणधर पदवी पाई रे ॥ ज०॥ गो०॥ २५ ॥ छठ छठ तप निरंतर करणी, वरणवी सूत्र मजारो ॥ चार ज्ञान चउदे पूरवधर, उकडु आसण धारो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २६॥ रात दिवस प्रजु सेवना कीधी, पूछया प्रश्न अपारो ॥ चर्चा वाद विषे अति करडा, कीनो अति उपगारो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २७ ॥ एक दिवस श्री गोयम शोचे, प्रथम में दीक्षा धारी ॥ मुजने केवल ज्ञान न उपनो, थया चिंतातुर जारी रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २८ ॥ वीर प्रजु कहे गोयमसेंती, आगें आपण रह्या जेला ॥ लहुड वडाईकी रीतज होती, इहां पण थया तुमें चेला रे ॥ज०॥ २ए॥ अब इण जवके आंतरे आपण, थास्यां बरोबरी दोई ॥ मोहनी किह्नो जित लेवो थें, कर्मी रहे नहि कोइ रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३० ॥ एम सुणी हिय हर्ष घणेरो,इंद्रजूति मन आयो ॥ धन धन अंतरजामी दयानिधि, मुज पर प्रेम सवायो रे ॥ज० ॥ गो० ॥ ३१ ॥ लब्धिनिधि श्री गौतमस्वामी, गृहवासें रह्या पचासो ॥ त्रीस वरस छद्मस्थपणामें, प्रजु सेव्या उल्लासो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३२ ॥ कार्तिक वदि अमावासनी रात्रें,श्री जिन मुक्ति सी धाया ॥ गौतमस्वामीने केवल उपनो, इंद्र मोछव जणी आया रे ज० ॥ गो० ॥३३ ॥ बारा वरष केवल पदमांही, श्री जिनधर्मे

दीपायो ॥ होइ अजोगी मुक्ति सिधाया, परम मंगल पद पायो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३४ ॥ बाणुं वर्षको सर्व आउखो, जगमें कीर्त्ति सवाई ॥ गोतमनामथी रोग न व्यापे, सोग न आवे कदाइ रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३५ ॥ वधबंधन उच्चाटण कामण, जंत्र मंत्र नही चाले ॥ अरि करि हरि जय जागे नामथी, डुशमनको गर्व गाले रे ॥ ज० ॥ गो०॥ ३६ ॥ गौतम नामसूं विघन विनासे, चोर चरड नहि गंजे ॥ गौतमनामसुं ताव तेजारी, डुःख बिमारी सो जंजे रे ॥ ज० ॥ गो० ॥३७ ॥ गौतम नामसुं हिरि सिरि संपति, रिद्ध सिद्ध बहु आवें ॥ पुत्र परिवार सज्जन सुख शाता, जो समरे शुद्ध जावें रें ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३७ ॥ गग्गा गो कामधेनु सुखदायी, तत्ता सुरतरु जाणो ॥ मम्मा मणि चिंतामणिसेंती, गोतम नाम वखाणो रें ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३ए ॥ उगणीशें अडतिश मृगशिर शुद्धकी, पंचमी तिथि रविवारो ॥ तिलोक रिखजी कहे गोयम प्र जुने, होजो सदा नमस्कारो रे ॥ ज० ॥ ४० ॥ इति गोतम स्वा मिको रास संपूर्ण ॥

॥ अथ चोविश जीनवरका स्तवन प्रारंजः ॥

॥ राग प्रजाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको,समरण कीजें जाव धरी ॥ प्रा० ॥ रिखज अजित संजव अजिनंदन, सुमति कुमति सब दूर हरी ॥ पद्म सुपास चंदा प्रजु ध्यावो, पुष्पदंत हण्या कर्म अरि ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल बुद्धि देत खरी ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, नमी नेमि शिव रमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्द्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो जव उघ तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहिं कोइ तारक दूजो, इम निश्चें मनमांहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्तिश्री दो प्रजु महेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय पदं ॥ राग प्रनाती ॥

॥ समर ले श्री आदिनाथ,अजितनाथ नारी ॥ संनव नाथ जगत तात, चरण बलिहारि ॥ नवि प्रानात समरुं नाथ, वंदणा नित म्हारी ॥ बोधबीज आथ साथ, सेवा दिजो थारी ॥ न०॥ स० ॥ १ ॥ अनिनंदन दुःख निकंदन, सुमति सुमति धारी ॥ पदम सुपास चंदा प्रजु, आशा पूरो सारी ॥ न० ॥स०॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस नाथ,वासुपूज्य जहारी ॥ विमल अनंत धर्म शांति, मेटो सब बिमारी ॥ न० ॥ स० ॥ ३ ॥ कुंथु अरह मल्लिनाथ, कर्म कियां हारी ॥ मुनिसुव्रत वीशमा प्रजु, करुणाके नंमारी ॥ न० ॥ स०॥४॥ एकविशमा नमिनाथ वंदूं,सदा सुखकारी ॥ रिष्टनेमी दया काज,तजी राजुल नारी ॥न०॥स०॥५॥ बचाया नाग नागिणी प्रजु, परमेष्ठी उच्चारी ॥ परचा पूरण पारस नाथ, परउपगारी ॥ न०॥स०॥६॥ महावीर धीर धार,कर्मकूं विदारी ॥ केवल ज्ञान नान नया, थाप्यां तीर्थ चारी ॥न०॥स०॥७॥ तारि नव्यजीव गया, मुक्तिके मफारी ॥ तिलोकरिख वीनवे प्रजु, वीनत्ती ल्यो धारी ॥ न० ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय पद प्रारंनः ॥

॥गौतम समुद्र,सागर सुगंनीर ॥ए देशी॥ श्री आदिआदीश्वरू, परम परमेश्वरू, नमत सुरेश्वरू,हित धरी ए॥ अजित रिपुजित ए, जगत आदित ए, प्रसिद्ध जसकीर्त्ति, शिववधु वरी ए ॥ १ ॥ श्री संनव साम ए, सकलगुणधाम ए, प्रणमुं शिर नाम, सेवा करूं ए॥ अनिनंदन ईश ए,जय जगदीश ए,रिपुदल पीस,केवलवरू ए ॥२॥ सुमति कुमति हरो, कोशसुकृत नरो, तुम तणो आशरो, मुफ नणी ए ॥ पद्म प्रजु पद्म ए, सुमन सुपद्म ए, द्यो शिव सद्म,प्रजु शिवधणी ए ॥ ३ ॥ वंदूं सुपास ए, अनंतगुणरास ए, पूरो प्रजु

आश, सेवक तणी ए ॥ चंदप्रभु वंदियें, डुकृत निकंदियें, काटिमोह फंदी, शिरोमणी ए ॥४॥ सुविधि सुबुद्धि धणी, कीर्त्ति जगमें घणी, सेवना तेह तणी, वर सदा ए ॥ दशमा शीतलशिरें, नामथी निस्तरे, हरे संकट करें, संपदा ए ॥५॥ श्रेयांस दयाल ए, परमकृपाल ए, नक्तप्रतिपाल, करुणा करो ए ॥ वासुपूज्य जगतारणा, मंगलकारणा, नविक उद्धारणा, डुःख हरो ए ॥ ६ ॥ विमल विमल मति, करो सुखसंपति, परम पती जती, गुण घणा ए ॥ अनंतजिनंद ए, अनंतगुण कंद ए, टाले नव फंद, सेवकतणा ए ॥ ७ ॥ धर्म धुरंधरा, राजराजेश्वरा, मेटो मरण जरा, जगपति ए ॥ शांति शांति करो, रोग दूरित हरो, नाथ द्यो आशरो, सिद्धगति ए ॥७॥ कुंथु कुंथु करी, कर्म कुरंग हरी, जिम थइ शिव वरी, जगगुरू ए ॥ अरह गुणसागरू, परम उजागरू, धन करुणागरू, नागरू ए ॥ ए ॥ मल्ली मल्लमारणा, जगतजन तारणा, नक्तसुख कारणा, स्वामीजी ए ॥ मुनिसुव्रत सार ए, करुणानंमार ए, अमर अविकार, गुणधामजी ए ॥ १० ॥ नमी हित कारणा, अधम उद्धारणा, विघनविदारणा, कर दया ए ॥ रिष्टनेमी पुरा जती, परमकरुणा मती, त्यागी राजुल सती, शिवगया ए ॥ ११ ॥ पारस खारस क्षय, ना वारस वारसनय, पंचमीगतिगय, जस घणो ए ॥ महावीर गुणधीर ए, जगतजनपीर ए, करो नवतीर, द्यो निजपणो ए ॥ १२ ॥ हुं प्रभुदास ए, करुं अरदास ए, द्यो सिद्धवास, मया करी ए ॥ कहे रिखतिलोक ए, सुदृष्टिविलोक ए, अविचल थोक द्यो, हिरि सिरी ए ॥ १३ ॥ इति संपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद. प्रारंनः ॥

॥ राग तुमरी ॥ समर समर जिननाथ समरि ले, नविजन जनम सुधारक हे ॥ वारी न० ॥ १ ॥ रिखन अजित संनव अनिनंदन, कर्मरिपुके विदारक हे ॥ वारि स० ॥ २ ॥ सुमति पद

म सुपास चंदा प्रभु, भवदुःखताप निवारक हे ॥ वारी स० ॥३॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छ कायके जीव उगारक हे ॥ वारी स० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्म शांति नाथजी, सुखसंपति हितकारक हे ॥ वारी स० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, धर्मको मार्ग उच्चारक हे ॥ वारी स० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस महावीरजी, दृढ क्षमा प्रभु धारक हे ॥ वारी स० ॥ ७ ॥ केवल लेइ प्रभु मुक्ति बिराज्या, अजर अमर अवि कारक हे ॥ वारी स० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारक, तुम विना नहिं कोई उवारक हे ॥ वारी स० ॥ ए ॥ इति ॥ ४॥

॥ अथ पंचम पद प्रारंभः ॥

॥ देशी फागनी ॥ प्रणमो नित नित चोविशजिन सुखदाता ॥ ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, तोडदिया मोह नीका ताता ॥ प्र०॥१॥ सुमति पदम सुपास चंदा प्रभु, विघन ट ले ज्यांरा गुण गाता ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासु पूज्य, छोड दिया कुटुंबका नाता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म शांतिनाथ जी, मरिकी मेट दिनी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, जनम मरणका मिटाया खाता ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस माहावीरजी, शासननायक जग भ्राता ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोविश जगदीश दयाला, शिवपुर सु खमें सदाय माता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो मोय वेगसुं, अचल भक्ति दिजो एहि चाहता ॥ प्र० ॥ ८ ॥ उगणीसें उगणचालीश पोससुदि चउदश, दियावडीमें गुण किया ऊल साता ॥ प्र० ॥ ए ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ पद प्रारंभः ॥

॥ मानव जनम मानव जनम रतन तेनें पायो रे, सतगुरु

समझायो ॥ मा० ॥ ए देशी ॥ नित वंदुं नित वंदुं चोविश जिन देवा रे,चाहुं चरणकी सेवा ॥ नि०॥ ए टेक ॥ रिखन्न अजित संन्नव सुखकारी, अन्निनंदनजी जसधारी रे ॥ प्रन्नु परम दयाला, काट्या कर्मका जाला, दिया चउगति ताला ॥ नि० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपारस जसवंता, चंदवर्ण चंदाप्रन्नु सोहंता रे ॥ न्नवतापनिवारी, सब शत्रुविदारी, केवलपदधारी ॥ नि० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिनंदा, वासुपूज्य मेट्या न्नवफंदा रे ॥ जगजीवन सामी, प्रन्नु अंतरजामी, शिवलक्ष्मी पामी ॥ नि० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म रिद्धि पाई, शांतिनाथजी शांति वरताई रे ॥ न्नया परम सोन्नागी; चक्रीपद रुद्धि त्यागी, शिववधू अनुरागी ॥ नि० ॥ ४ ॥ कुंथु अरह मल्ली मल घाया, मुनिसुव्रतजी व्रत गाया रे ॥ न्नविजन समझाया, त्रिजक्तका राया, अविचलपद पाया ॥नि० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस पुरिसादानी, महावीर सासण पतिगनी रे ॥ हद क्षमा प्रन्नुधारी, घातिककर्म निवारी, थाप्यां तीरथ चारी ॥ नि० ॥ ६ ॥ ए चोविशजगदीश महंता, सुण लीजो अरजि कृपावंता रे ॥ तुम सरण न आयो, तिणथी दुःख पायो, न्नयो में अति कायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ निरर्थ काल अनंत गमायो, अब हुं तुम शरणें आयो रे॥ सुधन्याए पिठाणी, जगतारक जाणी, दृढता मन आणी ॥ नि० ॥ ८ ॥ तिलोकरिखजी कहे तिलोकरक्षपद दिजो, सेवकपर महेर करीजो रे॥ निज बरुदविचारो, सुनजर निहालो, न्नवपार उतारो ॥ नित० ॥ ए ॥ इति संपूर्ण ॥६॥

॥ अथ सप्तम पद प्रारंन्नः ॥

॥ ठाकुर न्नलें बिराज्या जी ॥ ए देशी ॥ आरतिमां ठे ॥ साहिब न्नलें बिराज्या जी, चोवीशे महाराज, मुक्तिमें न्नलें बिराज्या जी ॥ ए टेक ॥ रिखन्न अजित संन्नव अन्निनंदन, सुमति पदम

सुपास ॥ चंदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल द्यो शिववास ॥ सा० ॥ १ ॥ श्रीश्रेयांस वासुपूज्य समरो, विमल विमल मतिवंत ॥ अनंतनाथ प्रभुधर्म जिनेश्वर, शांति करो श्रीसंत ॥ सा० ॥ २ ॥ कुंथुनाथ प्रभु करुणा सागर, अरहनाथ जगदीश ॥ मल्लिनाथ श्रीमुनिसुव्रतजी, नित्य नमाउं शीश ॥ सा०॥ ३ ॥ एकविशमा नमिनाथ निरुपम, रिष्टनेमि जगधार ॥ तोरणसें पाछा फिरया प्रभु, शिवरमणी भरतार ॥ सा० ॥ ४ ॥ पारस पारस सरिखा प्रभु, निरवारसका नाथ ॥ वर्द्धमान सासणका साम्मी, प्रणमूं जोडी हाथ ॥ सा० ॥ ५ ॥ तुम बिन पाये दुःख अनंता, जनम मरण जंजाल ॥ तिलोक रिख कहे जिम तिम करिने, तारो दीनदयाल ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम पद प्रारंभः ॥

॥ राग वसंत ॥ शांति चरणारी जाउं बलिहारी ॥शां०॥ ए देशी ॥

झेलो बंदणा नाथ हमारी,तुमारे चरणकी बलिहारी ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, सुमतिपदमसुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चंदाप्रभु समरो, जगनायक जसधारी,प्रभुजी पूरण उपगारी ॥ झे०॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य,विमल अनंत धर्म धारी ॥ शांतिजिनंद सुख कंद जगतमें, मेट दीनी सब मारी,हरो मेरी विपत बिमारी ॥ झे० ॥ २ ॥ कुंथू अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, नमी नेमी सुविचारी ॥ तोरणसें पाछा फिर आया, छोडिकें राज दुलारी, नाथ तुम करुणाभंडारी ॥ झे० ॥ ३ ॥ बेवारसके वारस पारस, पंचपरमेष्ठी उच्चारी ॥ नागनागिणी जलत बचाया, कीना सुर अवतारी, महिमा जगमें अति प्यारी ॥ झे० ॥ ४ ॥ शासन नायक वीर जिनेश्वर, हदक्षमाप्रभुधारी ॥ केवल ले प्रभु धर्म बतायो, सूत्र चारितर सारी, तीरथ थाप्यां प्रभु चारी ॥ झे० ॥ ॥ ५ ॥ अणसण लेइ प्रभुजोग त्याग कर, पहूंता हे मुक्तिमझारी

॥ अनंत सुखमांही जाय विराज्याती, नीरंजननीराकारी, रह्या लोकालोक निहारी ॥ जे० ॥६॥ मोहमायामांहि उलज रह्यो में, पायो हुं दुःख अपारी ॥ तुम शरणाविन चउगति नटक्यो,धर्मकी बुद्धि विसारी, शीख सतगुरुकी न धारी ॥ जे० ॥७॥ अशुनकर्म कबु दूर नयासूं, वाणी लगी प्रनु प्यारी ॥ अधम उद्धारण बिरुद सुणिने, सरणो लियो सुविचारी,सार करजो प्रनु म्हारी ॥ जे० ॥ ८ ॥ मुऊ सरिखो नहिं दीन जगतमें, तुम सरखो दातारी ॥ जिम तिम करि नवपार उतारो, या मांगु रिऊवारी,अरज लीजो अवधारी ॥ जे० ॥ ए ॥ उंगणीशें अडतिश माघकृष्ण पक्ष, त्रीज तिथी शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवलकोटि पेठमें,जोड करी हित कारी, तिलोख रिख कहे सुविचारी ॥ जे० ॥ १० ॥ इति ॥ ए॥

॥ अथ चोविशतिर्थंकर स्तवन प्रारंनः ॥

॥ तत्र प्रथम श्री रिखनजिन स्तवन प्रारंनः ॥

॥ इण सरवरियारी पाल,उन्नी दोय नागरी॥ मारा लाल॥उन्नी दोयनागरी ॥ए देशी॥ श्री सतगुरु सुपसाय,जाण्या शिवपुर धणी मा राराज ॥ जाण्या० ॥ श्री मरुदेवीना नंद, नानि कुल गुणमणी ॥ मा०॥ ना० ॥ त्रिनुवन नायक देव, पायकनी वीनती ॥ मा० ॥ पा०॥ मोह रिपु नय आण,सरण ग्रह्यो शुनमति ॥ मा० ॥ स०॥ ॥१॥ तार तार मुऊ तात, वात कहुं मनतणी ॥मा०॥वा०॥ जनम मरण जंजाल, आवे गनरामणी ॥ मा० ॥आ०॥ तार्या जीव अनंत, शांति सुगुणा घणा ॥ मा० ॥ शां० ॥ उद्धरिया अपराधि, माहा अवगुण तणा ॥ मा० ॥मा०॥२॥ तुम बिरुद दीन दयाल, हुं बाल दयामणो ॥ मा० ॥ हुं० ॥ क्यों न करो मुऊ सार, विसार्यो किम घणो ॥ मा० ॥ वि० ॥ जो तारो गुणवंत, अचरिज छे नही ॥ मा० ॥ अ० ॥ जो मुऊ सरिखो दीन, उद्धार्या जस

सही ॥ मा० ॥ उ० ॥ ३ ॥ आपद पडियो आज, आयो शरणें व ही ॥ मा०॥ आ० ॥ उर न तारणहार, ते माटें में कही ॥ मा० ॥ ते० ॥ मुफ सरिखो कोइ दीन, प्रभु तुफ सारिखो ॥ मा० ॥ प्र० ॥ लाधें नहिं जगमांय, कियो में पारखो ॥ मा० ॥कि०॥४॥ तुंहिज तारशे नेट, पहिला पाछें सही ॥ मा० ॥ प० ॥ सेवक करे पोकार, बाहिर शोभा नहीं ॥ मा० ॥ बा० ॥ समर्थ छो तुमें स्वामि, जगत तारण भणी ॥ मा० ॥ ज०॥ हवे मुफ वेला केम, आना कानी घणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ भावे तार म तार, म हारुं शु जावशे ॥ मा० ॥ म० ॥ पण तुम तारक बिरुद, किणी विध आवशें ॥ मा० ॥ कि० ॥ कहेशो ए छे अजाण, आवे न हिं वीनती ॥ मा० ॥ आ० ॥ मावित्र विना कहो कोण, शिखा वे ते रीती ॥ मा० ॥ शि० ॥ ६ ॥ शिखावो मुफ सोय, कृपा क रि नाथ जी ॥ मा० ॥ कृ० ॥ विण मनाया नही छोडुं, तुमारो साथ जी ॥ मा० ॥ तु०॥ करुणा करी मुफ काढयो, नरक निगो दशुं ॥ मा० ॥ न० ॥ आव्यो आप हजूर, तारो हवे मोदशुं ॥ मा० ॥ ता० ॥ ७ ॥ गजहोदे निज मात, मुगति मेली खरी ॥ मा०॥ मु० ॥ भरतने अरिसा भवनें, दीनी केवल सिरी ॥ मा०॥ दि० ॥ अठाणुं निज पुत्र, जूफंता वारिया ॥ मा० ॥ जू० ॥ बा हुबल गजमान, थकी ते ऊतारीया ॥ मा० ॥ थ० ॥ ८ ॥ वी तराग समभाव, छो समतासागरु ॥ मा०॥ छो० ॥ माहरो थारो नही आप तो, तारो उजागरु ॥ मा०॥ता०॥ मातपिताथी जेम, बालक आडो करे ॥ मा०॥ बा०॥ रिखभ जिनंदसुं तेम, तिलोक रिख उच्चरे ॥ मा० ॥ तिलो० ॥ ए ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय अजित जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ श्री श्री अजित

अरज सुणो मेरी, टालो दुःखदायक अष्ट वेरी ॥ श्री० ॥ ए आं कणी ॥ जिहां जाउं तिहां संगज आवे, निज गुण संपति दूर न गावे ॥ श्री० ॥ ज्ञान ग्रहूं तव आलस आवे, नणीयो सो छिनमें विसरावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ निंद आवे धर्म कारजमांही, सुख दुःख वेदनासुं फर पाइ ॥ श्री० ॥ देव गुरु शुद्ध दाय न आवे, मिथ्यामोहनी अधिक जमावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ आयुष्य बंधण छिन छिन ठीजे, अटल अवगाहन केम लहीजें ॥ श्री० ॥ किहांइक उच्च नाम पद आपे, किहांइक नीच नाम करि थापे ॥श्री०॥ ३ ॥ किहांइक शुन सोजाग बढावे, किहांइक अपजस नाम फेलावे ॥ श्री० ॥ अमूर्तिक पदकी करे हाणी, विपत्ति इम मुफने अधिकाणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ किहांइक उच्चगोत्रमांही मेले, किहांइक नीच गोत्र विषे ठेले ॥ श्री० ॥ अगरु अलघु रूप करे दूरो, कायर मोय कियो जरपूरो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ दान लान अंतराय दे जारी, जो गोपजोग वीरज परिहारी ॥श्री०॥ शक्ति अनंत सो दीनी लुकाइ, दुःख देवे मुफ चउगति मांई ॥ श्री० ॥ ६॥ जितशत्रुसुत विजया देके नंदा, तुम शरणे आयो गुणवृंदा ॥ श्री० ॥ शत्रु सकल सो करियो निकंदा, तिलोकरिख जव जव तुम बंदा ॥ श्री०॥ ७ ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय संजवजिन स्तवन प्रारंजः ॥

॥ श्री सीमंधर पाय नमुं हो प्रजु जी ॥ ए देशी ॥ संजव जिन सुणो वीनती हो प्रजुजी, उपगारी जगधार ॥ कियो उपगार थें लोकमें हो ॥ प्र० ॥ सुखी कियां नर नारि ॥ साहिब मानजो हो, प्रजुजी सेवकनी अरदास ॥ १ ॥ ए टेक ॥ ज्ञान ध्यान तप जप क्रिया हो ॥ प्र० ॥ संजम मारग बुद्ध ॥ असंजव कर्म काल शुं हो ॥ प्र० ॥ सो करो संजव शुद्ध ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम बिन संजव कुण करे हो ॥ प्र० ॥ कुण उतारे पार ॥ दीनदयाल

दया करो हो ॥ प्र० ॥ तुम हो जगदाधार ॥ सा० ॥ ३ ॥ शर णें आयो आपके हो ॥ प्र० ॥ पतित उद्धारण आप ॥ जाणो घट घट वातडी हो ॥ प्र० ॥ दिजो कर्मबंध काप ॥ सा० ॥ ॥ ४ ॥ तुं अंतर धन माहिरो हो ॥ प्र० ॥ भव जल तारण जहा ज ॥ मुझ अवगुण मत झांखजो हो ॥ प्र० ॥ बांहे ग्रह्याकी ला ज ॥ सा० ॥ ५ ॥ एक गामनो अधिपति हो ॥ प्र० ॥ करे प्रजा नी सार ॥ तुम त्रीजगना ईश्वरू हो ॥ प्र०॥ क्यों न करो भवपा र ॥ सा० ॥ ६ ॥ नृप जितारथ कुलतिलो हो ॥ प्र० ॥ सेना दें वीना नंद ॥ तिलोकरिख करे विनती हो ॥ प्र० ॥ देजो शिव सुख कंद ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥३॥

॥ अथ चतुर्थ अभिनंदनजिन स्तवन प्रारंभः॥

॥ कौलव मारग माथे धिक धिक ॥ ए देशी ॥ अभिनंदन वंदन नित करियें, धरियें आतम ध्यान हो ॥ हरियें मिथ्या देव सक लथी, जे वश पडिया तोफान हो ॥ अ० ॥ १ ॥ शंख चक्र धनुष कर धारी, माता विषय कषाय हो ॥ नित रहे राता रामा रमणमें, तस शरणे शुं थाय हो ॥ अ० ॥ २ ॥ कोइक दंभ कमंमल धारी, निज धी सुंइ घरवास हो ॥ मृगछाला माला मो जीयुत, ते किम दे शिववास हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ हस्त कपाल व्याल भूषण युत, रुंढमाल गलमांय हो ॥ गिरिजा भोग मगन निशिवासर, ते किम आवे दाय हो ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोइक महि ष अजा भख मागे, कोइक मदिरा पान हो ॥ राग द्वेष मद मो हमें लीना, ते किम दे निर्वाण हो ॥ अ०॥ ५ ॥ आप तरे नहिं भवसागरथी, ते नहिं तारणहार हो ॥ पाण नाव तरे किण विध करि, साचो हिरदे विचार हो ॥ अ० ॥ ६ ॥ संवरराय सि द्धारथ नंदन, परम अदोषी देव हो ॥ तिलोकरिखअलि गुण

रस लीनो, प्रभु चरणांबुज सेव हो ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम सुमतिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कुंथु जिनराज तुं एसो ॥ ए देशी ॥ रेखतामें ॥ सुमति जिन राज हे प्यारा, खलकमां सुर मोहनगारा ॥ एता दिन भमीमें भूला, चतुर्गति हिंमोलमें फूला ॥ सु० ॥ १ ॥ बावल में बोया आम्र जानी, काचटुक लिया रत्न मानी ॥ जहेर के पिया अमृत जेसा, रत्नकुं देखा कंकर तेसा ॥ सु० ॥ २ ॥ एसी भर्मे बुधि रहि मेरी, प्रतित नहिं रखी दिल्ल तेरी ॥ किया मेने कर्म खुब खोटा, सह्या में नर्क बिच सोटा ॥ स० ॥ ३ ॥ चढी मोहे बागीकी मस्ती, उस्सें मेरि रही अकल खस्ती ॥ पस्ती विन पाया में तस्ती, जहान मेरी लही पूर कस्ती ॥ सु० ॥ ४ ॥ मेरा दिल बहोत गभराया, तुमारे आसरे आया ॥ तकसिरी माफ कर दे मेरी, देख तुं लायकी तेरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अर्जकी मर्ज तुम जाणो, प्रभु अब कायकूं ताणो ॥ अब तो महेरबानगी करणां, मिटा दो जन्म उर मरणां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मेघरथ भूप फरजंदा, मंगला मातके नंदा ॥ तिलोकरिख सेव चित्त चहाता, अचल मोय देनां सुखशाता ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ पद्मप्रभजिन स्तवन प्रारंभः ॥

पदकी राह ॥ श्री जिन मुजने पार उतारो ॥ ए देशी ॥ पद्म प्रभु भवजल पार उतारो, में सरणो लियो चरणांरो ॥ ए टेक ॥ पद्म लंछन प्रभु पगमांहि फलके, उपमा पदम उच्चारो ॥ उत्पन्न होवे पंकथकी पंकज, जलसुं लहे विस्तारो ॥ प० ॥ १ ॥ कामभोग सो कादव सरिखा, फरमाया सूत्र मझारो ॥ कर्मजलें वृद्धि पाया प्रभुजी, गोत्रतीर्थंकर सारो ॥ प० ॥ २ ॥ दोनुइ छोड तोड सब बंधन, वरी शिववधू सुखकारो ॥ तिम तुम किं

कर पर करो करुणा, जुगमें ए दोइ निवारो ॥ प०॥३॥ तुमविन कोई दूसरो जगमें, दिसे नहि तारणहारो ॥ भक्तवत्सल भगवंत दयानिधि, अविनाशी अविकारो ॥ प० ॥ ४ ॥ भूख्याने भोजन जल तरश्याने, रोगी औषध उपचारो ॥ तिम मुझ मनमां निश्चें निरंतर, आप तणो आधारो ॥ प० ॥५॥ आशनिराश करे नहिं दाता, मंगण जो आवे द्वारो ॥ वंछित दायक भक्तसहायक, तुम छो परम दातारो ॥ प० ॥ ६ ॥ श्रीधर नराधिप सुसमा तनय प्रभु, जीवन प्राण आधारो ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम मुझने, द्यो निज पद गुण प्यारो ॥ प० ॥ ७ ॥ इति ॥६॥

॥ अथ सप्तम सुपार्श्वजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ बंधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आशा पुरो सुपासजी, नित भावना भाउं हो ॥ चरण कमल सेवा सदा, दरिसण चित चाउं हो॥ सुपारस आश पूरो हो ॥१॥ तुम गुण जो श्रवणे सुणुं, तो पण हरखाउं हो ॥ तुम भय भंजन साहेबा, शरणागतमें बोलाउं हो ॥ सु० ॥ २ ॥ पुष्करावर्त घन धार ज्यूं, सुखवेलि बढाउं हो ॥ मोहणी अंधकार अनादिके, रवि तेम नसाउं हो॥ सु० ॥ ३ ॥ शिवपंथ बतावन तुं प्रभु, जिम नेत्र अगाउं हो ॥ कर्म सघन वन काटवा, फरशी जिम घाउं हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ संकट शिला भंजन भणी, जिम वज्र सराउं हो ॥ आशा पूरण सुरतरु, चिंतामणि जिम भाउं हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ भवजल तारण तुं प्रभु, निर्यामक नाऊं हो ॥ आधि व्याधिने निवारवा, धनंतर तिम गाउं हो ॥ सुं० ॥ ६ ॥ विष्णुपिता नंदा मायना, अंगजने मनाऊं हो ॥ तिलोकरिख कहे इछा पूरजो, नित्य शिश नमाउं हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम चंदप्रज्ञ स्तवन प्रारंज्ञः ॥

॥ कडखानी देशीमां ॥ वंडं जिनंद श्री चंद प्रज्ञ ज्ञावशुं,चरण अरविंद सुख कंद सेवा ॥ गुण मकरंद मन अलि रली गहगहे,ल खमणा नंद देवाधिदेवा ॥ वं० ॥१॥ ढंढ जगरंद कुधंध निकंदके, तोड मोह फंद सो केवल पाया ॥ इंड नरेंड सुरेंड फणींडादिक, अ नंदधर सेव करिने उमाया ॥ वं० ॥ २ ॥ चंडपुरी जन्म चंड लछन चरणमें, वरण पण चंड इव्य ज्ञाव चंदा ॥ पूरण चंद सो वदन ऊगमग करे, वाणी शीतल सुख अमृत ऊरंदा ॥ वं० ॥३॥ विषय कषायको ताप महा प्रबलता, उपशमे जो शुद्ध ज्ञाव ध्यावे ॥ ऊपमा देश अविशेष पक्ष शोधतां, संपूर्ण उपमा केम आवे ॥ वं० ॥ ४ ॥ चंड सकलंक तस राहु प्रति शत्रुसंग, दिवसें पला श दल जेम दीसे ॥ तुम निकलंक कर्म राहु दूरें किया, सदा सं क्रांति गुण विश्वावीशें ॥ वं० ॥ ५ ॥ ज्ञक्तके सहायक घायक क र्मके, त्रिज्ञुवन नायक डुःख हरता ॥ करुणाके सागरु गुण रतना गरु, जगत उजागरु सुख करता ॥ वं० ॥ ६ ॥ माहासेन राजिंद के नंदसूं वंदना, तिलोकरिख कहे कर जोडि दोई ॥ एक समे मात्र मुज मया करी दर्शी द्यो, अपर नहिं वांछना रंच कोई ॥ वं० ॥७॥

॥ अथ नवम सुविधिजिन स्तवन प्रारंज्ञः ॥

॥ सिद्धचक्रजीने पूजो रे ज्ञविका ॥ ए देशी ॥ सुविधि जिनंद ने ध्यावो रे ज्ञविका, अजर अमर पद पावो ॥ ए आंकणी ॥ क रम हणी केवल पद पाया, थाप्या तीरथ चउ खंती ॥ सयमेव बोध ते पुरुषमें उत्तम, सिंह पुंमरीक गंध दंती रे ॥ ज्ञ० ॥ १ ॥ ॥ सु० ॥ लोक उत्तम नाथ सो हितकारक, दीपक रवि जिम जा णो ॥ अज्ञय चखु मारग शरण दाता, जितवबोध वखाणुं रे ॥ ॥ ज्ञ० ॥ २ ॥ सु० ॥ धर्म अने धर्मदेशना दायक, नायक सार

थी सोइ ॥ धरम प्रधान धर्म चक्री सम, जवोदधि दीप ज्युं जोइ रे ॥ ज० ॥३॥ सु० ॥ शरणागतने राखण समरथ, ज्ञान दरिसण थिर सेरी ॥ जीवरत्या ब्रह्मस्थपणाथी, जींते जींतावे वैरी रे ॥ज० ॥ ४ ॥ सु० ॥ तरे तरावे समजे समजावे, पापने छोडे छोडावे ॥ पूरण ज्ञान दरिसण शिव अचल, रोगरहित सो कहावे ॥ ज० ॥५॥ सु० ॥ अनंत अक्षय पद बाधा नहिं जिनके, वलि संसारमें नावे ॥ सिद्धगति नाम शाश्वत स्थानकें, पहूता जिहां मन चावें रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सुग्रीव तात रंजा देवी जाया, धन धन अंतरजामी ॥ तिलोकरिख पायक तुमें नायक, वंदूं नित शिर नामी रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ सु० ॥ इति ॥ ए ॥

॥ अथ दशम शीतलजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ दयापर दोलत जुक रही ॥ तिजकी ए देशी ॥ शीतलजिन जी शीतल करो,तेरे तन गीयाकी लाय स्वामी ॥ जनम रूपी रूइ विषेजी कांइ, मरणकी आग द्यो बुजाय स्वामी ॥ शी० ॥ १ ॥ संजोगमांहे विजोगनी जी कांइ, संपदामें विपत्ति कहाय ॥स्वा०॥ सुखशातामें अशाताकी जी कांइ, अग्नि दियोने मिटाय ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ २ ॥ हरख ठिकाणे शोककी जी कांइ, ज्ञानके मांही अज्ञान ॥ स्वा० ॥ सुबुधिके कुबुधितणीकी जी कांइ, शीलमें कुशील डुःखदान ॥ स्वा० ॥ शी०॥ ३ ॥ संजम सतरा प्रकारको जी कांइ, जिणमें असंजम आग ॥ स्वा० ॥ क्षमा धरम रूइ विषे जी कांइ, मेटो क्रोध तणो दाग ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ४ ॥ विनय कह्यो सुख कारणो जी, कांइ सर्व धर्मको सार ॥ स्वा० ॥ अविनय हुताशनो लोकमें जी कांइ, दीजो एह निवार ॥ स्वा०॥ शी०॥ ५ ॥ संतोष विषे तृष्णा तणी जी कांइ, दीजो हुताशन टाल ॥ स्वा० ॥ दीसे नहि त्रिहुं लोकमें जी कांइ, तुम सम शीतल हेमाल ॥ स्वा० ॥

शी० ॥ ६ ॥ दृढसेन नृप नंदा मायना जी कांइ, अंगज सुणो अरदास ॥ स्वा० ॥ तिलोक कहे मुज नणी जी कांइ, दीजो शिवशीतलवास ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ७ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश श्रेयांसजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ श्रीमाहावीर जिनेश्वर, आप विराज्या अमर सहेरमें ॥ ए देशी ॥ श्रेयांस जिनेश्वर, अरज सुनोजी मोरी साहेबा ॥ ए आंकणी ॥ जिम तुम श्रेयपद अंश शुद्ध कर, श्रेय पद नाम प्रसिद्ध ॥ ते तुम कृपा नावशुंजी कांइ, आपो एहज रिद्ध हो ॥ श्रे० ॥ १ ॥ तुम करुणारस सागर, गुण रतनागर ईश ॥ शुं तुमने स्वामी पडे सो कांइ, क्यों न करो बकसीस हो ॥ श्रे० ॥ २ ॥ चाकर चूक पडे कोइ विरियां, गिरुवा ठाकुर जेह ॥ तेह निवाजे पलकमें जी कांइ, गिरुवा एम सनेह हो ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ मात पिताशुं मूरख बालक, करे कोइक अपराध ॥ निज जाणीने तेह निवाजे, तुम गुण अगम अगाध हो ॥ श्रे०॥४॥ हुं निगुणो पापी निर्बुद्धि, कूड कपट नंमार ॥ जिम तिम करिने पावन करकें, उतारो नव पार हो ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ तुम विना कोइ तारणहारो, जगमें दीसे नांहिं ॥ विण तार्या तुमने नहि छोडुं, ए निश्चें मनमांहि हो ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ विष्णु पिता विन्हु महतारी, धन धन नंदन जेह ॥ तिलोकरिख कहे मुज शिर टीको, लागो नवल सनेह हो ॥श्रे०॥७॥

॥ अथ द्वादश वासुपूज्यजिन स्तवन प्रारंभः ॥

राग तुमरी ॥ प्रभु वासुपूज्य जगनाथ निरंजन, रोम रोम मेरे मन वसिया, वारी रोम रोम मेरे दिल वसिया ॥प्र०॥ ए टेक ॥ चंद्र चकोर उर मोर मेघ मन, मधुकर ज्यों मालति रसिया रे ॥ म० ॥ प्र० ॥ १ ॥ सति नरतार बालक चित्त जननी, कुंजर कजली वन धसीया ॥ कुं० ॥ प्र० ॥ अंब कोयल चकवी रवि चाहत,

हंस सागर जल उल्लसियावारी ॥ हं० ॥ प्र० ॥ २ ॥ तिम तुमसुं मुफ प्रीति घणेरी, करम भरममांही में फसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥ विषय कषाय माहा मदमातो, राग द्वेष विषधर डसीया ॥ रा० ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तुम जप गरुड शब्द जिम जाणुं, मन शुद्ध नाम लेतां नसिया ॥ म० ॥ प्र० ॥ परम गारुडी तुम हो कृपानिधि, सकल जहर डुरां जे चसियां ॥ स० ॥ प्र० ॥ ४ ॥ देवाधिदेव अलेव अगोचर, मिथ्या नर्म सो डुरा खसिया ॥ मि० ॥ प्र० ॥ करमको खार हयो तप सोगसुं, जाव अगनि करी उल्लसिया ॥ जा० ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नवि मन रंजन अलख निरंजन, सिद्धिमें सिद्ध जाय वसिया ॥ सि० ॥ प्र० ॥ सहज स्वनाव तुंबा को तिरण पण, करम वजन बुटा उकसियां ॥ क० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मेरेसें दूर नहिं प्रन्नु कबुही, जेसें अग्नि अरणीके घसीया ॥ जे० ॥ प्र० ॥ वासुपूज्य जयादे नंदनका, तिलोकरिखजी दरिसण त्रसिया ॥ ति० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदश विमलजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ विमल जिनेसर वंदो रे नविका, नव नव सरण सहाई ॥ ए टेक ॥ ज्ञान अनंत पण अलोकको ठेडो, कह्यो न आगम माई ॥ दरिसन केवल स्वपन नहिं देखे, ए देखो अधिकाई ॥ वि० ॥ १ ॥ शाता अशाता वेदे नहिं कबु, निराबाध सुखमांई ॥ त्याग नही पण आश्रव बूटो, अटल अवगहणा अकायी ॥ वि० ॥ २ ॥ आयुष्यविन थिर थित तुम स्वामी, नाम गोत्र क्षय साई ॥ समरे एक नाव शुद्ध करकें, सुख होवत उनतांई ॥ वि० ॥ ३ ॥ अंतराय क्षय करीयो साहिब, नूतन लान्न न कांइ ॥ वीतराग दशा पावत प्रन्नु में, तारक बिरुद कहाइ ॥ वि० ॥ ४ ॥ हय गय रथ पायक नहिं ममता, जगतके नाथ कहाइ ॥ नारी नही शिवरमणीके

रसिया, प्रसिद्ध कहे जगमांइ ॥ वि० ॥ ५ ॥ क्रोध नहिं अरु करुणासिंधु, शत्रुसों दिया नगाइ ॥ कृतवर्म नूप श्यामा देवी नंदा, जगमें शोना सवाइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे मुऊ तारणमें, कायकूं जेज लगाइ ॥ तुम जगतारक बिरुद विचारी, शिवगढ देउ जिताई ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश अनंतनाथजिन स्तवन प्रारंनः ॥

॥ नमुं नमुं में वे सुगुरुकुं, वे जिन मुद्रा धारी हे ॥ ए देशी ॥ अनंतनाथ प्रनु नित्य उवि वंदूं, अनंतज्ञान गुणधारी हे ॥ ए टेक ॥ अनंत चारित्र अनंत शक्तिधर, अनंत जीवके हितकारी हे ॥ सचित्त अचित अनंत पदारथ, देखे ज्यो दर्पण मकारी हे ॥ अ० ॥ १ ॥ अनंत जीवाके प्रतिपालक साहिब, अनंत वर्गणा निवारी हे ॥ द्रव्य गुण पर्याय सकलमें, निन निन करकें उच्चारी हे ॥ अ० ॥ २ ॥ तीन नवन जस उज्जल तेरो, महिमा अपरम पारी हे ॥ वंदनीय पूजनीय सकलकों, चरण शरण बलिहारी हे ॥ अ० ॥ ३ ॥ जगगुरु जगबंधव जगनायक, जगतारक सुखकारी हे ॥ सब विध लायक संत सहायक, वायक सकल पियारी हे ॥ अ० ॥ ४ ॥ संयम साधी मोक्ष आराधी, उपाधि सकल परिहारी हे ॥ अलख निरंजन शत्रुके गंजन, अजर अमर अविकारी हे ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देव मुऊ दाय न आवे, तुमसूं प्रीत करारी हे ॥ कल्पवृक्ष सम वंछित दायक, अविचल नक्ति तुमारी हे ॥ अ० ॥ ६ ॥ सिंहसेन कुल दीपक प्रगट्या, सुजसा प्रनु महतारी हे ॥ तिलोकरिख कहे करुणा सागर, करजो नव जल पारी हे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदश धर्मनाथजिन स्तवन प्रारंनः ॥

॥ धन ब्राह्मी ने धन सुंदरी जी कांइ, पाल्युं शियल अखंम ॥

ए देशी ॥ धर्मजिनंद सेव्या विनाजी कांइ, इम रूले संसार ॥ ए टेक ॥ धरम धरम करतो फिर्यो जी कांइ,धरम न जाणे नेद ॥ रुलियो चउगति जीवडो कांइ, पायो पूरण खेद जी ॥ ध० ॥ ॥ १ ॥ वार अनंती उपनो जी कांइ,नोगव्यां दुःख अनंत ॥ के तो जाणे आतमा जी कांइ, के जाणे नगवंत जी ॥ ध० ॥ २ ॥ एक मुहूर्त्तमें नव कर्या जी कांइ,साडी पेंसठ हजार ॥ छत्तिस अधिक निगोदमें जी कांइ, काल अनंत विचार जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ त्रस थावर तिर्यंचमें जी कांइ, छेदन नेदन त्रास ॥ सही तिहां परवश पणे जी कांइ, संची करमनी राश जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ जो कदि नरनव पामियो जी कांइ, संपदा पायो हीन ॥ पापकर्म संचय कर्यां जी कांइ, मिथ्यामतमें लीन जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सुर नयो तो चाकर पणेजी कांइ, राच्यो ख्याल विनोद ॥ मरणसमे झूर्यो घणो जी कांइ, नूल्यो सघली मोद जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ पुजल नाता सहु ग्रह्या जी कांइ, नानु सुत सुव्रताना जात ॥ तिलोकरिखनी ए विनती जी कांइ, आपो धर्म निज वातजी ॥ ध० ॥ ७ ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश शांतिजिन स्तवन प्रारंनः ॥

॥ समर ले समर ले राधिका श्री हरि ॥ ए देशी ॥ राग प्रनातीमें॥ ध्यान धर ध्यान धर शांति जिनराजको, दिन दिन संपत्ति अधिक आवे ॥ सकल संकट हरे ऋद्धि वृद्धि करे, कर्मको नर्म दूरें हठावे ॥ ध्या० ॥ १ ॥ नृप विश्वसेन कुल चंद रवि किरणसा, अचिरा देवी मायने कूखें आवे ॥ मारी निवारी प्रनु देशकी गर्नमें, शांतिकुमार प्रनु नाम ठावे ॥ ध्या० ॥ २ ॥ शांतिजीको नाम संतत करी जाणीयें, अरि करी हरि सो दूरा नगावे ॥ ताव तेजातरो चउथारो वेलांतरो, आधि व्याधि दुःख उपशमावे ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ दुर्जन दुष्ट माहा वेरी जे वांकडो, समरता शांति सो लागे

पावे ॥ सजन संजोग विजोग दुशमन तणो, अवनिपति मान अधिको बढावे ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ फंकणी शंकणी नूत जोटिंग सो, समरतां सकल दूरां पलावे ॥ ऊतरे जहेर भुजंग विंछू तणां, अनल जिननामजलें उपशमावे ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ वध बंधन सहु छुटें प्रभु नामशुं, चोर लुंटेरा ठग भागि जावे ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री शांति शांती करे, दुष्ट दमण स्वहा हिरदे ध्यावे ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ इह भवें सुख परभवें शिव संपदा, देत जगदीश जो समरे भावें ॥ तिलोकरिख करे अरदास कर जोडिने, द्यो निज नाम गुण प्रेम भावें ॥ ध्या० ॥ ७ ॥ इति ॥१६॥

॥ अथ सप्तदश कुंथुनाथजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ पवन सुत कोन दिशासें आयो ॥ ए देशी ॥ राग श्याम कल्याण ॥ मेरे प्रभु कुंथु नाथ मन भाया ॥ मे०॥ ए टेक ॥ संजम करणी भवजल तरणी, धारकें कर्म हगाया ॥ ध्यायो शुक्ल ध्यान अनुपम, ज्ञान केवल प्रगटाया ॥ मे० ॥ १ ॥ अशरण शरण अबंधव बंधव, अनाथके नाथ कहाया ॥ जगजीवन जग वत्सल तारक, हित उपदेश सुनाया ॥ मे० ॥ २ ॥ कोइक राग तानमें मगन हे, कोइ फुलेल लगाया ॥ कोइक रूप रंग अंग राचे, खट रस भोजन भाया ॥ मे० ॥ ३ ॥ तन धन सज्जन नानाविध नर, ख्याल तमासें लोभाया ॥ निज गुण भुलगे भूल होय कर, करमके फंद फंदाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ प्रभु सरणा विन तरणो न होवे, ज्युं मंदिर बिन पाया ॥ अंक विना शुन्य काम न सारे, जेसें सुपनकी माया ॥ मे० ॥ ५ ॥ चरण सरणकी स्मरण करणसुं, भव अरणव भटकाया ॥ विणजाराका वेल ज्युं जगमें, पच पच जनम गमाया ॥ मे० ॥ ६ ॥ सूरराय श्रीदेवी अंगजके, तिलोकरिख सरणे चल आया ॥ जिम तिम कर निज वास बतावो, तो में सकल भर पाया ॥ मे० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ अष्टादश अर जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ श्री अरनाथ आरति हरो रे, वीनती मुज अवधार ॥ सेवा कठिन प्रभु ताहरी रे, सोहली खड्गकी धार ॥ जिनेश्वर अरहनाथ सुखपूर, मुज राखो चरण हजूर ॥ जि० ॥ १ ॥ लोहचणा दांतें चावणा रे, सागर तरणो अथाह ॥ पवनने भरणो कोथले रे, इणसुं‌ई भक्ति अगाह ॥ जि० ॥ २ ॥ श्वेतांबरी दिगंबरी रे, जैनमें भेद अनेक ॥ निज निज पक्ष करे खेंचना रे, एकांत नय पक्ष टेक ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनेकांत मत ताहरो रे, हेय ज्ञेय उपादेय ॥ सप्तभंगी स्याद्वादनो रे, समजण दुःकर अंग ॥ जि० ॥ ४ ॥ अंतर तेरे प्रकारका रे, किम करि दीजें ठेल ॥ कांस्यपात्र सिंहणी क्षीरने रे, किम करि राखे झेल ॥ जि० ॥ ५ ॥ देव अदोषी गुरु संजमी रे, धरम दयामांही सार ॥ निर्वेद वाणी ताहरी रे, मानुं शरण आधार ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीधर नृप देवी नंदना रे, वंदणा झीलो दयाल ॥ तिलोक आश सफल करो रे, तुमे छो परम कृपाल ॥ जिनेश्वर ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोनविंशति मल्लिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सुण चेतन रें तुम गुणवंत मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुण चेतन रे तुं मल्ली जिनंद समर ले ॥ कर धर्मध्यान गुणग्राम, भवोदधि तर ले ॥ ए टेक ॥ एक विदेह देशमें, मथुरा नगरी सोहे ॥ जहां प्रजापाल भूपाल, कुंभ मन मोहे ॥ राणी प्रभावति नाम, शीयल गुणधारी ॥ जिन कुखें लियो अवतार, मल्लिजिन जुहारी ॥ सु० ॥ १ ॥ या हुंडासर्पिणीकाल, अछेरो जाणो॥ भयो प्रथम वेद अवतार,प्रभुकों वखाणो ॥ दोयसें भन्याणव वर्ष, उमरमें आया ॥ छ नृप पूरव भव मित्र,परण न कमाया ॥सु०॥

॥ २ ॥ प्रभुसुं मोहन घरके मांहि, बहुं बुलवाया ॥ पूतलिको उघा ड्यो ढंक, दुर्गंधसुं गलराया ॥ तब प्रभुजी दे उपदेश, सुणो रे शाणा ॥ ए देह अशुचि भंमार, अंत तज जाणां ॥ सु० ॥ ३॥ ए भोग रोगको मूल, सोगको घर हे ॥ ए फल किंपाक समान, दुःख आगर हे ॥ श्रवणवश अरणमें हरिण, प्राण निज खोवे ॥ दीप कमें पतंग निज अंग, नयनसें विगोवे ॥ सु० ॥ ४ ॥ भमर फूल के मांहि, घ्राणवशें हाणी ॥ रसना वश मछ मरे, फरसे गज जा णी ॥ एक एक इंद्रियके,वशें प्राण गमावे ॥ जे पांचुके वश होय,क वण गति थावे ॥ सु० ॥५॥ पूरव भव तप कपट,तणे परभावें ॥ तुम हम अंतर जाणो, प्रभुजी दरसावे ॥ जातीसमरण पाय,सक ल शिव जावे ॥ प्रभु तार्यां बहु नर नारि, अमर पद पावे ॥ सु० ॥६॥ अशरण शरण कृपाल, दयानिधि स्वामी ॥ प्रभु अधम उद्धा रण बिरुद,थें अंतरजामी ॥ तिलोकरिख कर जोडि,नमे शिर नामी ॥ तुम चरण शरणको वास,किजो शिवधामी ॥सु०॥७॥इति॥१ए॥

॥ अथ विंशति मुनिसुव्रत जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ स्वामी सुणेने सुंदरी भांखे ॥ ए देशी ॥ श्री मुनिसुव्रत सा हिब साचो, रोम रोम मांहि राच्यो रे ॥ जबलग में तुझ जाणियो काचो, नट जिम चउगति नाच्यो रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तुं अविना शी गुणधनराशि, निरंजन निराकारी रे ॥ जेसी सिद्ध अवस्था तुमारी, तेसी मुझमें विचारी रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ द्वैत कल्पना ते सहु छोडी, भमेकी टाटी तोडी रे ॥ प्रीत पुराणी तुमशुं जोडी, आउं में किम करि दोडी रें ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काम क्रोध मद मो हणी नाता,लागा निपट यह ताता रें ॥ क्षण भर लेन देत नहिं शाता, चउगतियें अकुलाता रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ काल अनंत में ए म गमायो, पारो ज्युं बुटी मूर्छयो रे ॥ तिम मिथ्या मोहनी कर्मे

बंधायो, मुनिसुव्रत पद नहिं ध्यायो रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ हेय ज्ञेय उपादेय नयरस केली, जाणी में किंचित शेली रे ॥ हवे मत तोडो प्रीत ए पहेली, विनति ल्यो प्रभु झेली रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुमित्र नृप पद्मावती जाया, अबके तो दुर्लभ पाया रे ॥ तिलोकरिख शरणागत आया, तार तार माहाराया रे ॥ श्री० ॥७॥ इति ॥२०॥

॥ अथैकविंशति नमि जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ नहिं हे संदेह लगार निरुपम ॥ ए देशी ॥ एकविशमा नमि नाथ निरुपम, उपमा कही नहिं जावे ॥ तेज रविसम ज्यों कहुं प्रभुने, सो पर प्रतें दझावे ॥ एक० ॥ १ ॥ बाल तरुण वृद्ध तीन अवस्था, नित नित उदय अस्तावे ॥ वादलथी मंद अरु ग्रसे तस केतु, असंभव इण न्यावे ॥ एक० ॥ २ ॥ जो कहुं चंद्र सरिखा जिनेश्वर, सो तो कलंकी जनावे ॥ नित नित हानि वृद्धि तस दीसे, रवि उदय मंद थावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ जो सागर सम कहुं जगतारक, आर पार दोइ पावे ॥ खारापणमें कवण बढाई, जंतु अनेक डुबावे ॥ ए० ॥ ४ ॥ पारस सम कहेतां पण शंकूं, लोहने हेम बणावे ॥ न करे लोहका खंभने सरिखो, गज हरि पशुमें गिणावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ मेरु कहुं तो कठिन घणेरो, अग्नि सो लाय लगावें ॥ सुरतरु चिंतामणि आदि पदारथ, परभवें काम न आवे ॥ एक० ॥ ६ ॥ विश्वसेन नृप विप्रा अंगजने, तिलोकरिख शीश नमावे ॥ मोय अनुपम करो जगवत्सल, अवर कबू नहिं चावे ॥ एक० ॥ ७ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ द्वाविंशति रिष्टनेमि जिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ गाफल मत रहे रे ॥ ए देशी ॥ जपो नेमिसरजी, मेरी जान, जपो नेमिसरजी ॥ नेमीश्वर बालब्रह्मचारी, वडाई हे जगमें जहारी ॥ जपो० ॥ ए टेक ॥ समुद्रविजयशिवा देवी नंदा,

भये जादव कुलमें चंदा, जे भविजनके सुखकंदा ॥ हरिकी शस्त्र शालामांई, मित्र संग गया सो चलाई ॥ ज० ॥ १ ॥ नाक श्वासथुं शंख बजायो, ले धनुष टंकार सुणायो, हरि सुण मन अचरिज आयो ॥ जाण्या जब नेमकुंवर तांई, कृष्ण मन चिंता अधिकाई ॥ ज० ॥ २ ॥ राज लेशे इम डर आयो, छल करकें फाग रचायो, जिम तिम करी व्याह मनायो ॥ उग्रसेन नृपति की बेटी, राजुल रूप गुणोंकी पेटी ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिणसुं करी हरजीयें सगाई, किनी खुब जान सजाई, जुनेगढ आया चढा ई ॥ पशुपर करुणा दिल आणी, तोरणसुं रथ फेस्यो जाणी ॥ ज० ॥ ४ ॥ प्रभु वरशी दान नित दीनो, फिर संजम मारग लीनो, तप जप अति दुःकर कीनो ॥ कर्म क्षयाकर केवल पाया, प्रीत धर भवजन समझाया ॥ ज० ॥ ५ ॥ सति किनी हे कुरणा नारी, आखर फिर समता धारी, सातशें सखी संग भई त्यारी ॥ चोपन दिन पहेली शिव पाई, पिछेसें मुक्ति गया सांई ॥ ज० ॥ ६ ॥ ज्यूं पशुपर करुणा लाया, तिम महेर करो महाराया, तिलोकरिखजी तुम शरणें आया ॥ प्रभु तकसिर माफ कीजो, अचल शिव भक्ति लाभ दिजो ॥ जपो० ॥ ७ ॥ २२ ॥

॥ अथ त्रयोविंशति पार्श्व जिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ पिलें रे प्याला ॥ ए देशी ॥ भजले रे वाला, वामा देवी लाला, भगत रखवाला, जगत प्रतिपाला, रक्षपालक त्रस थावर का रे ॥ ए टेक ॥ अश्वसेन कुलदीपक सामी, मरद्या मान क मठ सुरका रे ॥ नाग नागणी जलत निकाल्या, करुणावंत साहेब परका रे ॥ भ० ॥ १ ॥ परमेष्ठी नवकार सुणा कर, ताम दिया धरणीधरका रे ॥ नागणी पद्मावती गति सुरकी, शासनाधिष्ठ श्री जिनवरका रे ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रभुजी जगमाया छटकाई, मा

रग लिना प्रभु मुनिसरका रे ॥ कमठासुर उपसर्गज दीना, संकट सह्यां प्रभु जलधरका रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ धरणिंद राया तब नरमाया, गुन्हा माफ करो अनुचरका रे ॥ में मूरख मतिहीन अातम, तुम साहेब शिव मंदिरका रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ नील वरण तन दमकत काया, चरणमें लछन फणिधरका रे ॥ विषय कषायकी लाय बुझाई, नाश किया मोह मछरका रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री जिन केवलज्ञान जो पाया, क्षय किया घनघाति अरिका रे ॥ भव जन तारण तीरथ थाप्यां, उपदेश दिया हित संवरका रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ ना वारसके वारस पारस, कुण उपगार चाहे परका रे ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, वास बतावो प्रभु शिवघरका रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति वर्द्धमान जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ मेरी सुनीयो करुणा नाथ, भवोदधि पार कीजो जी ॥ ए देशी ॥ अर्जि सुणजो त्रिशलानंद, भवजल वेग तारो जी ॥ करुणा कीजो ॥ ए टेक ॥ कुंडलपुरमें लिया अवतारा, सिद्धारथ नृप कुल सिणगारा ॥ त्रीश वरस गृहवासमें रहिया, जग तज संजम मारग गहिया ॥ तपस्या पूर किनी जी, ममता त्याग दिनीजी ॥ अ० ॥ १ ॥ नर सुर तिर्यंच परिसह खमिया, राग द्वेष मोह मछर वमिया ॥ घनघातिक शत्रु चउ दमिया, धरम शुकल आराममें रमिया ॥ प्रभु केवलज्ञान पाया जी, सुर नर सेवा उमाया जी ॥ अ० ॥ २ ॥ सूत्र चारित्र दोय प्रकारा, दिया उपदेश ज्यों अमृत धारा ॥ चउदा सहस्र भये अणगारा, माहा सतियांजी छत्तिस हजारा ॥ महाव्रत पंच धारी जी, नित धोक महारीजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रावक एक लक्ष उगणसाठ हजारा, श्राविका तीन लक्ष सहस्र अठारा ॥ वारा व्रत धारक परकास्या,

आज्ञा आराधि सर्गमें वासा ॥ जाशे मोक्ष मांईजी, आतूं कर्म घाइ जी ॥ अ० ॥ ४॥ संसार सागरमें कर्मको पाणी, जोगको कर्दम महा दुःखदाणी ॥ चार कषाय वडवानल जारी, राग द्वेष माहा मगर करारी ॥ जवि रहे जर्म केरा जी, मिथ्यामोहनी परम अंधेरा जी ॥ अ० ॥ ५ ॥ धर्मको दीवो पाटण शिवपुर है, सो देखणकी अधिक आतुर हे ॥ अधम उद्धारण बिरुद विचारो, सरणे आयाने पार उतारो ॥ तुम प्रजु जहाज थावो जी, सुखें सुख ठेठ पहोंचावोजी ॥ अ० ॥ ६ ॥ इंद्रजूति अजिमानज कीनो, तिणने शिष्य करि शिवपुर दीनो ॥ चंमकोशें मंक दीनो हे आई, मेल्यो तेहि स्वर्ग आठमा मांइ ॥ अपराधी अनेक तार्या जी, दुर्गतिमें पडता वार्या जी ॥ अ० ॥ ७ ॥ अनादि कालको दुष्ट अधर्मी, चउगति दुःख हुं पायो कुकर्मी ॥ तुम बिन उर उद्धारणहारो, दीसे नही कोई इण संसारो ॥ सरणो तुमारो शोध आयो जी, जयो में पूरणकायोजी ॥ अ० ॥ ८ ॥ अरोग बोध समाधि संयुक्ति, दीजो करुणानिधि वर मुक्ति ॥ इणजवें हिरि सिरि धी निधि वृद्धि, मन इछा करजो सब सिद्धि ॥ तिलोकरिखजी आश पूरोजी, राखो नित आप हजूरो जी ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥ २४॥

॥ कलश ॥

॥ चोवीश जिनवर, परम सुखकर, जावधुं, स्तवना करी ॥ उगणीशें अडतिस, ज्येष्ठ वदि पक्ष, वार रवि नव तिथि खरी ॥ माहाराज अयवंता, रिखजी प्रसादें, तिलोकरिख, विनवे सदा ॥ आरोग बोधि, समाधि शाता, दिजो ह्रीं श्रीं, संपदा ॥ प्रजु दिजो अविचल, संपदा ॥ इति चोवीश जिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ जिनेश्वरजीकी आरति प्रारंजः ॥

॥एसे जिन एसे जिन एसे जिन हे॥ ए देशी ॥ जय जय जय जय

बोलो जिनवरकी, जो हे आशा अमर शिवघरकी ॥ज०॥ ए टेक ॥ ॥ १ ॥ जेसी कांति शशी दिनकरकी, काया दमके सकल हितक रकी ॥ जय० ॥ २ ॥ ज्युं खसबोइ अगर तगरकी, जिणसूं श्वास सुगंध मनोहरकी ॥ जय० ॥३॥ जेसी मीठी मली हे सक्करकी, वा णी अनंत गुणी सुमधुरकी ॥ जय० ॥ ४ ॥ काया सोहे सुर अनु त्तरकी, शोभा अनुपम प्रभुजीका नुरकी ॥ जय०॥ ५ ॥ जेसी चा ल मराल गजवरकी, तिणसुं गमनगति सुंदरकी ॥ ज० ॥ ६ ॥ चिंता भाणी हे भव सागरकी, संवत्सरी दान इच्छा उजागरकी ॥ ॥ ७ ॥ घात करवा करम रूप अरिकी, क्रियाधारी संजम संवर की ॥ ज० ॥ ८ ॥ केवल ज्ञान दिशा जब फरकी, जब त्रिगडाकी रचना अमर की ॥ ज० ॥ ए ॥ करुणा आणी हे जीव अपरकी, दी उपदेशना पापका भरकी ॥ ज० ॥ १० ॥ काया माया अ थिर हे सुरकी, तिण आगें कहां रुद्धि नरकी ॥ ज० ॥ ११ ॥ पर थम थापना करी गणधरकी, पिछें चार तीरथ गुणिवरकी ॥ ज० ॥ १२ ॥ जे गति पावे मोक्ष नगरकी, पदवी सिद्ध अमर अजर की ॥ १३ ॥ होड कुण करि शके उण नगरकी, गिणती सागर आ गें क्या बिन्नरकी ॥ ज० ॥ १४ ॥ महिमा अपरमपार गुणागरकी, कहेवा शक्ति नहिं सुरगुरुकी ॥ ज० ॥ १५ ॥ अयवंतारिखजी महाराज महेरकी, कीर्त्ति दाखी देव अघहरकी ॥ ज० ॥ १६ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनवरकी, भाव भक्ति करे तीर्थंकरकी ॥ ज० ॥ १७ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ श्रीपंचपरमेष्ठीका प्रत्येक स्तवन लिख्यते ॥

तत्र

प्रथम श्री अरिहंत स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्र जिन पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ श्रीअरिहंतजी वंदो रे भविका, दुःकृत दूर निकंदो रे ॥ भ० ॥ श्रीअरिहंतजी वंदो ॥ ए आंकणी ॥ वीश बोल सेवन करी स्वामी, तिसरा भवके मां ही ॥ गोत्र तीर्थंकर बंधन कीयो, चउद स्वपन दिया माई रे ॥ भ० ॥ १ ॥ शुभ बिरियां मांही जन्म भयो है, इंद्र सकल हरखाया ॥ मंदर गिरिपर महोछव करकें, माता पास पोढाया रे ॥ भ० ॥ ॥ २ ॥ भोगावली कर्म भोगवियांसुं, वरसीदान दे करकें ॥ संज म ले कर कर्मक्षय कीनां, केवल पद अनुसरकें रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ पेंतिस वाणी निरवद्य जाणी, भव्य प्राणी सुखदाणी ॥ अमृत जिम उपदेश देइने, तीरथ चउ दियां गणी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ प्रथम संघयण संठाण प्रभुके, रोग रहित वर काया ॥ प्रभुको रूप देखी ने सुर नर, रोम रोम उल्हसाया रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ एक सहस्र अ ष्ट लछन स्वछन, जहां विचरे जिन राया ॥ सात ईति सो कोश न थावे, अशोक तरु करे छाया रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ देवदुंदुभि बाजे गगनमें, इंद्रध्वजा लहकावे ॥ चोसठ जोडां बिंजाय चमरनां, ती न छत्र शिर थावे रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ योजन मंमल वाय सुगंधी, अ चित्तजल बरसावे ॥ कुसुम पंच वर्णी जल थल सरखां, ढंग अधि क महकावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विषम पंथ सो पाधरो होवे, कंटक अणी अधो थावे ॥ वैरभाव नहिं जागे जोजनमें, सिंह अजा सम भावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ए ॥ आभ कागल लेखण व नराइ, श्याही सागर जल लावे ॥ कोडाकोडि सागर सुरगुरु जो, लिखे तो पार नहिं पावे रे ॥ भ० ॥ १० ॥ अनंत गुणातम आ

तम प्रभुकी, मूलका गुण कह्या बारा ॥ तिलोकरिख अनुरागी प्र भुको, चाहे भवजलपारा रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धस्तवन प्रारंभः ॥

॥ शांति चरणारी जाउं बलिहारी ॥ ए देशी ॥ वंदूं सिद्ध सदा अविकारी, पूरो प्रभु आश हमारी ॥ ए आंकणी ॥ शुक्लध्यानशैलेशी परिणामें, तिनही जोग निवारी ॥ एक समयमांही जाय बिराज्या तो, सिद्धक्षेत्र सुखकारी, कर्मकी लगे न कारी ॥ वं० ॥ ॥ १ ॥ सर्वार्थसिद्धसुं जोजन बारा, ऊर्ध्व दिशाके मझारी ॥ लाख पेंतालीस जोजन पहोली, चितां छत्र आकारी, जोजन दल आठ उझारी ॥ वं० ॥ २ ॥ छेहडे माखीकी पांखसुं झीणी, सुंहाली घणरी मणरी ॥ अरजन सुवर्णमांही मनोहर, छबि लागे अति प्यारी, दोष नहिं दीसे लगारी ॥ वं० ॥ ३ ॥ जोजनको उपरलो गाउ, भाग छठो सुविचारी ॥ सहजानंद आतम अवगाहना, परमानंद पद धारी, नहिं जहां दुःख बिमारी ॥ वं० ॥ ४ ॥ पंच वर्णमें वर्ण नहिं हे, वासना दोय प्रकारी ॥ पंचरस अठ फरस न जिनके, तीनही वेद विकारी, विषयकी लाय निवारी ॥ वं० ॥ ॥ ५ ॥ पंच प्रमाद उपाधि नही हे, चार कषायके टारी ॥ अजर अमर अविनाशी अखंडित, निरंजन निराकारी, सदातृपत निराहारी ॥ वं० ॥ ६ ॥ जाणत देखत सर्व पदारथ, निराबाध सुखधारी ॥ समकित क्षायिक अटल अवगाहन, अमूर्त्तिक गुणधारी, अलख जस ज्योति अपारी ॥ वं० ॥ ७ ॥ अगरु लघु परजाय सदा थिर, नहिं जिहां तात महेतारी ॥ सुत सहोदर सज्जन दुशमन, नहिं सगपण व्यवहारी, जात कुल वर्ण न चारी ॥ वं० ॥ ८ ॥ शिष्य गुरु नही पायक नायक, रूप अनूपम धारी ॥ पन्नर भेदें अगम अगोचर, नहिं कृष्ण नहिं गोरी, नहिं

कोई वस्ति उजारी ॥ वं० ॥ ए ॥ जावे पण आवे नही पाछा, पंचमी गति सुखकारी ॥ तिलोकरिख कहे तुम स्थान बतावो, ए मार्गुं रिझ थारी, वारीमें जाउं बलिहारी ॥ वं० ॥ १० ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय आचारज स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सुगुरु पिछाणो इण आचारें ॥ ए देशी ॥ आचारज प्रणमुं पद त्रीजे, अष्ट संपदाधार जी ॥ चार तीरथके दे सुख शाता, आदेय बचनका धार जी ॥ आ० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पूरण पाले, पंच सुमतिका धार जी ॥ तीन गुप्ति सो दृढ करी राखे, निर्मल पंच आचार जी ॥ आ० ॥ २ ॥ नव वाड शुद्ध ब्रह्मचर्य धारी, जीत्या चार कषाय जी ॥ पांच इंद्रिय गणी वश करी राखे, निरवद्य वाणी न्याय जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ श्रीजिनधर्मने खूब दीपावे, मिथ्या खंडनहार जी ॥ वादी जनसूं हार न पावे, बुद्धि प्रबल नय सार जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ शूरा मन वचन कायाना, झलके नहिं लवलेश जी ॥ भव्य जीव तारनके कारण, साचो दें उपदेश जी ॥ आ० ॥ ५ ॥ क्लेश होवे जो चार तीरथमें, देवे आप मिटाय जी ॥ संतोशे अमृतवाणीशुं, दिन दिन पुण्य सवाय जी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शम दम उपशम तप जप राता, ध्याता निर्मल ध्यानजी ॥ नाता ताता तोड दिया सब, करताता जिनगुणगान जी ॥ आ० ॥ ॥ ७ ॥ पंच आचार जे पाले पलावे, टाले टलावे दोष जी ॥ पर उपगारी झाझ सरीखा, नाणे राग ने रोष जी ॥ आ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे छत्तिस गुण गणी, गुण गावो नरनार जी ॥ अशुभ कर्मका बंधन तूटे, थावे सफल जमार जी ॥ आ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ उवझाय स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासें जाजो ॥ ए देशी ॥ सुणो भवियण जी,चउथे पद उवझाय नमो सुख कारणा ॥ शुद्ध

श्रद्धा जी, बोध देइनें मिथ्या भरम निवारणा ॥ ए आंकणी ॥ जे अंग इग्यारका धारक छे, चउदा पूरव सुविचारक छे, शुद्ध पाठ अर्थ उच्चारक छे ॥ सु०॥१ ॥ जे सातुइ नयका जाणक छे, निश्चय व्यवहार वखाणक छे, जे शुद्ध अशुद्ध पहिचाणक छे ॥ सु० ॥ २ ॥ जे नीति वात बतावे छे, सब मिथ्या भर्म उडावे छे, भिन्न भिन्न करकें समझावे छे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जे ज्ञान ग्रहणने आवे छे, शुद्ध पात्र देखिने पढावे छे,अज्ञानपणुं तस ढावे छे ॥सु०॥ ॥ ४ ॥ जे उपशम रसना सागर छे, तप संजम गुण रतनागर छे, उत्पात माहाबुद्धि नागर छे ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे चर्चा करवा आवे छे, सत्य न्याय बताई हरावे छे, फिटा हुइ करकें जावे छे ॥ सु० ॥ ६ ॥ जिन नहिं पण जें जिन जेवा छे, वाणी सत्य निरवद्य मेवा छे, हितकारी जेहनी सेवा छे ॥ ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जे गुण गावे छे, ज्ञानावरणीने खपावे छे, अनुक्रमें मुक्ति सिधावे छे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम साधु स्तवन प्रारंभः ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिनपाई,जिणरे कर्म रहे नही कांई ॥ ए देशी ॥ वंदो साधुं सदा सुणो ज्ञाता, जिणसुं भवभवमें सुख शाता ॥ ए आंकणी ॥ ए संसार असार जानिकें, लीनो संजम भारो ॥ तप जपकी खप करता बिचरे, निरवद्य वेण उच्चारो ॥ ॥ वं० ॥ १ ॥ एक बिचारे एक निवारे, दो पाले दो टाले ॥ तीनहु अराधे तीनके साधे, त्रिहुं गाले चिहुं ढाले ॥ वं० ॥ २ ॥ चार करे नही चार धरे चित्त, पंच पाले पंच लोडे ॥ छ प्रतिपालन छ प्रतिपाले, छ में तीनके मोडे ॥ वं० ॥ ३ ॥ छ जाणे अरु छके त्यागे, सात विशुद्धि लावे ॥ सात सातके दूर निवारे, तजे आठ आठ चावे ॥ वं० ॥ ४ ॥ ॥ पाले नव टाले नव जाणे,

दमण करें दश सेवे ॥ दशसो दशसो बोले नहिं मुखसें, दश बा रासो कहेवे ॥ बं० ॥ ५ ॥ हत्या करण करावण कामी, क्रूर कहे जे जाणी ॥ अदत्त हेरे परको हित आणी, परधि प्रेमज गणी ॥ बं० ॥ ६ ॥ धन अखूट अधर्मसा ध्यानी, महामानी निर्मानी ॥ मांस नखे नित्य मांस नखे नही, मद्यथी तृपति आणी ॥ बं० ॥ ७ ॥ हय गय रथ पायक तज दीना, लीनासो सहु पासें ॥ मात पिता नारी सुत त्यागी, अनुरागी नित्य नासे ॥ बं० ॥ ८॥ पर दुःख देखी शाता चावे, इत्यादिक गुणधारी ॥ तिलोक रिख अनुनवरस शैली, समऊ कही सुविचारी ॥ बं० ॥ ए ॥ सुगुण समऊी शीश नमावे, निगुणाने मन हांसी ॥ एसा मुनिवर जो कोइ सेवे, सो होशे शिववासी ॥ बं० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ एम पंच नाम, नवकार जगमें, सार इण सम,को नही ॥ जे समरे नावें, सुरक पावे, बिघन सब, नासे सही ॥ उग णीशें सेंतिस,विजय दशमी,तिलोक रिख,स्तवना करी ॥ नव नव सरणुं, होजो मुजने, अधिक दिन दिन हिरी सिरी ॥प्रनु अधि० ॥ ॥ १ ॥ इति पंच परमेष्टिस्तवनानि संपूर्णानि ॥ सर्वगाथा ॥ ४ए॥

॥ साधु स्तवनकी डुसरी गाथासूं नवमी गाथासूधीको कठिणअर्थ होवाथी ते कहे छे.

(एकबिचारे के०) एकतत्त्व विचारे (एकनिवारे के०) एकदोष निवारे (दोसंयमपाले कें०) तप अने संजम पाले (दोटाले के०) राग अने द्वेषने टाले (तीनकेआराधे के०) ज्ञान दरिसण चारित्र ए त्रण ने आराधे (तीनकेसाधे के०) मन वचनकायाकों साधे (त्रिहुंगाले के०) तिन गर्व गाले (चिहुं ढाले के०) चारकषाय गिरावे ॥ २ ॥ (चारकरेनहि के०) चार विकथा न करे (चारधरेचित्त के०) चार सरणा प्रत्यें चित्तमे धारे. (पंचपाले के०) पंचमहाव्रत पाले

(पंचलोडे के०) पंचेंद्रीयने पीले. (बप्रतिपालन के०) बव्रत पालक मुनिराज ते (ब प्रतिपाले के०) ब कायनी दयापाले (बमेंतीनकुंमोडे के०) ब लेश्यामेंसूं तीन अधर्मलेश्याने वरजे, ॥ ३ ॥ (बजाणे के०) षट्द्रव्य नेद जाणे (अरुबकेत्यागे के०) वली ब अव्रत त्यागे (सातविशुद्धिलावे के०) सात पिंमेशणा विशुद्ध अहार लावे. (सातसातके दूरनिवारे के०) सात नय सात व्यसन वेगलां करे (तजेआठ के०) आठ मद बोडे (आठचावे के०) आठप्रवचन पांचसमिति तिन गुप्ति, ए आठकी वंदना करे ॥ ४ ॥ (पालेनव के०) नववाड ब्रह्मचर्य पाले. (टाले नव के०) नवनियाणां टाले (जाणे के०) नवतत्त्व जाणे (दमन करे दश के०) पांच इंद्रियो, चार कषाय, एक मन ए दशने दमे (दशसेवे के०) दश प्रकारें श्रमण धर्म सेवे. (दशसोदशसोबोलें नहि मुखसें के०) दश प्रकारें असत्य दश प्रकारें मिश्र, ए नाषा न बोले (दशबार सोकहेवे के०) दश प्रकारें सत्य, बार प्रकारी व्यवहारी नाषा बोलें ॥ ५ ॥ (हत्याकरण के०) आठ कर्म रूप शत्रुने घात करे (करावण कामीके०) कर्मरूपी शत्रुको नाश करावण कामी (फूठ कहे जे जाणी के०) जे पदार्थने मृषा जाणे तेने फूठो कहे (अदत्तहेरे परकोहित आणी के०) अपराया जीव अदत ग्रहण करे ते बोडावे. तथा पुज्जल चोरी बें ईम ग्रहे (परधी प्रेमज गाणी के०) श्रीजिन वाणी रूप धी जे बुद्धि तेथी प्रेम आणे ॥ ६ ॥ (धन अखूट के०) तप जप रूप धन नंमार युक्त बे. (अधर्मासाध्यानी के०) अधर्मास्तिनो गुणथिर बे तेम तेस्थिर ध्याननां करण हार बे (माहामानी के०) श्रीजिननी आज्ञा माने बे (निर्मानी के०) अहंकार रहित बे. (मांसनखे नित्य के०) मास तप करी शरीरको मांस निरंतर सोसे (मांसनखे नहि के०) मांसडुगंब निक तथा वार मास नखे नही. (मद्यपी के०) आठ मद्यथकी (तृप्ति आणी के०) इबा नहि ॥ ७ ॥ (हय गय रथपायकतजदीना के

लौकिक हाथी,घोडा,रथ,पायक,ए चार दल गेज्यां छे जेणें एवा. (लीनासोसहुपासें के०) लोकोत्तर चार ते मनरूप घोडो धीरज रूप हाथी, शीलरूप रथ, नावरूप पेदलत सदा राखे छे. (मातपिता नारी सुत त्यागी के०) सांसारिक मात पिता नारी पुत्र तेनो त्याग कीधो छे जेणे एवा (अनुराग नित्यनासे के०) अनुरागी ते दया रूप माता, ज्ञान रूप पिता, सुमति रूप नारी,सुबुद्धि रूप पुत्र तेथी राग राखे ॥८॥ (परदुःख देइ शाता चावे के०) कर्मवर्गणा कर्मचेतना दुःख देवे अने जीव चेतनाके शाता वंछे, इत्यादिक गुणनाधारक छे. (तिलोकरिख अनुनव रसशैलि के०) त्रिलोकरिख नामा कवि कहे छे, के अनुनवरस अंतरज्ञानकी शैली जे विवेकता तेनी (समज कही सुविचारी के०)समकि बोधदृष्टिकरिने कही विचारी छे ॥ए॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवन प्रारंनः ॥

॥ राग प्रनाती ॥ श्रीअरिहंत गुण गावो रे नविका, चोवीश जिन गुण गावो रे ॥ श्री अ० ॥ ए आंकणी ॥ रिषन अजित संन व अनिनंदन, सुमति पदम प्रनु ध्यावो रे ॥ श्री सुपार्श्व चंद प्रनु समरो, नित नित शीश नमावो रे ॥ श्री अ० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल चित गावो रे ॥ अनंत धर्म श्रीशांति जिनेसर, शांतिकरण जग चावो रे ॥ श्री अ० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, सुव्रत करण उमावो रे ॥ नमी नेम पारस माहावीर जी,सासणपति जिम नावो रे॥श्री अ० ॥ ३ ॥ ए चोवीश जिन संजम धारी, दियो करमकें घावो रे ॥ केवल लेईने तीरथ थाप्यां, नवजल तारण नावो रे ॥श्री अ०॥४॥ होय अजोगी मुक्ति सिधाया, फिर न रह्यो इहां आवो रे ॥ अजर अमर अविनाशी निरंजन, सकल जगतका रावो रे ॥ श्री अ० ॥ ५ ॥ नाम लियां सब विघन बिनासे, न रहे दुःखको दावो रे॥

शत्रु सो मित्री सम वरते, जो सुमरन मन ध्यावो रे ॥श्री अ०॥६॥ संवत् उगणीश आडतीस शालें, विजयदशमी दिन गावो रे ॥ दिन दिन विजय होय प्रभु नामें, भव भवमें सुख पावो रे ॥ श्रीअ० ॥ ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे प्रभु तुम सरणो, भव भवमें मुझ आवो रे ॥ शिवसंपत अरु द्यो तुम दरिसण, नित नित मंगल वधावो रे ॥ ८ ॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ भजो रे भविक जिन चोवीश विख्याता, तजो रे आलस गुणिजन गुण गाता ॥ ॥ भ० ॥ १ ॥ रिषभ अजित संभव जगताता, अभिनंदनजी आणंदके दाता ॥ भ० ॥ २ ॥ सुमति पदम पदम रंग राता, सुपार्श्वचंदा प्रभु सबकुं सुहाता ॥ भ० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जो त्राता, वासुपूज्य तोड्या हे जगनाता ॥ भ० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्मधन माता, शांति जिनंद करी हे सुखशाता ॥भ०॥५॥ कुंथु अर मल्लि मलघाता, मुनिसुव्रत व्रतमें रंग राता ॥भ०॥ ६ ॥ नमि नेमी पारस चित भाता, महावीर रह्या पाप पलाता ॥ भ० ॥ ७ ॥ विहरमान गुणधर गुरु ज्ञाता, साधि सकल बंधु सति माता ॥ भ० ॥ ८ ॥ इनके चरण सरण चित्त चाता, तिलोकरिख ताकुं शीश नमाता ॥ भ० ॥ ए ॥ २ ॥

॥ अथ ऋषभ जिन स्तवनं ॥

॥ जे गणेश जे गणेश जे गणेश देवा ॥ ए देशी ॥ जे जिणंद जे जिणंद जे जिणंद देवा, उठि प्रभात समर नाथ, श्रीऋषभ देवा ॥ ए टेक ॥ पिता तेरे नाभिराजा, जननी हे मरुदेवा ॥ देही कंचन वृषभ लंछन, तेजें रतिपति जेहवा ॥ जे० ॥ १ ॥ जुगला धर्म निवार कियो प्रभु, ठे कुलगरकी ठेवा ॥ संजम लीधो श्री जिन भावें, कर्म अरिने हणेवा ॥ जे० ॥२॥ केवल ले प्रभु देशना

दीधी, वाणी ज्युं अमृत मेवा ॥ चार तीरथकी स्थापना कीनी,ज वजल पार करेवा ॥ जे० ॥ ३ ॥ दश सहस्र मुनि संगें अष्टापद, चढीया अणसण लेवा ॥ छ दिन संथारे मुक्त बिराज्या, सुखि अनंत नितमेवा ॥ जे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे में तुम चाकर, हुं चरणारज खेवा ॥ जिम तिम करि नव पार ऊतारो, दिजो अविचल सेवा ॥ जे० ॥ ५ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ श्रीगौतम स्वामीमें गुण घणा ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमुं आदिजिनेश्वरजी,नयनंजण जगनाण ॥ गोत्रतीर्थंकर बांधिने,उपना सर्वार्थ सिद्धविमाण जी ॥ असाढ विदि चोथ तिथि जाण जी, थयो प्रजुको चवण कल्याण जी, नानि नामें नृपति कुल आणजी, माता मरुदेवीजी वखाणजी ॥ श्रीरूषन्न जिणंद जीसुं बंदणा ॥ ए टेक ॥ चैत्रि विदि तिथि अष्टमीजी, शुजवेला शुज चार ॥ जनम थयो जगदीशको, छपनकुमारी आइ तिणवार जी, जन्मकारज कियो सुविचार जी,आया इंद्र हरषें अपार जी, कियो मोछव मेरुमझार जी, सर्गें गया साधि व्यवहारजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ वृषन्न स्वपनलंछनथकी जी, रिषन्न कुमर दीयो नाम ॥ पंचसें धनुष ऊंचापणे प्रजु, तन कंचन अन्निरामजी, वि श लख पूरव कुंवर पदठाम जी, राज कीयो त्रेशठ लख स्वाम जी, जुगलधर्म निवार्यो तमाम जी, वसायां नगर पुर गाम जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ कला बहुत्तर पुरषनी जी, चोशठकला वली नार ॥ बरन चार थापन किया प्रजु, सीखायो रुजगार जी, चैत्रवदि नौमी तिथि सारजी,छठ तपस्या लिवि धार जी, चार सहस्र पुरुष परिवार जी,लीनो प्रजु संजम नार जी ॥श्री०॥ ३ ॥ बरस दिव सने पारणे जी, लियो इक्षुरस आहारजी ॥ छद्मस्थपणे परिसा सह्या प्रजु,संवछर एक हजार जी,फागुण वदी ग्यारस जहार जी,

घनघातिक हण्यां कर्म चार जी,थया प्रभु केवल धारजी,उपदेश दीयो हितकार जी ॥ श्री० ॥४॥ चार तीरथ प्रभुथापीयां जी,तार्यां बहु नर नार ॥ अष्टापद अणसण कर्यां, साथें दश सहस्र अणगार जी, ब दिनको आयो संथारजी,माघकृष्ण तेरस जगधार जी, प्रभु पहुता मुक्ति मझार जी, पाट असंखें वरी शिवनार जी ॥ श्री० ॥५॥ गजहोदे मातेश्वरी जी,पामी मोक्ष डुवार ॥ नरत आरिसा नवनमें, लहि केवल कमला सारजी, सो पुत्र दो पुत्री विचारजी, सहु शालि रूंख परिवारजी, तिलोक रिख कहे वारोवार जी, मा हारी वीनतडी अवधार जी, प्रभु करो मुझ नवोदधि पारजी ॥ श्रीरिषभजी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ श्री वीरजिणंद सासण धणी, जिन त्रिभुवनसामी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमुं आदिजिणंद,युग्मचरणांबुज सरणो ॥ मनमधुकर मोही रह्यो, गुणवास आचरणो ॥ पूरवभवें भए पांच,पूर्वेचक्रीपद त्याग कीना ॥ गोत्रतीर्थंकर बांध, चवी सर्वार्थ सिद्धलीना ॥ अषाढवि दितिथि चोथमें ए,आधिरेण मझार ॥ चवणकल्याण प्रभुजीतणुं, भाख्युं सूत्र मझार ॥ भां० ॥ १ ॥ नाभिरायकुलनंद, मात मरुदेवी जाणी ॥ तिणकूखें अवतार लियो, अद्धरयणी गनी ॥ कृष्ण अष्टमी चैत्र, मास शुभवेलामांई ॥ जनम्यारिषभ जिणंद, बपन कुमारी आई ॥ जनमकारज तिणे सहुकियो ए, आसण चल्यो तिणवार ॥ शक्रइंद्र चल आईया, आणी हरष अपार ॥ श० ॥ २ ॥ मूकी निद्रा मातवैक्रियें,निजरूपज धरिया ॥ पंच रूप करी इंद्र प्रभु, लेई प्रभु परवरीया ॥ गिरिसुदरसण जाइ,इंद्र कर्यो मोछव हरषें॥ प्रभुको रूप अनूप, नेत्र अनिमेषित निरखे ॥ प्रभुके मेल्या फिर

मातपें,रचि वनिता पुरसाज ॥ इंद्र गया निजस्थानकें, करि मोछव सब साज ॥ क० ॥ ३ ॥ चउदे सपनामें प्रथम, वृषन्नवर उज्ज्वल दीठो ॥ तेहनो फल एह पुत्र, महासुखकारक मीठो ॥ तिण कारण करि नाम,दियो प्रन्नु रिषन्न कुमार ॥ कंचन बरण शरीर, वृषन्न लंबन पग धार ॥ पांचशें धनुष उंचापणे, देह मान जिन राज ॥ वीश लाख कुंवर पदें, रह्या श्री गरिब निबाज ॥ क०॥४॥ पूर्व त्रेशठ लाख राज, जुगल धर्म दूरो कीनो ॥ लखतगिण तादिक बहोंतेर,कला तस बोधज दीनो ॥ महिला गुण जे चोसठ, शिल्प कर्म सब विध स्थापी ॥ न्नरतादिक सो नंद, राजश्री सहुने आपी ॥ चैत्र कृस्न नौमी दिन ए, चार सहस्र नर लार ॥ छठ तप धारी निकल्या, लीनो संजम न्नार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चउ मुष्टी कर लोच, पंच महाव्रत उच्चरियां ॥ सह्या परिसह सर्व, पाली शुद्ध मनसुं किरिया ॥ प्रथम पारणें हंस कुंवर, इक्षुरस वहोराया ॥ सहस्र वरस छद्मस्थ, करणी करी मन वच काया ॥ चंद्र जेमशीतल कह्या ए, सागर जेम गंन्नीर ॥ अधिक तेज रवि किरणथी, मेरु अचल गज धीर ॥ मे० ॥ ६ ॥ ध्यावता निर्मल ध्यान, विचस्या श्रीजिनवर राया ॥ पुरिमताल पुर बाहिर, अष्टम तप करकें आया ॥ शकटमुख उद्यान, वृक्ष वड हेठे विराज्या ॥ ध्यायो शुक्लज ध्यान,पाय तिजें शुन्न साजा ॥ फागण कृस्न एकादशी ए,प्रात समयमें जान ॥ आदिजिनेश्वर पामिया, केवल दरिसन ज्ञान ॥ के० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूप, जाण्यो जिनवर जिन ज्ञाने ॥ दीनो तव उपदेश, चतुर्विध तीरथ ठाने ॥ रिषन्न सेणादिक जाण, चोराशी गणधर न्नारी ॥ चोराशी सहस्र मुनिराज, मांहे दीपे अधिकारी ॥ ब्राह्मी सुंदरी धन साधवी ए, सब सतियां शिरदार ॥ तीन लक्ष थई साहुणी, श्रीजिन आज्ञाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चार सहस्र साडी सातशें चउदे पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिरा

ज,सहस्र नव सोहत नारी ॥ वैक्रिय लब्धिका धार ब, शें विश सह स्र कहीजें ॥ मनःपरजव बारे सहस्र, बशें पचास लहीजें ॥ केवल नाणी मुनिवरु ए, वीश सहस्र परिमाण ॥ ते वंदूं नित नावशुं, पाया पद निर्वाण ॥ पा० ॥ ए ॥ चर्चावादी सहस्र, बारे साडी बसें कहीयें ॥ नवशें बाविश हजार, अनुत्तर वैमानिक गहीयें ॥ साधवी चालिश सहस्र, केवल ले मुगति विराजी ॥ अवर बहु गुण धार, मुनि निज आतम साजी ॥ ते प्रणमुं सहु नावशुं ए,जिनवर आ ज्ञाधार ॥ साथें रह्या जिनराजने, करता उग्र विहार ॥ के० ॥१०॥ बाराव्रतका धार, सिग्रंसदिक श्रावक नारी ॥ पांच सहस्र तिन लक्ष, सबे इकविशगुणधारी ॥ सुनद्रादिक पंच लाख, श्राविका चोपन हजारी ॥ श्रीजिन आज्ञामांहि, कही गुणवंती नारी ॥ क री करणी शुद्ध नावशुं ए, पाई अमर विमाण ॥ ए संख्या तीरथ तणी, आगममांहि प्रमाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ एक लख पूरव सर्व, संजम केवलपद पाली ॥ नव्य जीव उपदेश, दियो कुगति मत टाली ॥ दश सहस्र मुनि साथ,अष्टापद चढीया जाइ ॥ पल्यं क आसण करि ध्यान, अणसण ब दिनकी आइ ॥ माघ कृष्ण ते रश तिथि ए, प्रनु पहुता निर्वाण ॥ सागर पचास लक्ष कोडीनो, जिनशासन परिमाण ॥ जि० ॥ १२ ॥ कोडाकोडी असंख, पाट केवलपद पाया ॥ गजहोदें प्रनुमात, केवल लेइ मुक्ति सिधाया ॥ श्रीनरतेश्वर नुवन, अरिसे केवल लीधो ॥ बाहुबल प्रनुनंद, सोहि जगमें परसीधो ॥ पुत्र सकल मुक्तें गया, पुत्री पण गुणवं त ॥ प्रणमुं आदि जिनेंद्रजी, नय नंजण नगवंत ॥ न० ॥ १३॥ षटदरिसण सिद्ध आदि,जिणवर सुखकारी ॥ सब देवा सिरमोड,होड कोन करे चरणारी ॥ अरि करी नय दुःख दूर,होय जिण समरण करतां ॥ प्रनुगुण अनंत अपार, पार नहिं आवे उच्चरतां ॥ सुगु रु शारदा स्वयमुखें ए, करे प्रनु गुण विस्तार ॥ कोडाकोड साग

र लगें, तोहि न आवेजी पार ॥तो०॥१४॥ मुझमति बे अति ही न, गुणोदधिपार न आवे ॥ मन समजावा काज, कह्या गुण सं मित नावें ॥ चंदनवृक्ष भुजंग, जीवसंग कर्मज लागे ॥ जिनवर जप बे गरुड, करम अहि दूरा नागे ॥ श्री परमेश्वर एहवा ए, जो समरे शुद्ध नाव ॥ नीम नवोदधि तारवा, परतख जिन जय नाव ॥ त० ॥१५॥ संवत उगणीशेंत्रीश, मास आषाढ उजारी ॥ तिथि तेरश नोमवार, सहेरमंदशोर मझारी ॥ अधमउद्धारण बिरुद, सुणी प्रनुसरणो लीनो ॥ जन्म मरण रोग सोग, दुःख संसार सुंबिहीनो ॥ तिलोकरिख कर जोडिनें, अरज करे शिर नाम ॥ हवे तारो प्रनु मुज नणी, आपो अविचल गाम ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन स्तवन प्रारंनः ॥

॥ केरबानी देशी ॥ जे जे रहो प्रनु ताहरी, मारी बंदणां ली जो स्वीकार नलां जी ॥मारी० ॥१॥ रिखन अजित संनव अनिनंदन, अधम उद्धारणहार ॥ न० ॥ अ० ॥ जे० ॥ २ ॥ सुमति पदम सुपास चंदा प्रनु,अष्ट कर्म कियां बार ॥ न० ॥अ०॥जे० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, जगनायक जयकार ॥ न० ॥ ज० ॥ जे० ॥ ४ ॥ विमल अनंत श्रीधर्म शांतीश्वर, शांति करि बे संसार ॥ न०॥ शां०॥ जे०॥५॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, करुणानिधी किरतार ॥ न० ॥ क० ॥ जे० ॥ ६ ॥ नमी नेम पारस माहावीरजी, सासणका सिरदार ॥ न० ॥ सा० ॥जे० ॥ ७ ॥ कर्म खपाई केवल पाया, शुक्लध्यान मझार ॥ न० ॥शु० ॥ जे० ॥ ७ ॥ ए चोवीश जिनवर जगराया, त्याग दियो बे संसार ॥ न० ॥ त्या० ॥ जे० ॥ ए ॥ संजम करणी नवजल तरणी, करि अति दुःकरकार ॥ न० ॥ क० ॥जे० ॥१०॥ नविजनने उपदेश सुणायो, वाणी ज्यों अमृतधार ॥ न० ॥ वा० ॥ जे०॥ ११ ॥

सूत्र चारित्र धर्म प्ररूप्यो, थाप्यां तीरथ चार ॥ ज० ॥था०॥जे० ॥१२॥ होय अजोगी मुगति सिधाया,अजर अमर अविकार ॥ज० ॥ अ०॥ जे०॥१३॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, तारो ज वजल पार ॥ नलांजी प्रनु तारो ॥ज०॥ता०॥जे०॥१४॥ इति ॥१॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ सुण सुण रे सयण सयाणां ॥ ए देशी ॥ रिषन अजित सं नव सुखकारी,अनिनंदनकी बलिहारी ॥ सुमति पदम प्रनु जग रा या, जाये आठु कर्मकूं घाया ॥ १ ॥ सुपारस चंदा प्रनु देवा, चा हुं नव नवमें तुम सेवा ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस दयाला, वासुपू ज्य जगतप्रतिपाला ॥ २ ॥ विमल अनंत धर्म धन दाता, शांति नाथजी करो सुखशाता ॥ कुंथु अर मल्लिजी महाराया, प्रनु आठ करम रिपु घाया ॥ ३ ॥ विशमा श्रीमुनिसुव्रत वंदूं, नव नव दुःख दूर निकंदूं ॥ नमी नेम पारस जसवंता, महावीर प्रनु सा सण कंता ॥ ४ ॥ प्रनु थाप्या हे तीरथ चारी, प्रनु परमपति उ पगारी ॥ प्रनु तुम बिन अति दुःख पायो, चारुगतिमें गनरायो ॥५॥ अब जाण्या में साहिब साचा,सब देव जाण्या अन्य काचा ॥ इम जाणी तुम सरणमें आयो, तिलोक वंदे मन वच कायो ॥६॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ मल्लिनाथ मोह्यो रे,खटराजिंद केरो ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं नि त पाया, तारो तारो जिनराया रे ॥ प्र० ॥ रिखन अजित संनव अनिनंदन, नविजनने सुखदाया रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपार्श्व चंदा प्रनु, आठ कर्म रिपु घाया जी ॥ प्र०॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, राग द्वेषकूं हगाया जी ॥ प्र० ॥३॥ वि मल अनंत धर्मनाथ शांति जी, मरकी रोग उपशमाया जी ॥प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, चोतिस अतिशे दिपाया जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेम पारस महावीर जी, सासणपति म

२५

न जाया जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोवीश जिन कर्म निवारी, ज्ञान केवल प्रजु पाया जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ चार तीरथकी किनी थापना, ज्ञान केवल प्रजु पाया जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे नित नित प्रजुकूं, वंदूं मन वच काया जी ॥ प्र० ॥ए॥ इति ॥३॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ जय जय जिनंदा जय जय जिनंदा, टाले चजगति जव जव फंदा ॥ ज०॥१॥ रिषज अजित संजव सुखकारी, अजिनंदण चरणन बलिहारी ॥ज०॥२॥ सुमति पदम सुपारस सामी, चंदा प्रजु घन अंतरजामी ॥ ज०॥ ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस दयाला, वासुपूज्य प्रणमुं किरपाला ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धरम धनदाता, शांतिजिनंद करि हे सुखशाता ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि गुणवंता, श्रीमुनि सुव्रत शिवपुर कंता ॥ ज० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस मन जाया, महावीरपति शासनराया ॥ ज० ॥ ७ ॥ ए चोविश जिन जग बटकाई, लियो संजम तन मन जलसाइ ॥ ज० ॥ ७ ॥ जप तप किरिया करि अति जारी, कर्मशत्रु सब दिया निवारी ॥ ज०॥ए॥ केवलज्ञान प्रगट्यो जिण वारी, दइ जपदेशना जवि हितकारी ॥ ज० ॥ १० ॥ मन वचन तन जोग निवारी, शिवगढ राज लियो तिण वारी ॥ ज० ॥ ११ ॥ तिलोकरिख कहे सरणो तुमारो, जिम तिम करि जव पार जतारो ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥४॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ शांति चरणारी जाजं बलिहारी ॥ ए देशी ॥ जेलो वंदणा स्वामि हमारी, तुमारे चरण बलिहारी ॥ ए टेक ॥ रिषज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम सुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चंदा प्रजु समरो, जगनायक जसधारी ॥ प्रजुजी पूर्ण जपगारी ॥ जे० ॥१॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनंत धर्मधारी ॥ शांति

जिनंद सुखकंद जगतमें, मेट दिनी सब मारी ॥ हरो मेरी विपत्त बिमारी ॥ के० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, नमी नेमी सुविचारी ॥ तोरणसें पाछा फिर आया, छोडकें राजडलारी ॥ नाथ तुम करुणा नंमारी ॥ के० ॥ ३ ॥ बे वारसके वारस पारस, पंचपरमेष्ठी उच्चारी ॥ नाग नागणी जलत बचाया, किना सुर अवतारी ॥ महिमा जगमें अति थारी ॥ के० ॥ ४ ॥ शासननायक वीर जिनेश्वर, दृढ क्षमा प्रभु धारी ॥ केवल लई प्रभु धर्म बतायो,सूत्र चारितर सारी॥ तीरथ थाप्यां प्रभु चारी ॥ के० ॥ ५ ॥ अणसण लेइ प्रभु जोग त्याग कर, पहुता हे मुगति मझारी ॥ अनंत सुखामांही जाइ बिराज्या तो, निरंजन निराकारी॥ रह्या लोकालोक निहारी ॥ के० ॥ ६ ॥ मोह मायामांहि उलज रह्यो में, पायो हुं डुःख अपारी ॥ तुम सरण बिन चउगति नटक्यो, धर्मकी बुध्दि विसारी॥ शीख सतगुरुकी न धारी ॥के०॥७॥ अशुभ करम कबु दूर नयासुं, वाणी लगी प्रभु प्यारी ॥ अधम उद्धारण बिरुद सुणीने, सरणो लियो सुविचारी ॥ सार करजो प्रभु म्हारी ॥ के० ॥ ८ ॥ मुझ सरिखो नहि दीन जगतमें, तुम सरिखो दातारी॥ जिम तिम करि नव पार उतारो,या मांगु रिझवारी॥ अरज लीजो अवधारी ॥ के० ॥ ९ ॥ उगणीशें अडतिस माघ कृष्ण पक्ष, तीज तिथि शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवल कोटि पेठमें, जोड करी हितकारी॥ तिलोकरिख कहे सुविचारी ॥ के० ॥१०॥५॥

॥ पद ठठुं ॥

॥पणीयारीकी देशी॥ जय जय आदि जिनेश्वरु॥ माहाराया रे॥ नव नव डुःख निकंद ॥ तार माहाराया रे ॥ अजित जीत करी कर्मसुं ॥ मा० ॥ प्रभु नविजनके सुखकंद ॥ ता० ॥ १ ॥ संनव स्वामी सुहामणा ॥ मा० ॥ करुणानिधि किरतार ॥ ता० ॥ अनिनंदन हितकारीया ॥ मा० ॥ सुमति सुमति दातार ॥ ता० ॥ २॥

पदम कदमको आसरो ॥ मा० ॥ सूपारस जसवंत ॥ ता० ॥ चंद आनंद सदा करो ॥ मा० ॥ शिवरमणीका कंत ॥ ता० ॥ ३ ॥ सुविधिनाथ बुद्धि दीजीयें ॥ मा० ॥ शीतल दीन दयाल ॥ ता० ॥ श्रीश्रेयांस कृपा करो ॥ मा० ॥ प्रभु वासुपूज्य कृपाल ॥ता०॥४॥ विमल विमल मति दीजीयें ॥ मा० ॥ अनंत अनंत गुणधार ॥ ता० ॥ धर्म धर्म दाता सदा ॥ मा० ॥ शांति शांति दातार ॥ ता० ॥५॥ कुंथुनाथ करुणानिधि ॥मा०॥ अरनाथजी जगन्नाण ॥ ता० ॥ मल्लि नाथ मनमोहियो ॥ मा० ॥ मुनिसुव्रत पद निरवाण ॥ ता० ॥ ६ ॥ नमुं नमी रिष्ट नेमजी ॥ मा० ॥ पशुकी सुणी हे पुकार ॥ ता० ॥ तोरणसुं पाछा फिस्या ॥ मा० ॥ जाए चढ्या गिरनार ॥ ता० ॥ ७ ॥ नावारस वारस प्रभु ॥ मा० ॥ पारस जिन जयकार ॥ ता० ॥ माहावीर जगधीरजी ॥ मा० ॥ शासनका शिरदार ॥ ता० ॥ ८ ॥ असरण शरण दयानिधि ॥ मा० ॥ तुम बिन नहिं को आधार ॥ ता० ॥ तिलोकरिख अरजी करे ॥ मा० ॥ तार तार प्रभु तार ॥ तार माहाराया रे ॥ ए ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ देशी वणजारीकी ॥ जिन राया रे ॥ श्रीमरुदेवी नंद, प्रणमुं आदि जिणंदजी ॥ जि० ॥ जि० ॥ अजित संभव हितकार, अभिनंदन सुखकंद जी ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ सुमतिपदम सुपास, चंदा प्रभु हितकारिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य उपगारीया ॥ जि० ॥ २ ॥ जि० ॥ विमल अनंत धर्मनाथ, शांति जिनंद शाता करो ॥ जि० ॥ जि० ॥ कुंथु अर मल्लीनाथ, मुनिसुव्रत आरति हरो ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि० ॥ नमी नेमी जिनराज, पारसनाथ करुणा घणी ॥ जि० ॥ जि० ॥ वर्द्धमान सुखकार, जय जय जय सासणधणी ॥ जि० ॥४॥ जि० ॥ घन घातिक चउ कर्म, हणी केवल पद पामिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ दी

नो धर्म उपदेश, चार तीरथ थापन कियां ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ थया निरंजन निराकार, शिवरमणी प्रजुजी वरी ॥ जि० ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे एम, तारजो मोहि कृपा करी ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ तुं धन तुं धन तुं धन तुं धन, शांति जिनेसर सामी ॥ ए देशी ॥ राग प्रजाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको, समरण कीजें जाव धरी ॥ प्रा० ॥ ध्रु० ॥ रिखज अजित संजव अजिनंदन, सुमति कुमति सब दूर हरी ॥ पद्म सुपास चंदा प्रजु ध्यावो, पुष्पदंत हण्या कर्म अरी ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल बुद्धि देत खरी ॥ अनंत धर्म श्रीशांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, नमी नेमी शिवरमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो जव उंघ तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहि कोइ तारक दूजो, इम निश्चें मनमांहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्ति श्री द्यो महेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ पारस जिनेश्वर रे सामी ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन समरो रे जाइ, दिन दिन संपति पामो सवाइ ॥ जय सब जावे रे जागी, महा डुशमन होवे अनुरागी ॥ श्री० ॥ १ ॥ रिखज जिनेश्वर रे पहेला, अजित जिनंद नमुं अलबेला ॥ संजव स्वामी रे गावो, अजिनंदनके चरण चित्त लावो ॥ श्री० ॥ २ ॥ सुमति पदम प्रजु रे वंदो, सुपार्श्व नाम सदा सुखकंदो ॥ चंदा प्रजु पुष्पदंत रे सामी, शीतल श्रेयांस नमुं शिर नामी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जगना रे ताता, विमल अनंत धर्म शिवदाता ॥ शांति कुंथु अर मल्लि रे देवा, मुनिसुव्रतजीनी करो नित्य सेवा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ नमी नेमी पारस रे प्यारा, वर्धमान शासन शणगारा ॥ प्रजु तुम शिवपुर रे वसि

या, तुम दरिसण नामें निशिदिन तरसीया ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अधम उद्धारण रे जाणी, चरण शरण इम हिर्दमें थाणी ॥ तिलोकरिख बंदे रे पाया, तार तार कृपा करि माहाराया ॥ श्री०॥६॥ इतिए॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ माचका दोहाकी देशी ॥ प्रणमुं आदि जिनंदने जी कांइ, अजित नाथ महाराज ॥ संन्नवगुण संन्नव करोजी कांइ, अन्निनंदन जिनराज हो ॥ चोविश जिनराया,एस बतावो मुगति महेलकी॥ सुमति सुमति दातार दयानिधि, पद्मप्रन्न जगदीश ॥ श्रीसुपास चंदा प्रन्नुकुं, नित्य नमाउं शीस हो ॥ चो० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनंत धर्मनाथ ॥ शांति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, बंदूं में जोडी हाथ हो ॥ चो० ॥ २ ॥ एकविशमा नमिनाथ निरुपम, बाविशमा रिष्टनेम ॥ ना वारसके वारस पारस, दीजो अविचल खेम हो ॥ चो० ॥ ३ ॥ वर्द्धमान सासनका साहेब, हण्यां घनघातिक कर्म ॥ केवल लक्ष्मी पाय नेजी कांइ, दाख्यो श्रीजिनधर्म हो ॥ चो० ॥ ४ ॥ तीरथ थापी मिथ्या उथापी, किनो परम उपगार ॥ होय अजोगी मुगति बिराज्या, अजर अमर अविकार हो ॥ चो० ॥ ५ ॥ अलख निरंजन नवडुःख नंजन, सिद्धपद लियो सार ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगवत्सल, जिम तिम करो नवपार हो ॥ चो० ॥ ६ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पद अग्यारमुं ॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ रिखन्न अजित संन्नव सुखकार, अन्निनंदन प्रन्नु जग आधार ॥ सुमति पदम प्रन्नु तारण ऊहाज, प्रणमुं श्रीचोवीशे जिनराज ॥१॥ सुपारस चंद्रप्रन्न स्वाम, सुविधि शीतल जिन करूं प्रणाम ॥ श्रेयांस वासुपूज्य सारो काज ॥प्र०॥२॥ विमल विमलमति दायक देव, अनंत धर्म जिन करीयें सेव ॥ शांति करो श्रीशांति माहाराज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुंथु अर मल्लि जिन जाण, श्रीमुनिसुव्रत

त्रिजग नाण ॥ नमी नेम राखो मुज लाज ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पारस नाथ महावीर दयाल, नवदुःख नंजन परम कृपाल ॥ मुक्ति नगरको लीनो राज ॥ प्र० ॥ ५ ॥ तुम बिन नहिं कोई तारणहार, तिलोकरिख ऽम निश्चें धार ॥ अरज करे द्यो शिवपुरसाज ॥ प्र० ॥६॥

कणी॥ चंदा प्रभु सुविधि वली,शीतल टालो संताप ॥जि०॥ श्रेयां
स वासुपूज्य विमल जी,अनंतजीको करो जाप ॥ जि०॥ मो०॥२॥
धर्म शांति कुंथु अर,मल्ली मुनिसुव्रत श्याम ॥जि०॥ नमियें नमी रि०
नेम जी, पारस प्रभु गुणधाम ॥ जि०॥ मो०॥३॥ वर्द्धमान शास
न धणी, कर्म नर्म किया ठार ॥ जि० ॥ केवल ज्ञान दीवाकरू,
थाप्यां तीरथ चार ॥ जि० ॥ मो० ॥ ४ ॥ कियो उपगार दया
निधि, पहुता मुक्तिमझार ॥ जि० ॥ तिलोक कहे जिम तिम करी,
कीजो नवजल पार ॥ जि० ॥ मो० ॥५॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥चार पहेरको दिन होवे रे॥ए देशी॥ रिषभ अजित जिन वंदीयें
रे,संभव जिन सुखकार हो ॥ भविक जन ॥ अभिनंदन करुणानि
धि रे, सुमति सुमति दातार हो ॥भ०॥ बंदो चोविश जिन भावशुं
रे ॥१ ॥ पदम सुपारस चंदा प्रभु रे, सुविधि शीतल कृपाल हो॥
भ० ॥ श्रेयांस वासुपूज्य ध्याइयें रे, विमल अनंत सुविशाल हो
॥ भ० ॥ बं० ॥ २ ॥ धर्मनाथ शांतीश्वरू रे, कुंथु अर मल्ली जा
ण हो ॥ भ० ॥ श्री मुनिसुव्रत साहिबा रे, नमी नेम गुण खा
ण हो ॥ भ० ॥ बं० ॥ ३ ॥ पारस प्रभु महावीरजी रे, शासन
का शिरदार हो ॥ भ० ॥ बं० ॥ राग द्वेष मल जीतिने रे, पहोता
मुगति मझार हो ॥ भ० ॥ बं० ॥ ४ ॥ अहो अविनाशी साहि
बा रे, जगवत्सल जगदीश हो ॥ जि० ॥ तिलोकरिख करे विनति
रे, कीजो भव निस्तार हो ॥ भ० ॥ बंदो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ पद पन्नरमुं ॥

॥ ठाकुर भलें बिराजो जी ॥ ए देशी ॥ आरतिनी देशीमां छे ॥ सा
हेब भलें बिराजो जी,चोवीशे महाराज,मुक्तिमें भलें बिराजो जी ॥
ए टेक ॥ रिषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपास॥
चंदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर,शीतल द्यो शिववास ॥सा०॥१॥

श्रीश्रेयांस वासुपूज्य समरो, विमल विमल मतिवंत ॥ अनंत नाथ प्रभु धर्म जिनेश्वर, शांति करो श्रीशांति ॥ सा० ॥ २ ॥ कुंथुनाथ प्रभु करुणासागर, अरहनाथ जगदीश ॥ मल्लिनाथ श्रीमुनिसुव्रत जी, नित्य नमावुं शीश ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकवीशमा नमिनाथ निरुपम, रिष्टनेमि जगधार ॥ तोरणसें पाछा फिरया प्रभु, शिवरमणी भरतार ॥ सा० ॥ ४ ॥ पारस पारस सारिखा प्रभु, नावारसका नाथ ॥ वर्धमान सासणका स्वामी, प्रणमुं जोडी हाथ ॥सा०॥५॥ तुम बिन पायो दुःख अनंता,जनम मरण जंजाल ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, तारो दीनदयाल ॥सा०॥६॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ भूंभी रे भूख अभागणी ॥ ए देशी ॥ प्रभु समरो नित्य भावशुं,रिषभ अजित सुखकार ॥ लाल रे ॥ संभव अभिनंदन भला, नाम लिया निस्तार ॥लाल रे॥प्र०॥१॥ सुमति पदम सुपास जी, चंदा प्रभु चंद जेम ॥ला०॥ भवदुःख ताप बुझावणा,भविजनने करे खेम ॥ ला० ॥२॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जी,वासुपूज्य शिवकंत ॥ ला०॥ विमल अनंत धर्म धारणा,शांतिकारक श्रीशांति ॥लाल रे ॥ प्र० ॥३॥ कुंथु अर मल्ली नमुं, मुनिसुव्रत सुखदाय ॥ ला० ॥ एकविशमा नमिनाथ जी,भक्तवत्सल जिनराय ॥ लाल रे ॥प्र०॥४॥ रिष्टनेमि जिनवर जयो, पशुवांकी सुणी पुकार ॥ला०॥ तोरणसूं पाछा फिरया, शिववधूना भरतार ॥ ला०॥ प्र०॥५॥ पारस पारस सारिखा, संभलाया नवकार ॥ला०॥ बंचाया नाग नागिणी, दियो सुर पद अवतार ॥ला० ॥ प्र० ॥६॥ वर्धमान शासन धणी, दीनानाथ दयाल ॥ला०॥ केवलकमला लेइने,लीनां सुख विशाल ॥ला० ॥ प्र० ॥७॥ ए चोविश जगदीश जी, परमगुरु जगनाथ ॥ ला० ॥ तिलोकरिख कहे तारजो, वीनवुं जोडी हाथ ॥ ला० ॥ प्र० ॥८॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ देशी ठुमरीनी छे ॥ समर समर जिननाथ समर ले, नविज न जनम सुधारक हे वारि ॥न०॥स०॥१॥ रिषन्न अजित संजव अ निनंदन, कर्मरिपुके विदारक हे वारी ॥क०॥स०॥२॥ सुमति पदम सुपास चंदाप्रन्नु, नवडुःख तापनिवारक हे वारी ॥ न०॥स०॥३॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छकायके जीवउगारक हे वारी ॥ छ०॥स०॥४॥ विमल अनंत धर्म शांतिनाथजी, सुख संपति हित कारक हे वारी ॥ सु० ॥ स० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, धर्मके मार्ग उच्चारक हे वारी ॥ ध० ॥ स०॥६॥ नमी नेमी पारस महावीरजी, दृढ क्षमा प्रन्नु धारक हे वारी ॥ दृ०॥ स०॥ ७ ॥ केवल लेई प्रन्नु मुक्ति विराज्या, अजर अमर अविकारक हे वारी ॥ अ० ॥ स० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारक, तुम विण नही को नवारक हे वारी ॥ तु० ॥ स० ॥ए॥ इति ॥ १७ ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ देशी फागनी छे ॥ प्रणमो नित नित चोविश जिन सुख दाता ॥ प्र० ॥ रिषन्न अजित संजव अनिनंदन, तोड दिया मोह नीका तांता ॥प्र०॥१॥ सुमति पदम सुपासचंदा प्रन्नु, बिघन टले ज्यांरा गुण गाता ॥ प्र०॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छोड दिया हे सब कुटुंबीका नाता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म शांतिनाथजी, मरकी मेट दिनी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, जनम मरणका मिटाया खाता ॥प्र०॥ ॥५॥ नमी नेमी पारस माहावीर जी, शासन नायक जग त्राता ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोविश जगदीश दयाला, शिवपुर सुखमें सदाई माता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो मोय वेगसुं, अचल नक्ति दिजो एही चाता ॥ प्र० ॥ ८ ॥ उगणिशें उगणचालिश पोष शुध्द चवदश, दियावडीमें गुण किया नलसाता ॥प्र०॥ए॥इति॥१८॥

॥ पद उंगणीशमुं ॥

॥ देशी प्रभातीमें छे ॥ समर ले श्रीआदिनाथ, अजितनाथ भारी ॥ संभवनाथ जगत तात, चरण बलिहारी ॥स०॥१॥ उठि प्रभात समर नाथ, वंदणा नित म्हारी ॥ बोधबीज आथ साथ, सेवा दीजो थारी ॥ स० ॥ २ ॥ अभिनंदन दुःखनिकंदन, सुमति सुमति धारी ॥ पद्म सुपास चंद्रप्रभ, आशा पूरो सारी ॥ स० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस नाथ, वासुपूज्य जुहारी ॥ विमल अनंत धर्म शांति, मेटो सब बिमारी ॥ उ० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत, कर्म कियां छारी ॥ मुनिसुव्रत विशमा प्रभु, करुणाके भंडारी ॥ उ० ॥ ५ ॥ एकविशमा नमिनाथ वंदूं, सदा सुखकारी ॥ रिष्टनेमी दया काज, तजी राजुल नारी ॥ उ० ॥ ६ ॥ बचाया नागनागिणी प्रभु, परमेष्ठी उच्चारी ॥ परचापूरण पारस नाथ, पर उपगारी ॥ उ० ॥ ७ ॥ महावीर धीर धार, कर्मकूं बिडारी ॥ केवल ज्ञानभान भया, थाप्यां तीर्थ चारी ॥ उ० ॥ ८ ॥ तारि भविजीव गया,मुक्तिके मझारी ॥ तिलोकरिख वीनवे प्रभु,बिनती ल्यो धारी ॥ उ० ॥ ९ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत साहेबा ॥ अथवा अंजणाना रासना कडवामां॥ प्रणमुं जिनेश्वर जगपति,परमदयाल करुणाना भंडार तो॥ जुगला रे धर्म निवारीया, रिषभ जिनंद नृप नाभिकुमार तो ॥प्र०॥१॥ अजित कंदर्प दल जिंतिया,संभवनाथ गुणसंभव जाण तो॥ अभिनंदण वंदण करुं भावशुं, सुमति पदम प्रभु त्रिजगभाण तो ॥ प्र० ॥ २॥ श्रीसुपारस जस घणो,चंदा प्रभुजीने सुविधि जिनंद तो ॥ शीतल श्रेयांस गुणधारणा, वासुपूज्य जगगुरु टाल्या भवफंद तो ॥ प्र०॥३॥ विमल विमल मति वंदियें,अनंत अनंत गुण सुखनी राश तो ॥ धर्म श्री शांति कुंथु अर, मल्ली जिनंद कियो शिववास तो॥

प्र०॥४॥ श्रीमुनिसुव्रत नमी प्रभु, रिष्टनेमी दयासिंधु दातार तो ॥ पशुकी पुकार सुणी साहिबा, तोरणसुं फिर गया मोक्ष मझार तो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पारस पारस सारिखा,जगतवारस प्रभु परम दयाल तो ॥ श्रीवर्धमान शासन धनी, भक्ततारक प्रभु जग प्रतिपाल तो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ अधम उद्धारण बिरुद आपको, जाणिने शरण लियो जगदीश तो ॥ जिम तिम तारो प्रभु मुक भणी,तिलोकरिख वीनवे पूरो जगीश तो ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥ २० ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ गांफल मत रहे रे, मेरी जान ॥ गां० ॥ ए देशी ॥ जपो जिनवर रे मेरि जान, जपो जिनवर रे ॥ जिनवर जप जगतमें सुखदाता, फूठा हे सब जगका नाता ॥ ज० ॥ रिषभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदन जग जसधारी, सुमतिनाथ सुमति दातारी ॥ पद्मप्रभु सद्म अचल पाया, भया तीन भवन अचल राया ॥ ज० ॥ १ ॥ सुपास आश सब पूरो, चंदा प्रभु संकट चूरो, सुविधि शीतल मोह कियो दूरो ॥ इग्यारमा श्रेयांसनाथ सामी,वासुपूज्य वंदूं में शिर नामी ॥ ज०॥ २ ॥ श्रीविमल विमल मतिवंता, श्रीअनंत धर्म शिवकंता, शांति करो शांति महंता ॥ कुंथु अर कियो कर्म घाणो, केवल लेइ पाया निर्वाणो ॥ ज०॥ ३ ॥ मल्लिनाथ अनंत बलिराया, छहूं नृपतिकूं प्रभु समझाया, मुनिसुव्रत व्रत सुहाया ॥ एकविशमा नमिनाथ महोटा,नमतां मिटे जन्म मरण तोटा ॥ ज० ॥ ४ ॥ रिष्टनेमी शिवादेवी नंदा, जादव कुलदीपक चंदा, चढया व्याहन भातके छंदा ॥ पशुकी पुकार अवधारी,त्यागी प्रभु राजुलसी नारी ॥ ज०॥ ५ ॥ पारस करुणाके भंडारी, नागनागिणी जलत उगारी,परमेष्ठीको सरण उच्चारी ॥ कमठमद भंजण निःशंका, दिया प्रभु मुक्तिमांहे डंका ॥ ज० ॥ ६ ॥ वर्द्धमान शासनपति सच्चा, जग जान लिया प्रभु कच्चा,संजम करणी मांही रच्चा ॥

केवल लेइ थाप्यां तीरथ चारी, मुलकमें कीर्त्ति अपरम पारी ॥ ज० ॥७॥ प्रभु असरण सरण कहाया, जगवत्सल नाम धराया, तिलोकरिख सरण तुम आया ॥ नाथजी में भवभव तुम बंदा, मेटो मेरा जनम मरण फंदा ॥ ज०॥ ८ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ कुंथु जिनराज तुं एसो ॥ रेखताकी देशीमें ॥ समर जिनना मकूं प्यारा, मिटे सब कर्मका भारा ॥ ध्रु० ॥ रिषभ जिननाम सुख दाता, दरिसण षटमांही विख्याता ॥ स० ॥ १ ॥ अजित जिनरा ज गुणवंता, संभव जगदीश शिवकंता ॥ जे जे जे अभिनंदन सा मी, सुमति पद्मप्रभजी अंतरजामी ॥ २ ॥ सुपारस नाथ जस धारी, जिनोंके चरण बलिहारी ॥ स० ॥ चंदा प्रभु वंदूं चंद्रबरणा, भवो भव चरणका सरणा ॥ ३ ॥ शीतल श्रेयांस जगदीशा, नमूं नित्य वासुपूज्य ईशा ॥ स० ॥ विमलमति विमल प्रभु कीजो, अ नंत सुख अनंत नाथ दीजो ॥ ४ ॥ धरम धन धरमनाथ धरता, शांतिप्रभु शांतिके करता ॥ स०॥ कुंथु अर मल्लि मल घाया, मेरे प्रभु मुनिसुव्रत भाया ॥ स० ॥ ५ ॥ एकविशमा नमिनाथ ध्याउं, चरण पें शीश नमाउं ॥ बावीशमा रिष्टनेमी सांई, तारिफमा सुर मुलक गाई ॥ स० ॥ ६ ॥ त्रेवीशमा पारस नाथ सच्चा, जिनोंका प्रगट हे परचा ॥ सासणपति माहावीर बंका, बजे हे आज उनका डंका ॥ स० ॥ ७ ॥ करी प्रभु जबरजस्त करणी, लीनी हे अचल शिवघरणी ॥ प्रभुजी मेरी अर्ज मान लीजो, तिलोकरिख पदवी मोय दीजो ॥ ८ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ कडखाकीदेशी ॥ वंदूं चोवीश, जिनंद आनंदसुं, तारो कृ पाल, करुणा भंडारी ॥ तुम सम और नहिं, गैर त्रिहुं भुवनमें, जाणीने सरण, लीयो विचारी ॥ वं० ॥१॥ रिषभ अजित, संभव

अभिनंदन, सुमतिपदम, सुपार्श्वदेवा ॥ चंद्रप्रभचंद्र, वर्णचंदा प्र भु, भवभव दिजो प्रभु, अचल सेवा ॥ बं० ॥ २ ॥ प्रणमुं पुष्प दंत, शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य पूजनिक, जगजन सुहा या ॥ विमल अनंत धर्म, शांतिशांति करो,भक्तनायकजग, गुरु क हाया ॥ बं० ॥ ३ ॥ श्रीकुंथु अर मल्लि, श्री मुनिसुव्रत, सुकृत करणी करी, सरल जावें ॥ नमी नेमी श्री, पार्श्वमहावीरजी, नाम लियां सकल, बिघन जावे ॥ बं० ॥ ४ ॥ ईशका ईश, जग दीश चोविस प्रभु,कर्मटाटी काटी,सविमुक्ति पाया ॥ तिलोकरिखबीनती,द रिसण दीजीयें,अचलभक्ति अरु,चरण गाया ॥बं०॥५॥ इति ॥२३॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ प्रभु थारा गुण अनंत अपारा ॥ ए देशी ॥ प्रभुजी थारा च रणको आधार,प्रभुजी थारा धर्मको आ०॥ध्रु०॥ रिषभ अजित सं भव अभिनंदन, सुमति सुमतिदातार ॥ प्र० ॥ १ ॥ पद्म सुपास चंदा प्रभु समरो, सुचंद्रबदन सुखकार ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शी तल श्रेयांस वासुपूज्य, जगमें कीर्त्ति अपार ॥प्र०॥३॥ विमल अ नंत धर्म शांतीश्वर, शांतिकरण संसार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रतजी, सुव्रतपद दातार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेमि पा रस महावीरजी, सासणपति शिरदार ॥ प्र० ॥६॥ मुझ सम दी न नहीं कोइ जगमें, तुम सम नहिं को दातार ॥ प्र० ॥ ७ ॥ अधम उद्धारण बिरुद बिचारो, करुणानिधि किरतार ॥ प्र०॥८॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, कीजो भवजल पार ॥ प्र० ॥ ए ॥

॥ पद पच्चीशमुं ॥

॥ आज भलो दिन उगो जी ॥ भटीयाणीनी देशी ॥ प्रात उठ नित भावेंजी, प्रणमुं चोविश जिनंदजी, प्रभु करजो भवजल पार ॥ ध्रु० ॥ रिषभ अजितसुखदाई हो, संभवजगमांइ दीपता प्र भु, अभिनंदन हितकार ॥ सुमति सुमतिके दातार हो, जगत्राता

पद्म सुपासजी कांइ, बंछित पूरणहार ॥ प्रा० ॥ १ ॥ चंदा प्रभु चंदबरणा हो, सुखकरणा सुविधि जिनेश्वरू, प्रभु शीतल शिवदा तार ॥ श्रेयांस वासुपूज्य ध्याउं हो, मनाउं विमल जिनंद जी प्रभु, अनंत अनंत गुणधार ॥प्र०॥२॥ धर्मधर्म धननायक हो, दायक शांति दया करुं प्रभु, शांति करी संसार ॥ कुंथु अरमल्ली बंदूं हो, निकंदूं पातक माहेरां प्रभु, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥प्र०॥३॥ नमि नेमी जिनराया हो, मनभाया पारसनाथजी, प्रभु परचा पूरणहार ॥ महावीर जग माह्या हो, तजि माया ममता मोहनी, प्रभु कर्म नमे किया छार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ केवलज्ञानज पाया हो, जब आया इंद्र उमावसुं, कियो मोछव हर्ष अपार ॥ हितउपदेश सुणयाजी, जगराया पर उपगारीया, प्रभु थाप्यां तीरथ चार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ मुगतिनगर सीधाया जी कांई, पाया शिव सुखसासतां, प्रभु अजर अमर अविकार ॥ तिलोकरिख इम बोले हो, प्रभु खोले आयो आपके, मुझ द्यो अविचल सुखसार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥२५॥

॥ पद छवीशमुं ॥

॥ सद्गुरुजी कहे जगसपनां ए ॥ ए देशी ॥ जपो जपो भविक जिन राया, कर्म काटके अमर पदपाया रे ॥ज०॥ १ ॥ रिषभ अजित संभव मन भाया, अंभिनंदन बंदूं मनकाया रे ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति पद्म सुपास सुखदाया, चंदा प्रभुचंद बरन सोहाया रे ॥ ज० ॥३॥ सुविधि शीतल श्रेयांस अति माह्या, वासुपूज्य कर्मरिपु घाया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्मधन पाया, शांतिनाथ भविक समुझाया रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मलहगाया, मुनिसुव्रत व्रतदृढ गाया रे ॥ ज०॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस सरसाया, महावीर त्रिशलादेवी जाया रे॥ ज०॥७॥ तिलोकरिख प्रभुसरणे चल आया, जिम तिम करि तार महाराया रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ पद सत्त्यावीशमुं ॥

॥ कपूर होवे अतिउजलो जी ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं आदिजिनेश्व रू जी, नयनंजण नगवंत ॥ अजितनाथ जिंत्या अरि जी, संनव गुण अनंत ॥ जिनेश्वर आपतणो छे आधार ॥ ध्रु०॥१॥ अनिनं दन आनंदकरो जी, सुमति सुमतिदातार ॥ पदमप्रनु करुणा निधि जी, सुपारस सुखकार ॥ जि० ॥ २ ॥ चंदप्रन चंदलबना जी, चंदरवरण शरीर ॥ पुष्पदंत शीतल नमूं जी, श्रेयांस श्रेयांस गुणधीर ॥ जि० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य विमल नमुं जी, अनंत अनंत सुखलीन ॥ धर्मनाथ शांतीश्वरू जी, मरीनो रोग शांतिकीन ॥ जि० ॥४॥ कुंथु अरजिनवर जयो जी, मल्ली मलमद मार ॥ केव लकमला पाईया जी, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥ जि० ॥५॥ नमी नेमी पारस नमुं जी,चोविशमा वर्धमान ॥ ए चोविशजिन जगगुरु जी, पाम्या अविचल थान ॥ जि० ॥६॥ तिलोकरिख कर जोडिने जी, वंदे वारम वार ॥ अरज एतिक अवधारजो जी, कीजो नवजल पार ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ पद अठ्यावीशमुं ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत व्रत साहिब साचो ॥ ए देशी ॥ बंदूं चोविश जगदीश दयाला, गुणरतनाकर माला रे ॥ जग उद्धारण जगरब पाला, काव्या कर्मका जाला रे ॥ वं० ॥ १ ॥ रिषन अजित सं नव सुखकारी, अनिनंदन जसधारी रे ॥ सुमति पदम प्रनुजी उ पगारी, चरणसरण बलिहारी रे ॥ वं०॥ २ ॥ सुपारस चंदा प्रनु सामी, सुविधिशीतल गुणधामी रे ॥ श्रीश्रेयांस नमूं शिवगामी, जय जय अंतरजामी रे ॥वं०॥३॥ वासुपूज्य श्रीविमल महंता, अनंत धरम शिवकंता रे ॥ शांतिजिनेश्वर शांति करंता, किना करम रिपुअंता रे ॥ वं० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मल घाया, मु निसुव्रत व्रत माया रे ॥ नमी नेमी पारस नाया, नक्तवत्सल पद

पाया रे ॥ बं० ॥ ५ ॥ श्रीमहावीर सासणपति साचा, नव दुःख नंजन जाचा रे ॥ रोम रोममें मन तन राचा, खोटा जगका जाचा रे ॥ बं० ॥६॥ तिलोकरिख कहे अहो जगराया, दुर्लन दुर्लन पायारे ॥ कुदेव त्यागी तुमसरणे आया, तार तार माहारायारे ॥ बं० ॥ ७ ॥ इति ॥ २८ ॥

अथ देवगुणस्तवन प्रारंनः ॥

॥ देशी बाबा आदमकी॥ एसा जिन एसा जिन एसा जिन हे, नजि नजि वंडुं सदा निश दिन हे ॥ ए० ॥१ ॥ एक सहस्र अष्ट लब्बन हे, तनकांति फलक ज्यों रतन हे ॥ ए० ॥२॥ जाके पर थम संगण संघयण हे, नत्कृष्ट रूप सुबरन हे ॥ए०॥३॥ जाण्यो सब अथिर तन धन हे, कियो संजम लेवनको मन हे ॥ ए० ॥ ४ ॥ एक कोड अठ लख दिन दीन हे, देई दान माहा तप कीन हे ॥ ए० ॥ ५ ॥ शुकल ध्यानविषे लय लीन हे, घनघातिक कर्म कीने छिन हे ॥ ए० ॥६॥ केवल ज्ञान प्रगव्यो ततखिन हे, सब द्रव्य जाणे निन निन्न हे ॥ ए० ॥ ७॥ चोतिस अतिशय पेंतिस वचन हे, नपदेश देते नविजन हे ॥ ए० ॥ ८ ॥ नारी पुत्र जण त कोटीन हे, स्वामी सरिखो न उर नवीन हे ॥ ए० ॥ ए ॥ कर्म बंधनकी ज्याकूं घीन हे, परमपात्र परम परवीन हे ॥ ए० ॥१०॥ तीर्थ थापे कापे कर्मवन हे, प्रनु पहुंचे अचल नवन हे ॥ ए० ॥ ॥११॥ अजर अमर अविनाशी पद लीन हे, जनम मरण किया पर छीन हे ॥ए०॥१२॥ अयवंता रिखजी महाराज मया कीन हे, एसा देव लिया मेनें चिन हे ॥ए०॥१३॥ तिलोक रिख कहे प्रनु धन धन हे, ऐसा देव वसे मेरे मेरे मन हे ॥ए०॥१४॥इति॥

अथ गुरुगुण स्तवन प्रारंनः ॥

॥ देशी एहीज ॥ एसा गुरु एसा गुरु एसा गुरु हे, रहे कनक का

मिनीसें दूर हे ॥ ए० ॥१॥ ज्ञान ध्यानमें रहे जरपूर हे, वीतराग शरण सदा उर हे ॥ ए० ॥ २ ॥ आठुं कर्मकी फोज करूर हे, सो तप जपसें करे चक चूर हे ॥ ए० ॥ ३ ॥ नहिं क्रोध कपट मग रूर हे, विषय मदन किया चक चूर हे ॥ ए० ॥ ४ ॥ त्यागे पाप अगारा जे कूर हे, बोले निरवद्य वचन मधूर हे ॥ ए० ॥ ५ ॥ नर पशु उर सुर असुर हे, सहे परिसह सकल सचा शूर हे ॥ ए० ॥ ६ ॥ शील समकित धन जख्या जूर हे, दूर होत कर्मरूपी धूर हे ॥ ए० ॥ ७ ॥ सऊाय रूप वजे रणतूर हे, कीर्त्तिरूप नोब त रही घूर हे ॥ ए० ॥ ८ ॥ नही माने विकथा मचकूर हे, जे जिनागमकुं करे मंजूर हे ॥ ए० ॥ए॥ संसार माने सो क्षणजंगूर हे, जाणे धर्म थिर सदा मसहूर हे ॥ ए० ॥ १० ॥ मिथ्यामत माने फितुर हे, नय तत्त्व पेठाने चतुर हे ॥ ए० ॥ ११ ॥ जवि जन मन जावे जरूर हे, नहिं वंदे सोई बे सहूर हे ॥ ए० ॥१२॥ अयवंतारिखजी महाराज हजूर हे, मेनें जाण्यो धर्मको अंकूर हे ॥ ए० ॥ १३ ॥ तिलोकरिख कहे जे सतगुरु हे, सदा वंदणा उगंतां सूर हे ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

अथ धर्मवर्णन स्तवन प्रारंजः ॥

॥ देशी एहीज ॥ ऐसा धर्म एसा धर्म ऐसा धर्म हे, जिणसें मिटत सकल जयजर्म हे ॥ ए० ॥ १ ॥ सब जीव चाहे शाता प रम हे, नहिं दे परकुं परिश्रम हे ॥ ए० ॥ २ ॥ नहिं जाखे मृषा कोमरम हे, टाले चोरी पाले व्रत ब्रह्म हे ॥ ए० ॥ ३ ॥ टाले म मता ठल रहे नरम हे, नही राग द्वेष नहिं गरम हे ॥ ए० ॥४॥ कलहो कलंक चाडी सुबंधे कर्म हे, परिहरे सुगुणी राखे सरम हे ॥ ए० ॥ ५ ॥ श्रीजिन आग्याके मांही धर्म हे, कोइ बुध जनकुं महेरम हे ॥ ए० ॥६॥ पाले धर्म होवे अकरम हे, केवल लेई जया

नव चरम हे ॥ ए० ॥७॥ तिलोकरिख कहे सिद्ध परिब्रह्म हे, गुरु महेरसुं हुवो महेरम हे ॥ ए० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ जिनगुणविस्मयस्तवन प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ अहो प्रभु तुम गुण अचरिज आवे, कहेता सुरगुरु पार न पावे ॥ अ० ॥१॥ तुम सहु जाण कहे जग मांइ ॥ जीवकी आदि सो कबु न बताई ॥ अ० ॥ २ ॥ जगत कहे देखे सब स्वामी, स्वपनुं नहि देखो शिवगामी ॥ अ० ॥ ३ ॥ वेदो नहिं सुख दुःख जग जाणे, सुख अनंत सिद्धांत वखाणे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तुम वीतराग दिशा सदा पावे, आराध्या विण कोइ मोक्ष न जावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ निगुणा पर नहि द्वेष तुमारो, आज्ञा नही माने तो भमत संसारो ॥ अ० ॥ ६ ॥ पच्चरकाण तो प्रभु एक न कांइ, आश्रव नहिं लागे तुम तांइ ॥ अ० ॥ ७ ॥ आउखा कर्मको बंधण नांइ, अनंत कालकी थिरथिति पाइ ॥ अ० ॥ ८ ॥ नाम करम खय करि शिववासो, नाम लीया सब विघन विनासो ॥ अ० ॥ ए ॥ गोत्र करम तुमने नहि देवा, गोत्र संभालि करे जन सेवा ॥ अ० ॥ १० ॥ अंतराय करि दुरि थां सांइ, नूंतन लाभ दिसे नहिं कांइ ॥ अ० ॥ ११ ॥ करुणासागर जगमें कहावो, करम रिपु सब दूर भगावो ॥ अ० ॥ १२ ॥ परिग्रह नहिं तुमने जग दाखे, जगनायक कहें आगम साखें ॥ अ० ॥ १३ ॥ कामिनी त्रिविध त्रिविध तुम त्यागी, शिवरमणी पति कहे जगरागी ॥ अ० ॥ १४ ॥ तिलोकरिख लियो शरण तुमारो, अधम उद्धारण बिरुद विचारो ॥अ०॥१५॥ मुज अवगुण प्रभु दूर निवारो, जेम तेम करि भव पार उतारो ॥ १६ ॥

॥ अथ उपदेश स्तवन पद पहेलुं प्रारंभः ॥

॥ समज समज गुणवंत सयाणां, कर ले सुकृत प्रभुका गुण

गाणां ॥ स० ॥ १ ॥ काल अनंत जम्यो चउ गतिमें, राच्यो नहिं तुं श्रीजिनमतमें ॥ स० ॥ २ ॥ गर्नवासमें बहुत दुःख पायो, न वमासा तुं उंधो लटकायो ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ जन्म जयो विसर्यो दुःख सारा, खावण पीवण प्रेम अपारा ॥ स० ॥ ४ ॥ बालपणुं हसि खेल गमायो, धर्म ध्यान कबु दाय न आयो ॥ स० ॥ ५ ॥ जोबन वयमांहि पाप कमायो, जोग विलासविषे ललचायो ॥ स० ॥ ६ ॥ निशिदिन हाय करे धन केरी, देश विदेश देवे घणि फेरी ॥ स० ॥ ७ ॥ जूलो कहे माया मेरी या मेरी, तेरे कहे कबु होत न तेरी ॥ स० ॥ ८ ॥ बाप दादा सबही गये बंधी, किसविध आश करे तुं घमंधी ॥ स० ॥ ए ॥ मुठि बांधके जन्म तुं पायो, हाथ पसारकें आगें सिधायो ॥ स० ॥ १० ॥ कर कर खोटा धंधा धन जोडे, धर्मकरणीसुं प्रीति क्युं तोडे ॥ स० ॥ ११ ॥ पिप्पलपान संध्याका रजासा, बादल गय सुपन धन आशा ॥ स० ॥ १२ ॥ देहसुं ममत करे तुं घणेरी, होवे घडीकमें राखकी ढेरी ॥ स० ॥ ॥ १३ ॥ पल पल आयु घटे नर तेरो, पाप कमायासुं नरकमें फेरो ॥ स० ॥ १४ ॥ देव निरंजन जक्ति करीजें, गुरु निर्ग्रंथके नित्य नमीजें ॥ स० ॥ १५ ॥ धर्म दयामें हे सुखदानी, ए तिन तत्त्व जो न्याय पीगणी ॥ स० ॥ १६ ॥ मिथ्या जर्म कर्म सब बंधो, ब काय जीव जणी मत दंधो ॥ स० ॥ १७ ॥ तिलोकरिख कहे सुणो नर नारी, इण जव जस आगें सुख जारी ॥ स० ॥ १८ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ गफलतमें मत रहे रे दिवाना, जीव चिडा जमराज सिचाना ॥ १ ॥ ग० ॥ रात दिवस करता नित धंधा, जाणके होय रह्या केसें अंधा ॥ २ ॥ ग० ॥ जेसें त्तित्तरकुं बाज ऊपटे, मुसकको ज्यों मांजार गटके ॥ ३ ॥ ग० ॥ कुरंगको सिंह ज्यों पकड विदारे, तेसेंही प्राणीकुं काल प्रहारे ॥ ४ ॥ ग० ॥

मात पिता तिरिया सुत सारा, मरण आया नहिं राखणहारा ॥ ५ ॥ ग० ॥ सात कोट भूतल धसि जावे, जहां पण जम आयकें गटकावे ॥ ६ ॥ ग० ॥ हरि हर इंद्र चंद्र नरराया,जमकी त्राससें सब गभराया ॥ ७ ॥ ग० ॥ जिण घर हय गय लक्ष चोराशी, वे पण हो गये मसाणके वासी ॥ ८ ॥ ग० ॥ छपन कोडिके नाथ कहाया, पाणी बिना वनमें मरण पाया ॥ ए ॥ ग० ॥ काहेकुं तुं करता अकडाइ, देख तुं दादा वडदादाके तांइ ॥ १० ॥ ग० ॥ केइ चल्या केइ चालणहारा, क्युं न हुशियार होवे तुं गमारा ॥ ११ ॥ ग० ॥ दिन दिन चलणो निकट जो आवे, काल अचानक झपट ले जावे ॥ १२ ॥ ग० ॥ धन दोलत उर माल खजाना,छेवट छोड अकेला सिधाणां ॥ १३ ॥ ग० ॥ धन कमायो सो पाछला खावे, कर्ममें कोय न पांति पडावे ॥ १४ ॥ ग० ॥ घेवर सो तो जमाइने खाया, केदखानामें मोदी डुःख पाया ॥ १५ ॥ ग० ॥ दो कोसाकें आंतरे जावे, तो पण खरची साथ ले सिधावे ॥ १६ ॥ ग० ॥ परभव तो निश्चें तुझ जाणो,क्युं नहिं लेवे तुं धर्मको नाणो ॥ १७ ॥ ग० ॥ सद्गुरु चोकीदार चेतावे, सुकृतसौदा तेरे संग आवे ॥ १८ ॥ ग० ॥ उगणीशें गुणचालिस मझारो, मगशिर शुदि अष्टमी चंद्रवारो ॥ १ए ॥ ग० ॥ शहेर सतारो दक्षिणमांई, तिलोकरिख कहे चेतजो भाई ॥ २० ॥ ग० ॥

॥ अथ उपदेशीफटको स्तवन प्रारंभः ॥

॥ चाल एहीज ॥ धिक तेरा जीवडा,न करता धरमकुं ॥ धिक तेरा तन मन, धिक हे जनमकुं ॥ धि० ॥ १ ॥ रत्नचिंतामणि जन्म जो नरको, खोय दियो जेसें भव तेने खरको ॥ धि० ॥ २ ॥ नीचकुं देखिकें शिश नमावे,संतकुं देखि अधिक अकडावें ॥ धि० ॥ ॥३॥ धर्मकथा कबु दाय न आवे,जो सुणे तो झुकझुक झोलां खावे

॥ धि० ॥४॥ इष्कका ख्याल राग अनुरागें, धक्का खाय तोहि धसें आगें ॥ धि० ॥ ५ ॥ नाटकमें उन्ना रहे रात सारी, मुनिदरिसण आलस अति नारी ॥ धि० ॥ ६ ॥ तप जप वातमें पट नट जावे, खाणेमें लोटी लेई ऊट जावें ॥ धि० ॥७ ॥ स्तवन सद्याय क हेतां शरमावे, लडतां तो कबु दाय न आवे ॥ धि० ॥ ८ ॥ दान देतां थरथर कर धूजे, हिंसा करणमें कर अति जूऊे ॥ धि० ॥ए॥ लोन कारण करे अति नरमाई, साहाधर्मीसुं करे गुमराइ ॥ धि० ॥ १० ॥ पापकरणीमें मन उल्लसावे, धर्मक्रियामें न चित्त लगावे ॥ धि० ॥ ११ ॥ क्रोध मान तृष्णा बल नारी, दान शीयल तप नाव विसारी ॥ धि० ॥ १२ ॥ पाप करणमें जोर जणावे, धर्म उद्यममांहि कायर थावे ॥ धि० ॥ १३ ॥ परख नहिं देव गुरु धर्म केरी, विणजमें दृष्टि पहोंचावे घणेरी ॥ धि० ॥ १४ ॥ जीवदयामें खरचतां रोवे, जस शोन्नामें निर्थक धन खोवे ॥ धि० ॥ १५ ॥ निंदा विकथामें निशिदिन रातो, गुणिजनका गुण सुणी अकलातो ॥ धि० ॥ १६ ॥ कर्मबंधनकी शिख सुणि राजी, धर्मशिक्षा सुणि अधिक ना राजी ॥ धि०॥ १७ ॥ पापीकुं आदर देकें बिगावे, धर्मीकुं देख अधिक बुररावे ॥ धि० ॥ १८ ॥ पाप थी परचो दयाथकी दूरो, धर्ममें पाबो कर्ममांही शूरो ॥ धि० ॥ ॥ १ए ॥ परदुःख देखीने अति हरखावे, निज संपत्तसें अधिक पोमावे ॥ धि० ॥२० ॥ बंबुल बोय आमफल चहावे, विष नक्षण करि जीवणो चहावे ॥ धि० ॥ २१ ॥ पच पच खोय दीयो नव सारो, तेलीका बेल ज्युं हार्यो जमारो ॥ धि० ॥ २२ ॥ निशदिन हाय हाय धन धनकी, लाज नहीं परनव गुरुजनकी ॥ धि० ॥ २३ ॥ धोबीका श्वान ज्युं कहे धन मेरो, सोचे न बेवट नरकमें फेरो ॥ धि० ॥ २४ ॥ इहां अपजस आगें जस नारी, धर्म विना नव नवमें खुवारी ॥ धि० ॥ २५ ॥ जैसा जाया तैसा सि

धाया, धिक जननी जिणें गोद खिलाया ॥ धि० ॥ २६ ॥ उग णिशें अडतिस माहावदि जाणो,चोथ तिथि रवि वार वखाणो ॥ धि० ॥२७॥ तिलोकरिख कहे आवलकोटी मांइ, इम सुणी करजो थें धर्म कमाई ॥ धि० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ उपदेशमें सुलट ॥ देशी एहीज ॥ धन तेरा जीवडा, नित करता धरमकुं ॥ धन तेरा तन मन, धन हे जनमकुं ॥ १ ॥ रत्न चिंतामणि नरजव पाई, धर्मचिंतामणि ले उलसाई ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी नरकुं नहिं सरसावे, धर्मीकुं देख अधिक हरखावें ॥ ३ ॥ धर्मकथा सुणवा चित्त चहावे, सुण कर सार ग्रही उलसावे ॥४॥ तप जप किरियामें रहे अगवानी, पुजल पर कबु ममता न आणी ॥ ५ ॥ ख्याल नाटकमें कबहूं न जावे, मुनि दरिसण आलस नहिं आवे ॥ ६ ॥ प्रजुगुण गावता अधिक गुंजावे,क्रोध कलेश थकी शरमावे ॥ ७ ॥ दान देवे नित उलट परिणामें, थर थर धूजें सो हिंसाके कामें ॥ ७ ॥ पापका काममें डर अति आणे, धर्मको काम सदा जलो जाणे ॥ ए ॥ क्रोध मान तृष्णा बल त्यागे, दान शीयल तप जावमें आगें ॥ १० ॥ पापका काम में निर्बल अंगें, धर्मका काममें शूरपणुं रंगें ॥ ११ ॥ सत्यपक्षकी प्रतीतजो आणे, कूडको पक्ष रति नहीं ताणे ॥ १२ ॥ जीव दया धन खरचण जाणे, लाज अनंत हिये इम गाणे ॥ १३ ॥ न करे निंदा विकथा सुणे नांई, गुणिजननां गुण सुणि उल्लसाई ॥ १४ ॥ कर्मबंधणकी शीख न धारे, धर्मशिक्षा सुखदायी विचारे ॥ १५ ॥ पापीसुं प्रीति न राखे कदाई, धर्मीकुं आदर दे अधिकाई ॥ १६ ॥ धरमसुं परचो पापथी दूरो, कर्ममें पाछो सो तप जप शूरो ॥१७॥ पर दुःख देखि अणुकंपा घणेरी,मगरूरी करे नहीं निज सुख केरी ॥१०॥ आमके बोय आम फल चहावे,

या तब होत निराशा ॥ ७ ॥ ए० ॥ मात पिता सुत बंधव नारी, रुदन करे मतलब परिवारी ॥ ८ ॥ ए० ॥ गहेणां आभूषण लेवे उतारी, मतलबकी जगमें सब यारी ॥ ए ॥ ए० ॥ आठ हाथ को कपडो मगाई, ठेठाय सिढीमें दे पधराई ॥ १० ॥ ए० ॥ चार जणा लेवे खांधे उगाई, कोइ रोवे कोई हरखाई ॥ ११ ॥ ए० ॥ पलंग उपर जे सोते सदाई, उनकुं लकड चुण देवे जलाई ॥ १२ ॥ ए० ॥ हाड लकडकें सज्यो घास पूलो, होवे भस्म तुं कहिपें भूलो ॥ १३ ॥ ए० ॥ स्नान करी सब घर चल आवे, कोई कीसीके संग न जावे ॥ १४ ॥ ए० ॥ दो दिन याद करे उस नरकें, बरस ठ मासमें जाय बिसरकें ॥ १५ ॥ ए० ॥ पाती करकें सजन धन खावें, पाप कमाया तेरे संग आवें ॥ १६ ॥ ए० ॥ ए जगका सब जूठा हे नाता, क्युं तुं कमावत कर्मका खाता ॥ १७ ॥ ए० ॥ जो इस जगमें देहज धारी, ठेवट जल बल होवेगा ठारी ॥ १८ ॥ ए० ॥ उगणिशें गुणचालिश मागशिर मासो, तिथि इग्यारस पक्ष उजासो ॥ १ए ॥ ए० ॥ तिलोकरिख कहे सतारा मझारो, करी उपदेशी भविक हित कारो ॥ २० ॥ ए० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ धर्म कर्मका मर्म न जाणा, जिनका जन्म जैसा पशुके समाना ॥ १ ॥ सुकृत दुःकृत भेद न जाना, जीव अजीव कबु न पिछाना ॥ २ ॥ पुण्यपापकी परख न कांई, आश्रव संवर समज न आई ॥ ३ ॥ निर्जरा बंध मोक्ष पद जाणी, खबर नहिं कबु श्रीजिनवाणी ॥ ४ ॥ कोन हे साधु असाधु है कैसा, इह भव परभव नहिं को अंदेसा ॥५॥ निशि दिन पाप करे निःशंका, साधुकुं देख होवे वडा वंका ॥ ६ ॥ धर्मकी शिक्षा जो

दरसावे, हडक्या श्वान ज्युं काटण धावे ॥७॥ आप बडाई निंदा करे परकी, देखे नही करणी निजघरकी ॥ ८ ॥ हाय हाय करी जन्म गमावे, करकें कुकर्म नहिं पस्तावे ॥ ए ॥ ममत करे तन स ज्ञन धनकी, खबर नहिं कबु अपने वतनकी ॥१०॥ शिंग पुबकी रहि हिणताई, माढी मूबकी नइ अधिकाई ॥ ११ ॥ नरभव पा यकें दान न दीनो, तप जपको कबु काम न कीनो ॥१२॥ संतकुं देखिकें शिश न नमाया, जिह्नसुं प्रभुका गुण नहिं गाया ॥ १३ ॥ कानसुं सूत्रकी सुणि नहिं वाणी, नेत्रसुं मुनिदरिसण नहिं जा णी ॥ १४ ॥ धरणीके भारें मारी अधिकाई, फिट फिट जननीकी कूख लजाई ॥ १५ ॥ ऐसा प्राणी चउगतिमांहे भटकें, वडवागु ल जंधे मुख लटके ॥ १६ ॥ पावे सो दुःख अनंत अपारा, बांध लिया संग पापका भारा ॥ १७ ॥ तिलोकरिखजी सताराके मांही, धर्म कियां होवे सुख सदाई ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्विंशतिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ बाजुबंध बिसर गई कंगनां ॥ ए देशी ॥ नमो नमो रे भवि क प्रभुचरणा, मिट जावें सकल दुःख मरणां रे॥ न० ॥ १ ॥ आ दि अजित संभव हित करणां, अभिनंदन सुमति शुद्ध धरणां रे ॥ न० ॥ २ ॥ श्रीपद्म सुपासजी उच्चरणां, चंद्रप्रभजी लंबन चं द्रवरणा रे ॥ न० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल अतीव दुःख हरणा, श्रे यांस वासुपूज्य शरणा रे ॥न०॥४॥ होय विमल जपत भय टरणां, अनंत धरम मेटे भवफिरणां रे ॥ न० ॥ ५ ॥ शांति कुंथु अर किया न्याय निरणा, मल्ली मुनिसुव्रतजी स्मरणां रे ॥न०॥६॥ न मि नेमि पारस करि अहि करुणा, माहावीरजी चरणे शिश धर णां रे ॥ न० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जो दुःख हरणां, तो सम रो प्रभु तारणतरणा रे ॥ न० ॥ ८ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ देवआश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ नमो नमो रें देव अरिहंता, प्रभु शिवरमणीके कंता रे ॥ न० ॥ १ ॥ घनघातिक करम सब हंता, सब जाणत केवल वंता रे ॥ न० ॥ २ ॥ जे अतिशयचोतिस सोहंता, प्रभु तीन भ वनमें महंता रे ॥ न० ॥ ३ ॥ एक योजन वाणी वागरंता, चार तीरथ थापना करंता रे ॥ न० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख मन तनसें नमंता, सेवा दीजो सदाई भगवंता रें ॥ न० ॥ ५ ॥

अथ गुरु आश्रयी पद प्रारंभः॥

॥ सतगुरुजी जपो रे मेरे भैया, जे भवजल पार करैया रे ॥ स० ॥ १ ॥ सतगुरुजी हे नाव खेवैया, परने तारत आप तरै या रे ॥ स० ॥ २॥ गुण सत्याविशके धरैया,सत्यमधुर वाणीके उ चरैया रे ॥ स० ॥ ३ ॥ विषय कषायकी अगन बुझैया, वे तो ज्ञा नको जल वरसैया रें ॥ स० ॥ ४ ॥ गुरु जोगें अनंत शिव लैया, सब सूत्रमें न्याव चेतैया रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे गहि बैयां, सो तो अविचल वास वसैया रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ धर्मरूपी बणाय लो नैया,मानो मानो रे शीख मेरी भैया रे ॥ ध० ॥१॥ संतोषका पाटिया जमैया,क्षमाकी मेख लगैया रे ॥ ध०॥ २ ॥ पंच आश्रव द्वार बुरैयां, करो चातुवैराग सोहैया रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ सतगुरुजी हे चतुर खेलैया,पर तारे उर आप तरैया रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ भवोदधिसूं तरणकी जो चैयां, तिलोकरिख कहे धर्म गहैया रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ ज्ञान आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ करो ज्ञान दीपक अजवालो, जिणसुं मिटत अज्ञानको का लो रे ॥ क० ॥ १ ॥ पेहेली उंघ आलसकुं टालो, गेडो विकथा

रसको प्यालो रे ॥ क० ॥ २ ॥ करो सुगुरु सेव विशालो, सूत्रसंधि सुं खोल देवे तालो रे ॥ क०॥ ३ ॥ कुमति कलेश कषायकुं घें बालो, जाणपणा बिना किरिया वेथालो रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोक रिख कहे ज्ञान गुणिन्नालो, वेगी लहेगा मुक्तिको मालो रे ॥क०॥

॥ अथ सम्यक्त आश्रयी पद प्रारंन्नः ॥

॥ शुद्ध सम्यक्त व्रत रस राचो,जैन येन विना केन सब काचो रे ॥ शु० ॥१॥ सच्चा देव गुरु धर्म परख जाचो,खोटो पक्ष सो म त खांचो रे ॥ शु०॥२॥ नित्यप्रतें जैन शास्त्रकुं बांचो, वली सुणके लगावो तन आचो रे ॥शु०॥३॥ इणसुं सिवीजें कालको माचो, बूटे अनंत नव सरधा साचो रे ॥ शु० ॥ ४॥ इण बिना चारी ग तिमें नाचो, नहीं बुटो कर्मको लाचो रें ॥ शु० ॥ ५ ॥ तिलोक रिख कहे समकित माचो,कुमति लता जड टांचो रे ॥ शु० ॥६॥

॥ अथ चारित्र आश्रयी पद प्रारंन्नः ॥

॥ पालो पालो रें संजमकी करिया, जिणथी जीव अनंतहि तरिया रे ॥ पा० ॥ १ ॥ पंच माहाव्रत नावें उच्चरियां, रहो पाप कर्मसुं टरिया रे ॥ पा० ॥ २ ॥ पंच आश्रवद्धारकुं बुरियां, राग द्वेष शत्रु सब चूरिया रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ जो संजम करणीथकी फरिया, सो तो चार गतिमांहे फरिया रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ एसो जाण के संजम आदरिया,सो तो अनंत गुणाका हे दरिया रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे परहित धरिया, पुण्यजोगसुं मिलि एह वि रियां रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ तप आश्रयी पद प्रारंन्नः ॥

॥ तुम तपस्या करो नव प्राणी,शम दम उपशम चित्त आणी रे ॥ १ ॥ तु० ॥ कर्म धान्य पिसणकुं ए घाणी, मोह अटवीके आग लगाणी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ अहंकार पर्वत डुःखखाणी, तप

स्या सो वज्र समाणी रे ॥ तु० ॥३॥ नव ताप बुझावण पाणी, करे सकल कलेशनी हाणी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे तप सुखदाणी, जो करे सो वरे शिवराणी रे ॥ तु० ॥५॥ इति ॥

॥ अथ क्रोध आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मेटो मेटो रे भविक जन लाली, जिणसुं रहोगे सदाइ खुशियाली रे ॥ मे० ॥ १ ॥ पेली देवें निज आत्मा बाली, पिछें दूजाने देवे प्रजाली रे ॥ मे० ॥ २ ॥ यातो धर्मतरु छेदन वाली, जगमें रीश बडी हे जंजाली रे ॥ मे० ॥ ३ ॥ एसी जाणकें देवणी नहिं गाली, क्षमा जाणजो सदा हितवाली रे ॥ मे० ॥४॥ तिलोकरिख कहे क्षमा धर्म जाली, गया शिवमंदिर सुविशाली रे ॥मे०॥५॥

॥ अथ मानआश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत करो रे चतुर अभिमानां, अंत दावे तो परभव जानां रे ॥म०॥१॥ फूल फूले सो देख कुमलानां, जो बंध्या सो तो विखराना रे ॥ म० ॥ २ ॥ थिर नहिं इंद चंद रवि भाना, थिर नही हे जगमें राजा राणा रे ॥ म० ॥ ३ ॥ एसी समजकें दिल नरमाना, नित गुणिजनके गुण गानां रे ॥म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे सुणजो शाहाणा, विनय कियासुं पद निर्वाणा रे ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ कपट आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ छोडो छोडो रे कपटकी कतरणी, या तो धर्म मेराकी छिन करणी रे ॥ छो० ॥ १ ॥ या तो नरकनिगोदकी निसरणी, या तो धूर्त लोभीके घर घरणी रे ॥ छो० ॥ २ ॥ या तो अंतरका शल्य जेसी वरणी, या तो देवे भवोभव दुःख अरणी रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ या तो दुःख देवावे वेतरणी, या तो शिवपुर सुखकी हरणी रे ॥ छो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे कपट न करणी, जो भावे शिव वधु वरणी रे ॥ छो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायाआश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत कहो रे चतुर माया मेरी, या तो पुण्य जिहां लगे हेरी रे ॥ म० ॥ १ ॥ जब वित जावे पुण्यकी लहेरी, तब राखि रहेगी नहि तेरी रे ॥ म० ॥ २ ॥ या तो साथी नहिं छे किण केरी, भाग्य बिना मिले नहि हेरी रे ॥ म० ॥ ३ ॥ चार रोजकी चांदणी गहेरी, छेवट रयण अंधेरी रे ॥ म० ॥ ४ ॥ या तो ज्युं ज्युं भेलि हो वे गहेरी, त्युं त्युं तृष्णा वधे बहु तेरी रे ॥ म० ॥ ५ ॥ जाणो नरक निगोदकी या सेरी, एसी जाणकें ल्यो तृष्णा थें केरी रे ॥ म० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे उपदेश किया भेरी, इसकी संगत जा शिवशेरी रे ॥ ७ ॥

॥ अथ उपदेशआश्रयी पद पहेलुं प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे सुगुरुका कहेनां, जिणसें पावोगा अमर सुखचेना रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मिथ्या धर्म जाणो सब फेना, खोल देखो थें अंतर नेनां रे ॥ मा० ॥ २ ॥ करो छकाय जीवकी जयणा, बोलो मधुरता निरवद्य वेणां रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ बिनदिया किसीका नहि लेणां रे, परत्रिया गिणो माई बेनां रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ अति तृष्णा करो मति सेणा, चाडि चुगली आल नहिं देणां रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ संजम आदरकें परिसह सहेणां, तिलोकरिख कहे प्रभु सरण रहेणां रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ उपदेशी पद बीजुं ॥

॥ भोर भइ रे बटाउ जागो जागो, थाने जाणो देशावर आघो रे ॥ भो० ॥ १ ॥ चले संग चतुरको सांगो, जिणसुं रहे मति पाछो आघो रे ॥ भो० ॥ २ ॥ ले ले खरची आगें नहिं थागो, जिणसें लागे नहि दुःखदाघो रे ॥ भो० ॥ ३ ॥ पंच ठगणि सुमति करे रागो, वश पडियासुं करदेशी नागो रे ॥ भो० ॥ ४ ॥ तिलोक रिख कहे मोहनिंद त्यागो, उवट छोडकें शिवपंथ लागो रे ॥ भो० ॥ ५ ॥

॥ उपदेशी पद त्रीजुं ॥

॥ चेतो चेतो रे चतुर जग खोटा, करो धर्मध्यान फल महोटा रे ॥ चे० ॥ १ ॥ धर्म बिना नमेगा दडि दोटा, सहेगा नरक विषे जम सोटा रे ॥ चे० ॥ २ ॥ नहि मिले पापीने पूरा रोटा, पाणी पिवणका मिले नहिं लोटा रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ नेलो करे नर धन केइ कोटा, तोइ तृष्णावंत मन टोटा रे ॥ ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे ले जो धर्म उंटा, तो मिट जावेगा जमचोटा रे ॥चे०॥५ ॥ इति ॥

॥ अथ काल आश्रयी पद प्रारंनः ॥

॥ काटो काटो रे कालकी फांसी, रहो रहो जगतसें उदासी रे ॥ १ ॥ का० ॥ काल रिपु तुऊ पर चड आसी, एसी गोर नहिं जहां लुक जासी रे ॥ २ ॥ का० ॥ इंद्र चंद्र असुर सुरराशि, जो उपजे सो सकल विनाशी रे ॥३॥ का० ॥ तुं तो चार दिवसकोहे वासी, कर्म करेगा जैसी गति पासी रे ॥४॥का०॥ नय मरणको मनमें विमासी, करो सुकृत सोदा उल्लासी रे ॥ ५ ॥ का० ॥ जो मोहनी कर्म खपासी, तिलोकरिख कहे काल नहिं खासी रे ॥का०॥ ६॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारंनः ॥

॥ रहो रहो रे धरम धन तसीया, ज्यो थें शिवरमणीका रसिया रे ॥ र० ॥ १ ॥ राखजो थें मन तनके कसिया, शुद्ध समकितव्रतमें वसिया रे ॥ र० ॥ २ ॥ राग द्वेष जगत जन फसिया, नविजन सो तो दूर नसिया रें ॥ र० ॥ ३ ॥ काम क्रोध वगोमें जे फसिया, सो तो अचल डुकानसुं चसिया रे ॥ र० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे जे धर्म वसिया, सोवे शिवसेजमें उल्लसिया रे ॥ र०॥५॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंनः ॥

॥ चेतो चेतो रे कुटुंबके विगारी, जाणो मतलबकी जग यारी रे ॥ १ ॥ चे० ॥ मात पिता सुत बंधव नारी, तुं जाणी रह्यो हि

ल म्हारी रे ॥ २ ॥ चे० ॥ कुटुंबी हे कपटके भंभारी, करे खुशा मत उपरसुं थारी रे ॥ ३ ॥ चे० ॥ ज्यों पंखी बेठे तरु मांरी,मन मांहि सो गरज बिचारी रे ॥ ४ ॥ चे० ॥ तिलोकरिख कहे ब्यो धर्मधारी, जो उतरवा चाहो भवपारी रे ॥ ५ ॥ चे० ॥ इति ॥

॥ अथ शिखामण आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे अचल सुख गरजी, मत होवो थें करमका करजी रे ॥ १ ॥ मा० ॥ मत दुःखानां किसीकी मरजी, होणहार टले नहिं जो सरजी रे ॥ २ ॥ मा० ॥ कुसंगतिकों देयो तुम वर जी, पाप त्यागो सयाणें चित्त लरजी रे ॥ ३ ॥ मा० ॥ मत हो नां जुवेगारका थें दरजी, विषय कषायकुं देयो तुम तरजी रे ॥ ४ ॥ मा०॥तिलोकरिख कहे धन जिनवरजी,करे प्रभुजीसुं शिव अरजी रे५

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे शिखामण मेरी, ज्यों चाहो मुगतिकी शेरी रे ॥ १ ॥ मा० ॥ मात पिता कुटुंब सब वैरी, जिणसुं ममता कर्या दुःख केरी रे ॥ २ ॥ मा० ॥ मायाकी सपना सम लेरी, मत कर तुं ममता बहु तेरी रे ॥ ३ ॥मा०॥ काचा कुंभ जैसी कायाकी दे हरी, ठेवटमें हावेगा राख ढेरी रे ॥ ४ ॥ मा० ॥ राग द्वेष सर्प माहा ऋहेरी, ले उपशमकी जडी ठेरी रे ॥ ५ ॥ मा० ॥ तिलोक रिख कहे शिख हेरी, पियासुअमृत शिव नेरी रे ॥ ६ ॥मा०॥इति॥

॥ अथ जोबन आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत अकडे जोवनके मटके, तेरे शिरपर काल वैरी भटके रे ॥ १ ॥ म० ॥ नित अभक्ष आहारके गटके, वार वार तोय ज्ञा नी गुरु हटके रे ॥ २ ॥ म० ॥ ख्याल तमासामें निशिदिन भटके, धरमके कामें दूरो ठटके रे ॥ ३ ॥ म० ॥ वे तो नरककुंभमांही ल टके, ज्यानें पकड पकड जम पटके रे ॥ ४ ॥ म० ॥ तिलोकरिख

कह कर्म रज फटके, सो तो वेगा अचल सुख सटके रे ॥५॥म०॥

॥ अथ जोबन आश्रयी पद बीजुं ॥

॥ क्यों जूल्यो रे जोबनमें अकडी, नवमासा लटक्यो सेरी सकडी रे ॥ १ ॥ क्यों० ॥ बालपणामें रम्यो ख्याल खरखडी, रह्यो जोबनवयमें ऊकडी रे ॥ २ ॥ क्यों० ॥ आयो बुढापो सुजत नहिं अखडी,जोर पडियासुं पकडी लकडी रे ॥३॥क्यों०॥ तिलोकरिख कहे धर्म लेवो पकडी, तो पावोगा मुगति फुल परखडी रे ॥ ४ ॥क्यों०॥

॥ अथ संसार आश्रयी पद प्रारंभः

॥ सतगुरुजी कहे जग सपनां,करो धर्मध्यान सोहि अपनां रे ॥ ॥ स० ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यान करत नहिं धपनां, पाप करतां तो दिलमांहे कंपनां रे ॥ स० ॥ २ ॥ दान देनां शीलपाल तप तपनां, शुद्धभावनामें दिल थपनां रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सजन सनेही नहिं हे कोइ अपनां, आखर तो जरूर तुऊ खपनां रे ॥स०॥४॥ सुगुरु सेवा करत नहिं छिपनां, तिलोकरिख कहे प्रभु जपनां रे ॥स०॥५॥

॥ अथ शिक्षा आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ वार वार सतगुरु समजावे, क्यों तुं कर्म बंध नपावे रे ॥ ॥ वा० ॥ १ ॥ जीव हसतां हसतां जमावे, छोडंतां अति मुशकिल थावे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ जो तुं आक धतुरा वावे, तो तुं आंब कहांसुं खावे ॥ वा० ॥ ३ ॥ जहेर खायकें जिवणो चमावे, तिम पाप करिने सुख चावे रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ जैसा बांध्या तेसा उदय आवे, चारु गतिमांहि सो दुःख पावे रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म उडावे, सो तो शिवपुर वेग सिधावे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ कर्म आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ कर्मगति हे अजब जगमांहे, इण सम शत्रु कोइ नांइ रे ॥ ॥ क० ॥ १ ॥ कुंमरिक तप करियो उलसाइ, मर गयो नरक सात

मी मांइ रे ॥ क० ॥ २ ॥ अढीदिन संजम पद पाइ, पुंमरीक सर्वार्थसिद्ध जाइ रे ॥ क० ॥३॥ प्रनुजी कीकिनी अधिक बुराइ, गोसालक पायो सुर प्रनुताइ रे ॥ क० ॥ ४ ॥ जमाली श्रीवीरका जमाइ, करमासुं खोटी सरधा आइ रे ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म कसाइ, इनके कोइको मुलाजो नांइ रे ॥ क०॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ शूरपणा आश्रयी पद प्रारंनः ॥

॥ करो करो करमसें दंगा, जिणसुं पावोगा सुख उत्तंगा रे ॥ क० ॥ १ ॥ वश कर लो मनकी तरंगा, बोडो विषय कषाय प्रसंगा रे ॥ क० ॥ २ ॥ राखो चित्त निर्मल जिम गंगा, बोडो पंच प्रमाद अनंगा रे ॥ क० ॥ ३ ॥ तप जप करणीमें रहो चंगा, मेटो कर्म बंधणकी उबंगा रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे केवल संगा, तरो नवोदधि तरंग अथंगा रे ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दयाव्रत आश्रयी पद प्रारंनः ॥

॥ पालो पालो रे नविक दया माता, इणसुं पाउगा अचल सुखशाता रे ॥ पा० ॥ १ ॥ जग प्राणी सब जीवणो चहाता, दुःख मरणसें सब थरराता रे ॥ पा० ॥२॥ एसें जाणकें होवो थें अनयदाता, कोइ जीवकुं न देणी अशाता रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ टले नरकनिगोदका खाता, जो रहे दयारस रंगराता रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ साठ नाम वताया जगत्राता, ज्यों आराधे सो शिवसुख पाता रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे आगम बाता, कोइ हलुकर्मी चित चाता रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ सत्यवचन आश्रयी पद प्रारंनः ॥

॥ सत्य वचन बोलो रे नविप्राणी, सो तो निरवद्य शिवसुख दाणी रे ॥ स० ॥ १॥ सत्य असत्यको नेद पिगणी, पिछें बोलो वचन शुद्ध गणी रे ॥ स० ॥ २ ॥ कोमल मृडु अमृतसी वाणी,

जिणमें होवे नहिं धर्म हाणी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ बोलो शुद्ध सत्य मती वाणी, जिणकी कीर्त्ति अधिक जग जाणी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे आगम वाणी, सत्यवादी वरे शिवराणी रे ॥५॥

॥ अथ अदत्त व्रत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत लेवो रे अदत्त पर भाइ, जिणसुं कमी रहे नहिं कांइ रे ॥ म० ॥ १ ॥ जे चोरी तजेगा चित्त चहाइ, कबु फिकर नहिं उणतांइ रें ॥ म० ॥ २ ॥ रहे जगमें प्रतीत सवाइ, संतोष समान सुख नांइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ जिसके अनेक विघन टल जाइ, मर जावे सुरगतके मांइ रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे दत्तव्रत की बडाइ, जिनशास्त्रमें प्रभु फरमाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलव्रत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ सदा पालो रे शियल सुखदाइ, दोइ भवमें कीर्त्ति सवाइ रे ॥ स० ॥ १ ॥ चोर शत्रु सो जावे नरमाइ, शीलवंतने नमे सुर आइ रे ॥ स० ॥ २ ॥ सूत्रप्रश्न व्याकरणके मांइ, बत्तिस उपमा प्रभु फरमाइ रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सोला उपमा मोटी बताइ, ए अद्भुत व्रत अधिकाइ रे ॥ स० ॥४॥ विण मनसुंहिं पाले इणतांइ,चोसठ सहस्र वर्ष सुर जाइ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे धन उणतांइ, शिल पाले सदा उलसाइ रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ ममत्व आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ त्यागो ममता परिग्रह दुःखदाइ, ए तो जगतपति फरमाई रे ॥ त्या० ॥ १ ॥ संतोषको सुख अधिकाई, देवे तृष्णाकी लाय बुझाई रे ॥ त्या० ॥ २ ॥ इणमांही जे रह्या मूर्छाइ, सो तो संचे अति कर्म कमाई रे॥ त्या० ॥ ३ ॥ लोभ गिणे नहिं सयण सगाइ, देखो भरत बाहुबल भाई रे ॥ त्या० ॥ ४ ॥ जिम जिम वधे धन प्रभुताइ, तिम तिम वधे तृष्णा सवाई रे ॥त्या०॥५॥ एसी समझ

के टाले मूछांताई, तिलोकरिख कहे सो शिव पाई रे ॥ त्या० ॥ ६॥

॥ अथ रात्रिभोजनव्रत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत करोरे भोजन निशिमांहि, द्रव्यभावे अणुकंपा जाइ रे ॥ ॥ म० ॥ १ ॥ त्रस जीव थालीमांहे पडे आइ, सुझे नहिं कछु अंधाराके मांइ रे ॥ म० ॥ २ ॥ जूभक्षणें जलोदर थाइ, विंछुथी कपाल सड जाइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ माखी भक्षण वमण दरसाइ, इत्यादिक दुःख इण भवमांइ रे ॥ म० ॥ ४॥ जो त्यागे निशिभोजन तांइ, संवछरमें छमासी तपसाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे त्यागो भाइ बाइ, द्रव्यभावें फल अति सुख दाइ रे ॥म०॥६॥

॥ अथ दुःकृत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ छोडो छोडो रे दुःकृत दुःखदानी, इस्कुं कुमति रूप पट्टराणी रे ॥ छो० ॥ १ ॥ नरक निगोदमें सेज बिछाणी, जिहां न मिले अन्न उर पाणी रे ॥ छो० ॥ २॥ करे सुख संपत्ति जस हाणी, जम देवे अति त्रास पिले घाणी रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ दुःख पावे चारी गतमें प्राणी, सो तो जाणत केवल नाणी रे ॥ छो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे न्याय पिछाणी, सो तो भविजनके मन मानी रे ॥ छो०॥ ५ ॥

॥ अथ मन आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ चित्त चंचल चपल थिर करणां, नित धरम शुक्ल ध्यान धरणां रे ॥ चि० ॥ १ ॥ तिन दंम तिन शल्य परिहरनां, पंचपरमेष्ठीका गुण सो उच्चरनां रे ॥ चि० ॥ २ ॥ पंच आश्रव पापसेंती डरणां, आठ कर्मशत्रुसेंती लरनां रे ॥ चि० ॥ ३ ॥ ग्रहो मुनिधर्म दश चउ सरणां, बार भावना तप अनुसरणां रे ॥ चि० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे भवोदधि तरणां, धारो सुगुरु सुदेवका चरणां रे॥५॥

॥ अथ आउखा आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ दम जमका नहिं विसवासा, क्यों करे मेरी तेरी धन आशा

रे ॥ द० ॥ १ ॥ मत समझो इसमें कछु हासा, ये आसा हे जब लग सासा रे ॥ द० ॥ २ ॥ जैसा फुले संझाका उजासा, पड्या पाणीके बीच पतासा रे ॥ द०॥३॥ जैसा जल मोतीका ऊकासा, तैसा हे इस तनका तमासा रे ॥ द० ॥ ४ ॥ क्युं चुणे उंचा उंचा आवासा, एक दिन होयगा जंगलवासा रे ॥ द० ॥ ५ ॥ काल अहेडीका नहिं विसवासा, एकदिन देगा सब पर फांसा रे ॥ द० ॥ ६॥ तजो क्रोध मानका पासा,जिणसुं बजत सुजसका त्रांसा रे ॥ द० ॥ ७ ॥ इणसुं नर सुर सबही त्रासा, एक सिद्ध सदा उल्ला सा रे ॥ द० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे सबकुं खुलासा, करो धर्म ध्यान नित्य खासा रे ॥ द० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्चर्यी पद प्रारंभः ॥

॥ सुण चेतन रे,तुम गुणवंत मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुणो सुगुणा रे,तुम धर्म ध्यान नित कर लो ॥ तुम त्यागो पंच प्रमाद, भवोदधि तर लो ॥ ध्रु०॥ यो नरभव लीनो नीठ,आरज देश पायो ॥ या काया निरोगी धार, उत्तम कुल जायो ॥ तोय सद्गुरुको मि ल्यो जोग,सूत्र सुण कानें ॥ तुं मत कर आलस धार, शुद्ध सरधा नें ॥ सु० ॥१॥ या देह औदारिक जाण, उपरसें चंगी॥ या पलमें सुंदराकार, पलमें विरंगी ॥ या माया हे बादलछांय, सुपन जो जा णो ॥ या जोबन नदीपूर, गरव मत आणो ॥ सु० ॥२॥ ये मात पिता सुत भ्रात, कुटुंब उर नारी ॥ सरणागत नहिं कोय, गरज की यारी ॥ ज्यों तरुवर पर पंखेरु, आय ले वासो ॥ जावे चउ दिशी विखर, दिवस उजासो ॥ सु० ॥ ३ ॥ केइ बाजीगर ज्यों वाद, मचावे जाई ॥ झुम झुमीको सुण शब्द, खलक जुड आइ॥ होय तमासो बंध, सबि भग जावे ॥ बाजीगर निज ठाम, अकेलो जावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ महारुं महारुं कर रह्यो, जीव अज्ञानी ॥

पण छेवट जावे छोड, अकेलो प्राणी ॥ जगकाल जोरावर निपट, ले जावे ताणी ॥ इम जाणीने चेतो चतुर, मानो प्रभु वाणी ॥सु० ॥ ५ ॥ उगणीशें अडतीस जेठ, शुद्ध छठ जाणो ॥ ए रत्तापुरके मांय, कियो बखाणो ॥ तिलोकरिख कहे चेतें, सोइ सुख पावे ॥ पावे अमर विमान, मुगति सिधावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्चर्यी पद प्रारंभः ॥

॥ फागणकी देशीमें ॥ मत राचे रे, हांरें मतराचे रें ॥ संसार है सपन माया, मत राचे रे ॥ हाडकाकों पिंजरो ने चामडासुं मढियो, काचाकुंभ जैसी तेरी काया ॥ म० ॥ १ ॥ पुण्यजोग धन संपदा रे पायो, विणस जाय जैसी बादल छाया ॥ म० ॥ २ ॥ जोबन रंग पतंग नदीपुरसों, ढलती जाणजो दूपेरकी छाया ॥ म० ॥ ३ ॥ आयो बुढापो कुडापो रे आयो, सामा बोलण लागा घरजाया ॥ म० ॥ ४ ॥ काल वेताल किया धाक तिहुं लो कमें, इंद्र चंद्र सब थरराया ॥ म० ॥ ५ ॥ सुखी दुःखी बाल जुवान वृद्धनरने, छोडे नहिं हरि हर राया ॥ म० ॥ ६ ॥ माता पिता तिरिया सुत बंधव, आदर देवे मतलब आया ॥ म० ॥ ७ ॥ गरजविना कोइ सार नहिं पूछे, मूरखपणे क्यों तुं ललचाया ॥ म० ॥ ८ ॥ अकेलो तुं आयो ने अकेलो रे जावसी, सुकृत का सोदा थें कर लो भाया ॥ म० ॥ ए ॥ धर्म बिना तुं भटक्यो चारु गतिमें, जनम मरण बहु दुःख पाया ॥ म० ॥ १० ॥ दान शियल तप भावना रे भावो, तिलोकरिख कहे अवसर आया ॥ म० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥देशी एहीज ॥ मानो मानो रे, हांरें ॥मा०॥ चतुर सद्गुरु वाणी, मानो मानो रे ॥ देव गुरु धर्म साचा रें सरधो, तीन रतन ग्रहो सु

खदाणी ॥ मा० ॥ १ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप करजो, आठ करम करो धूल धाणी ॥ मा० ॥ २ ॥ क्रोध कपट अहंकार तज दीजो, तृष्णाकी लाय बुझावो प्राणी ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्राणातिपात कूठ चोरी नहिं करियें, पालो शील संजम समता आणी ॥ मा० ॥ ४ ॥ छिन छिनमांहे थारो छीजे रे आउखो, खूट जाय जैसो अंजलीको पाणी ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन धन जोबन थिर मत जाणजो, मोह ममता कह्या दुःखखाणी ॥ मा० ॥ ६ ॥ उगणिशें सेंतिस माघशुदि तेरश, तिलोकरिख कहे हित आणी ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ धन आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ करे कायकुं, हांरे ॥ क० ॥ हाय माया नहिं साथी ॥ क० ॥ एकलोही आयो ने एकलोही जावसी, संगें कोडी नहि आवे सुगुणा ॥ क० ॥ १ ॥ दामके काम फिरे देश परदेशमें, पुण्यबिना आवे रीतो सुगुणा ॥ क० ॥ २ ॥ कूड कपटसुं तो माया करे एकठी, जिणमांहि सातपांती पडे सुगुणा ॥ क० ॥ ३ ॥ पाप कमाइने जावे मरी एकिलो, धनको मालक उर होवे सुगुणा ॥ क० ॥ ४ ॥ नरकमांहे प्राणी दुःख सहे एकिलो, कुटुंबी सो आमा नहिं आवे सुगुणा ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे हाय लाय छोड दो, समतासुं शिवपुर पावे सुगुणा ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ जागो जागो रे, हांरे ॥ जा० ॥ विदेशी थाने दूरो जाणो ॥ जा० ॥ काल अनंतको तुं सुतो मोहनिंदमें, कायासा नगरमांहि वस्यो राणो ॥ १ ॥ जा० ॥ कामक्रोध मद ठग लारें पडिया, तपसंजमको लूटे छे नाणो ॥ २ ॥ जा० ॥ चार तीरथको सागर मोटको, धर्मरूपि मोटी झहाज माणो ॥ ३ ॥ जा० ॥ ज्ञान दरिसण चा

रित्र तप जपको, नर जो हरखसुं करियाणो ॥ ४ ॥ जा० ॥ सत गुरु खेवटीया मांहि जाणजो, नला परिणामको पवन आणो ॥ ५ ॥ जा० ॥ मोक्षरूपी पाटणमें वेगसुं सिधावणो, सिद्धवे पारी ज्याको सदा थाणो ॥ ६ ॥ जा० ॥ तिलोकरिख कहे मा ल खप जावसी, कर जो हुशियारी पद निर्वाणो ॥ ७ ॥ जा० ॥

॥ अथ नरकडुःख वर्णन पद प्रारंभः ॥

॥ चेतो चेतो रे, हांरे चेतो चेतो रे,धरमबिना डुःख पायो ॥ चेतो० ॥ पाप करीने जीवनरकमांही उपज्यो, अनंत डुःख देखी गन्नरायो ॥ चे०॥ १ ॥ जम अरडाट सुणिने चल आवे, लेइ तर वार तिहां फटकायो ॥चे०॥ २ ॥ नूख लागी जद तिणनांही त नको, मांस काट काट कर खवायो ॥ चे० ॥३॥ तृषा लागी जद जम देव आयने, तांबो उकाल कर पाणी पायो ॥ चे० ॥ ४ ॥ गरमि लागी जब जबरीसुं पकडी, कूड सामली तलें लटकायो ॥ चे० ॥ ५ ॥ टुट टुट कायापर पडे रे पानडां, टुक टुक हुवो अ ति गन्नरायो ॥चे०॥६ ॥ पाय पकडकें उठाल्यो रे गगनमें, फेल्यो त्रिशूल माहा डुःख आयो ॥ चे० ॥ ७ ॥ अणगाण्या जलमांहि घणो रे नावतो, नदी वेतरणीमांही ठटकायो ॥ चे० ॥ ८ ॥ पराइ तिरियानें प्यारी करि मानतो, लालथंनो करी चपकायो ॥ चे० ॥ ए ॥ दारु मांस बिनां घडि नहि चालतो, अगनिका कुंम्नमांहि रुबकायो ॥ चे० ॥ १० ॥ नरकमांहि डुःख सह्यां रे अनंत थें, पल सागरथिति थररायो ॥ चे० ॥ ११ ॥ तिहांथी म रीने तिरजंच गति उपज्यो, जन्म मरण नयो डुःख कायो ॥ चे० ॥ १२ ॥ नीट नीट कर नर नव पायो, देश आरज उंच कुलें जायो ॥ चे० ॥ १३ ॥ दीर्घ आउखो ने पूरण इंडी, काया निरो गी पोतें पुण्य लायो ॥ चे० ॥ १४ ॥ सतगुरु जोग मिल्यो सूत्र

की सरधा, जैन धरम सत्य मन नायो ॥ चे० ॥ १५ ॥ बा टा साटें नरजव मतिहारो, बासी टुकडामें क्युं तुं ललचायो ॥ चे० ॥ १६ ॥ तन धन जोबन कुटुंब कबीलो, अथिर सकल प्रजु दरसायो ॥ चे० ॥ १७ ॥ काल बेरी थारी लारां रे पडि यो, सकल लोक इणसुं थररायो ॥ चे० ॥ १८ ॥ धर्मध्यान सुकृत कर लीज्यो, जो शिवपुर सुख होव चहायो ॥ चे० ॥ ॥ १९ ॥ उगणिशें सेंतिश माघशुदि तेरश, तिलोकरिख यों उप देश गायो ॥ चे० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ अथ वीश विहरमाननी लावणी ॥

॥ दीनदयाल कृपाल, करुणा नंमारी ॥ क० ॥ जय विहरमा न जिन वीश, धर्म अधिकारी ॥ श्री सीमंधर स्वामि,सदा सुखका री ॥स०॥ जय युग्मंधर जसवंत,चरण बलिहारी ॥ बाहुजिणंद कृ पाल, करुणा नंमारी ॥ क० ॥ श्री सुबाहु जगदीश, परम पद धारी ॥ सुजात प्रजु घनघाती, कर्म कीयां ढारी ॥ क० ॥ स्वयं प्रन्न वीतराग,ममता विमारी ॥ रिखजानन आनंद, करे नर नारी ॥ क०॥ जय विहरमान माहाराज,धर्मअधिकारी ॥१॥ अनंत वीरज जगनाथ, तज्या जगनाता ॥त०॥ श्री सूर प्रजु सुविख्यात, करो सुखशाता ॥ विशाल प्रजु सुविशाल,त्रिजगके त्राता ॥त्रि०॥ श्रीव ज्रंधर तप वज्र, कर्मके घाता ॥ चंद्रानन सुखकंद, दर्शे चित्त चा ता ॥दर्शे०॥ चंद्रबाहु कर्मराहु,हगाया खाता ॥ कियो कर्मसें जंग, नुजंग प्रजु नारी ॥जु०॥ज०॥२॥ ईश्वर त्रिजग ईश, मेरे मन नावे ॥मे०॥ श्री नेमीश्वरजिन ध्यान,करतां दुःख जावे ॥ वीरसेन करे केण, अमर पद पावे ॥ अ० ॥ माहानद्र करे नद्र,विघनकुं हटा वे ॥ देवजसा करे सेव, रिद्ध सिद्ध आवे ॥ रि० ॥ अजित वीरज निजपद, देत नज नावें ॥ जघन्यपदें वर्तमान, जिनंद उपगारी ॥

जि०॥ ज०॥३॥ धनुष्यपांचशें प्रमाण, प्रनुजीकी काया ॥ प्र० ॥ लक्ष चोराशी पूरव, आयुं फरमाया ॥ थाप्यां हे तीरथ चार, न विक मन नाया ॥ न० ॥ होय अयोगी मोक्ष, जासि महाराया॥ में अधम उद्धारण बिरुद, सुणी हरखाया ॥ सु० ॥ तिलोकरिख यौं जाण, शरणागत आया ॥ जिम तिम करो नवपार, अरज अव धारी ॥ अ० ॥ ज० ॥ ४ ॥इति ॥

॥ अथ शांतिनाथ जिन लावणी ॥

॥ अगडदं अगडदं ॥ ए देशी ॥ प्रनु तुम विण में नम्यो जगतमें, अब द्यो सुख संपति स्वामी ॥ शांति जिनेश्वर शांति करो मोय, विघन हरण अंतरजामी ॥ पाल्यो पारेवो मेघरथ नृपनव, गोत्र तीर्थंकर बांध्यो जिहां ॥ सर्वार्थ सिद्ध गये संयम लेकर, स्थिति तेत्रिश सागरकी तिहां ॥ हथिणापुर विश्वसेन पट्टराणी, अचिरा कूखें जन्म लियो ॥ बे पदवी उपराजी पुण्यसें, मरकी रोग प्रनु दूर कियो ॥ जस फेल्यो तब सारे देशमें, परजा पण शाता पामी ॥ शां० ॥ १ ॥ पचिश पचिश हजार वर्ष लग, कुंअर राज चक्रव र्त्ती ॥ एक हजार पुरुष संगें प्रनु, संजम लीनो शून मती ॥ एक वरस छद्मस्थ पणामें, सह्या परिसह जिनराया ॥ घनघा तिक चउ कर्म काटकें, श्रीजिनवर केवल पाया ॥ दियो उपदेश नविक जन तारण, धन जगवत्सल शिवगामी ॥ शां० ॥२॥ पच्ची स सहस्र वर्षमें एक कम, केवल पदवी दीपाई ॥ छत्तिस गणधर हुवे नाथके, बासठ सहस्र नये मुनिराई ॥ एकशठ हजार उर छशें आर्जका, एक लक्ष नेवुं हजारा ॥ नये श्रावक एकविश गुण पूरण, बाराव्रत धारणहारा ॥ तिन लक्ष त्र्याणुं सहस श्राविका, कर णीमें कुछ नहिं खामी ॥ शां० ॥ ३ ॥ लक्ष वर्षको सर्व आयु खो, जिन मारग हद दीपाया ॥ समेतशिखर पर्वत पर चढकें,

जगतारक अणसण गाया ॥ वदि तेरश नक्षत्र रेवती, ज्येष्ठ मास में मुक्ति लही ॥ अजर अमर अविकार निरंजन, दुःखभंजन वि दें आप सही ॥ तिलोकरिख कहे तारो मुझकुं, अर्ज करुं नित शिर नामी ॥ शांति० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ उदायिन रिखकी लावणी ॥

॥ देशी तेहीज ॥ नरपति सुरपति नमे जिनोकुं, ध्यान धरे हे साधु सती ॥ जग उद्धारण समरो साहिब, महावीर त्रिजगतपति ॥ ए टेक ॥ वीतभय पाटणके अंदर, नाम उदायिन था राजा ॥ शूरवीर माहाधीर जोरावर, सोला देशका शिरताजा ॥ मुकुट बंध दश राजा जिनकी, सेवा करता हर्ष धरी ॥ पद्मावती नामें पट्ट राणी, शील रूप गुण प्रेम भरी ॥ परजाकुं फरजंदसी पाले, दिन दिन चढती पुण्यरति ॥ ज० ॥ १ ॥ वर्द्धमान जगनाथ पधारे, बंद न गये राजा चलिकें ॥ धर्मकथा प्रभुजी फरमाइ, दूनीमें मम त छलके ॥ बिन मतलबसें कोइ न किस्का, जग माया हे स्वप्ने ज्यों ॥ इस्कों छोड कर धर्म आराधो, सुणकें लागा नृप कंपनें ज्यों ॥ प्रभुसुं कहे में संजम लउंगा, पुत्रकुं दे कें राज क्षिति ॥ जग० ॥ २ ॥ पीछें जोंग में लउंगा तुमपें, जेज करो मत लीगारा ॥ राज में जाता सोचे दिलमें, एकी पुत्र मुझ अति प्यारा ॥ राज करेगा नरक पडेगा, दुःख पावेगा बोत सही ॥ इसी सबब भाणेज रा ज दउं, सला दिलमें यों राजा ठही ॥ केशी नाम भाणेज राज दे, नृप भया निर्ग्रंथ जति ॥ ज० ॥ ३ ॥ पुत्र विचार किया दिल अंद र, मेरेमें क्यां एब भरी ॥ क्युं नहिं दिया राजछत्र मुझ, दिलमें चिंता बहुत करी ॥ रोष भराकें गया सो चंपा, मासी भ्रातके पास चली ॥ बारा व्रत वो पाले निर्मल, सो मुनि उपर द्वेष लली ॥ अब सुण लो मुनिवरकी किरिया, तप संजममें अधिक रति ॥ ज०

॥ ४ ॥ मास मास तप करत निरंतर, अरस निरस तुछ आहार करे ॥ अग्यारा अंग कंठाग्र कर कें, आज्ञा ले जनपद विचरे ॥ विहार करतां सो आया सोही पुर, केशी राजा दिल वहेम नया ॥ उआइ फेराइ पुरमें साधुकुं, उतरने मत देनां यहां ॥ जो उतारेगा इनकुं घर अंदर, राजा करेगा घर जपति ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंनकार एक था नवि प्राणी, दिल अंदर विचार कीया ॥ राजा रूग लेगा गढा, जांका राखका ढंग रीया ॥ मेरे टपरी फुसकी हेगी, क्या कर ले राजा मेरा ॥ एसी समज कर दिनि हे आज्ञा, मुनिवर आकर ज हां व्हेरा ॥ राजा सुन कर चुप रहा दिल, अछी नहिं कछु जिन स ढती ॥ ज० ॥ ६ ॥ राजहकीमसुं राजा कहे तुम, झहेर देनां औषध मांइ ॥ दवा लगे नहिंफिर जीवणकी, ऐसा काम करो ना इ ॥ एसा हुकुम उन मान लिया उर, साधुकुं दिया झहेर माहा ॥ दवा लेतेही नइ रिख दीकत, रोम रोममें प्रगटी दहा ॥ मुनिवर स मता सागर पूरे, निर्मल जिनकी धर्म मति ॥ ज० ॥ ७ ॥ लहेने वाला मांग लहेनां, आनाकानी काम नहीं ॥ दे दिल साफी ढील करे मत, ध्याया शुकल ध्यान सही ॥ पाय केवल ज्ञान मुनीश्वर, मुक्ति नगरमें झंका दिया ॥ जय जय बोलो उनकी नइया, शमद म रसका प्याला पिया ॥ अजर अमर अविकारी निरंजन, सुख अनंत लहि सिद्धगति ॥ ज० ॥ ८ ॥ समकेती सुर दिल घुसे न राणे, बिन तकसीरी हत्यारा ॥ दिया मुनिवरकुं झहेर हलाहल, प्रजाप्राण कर दिया न्यारा ॥ धूल वृषा करी दट्टण पट्टण, वदी की या दुःख पावत हे ॥ एसी दिलमें समजो सुगुणा, तिलोकरिख दरसावत हे ॥ धन जिनमारग धन परमेश्वर, धन जो पाले धर्म अति ॥ ज० ॥ ए ॥ इति उदायिन राजाकी लावणी ॥

॥ अथ धन्नाजीकी लावणी ॥

॥ सोल स्वप्नकी लावणीकी देशीमें ॥ श्री वीरजिनेश्वर नमत सु

रेश्वर, चोत्तिस अतिशय करि बाजे ॥ सकल कर्म नय नर्म मिटा या,वाणी पेंतिस ज्यों घन गाजे ॥ पाखंमी बंम अफंम करे नहिं, नगे शीयाल ज्यों सिंह देखी ॥ अपरंपार महिमा जिनवरकी, होये खुशी नवजन पेखी ॥ गाम नगर पुर पाटण फिरते, नगर राजगृहीकुं आया ॥ धन धन्नो मुनिराज जाऊ सम, सब मुनिवरमें सर साया ॥ध०॥१॥ बागवान दिल हरख आनकें,कहेता श्रेणिक राजनके ॥ पुण्य उदय प्रनु बागमें आये, संग बहुत मुनि हे उनके ॥ बिदा दे कें चले सज असवारी, वंदना कर बेठे सामे ॥ प्रनुजी दे उपदेश सनामें, पूछे श्रेणिक शिर नामे ॥ कहो मुऊ दीनदयाल कृपा कर, तुम सब जाणक जगराया ॥ ध० ॥ २ ॥ चउदे सहस्र मुनि संग आपके, शिवपुर आश करे सारा ॥ निजमेतज हे कोन इनोमें,करणीमें डुःकरकारा ॥ प्रनुजी कहे सब मोतीमाल सम, संजम करणी हुशियारा ॥ डुःकर डुःकर कार सकलमें,धन्नो मुनिवर अधिकारा ॥ नाम गाम करणीका परसन, पूछे श्रेणिक नमाया ॥ ध० ॥ ३ ॥ काकंदी नगरीके अंदर,गाथा पतणी नद्रा नामें ॥ धन्नो सुत गुणवंत विचक्षण, बोंतेर कला जोबन पामे ॥ बत्तिस लडकी नूपतियोंकी, बहुत धूमसें परणाइ ॥ बत्तिस बत्तिस जिनसा दायजे, सब एक सो बाणव आइ ॥ पडे नाटक धुंकार महेलमें, नोग नोगवे मन चाया ॥ध०॥४॥ एक दिन त्रिशलानंद दिवाकर, काकंदी नगरी आया ॥ जितशत्रु नृप प्रजा लोक सब, श्री जिन दरिसणकुं धाया ॥ धन्ना शेठ पण आया उलट धर,बंदणा कर बेठे आइ ॥ फरमाया उपदेश धरमका, धिग धिग धिग हे जगताइ ॥ राच रह्या जग जीव अज्ञानी, माने मेरी संपत माया ॥ ध० ॥ ५ ॥ तन धन जोवन सर्व अथिर हे, पुजल शोना हे सारी ॥ मात पिता उर कुंटुब कबीला, मतलबकी जगमें यारी ॥ त्राण शरण नहिं मरण रोगमें, इसमें कुछ नहिं हे शंका ॥ काच

की शीशी फूटे पलकमें, मत मगरूर करे अंगका ॥ धरम ध्यान दोइ हे तुझ संगी, जग सब सुपनेकी माया ॥ ध० ॥ ६ ॥ काम क्रोध मद राग द्वेष तज, सकल करमके बंधन हे ॥ चेतनकुं बेहाल करे हे, चार गति दुःख फंदन हे ॥ जबलों जरा व्याधि नहिं आवे, इंद्रियका बल घटे तेरा ॥ जिस पेहले हुशियार होय कर, धरम ध्यान करलो गहेरा ॥ शिवसुखकी जो चहाय तुमारे, ए कहेणी मानो जाया ॥ ध० ॥७॥ धन्नो जोग वैराग आणदिल, कहे साहिबसुं शिर नामी ॥ आप कही सो हे सब सच्ची, में संजम लेवणकामी ॥ जननीकी आज्ञा ले आउं, प्रभु कहें सुख तुम तांइ ॥ जेज करो मत धर्म काममें, गइ पलसो आवे नांही ॥ बंदणां कर चल आया मातपें, आज्ञा मागे उलसाया ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुत्र सवाल सुणी ततक्षण सा, मूर्छा खाय पडी धरती ॥ दासी मिल कर करी सचेतन, आंखो बुंदनसें झरती ॥ कहे पुत्रकुं संजम किरिया, दुर्लभ हे तुझकुं जाइ ॥ बत्तिस तरुणी लघु वयें सारी, हाल जाये मत छटकाइ ॥ मेरे पीछें तुझ वृद्ध वय आयां, फिर संजम लीजें जाया ॥ ध० ॥ ९ ॥ खड्ग धार उर छुरी पान पर, चलणां दुष्कर अधिकाइ ॥ लोह चणा मोम दांतें चावणां, वेलुकवल नहिं सरसाइ ॥ पवनसुं कोथलो भरणो जैसें, मेरु तोलणो कठिणाइ ॥ गंगा नदीकी धार पकड कर, चडनां जेसें गगनमांइ ॥ एसे संजम दुःकर दुःकर, तेरी हे कोमल काया ॥ ध० ॥ १० ॥ जननीका सवाल समज कर, धन्नो कहे सुणरी माइ ॥ नारी क्यारी नरक कुंभकी, फल किंपाकसी दरसाइ ॥ काल जोरावर तीन लोकमें, छोडे नही ए किस तांइ ॥ कोण वखत उर कवण योगसें, पहेलां पीछें खबर नांइ ॥ मेरेतं झट दे दे आज्ञा, जनम मरणसें गभराया ॥ ध० ॥ ११ ॥ संजम मारग दुःकर दुःकर, इसमें फरक नहिं माता ॥ कायर क

पण निर्बल नर उर, इण नवकी चाहत शाता ॥ परनवकी नहिं चाहत जिसके, सो संजमसुं थरराता ॥ शूरवीरकुं सहज हे संयम, जगका जूठा हे नाता ॥ जो पल जावे सो नहिं आवे, जगनायक ने दरसाया ॥ ध० ॥१२॥ सवाल जवाब नये मा बेटाके, अधिक थकी आज्ञा दीनी ॥ बहुत मोछव उर उलट नावसें, धन्नाने दीक्षा लीनी ॥ हाथ जोड कर कहे प्रजुजीसुं, जावजीव छठ तप धारुं ॥ पारणे आंबिल आहार नाखतो, मिले तो लनं पारणा सारु ॥ नगवंत कहे तुम सुख होय सो, करो देवाणुप्रिय फाद्या ॥ ध०॥१३॥ चडते नाव उर सम परिणामें, तप धार्यो डुक्करकारी ॥ कोई दिन आहार मिले नहिं मुनिकुं, कोई दिन नहिं मिलता वारी ॥ सूका लूखा तन नया नूखसें, लोही मांस सब सूकाणो ॥ काचा तुंबा सो सीस मुनिकों, नेत्र प्रांत तारा जाणो ॥ उंमा कडेला सो पेट ज्युं दीखे, रसना पान जो सूकाया ॥ ध० ॥ १४ ॥ अंबपेसी ज्युं नासिका रिखकी, काचरी गाल ज्युं कान कया ॥ ढींक पंखी ज्युं जंघा दरसें, सूका सरप ज्यों बदन नया ॥ काक पाव ज्युं पावकी पिंमी, आंगली सूकी ज्यों मुंगफली ॥ न्यारा न्यारा हाड दीसें सब, अलग अलग सोले पसली ॥ सकल खुलासा हे शास्तरमें, श्री मुख साहेब फरमाया ॥ ध० ॥ १५ ॥ कोयलातिक उर एरंम लकडको, चलतो गाडो वजे जैसें ॥ उठतां बेठतां हालतां चलतां, मुनिके हाड बजे तैसें ॥ तप तेजसें पुष्ट नया मुनि, निर्बल बहुत नये तनमें ॥ हिरते फिरते शब्द बोलते, सुणते खेद पावें मनमें ॥ आयुष्य बलसें काम करे सब, नाव संजम निश्चल गाया ॥ ध० ॥ १६ ॥ श्रेणिक सुणी हवाल मुनिका, प्रनुकुं वंदें शिर नामी ॥ धन्ना मुनिके पास जायकें, कहे तुम धन अंतर जामी ॥ सफल कियो तुम मनुष्य जनमकों, करणीमें कुछ नहिं खामी ॥ छता नोग छटकाय दिया सब, डःकर तप किरिया

कामी ॥ तुम हो गरिबनिवाज दयानिधि, चरण शरण मुज मन लाया ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुनिका करि गुणग्राम नृपति, प्रभु प्रणमी गये निज गामें ॥ दिन केता रहि बिहार कीयो प्रभु, विचरे पुर पाटण ग्रामें ॥ कोइ दिन राजगृही नगरमें, समोसर्या फिर जिनराया ॥ धर्मजागरणामें मुनि चिंतो,शक्ति नहिं किंचित् काया ॥ दिन उगा प्रभु आज्ञा ले कर, साध साधवी खमाया ॥ध०॥१८॥ विपुलगिरि पर्वत पर चढकें, पादोपगम अणसण कीना ॥ एक मास संथारो आराधि,रिख सर्वार्थसिद्ध लीना ॥ अरथ पाठ पढे अंग अग्यारा, नव महिना दीक्षा पाली ॥ आदि अंत चडते परिणामें, बहोत करम दिया परजाली ॥ सात लवका रह्या कमति आउखा, एकावतारी सो पद पाया ॥ ध० ॥ १९ ॥ कोडी तिन पंच लाखके ऊपर, सहस्र एकसठ तिनसें जाणो ॥ मास नवका सास बताया,सुकृत करणीके मानो ॥ एकसो सीतेर कोडी के ऊपर,लाख सत्ताणुं पल कहीयें ॥ सहस्र अठाणुं नवसें ठन्नु, त्रीजो भाग अधिक लहीयें ॥ एक एक दम पर इतनी पलको, सर्वार्थ सिद्धमें सुख पाया ॥ ध० ॥ २० ॥ संवत उगणीशें आडतीस शालें, चैत्र शुकल ग्यारश आइ ॥ वार चंद दिन पेठ आंबोरी, ठाइ देश दक्षिण मांइ ॥ माहाराज अयवंता रिखजी प्रसादें, तिलोकरिख लावणी गाइ ॥ गुणी जनकी तारीफ करी यह, अशुभ कर्मके क्षय तांइ ॥ एसी समज सब गानां गुणी गुण,काम सिद्धि सुख सवाया ॥ध०॥ २१ ॥ इति धन्नाकाकंदीजीकी लावणी संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक उपर लावणी ॥

॥ चेत चेत रे चेत सयाणां, दुर्लभ नर अवतार ॥ धरम करी उतरो भव जल पार ॥ आरज देश उत्तम कुल जनम्यो, देह निरोगी धार ॥ आउखो इंद्रिय पूरण सार ॥ सतगुरु जोग शास्त्रकी

सरद्धा, धारो हिरदा मझार ॥ जगतमें जैनधर्म सुखकार ॥ ज्ञान दर्शन चारित्तर करणी, तप बारा परकार ॥ धारकें तरे अनंत नर नार ॥ झेलो ॥ एसो जाणके धरम करीजें, करम बंधणसें अधिक मरीजें ॥ मिथ्या भर्मकुं दूर हरीजें, जप तप संजममें चित्तदीजें, ॥ज०॥ निश्चल सम्मकित धार ॥ होय तेरी आतमको उद्धार ॥ चेत० ॥१॥ मात पिता तिरिया सुत बंधव, सजन स्नेही परिवार ॥ एतो सब हेगा मतलब यार ॥ बिन मतलब सब हे दुःखदाइ, नहिं तुझ तारणहार ॥ इसमें शंका नहिं हे लगार ॥ पुत्र अंगकुं भंग किया नृप, कनक रथ दुःखकार ॥ जिनोंका छठे अंग विस्तार ॥ चुलणी राणी ब्रह्मदत्त सुतकुं, लाखका महेल मझार ॥ बालवाकियो अगन परिचार ॥ झेलो ॥ सुरिकांता पति झहेर खवायो, श्रेणिकके सुत पिंजरे गायो ॥ भरत बाहुबलि हाथ उगायो ॥ भ० ॥ दुर्योधन महा जंग मचायो ॥ कीयो कुलको संहार ॥ चे० ॥ २ ॥ काचा कुंभ जेसी काया रे तेरी, छिनमें होय विनास ॥ इसीका जूवा हे विश्वास ॥ खावणां पीणां भोग इंडीका, ए सब हे दुःखरास ॥ भोगसें होवे नरकको वास ॥ पावे कष्ट अपार जहां सहे, परवश जमकी त्रास, शाता नहिं हे क्षण भरकी तास ॥ वीते काल असंख्य जहां नहिं, सुख रंच एक सास ॥ बंध रह्यो अष्ट कर्मकी फास ॥ झेलो ॥ भोग हलाहल झहेरसा जाणो, उपमा फल किंपाक वखाणो ॥ अनित्य जाण जगके ठिकाणो, ले लो खरची धर्मको नाणो ॥ ले० ॥ करे सतगुरु हुशियार ॥ अवसर एसा नहिं हे वारं वार ॥ चे०॥ ३ ॥ धन संपत सब कारमी जाणो, ज्यों वीजलि झबकार ॥ कवडी नहिं चलेगा तेरी लार ॥ छिन छिनमां हे छिजे आउखो, ज्यों अंजलीको वार ॥ जोरावर काल लग्यो हे तेरी लार ॥ देव दाणव हरि हर उर चक्री, इंद्र चंद्र अवतार ॥ छोडे नहिं किस्कुं काल करार ॥ वखत वार नहि देखे जोगणी, बाल त

रुण वयधार ॥ देखे नही सुखी दुःखी नर नार ॥ फेलो ॥ दान शील तप नावना नावो, धरम ध्यानको लीजें लावो ॥ धन संपत में मत अकडावो, साधु संतकुं शीश नमावो ॥सा०॥ जो चाहो निस्तार ॥ माया तजि आदरो संजमनार ॥ चे०॥ ४ ॥ निज आतम सम जीव बकाया, जाणो दया जयकार ॥ दया बिन करणी सब वेगार ॥ सत्य वचन निरवद्यसो बोलो, चोरी सर्व निवार ॥ शील नव वाड सहित शुद्ध धार ॥ परिग्रह ममता क्रोध निवारो, लोन कपट अहंकार ॥ राग द्वेष करो सकल संहार ॥ कलह आल पर चुगली निंदा, रत आरत परिहार ॥ माया मृषा मिथ्या तज दुःखकार ॥ फेलो ॥ नरक गति दुःखकार ए जाणी, बोडो इनकुं नव्यजन प्राणी ॥ इण नव जस परनव सुखदाणी, लावणी श्रीगुंदामें जोडाणी ॥ ला० ॥ उंगणीशें तीस मकार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवरक्षा उपदेशनी लावणी ॥

॥ उत्तम कुल अवतार पाय कर, श्रावक करणी धार ॥ तोही पण उतरोगे नवपार ॥ देव नमो अरिहंत नावशुं, गुरु गिरुवा गुण धार ॥ जिनोंकी सेव कियां निस्तार ॥ धर्म केवली आज्ञामें सर्दो, जीव दयातंत सार ॥ सकल शास्त्रमें हे अधिकार ॥ त्रस थावर दो नेद प्ररूप्या, न निने सर्व प्रकार ॥ तोहि पण तरस जीव कगार ॥ फेलो ॥ जाणी देखी निरअपराधी, अथवा तनकुं दे न उपाधि ॥ हणवाकी बुद्धि दिलसुं साधी, हणो मत जिन आज्ञा आराधी ॥ ह० ॥ निर्दय हुइ मत मार, शक्तिसुं अधिक नरो मत नार ॥ उत्त० ॥ १ ॥ गाढो बंधण अंग बेदना, बंध करो मत आहार ॥ अणुकंपा निशदिन दिलमें धार ॥ वापरणो नही अणगल्यो जल, निरर्थक मत करो खुवार ॥ पुंजे अग्नि मत दो नर नार

॥ वासी लीपण लीपणो टालो, जू मांकड मत मार ॥ मञ्जरकुं हण न कुंथुवो निवार ॥ अनंतगुणा पुनि थावरसूं त्रस, पाप तणो नहिं पार ॥ निजात्मसम सब जीव उगार ॥ झेलो ॥ तडको न देणो सब्यां धानके, मोल न लेणो पाप जाणके ॥ सेकणो पीसणो नहिं पाप मानके, जीव उगारो दया आनकें ॥ ज० ॥ तरस त्रास दुःखकार, दानमें अजय दान श्रीकार ॥ उ० ॥ १ ॥ कन्या पशु उंर धरती कारण, जूठ करो परिहार ॥ थापण पर उंलवणी नहिं यार ॥ लांच लेइ कूडी साख जरो मत, मत करो मर्म जहार ॥ जुग खत मांफो मत कुविचार ॥ विना विचारे बोलणो नहिं कुछ, सत्य बडो संसार ॥ सत्यसूं कदी न होवे हार ॥ खातर खणी धाडां मत पाडो, पडकूंची परिहार ॥ धणियाती पडि वस्तु द्यो टार ॥ झेलो ॥ राज दंमे सो काम न कीजें, चोखी बताइ खोटी न दीजें ॥ चोरीकी वस्तु माल न लीजें, कूडां तोलां मापां परहरीजें ॥ कू० ॥ चोरी हे दुःखकार, समज कर त्यागो सब नर नार ॥ उ० ॥ ३ ॥ परनारीको पाप बोत हे, खट मतमें विस्तार ॥ समझ कर ममता दिलकी मार ॥ शील वरत सुखदाइ हे सबकुं, वंछित पूरणहार ॥ ऊपमा बत्रीश सूत्र मझार ॥ अल्पवयें अणसाखी पंचकी, सो वरजो निज नार ॥ तिव्र अभिलाषाको अतिचार ॥ धन मरजादा करी हे तिणसुं, अधकी ममत निवार ॥ परधन देखी मत मुरझो लगार ॥ झेलो ॥ पुण्य विना दोलत नही पावे, निरर्थक मनमें क्यों मुरझावे ॥ धन संपत छिनमें विरलावे, एकलो आयो एकलो जावे ॥ ए० ॥ पुण्य पाप दो लार, पुण्यसें आश फले संसार ॥ उ० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्व अधो तिरछी दिश जावण, मरजादा लो धार, टले ज्यूं आश्रव पंच प्रकार ॥ छविश वोल मरजादा कर लो, कंद मूल तुछ आहार ॥ कर्मादान पंदरा तज महा जार ॥ तज प्रमाद उंर निरर्थक आरत, हिंसा दान निवार ॥ खो

टो उपदेश न दिजें लगार ॥ कुचेष्टा विकथा नहिं कीजें, पाप शस्त्र परिहार ॥ एसा हे श्रावकका आचार ॥ फेलो ॥ तीन वखत सामायिक कीजें, बत्तीस दूषण दूर हरीजें ॥ शत्रु मित्र समजाव गुणीजें, सावद्य कारज सब तज दीजें ॥ सा० ॥ समता चित्तमें धार ॥ जिस्को नफो हे अपरम पार ॥ उ० ॥ ५ ॥ देशावकाशिक नेम चितारो, खट पौषध व्रत धार ॥ जिस्में वर्जो दोष अढार॥ तीन मनोरथ नित्य चितारो, धारो सरणां चार ॥जावशुं प्रतिलो अणगार ॥ एकवीश गुण कह्या श्रावकका,सो लीजो हिरदें धार॥ होय ज्युं आतमको उद्धार ॥ संवत् उगणीशें शाल सेंतिशका,श्री गुंदाके मकार ॥ पोष शुदि अष्टमी शुक्रवार ॥ फेलो ॥ श्रावक करणी करजो जाइ, नरजव चिंतामणि अधिकाइ ॥ वार वार ए अवसर नांइ, चेतो चतुर करो धर्म सवाइ ॥ चे० ॥ कटे करमको खार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ उत्त० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ पुण्यआश्रयी लावणी प्रारंजः ॥

॥ धन्नाशेठ जवमांय, दान दियो जावे ॥ दा० ॥ जिहां बांध्युं तीर्थंकर गोत्र, रुषजजिन थावे ॥ खट दरिसण परसिद्ध, रुद्धि अति पावे ॥ रु० ॥ प्रजु थाप्यां तीरथ चार, अचल गति जावे॥ अजर अमर अविकार, कमी नही कांइ ॥ क० ॥ तुम करो धर्मका काम, सदा सुखदाइ ॥ १ ॥ पारणो पांचशें मुनिकुं, करायो जावें ॥ क० ॥ सो गया सर्वारिथ सिद्ध, जरत नृप थावें ॥ ब लाख पूरव कीयो राज, ब खंमके सांइ ॥ ब० ॥ जवन आरिसाके वीच, जावना जाइ ॥ पाया केवल ज्ञान, सुखें शिव पाया ॥ सु० ॥ करि वेयावच्च जावें, वाहुवलि राया ॥ अपर वली जगमांहि, जरतेश्वर जाइ ॥ज०॥तु०॥ २॥ मेघरथ नृप जवमांय, दया दिल आणी ॥ द० ॥ जा राख्यो पारेवो सरण, धूजतो प्राणी ॥ वदनको मां

स दियो काट, दियो बचाइ ॥ दि० ॥ सर्वार्थसिद्धकें मांइ, उत्कृष्ट स्थिति पाइ ॥ शांति जिनंद सुख कंद, चक्रिपद पाया ॥ च०॥ दी पायो जिन धर्म, धन्य महाराया ॥ पाया केवल ज्ञान, आठुं कर्म घाइ ॥ आ० ॥ तु० ॥ ३ ॥ दीयो इखको पाणी, राजा उर राणी ॥ रा० ॥ हर्ष नाव शंखराय, कपट नहिं आणी ॥ बांध्युं तीर्थंकर गोत्र, नेमि जिनराया ॥ ने० ॥ समुद्रविजयजीका नंद, जगत मन नाया ॥ तोरणसें फिर आया, पशु दया आणी ॥ प० ॥ प्रनु तज कर राजुल नार, संजम पद गणी ॥ जिनकी कीर्त्ति जग मांहि, सदा हे सवाइ ॥ स०॥ तु०॥४॥ धर्मरुचि मुनिराज, मास तप गया ॥ मा० ॥ वे चंपानगरी बीच, विचरता आया ॥ नाग सिरी घर गया, तुंबो बोहोरायो ॥तुं०॥ गुरु आज्ञाथी जाय, बिंडु परठायो ॥ मरती किडियां देख, दया दिल आणी ॥ द० ॥ मुनि जहेर हलाहल पियो, खीर सम जाणी ॥ खी० ॥ तेतीस सागर अमर, मुगति पुरी पाइ ॥ मु० ॥ तु० ॥ ५ ॥ दीयो क्षीरको दान, संगम नव मांइ ॥ सं० ॥ शालिनद्र सौनागी, महा रिद्धि पाइ ॥ सुबाहुदिक दश कुमर, दान परनावें ॥ दा० ॥ पंडा नव के मांय, मुगति सब पावे ॥ कृष्ण श्रेणिक नरनाथ, धर्म दलाली ॥ ध० ॥ जिणें बांध्युं तीर्थंकर गोत्र, सूत्रमें चाली ॥ करी क्षमा परदेशी, पाप ठिटकाइ ॥ पा० ॥ तु० ॥ ६ ॥ दान शील तप नाव, शुद्ध आराधी ॥ शु० ॥ पाया हे सुख अनंत, गोडे उपाधी ॥ एसो जाण सुकृत करो, थें नर नारी ॥ थें० ॥ गोडो पाप प्रमाद, महा डुःखकारी ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य, जिससें सुख पावे ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे सत्य, सूत्रके न्यावें ॥ सहेर पुना की मांइ, लावणी बणाइ, लावणी गाइ ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोल स्वप्नानी लावणी ॥

॥ दोहा ॥ सासण नायक सुरतरु, नयनंजण नगवंत ॥ त्रिश

ज्ञानंद दिनंद सम, प्रणमुं मन धरि खंत ॥ १ ॥ वली प्रणमुं गौतम गुरु, तप संजम दातार ॥ तास प्रसादें वर्णवुं, सुपन सोले अधिकार ॥ २ ॥ पाडलिपुर नगरविषे, चंड्गुप्त राजिंद ॥ बारे व्रत धारक गुणी, परजाने सुखकंद ॥ ३ ॥ चउदें पूरव ज्ञान गुरु, नड्बाहु मुनिराज ॥ समोसस्था उद्यानमें,तारण तरण जिहाज ॥ ॥ ४ ॥ पक्की पोसाने विषे, देख्यां स्वपनां सोल ॥ पूछे नृप कर जोडिने, अर्थ कहो मुनि खोल ॥ ५ ॥

॥ अगडदम अगडदम बजे चोघडां ॥ ए देशी ॥ कल्पवृक्षकी शाखा तूटी,अर्थ सुणो यह स्वपनेका ॥ अब जो राजा होइगा कोइ, संजम वो नहिं लेनेका ॥ डुजे अस्त नया सूर्य अकालें,नेद सुणो अब इस्का सही ॥ पंचमे आरे जन्म लिया हे,उनकुं केवल ज्ञान नहीं ॥ नहिं मनपरजव अवधि पूरण, ए अंधकार नया नारी ॥ नड्बाहु मुनि कहे नूपसूं, पंचमो आरो डुःखकारी ॥ १ ॥ चांद देखा तुम चालणी जेसा,तिसरे सपनाके मांइ ॥ अलग अलग समाचारी होयगी,बोल फरक कुछ दरसाइ ॥ नूत नूतणी नचते हिल मिल, देखा चोथे सुपनमांइ ॥ देव गुरु धर्म खोटा जिनकुं, लोक मानेगा अधिकाइ ॥ दया धर्मपर बहोत जलेंगे, थोडे जैनधरमधारी ॥ न० ॥ २ ॥ पांचमे देखा सर्प नयंकर, वारे फणकर फूंकारे ॥ कितेक साल पिछे काल पडेगा, बारे बरस लग नयंकारे ॥ उत्तम साधु कर संथारा, आतमकारज सारेगा ॥ कायर साधू सो ढीले पडेंगे,हिंसाधर्म विस्तारेगा ॥ खोटा दे उपदेश लोकोकुं, होवेगा केइ घरबारी ॥ न० ॥ ३ ॥ छठे स्वपने देवविमाणकुं, आता सो देख्या फिरता ॥ जिसका अर्थ सुणो तुम राजिंद, दिल अंदर आणी थिरता ॥ जंघाचारण लब्धि धारक, और विद्याचारण जाणो ॥ ए दो लब्धिके हे धारक,एसे मुनिवरकी हाणो ॥ वैक्रिय और आहारिककी लब्धि, ए वी विछेदेगा सारी ॥न०॥४॥

विकसा कमल उकरडी उपर, जिस्का नेद सुनो नाइ ॥ चार वर्णमें माहाजनके घर, धरम रहेगा अधिकाइ ॥ सास्तरकी रुचि रहेगी थोडी, सुणतां निद्रा लेवेगा ॥ स्तवन सझाय उर ढाल चो पाइ,जिस्में बहुत खुश रहेवेगा ॥ प्रतिबोध पण इस्में पा कें,होवेगा संजमधारी ॥न०॥५॥ आज्ञाका चमत्कार आगमें,नेद सुणो इस्का नीका ॥ उद्योत होयगा जैनधरमका, बाकी मिथ्यातम हे फीका ॥ समुदर सूको तीन दिशा पर, दक्षिणदिश मोलो पाणी ॥ दक्षिण दिशपर धरम रहेगा, तीन दिशा रहेगा हाणी ॥ पंचकल्याणिक नये जिणपुरमें, धरम हानि जहां उच्चारी ॥ न० ॥ ६ ॥ दशमें सोनेकी थाली जिसमें, कुत्ता देखा खीर खाता ॥ उत्तमकुलकी दोलत हे सो, जावेगी मध्यम हाता ॥ नट खट सौदा चोर ठगा रा, धूरत होयगा धनवाला ॥ साहुकार सो फुरेगा दिलमें, कहे न शके मनकी ज्वाला ॥ धन संपत सज्जनकी हाणी, सत्यवादी कम नर नारी ॥ न० ॥ ७ ॥ हस्तीके पर ग्यारमे स्वपने, देखा बंदरकुं बैठा ॥ नीच राजा सो मालिक होयगा, उच्च राजा रहेगा हेठ ॥ बारमे स्वपने देखा तुमने, दरिये मरजादा छोडी ॥ बेटा बेटी मात पिताकी, मरजादा राखे थोडी ॥ वहू सासुका न करे गी कहेणां, उलटी दुःख देगी नारी ॥ न० ॥ ८ ॥ लांच ग्राही सो क्षत्री होयगा,वचन देकें नट जावेगा ॥ दगादार विश्वासघाति नर, सच्चे नरकुं ठगावेगा ॥ नला सक्सका आदर कमती, पापी आदर पावेगा ॥ गुरु गुराणीकी चेला चेली,सेवा नक्ति कम चहावे गा ॥ अपनी वडाइ करेगा मुखसें, गुरुकुं होयगा दुःखकारी ॥ न० ॥ ९ ॥ जोत्यां देखी स्वपनें तेरमें, वाछरुके महारथमांही ॥ नादान उमरके धरम करेगा,संजम लेगा उलसाइ ॥ लज्जासुं तप संजम पाली, तप जपमें चित्त देवेगा ॥ बूढा धिठा होयगा धर्ममें, आलस अधिको रहेवेगा ॥ सरखा नहिं सब लडका बूढा,समुचय

भाव कह्या जहारी ॥ भ० ॥ १० ॥ रत्नकी कांति मंदी देखी, च
उदमा स्वपनामें जाणो ॥ भरतक्षेत्रका संत साधके, हेत इकलास
थोडो मानो ॥ क्रोधी क्लेषी अरु अभिमानी,अपनी बात जमावेगा॥
भली सीख जो देगा कोइ, उस्का उगुण बतावेगा ॥ अलपहोयगा
संजमवंता, होयगा बहोतसा लिंगधारी ॥भइ०॥११॥ राजकुंअर
सो चढ्या पोठिपर,देखा स्वपने पंदरमें ॥ राजा जैनधरम तज दे
गा, राचेगा मिथ्याकरमें ॥ बात करे जो सच्चावटकी,उस्की थोडा
मानेगा ॥ जूठेकी परतीत करेगा, खोटेका पक्ष तानेगा ॥ धर्मीपुरु
षका करेगा ठठ्ठा, पापीका आदर भारी ॥भ०॥१२॥ लडते हस्ती देखे
सोलमे,बिन मावत आपस मांहिं ॥ वार वार डुष्काल पडेगा, म
न चहाया वर्षेगा नांहिं ॥ मात पिता गुरु वातके करता,बिच बिच
वात करेगा छोटा ॥ भाइ भाइमें संपत उठी, बोलेगा निर्थक
खोटा ॥ पिता पक्षको आदर उठो, त्रियापक्षसुं करेगा यारी ॥
भ० ॥ १३ ॥ कायदावाला प्रामाणिक न्यायी, गुणिजन थोडा
होवेगा ॥ जगडा टंटा निरर्थक करकें, राजमांही धन खोवेगा ॥
केण न माने भला सक्सकी, फिर पाछे पस्तावेगा ॥ एकविश ह
जार वरस लग राजिंद, एसी रीत कर जावेगा ॥ अरथ सुणी
सोले स्वपनाका, राजा भया दृढ व्रतधारी ॥ भ० ॥ १४ ॥ संव
त उगणीशें शाल सेंतिसका, फागण वदि ग्यारस आई ॥ तिलो
करिख कहे स्वपन लावणी, गाम कडामें बणाई ॥ पंचम आरो दुः
खम नामें, दुःख हे इणमें अधिकाई ॥ धरम ध्यान उर समता रा
खे, उनकुं सुख समजो भाइ ॥ एसो जाणकें करजो सुकृत,उतरो
गे भवजल पारी ॥ भइवाहु०॥१५॥ इति शोल स्वप्नानी लावणी ॥

॥ अथ कालकी लावणी ॥

॥साखी॥छिन छिनमांहे छीज आउखो, ज्यूं अंजलिजल जाण॥

उसबुंदपाणी परपोटो, वार न लागे हाण रे ॥ कर जो हुसियारी, धर्म तैयारी म्हरजो कालसूं ॥१॥ जोवन जातां जेज न लागे, ज्युं नदीको पूर ॥ नदी किनारे तरुवर जैसें, कोई दिन जाये जरूर हो ॥ कर जो हुसियारी ॥ ध० ॥ २ ॥ बाल तरुण वृद्ध सुखी दुःखी उर, राय रंक नर नार ॥ हरि हर इंद्र नरेंद्र सुरासुर, छोडे न काल करार रे ॥ करजो हु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ वैधरत व्यतिपात जोगिणी,कालवास दिशाशूल ॥ काल न देखे बखत वारने, छिनमें करेगे नूल हो ॥ कर जो० ॥ ध० ॥ ४ ॥ सूतां जागतां खातां पीतां, करतां बात बिचार ॥ नहिं न्नरोंसो कालदूतको, जबरदस्त संसार हो ॥ कर जो० ॥ध०॥५॥ फाड पहाड उजाडगाममें, नदी खाल नवाण ॥ खबर नहिं किण गामके उपर, काल ले जावे ताण रे ॥ कर जो० ॥ ध० ॥ ६ ॥ जल अग्नि और फहेर भुजंगम, सिंह रीछ पशु व्याल ॥ खबर नहि रोग सोग उपातवकी, आसीकिण जोगें काल रे ॥ कर जो०॥ध०॥ ७ ॥ जाया सो तो जरूर जावेगा, फूल्या सो कुमलाय ॥ बंधा सो बिखरे इण जगमें, बेम नहि इणमांय रे ॥ कर जो० ॥ ध० ॥ ८ ॥ जो क्षण जावे सो नहिं आवे, कर तां कोडि उपाय ॥ आउखुं समोलक पायकें चेतन, खोवे मत फोकमांय रे ॥ कर जो० ॥ ध० ॥ ए ॥ ज्ञान ध्यान तप जपको उद्यम, करजो सुगुणा लोक ॥ परन्नव खरची साधी जीवने, ली जो नाणो रोक रे ॥ कर जो० ॥ध०॥ १० ॥ ए संसार असार वा वले, ममता मोह निवार ॥ कालको म्हर जो मेटणो तुफने, कर ले सेवा पार रे ॥ कर जो०॥ ध०॥ ११ ॥ उगणीशें अडतीस जेठ कृष्ण पख, तीज तिथि शशिवार ॥ देवटाकलीमें तिलोकरिख कहे, धर्मसुं जयजयकार रे ॥ कर जो० ॥ ध० ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ अथ पांचमा आरानी लावणी ॥

॥ जमी निरस हो गइ,पाणी कम वरसे ॥ पा० ॥ कबही धा

न्य गल जाए, कबहीं जन तरसे ॥ कबहींक उंठी थंम, लोक चित्त चहावे ॥ लो० ॥ कबहींक पडती बहोत, नाज जल जावे ॥ कवहींक गरमी अल्प, रोग उपजावे ॥ रो० ॥ कबहीं घर्म पडे बहोत, आलम गन्नरावे ॥ करो धर्म ध्यान संतोष, सदा सुख कारी ॥ स० ॥ सुणि इस आरेका हाल, करो हुसियारी ॥ ए टेक ॥१॥ वस्ती ऊजड बोत, नहिं धनवाला ॥ न० ॥ जो किस्के मिले धन्न, नहीं रखवाला ॥ होवे तो जीवे नांय, सोग मन ला वे ॥ सो० ॥ जीवे तो निकले कपूत, माया गमावे ॥ अथवा देवे दुःख, ऊगडा केइ लावे ॥ ऊ० ॥ कोइके कुव्यसनी होय, गाती दफावे ॥ कुलमें लगावे दाघ, लजावे नारी ॥ ल० ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ बोले बापके सामे, देवे टुंकारो ॥ दे० ॥ सागीमें नागी अकल, माने कुण थारो ॥ पुत्र पिताकी कहेण, मांहे नहिं रेवे ॥ मा० ॥ सासूकुं हुकममें राखे, वहू दुःख देवे ॥ बेटा हो वे अलग, परणके नारी ॥ प० ॥ करे पितासुं जोरो, माया स ब म्हारी ॥ ऊगडे राजके माय, बोले कुविचारी ॥ बो० ॥ सु० ॥ ३ ॥ कोइके पूत सपूत, नारी दुःखकारी ॥ ना० ॥ दुःख देवे दिन रात, माहा कलहकारी ॥ ठेडी लंकाकी लाय, शरम नहिं त नमें ॥ श० ॥ नांखे लोकके बीच, कंत दुःखी मनमें ॥ जो नारी सुख होय, भ्रात संतावे ॥ भ्रा० ॥ वे ऊगडा टंटा करकें, राजमें जावे ॥ वात वातमें द्वेष, करे अति जहारी ॥ क० ॥ सु० ॥४॥ जो होवे वहोत कुटुंब, विटंब रहे नारी ॥ वि० ॥ घरमें धन हो य अल्प, खरच दुःख त्यारी ॥ दास सम सव कुटुंब, काम करे सारा ॥का०॥ तो पण न भरे पेट, सदा दुःखियारा ॥ कोइ रुसे कोइ रोवे, कोइ मनावे ॥ को० ॥ निशदिन रहे उद्वेग, काल जो खावे ॥ जो नहीं होवे कुटुंब, तोहि दुःखियारी ॥ तो० ॥ सु० ॥ ५ ॥ भाइ गोत्रीसें वेर, हेत करे परसुं ॥ हे० ॥ गुणकी नहीं

कछु परख, राजि आमंबरसुं ॥ अल्प संपदामांहे, करे मगरूरी ॥ क० ॥ धर्मी नरपें द्वेष, निंदा करे कूरी ॥ गुमास्ता परपंची, शेठ धन खावे ॥ शे० ॥ शेठको काढी दीवालो, आप नग जावे ॥ भ ली शीख जो देत, देत तस गारी ॥ दे०॥ सु० ॥६॥ छोटे बडेकी रीत, कायदो नांही ॥ का० ॥ मनका ठाकर बणे, करे अकडाइ ॥ वीच बीचमें करे बात, जाणे में श्याणो ॥ जा० ॥ वचन दे कें फिर जाय, ज्यौं तेली घाणो ॥ मुख मीठो चित धिठो, उससें दिल राजी ॥ उ० ॥ कठण कहे हित वेण, उससें नाराजी ॥ पिता पक्षसुं न हिं हेत, नारी पक्ष यारी ॥ ना० ॥ सु० ॥ ७ ॥ दया दानके मांहे, ख रचतां रोवे ॥ ख० ॥ ख्याल गोठके मांही, वृथा धन खोवे ॥ साधु संतके पास, जातां दिल सरमे ॥ जा० ॥ मिजलसमें अण तेड्यो, जाय कुकर्मे ॥ धर्म काममें पाछे, पाप अगवानी ॥ पा० ॥ खावणमें तैयार, तपमें करे कानी ॥ त० ॥ प्रभु गुण गातां लाज, ख्याल अधिकारी ॥ ख्या० ॥ सु० ॥ ८ ॥ करकें कन्या महोटि, दाम लिया चहावे ॥ दा० ॥ माथे देणो कर कें, जाति जिमावे ॥ परमदेवा धिदेव, जिनकुं नहिं ध्यावे ॥ जि० ॥ भेरव भवानी भूत, पीर म नावे ॥ गुरु गिरुवा निर्ग्रंथ, दाय नहिं आवे ॥ दा० ॥ लोभी ठ गारा धूर्त, संत चित्त चहावे ॥ धारे खोटी शीख, अछि लगे खा री ॥ अ० ॥ सु० ॥ ए ॥ दया धरम पर प्रेम, दिलमें नहिं राखे ॥ दिल० ॥ हिंसा धरममें राचे, कूड मुख भांखे ॥ भरे सायदी जूठ, प्रपंची पापी ॥ प्र० ॥ दगादार कृतघ्न, वहोत परतापी ॥ निंदा विकथा वात, करकें हरखावे ॥ क० ॥ जो कहे सास्तर बोल, तो झोकां खावे ॥ जप तप करणी वात, लगे नहिं प्या री ॥ ल० ॥ सु० ॥ १० ॥ किस्के लेणेका दुःख, किस्के देणे का ॥ कि० ॥ किस्के गेणेका सोच, किस्के रेणेका ॥ किस्के खाणेका दुःख, किस्के दाणेका ॥ कि० ॥ किस्के जाणेका दुःख,

किस्के लाणेका ॥ किस्के पिताका दुःख, किस्के माईका ॥ कि० ॥ किस्के बहेन सुत दुःख, किस्के नाईका ॥ किस्के धनकी फिकर, किस्के बीमारी ॥ कि० ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोइके शत्रुका सोच, कोइके साजनका ॥ को० ॥ कोइके परचक्री दुःख, कोइके राजनका ॥ किस्के खेतीका दुःख, कोइके वतनका ॥ को० ॥ कोइके चोर हाकम, धाड अगनका ॥ कोइके पडोशी दुःख,दुष्ट जन जलका ॥ दु० ॥ कोइके अकलका दुःख, कोइके दल बलका ॥ नहिं संपूरण सुखी, कोइ नर नारी ॥ को० ॥सु० ॥१२॥ जो कोइ माने सुख,सकल मुज मांइ ॥ स० ॥ सांज तलक कोइ दुःख, आवे नसतांइ ॥ जो नहिं मानो वात, देखो अजमाइ ॥ दें० ॥ ए सास्तरकी वात, विचारो नाइ॥ पंचम कालका हाल,बडा हे बंका ॥ ब० ॥ तिलोकरिख कहे साच, इस्में नहिं शंका ॥ कलिजुगकी निसाणी, कही सुविचारी ॥ क० ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ चेतनकर्मकी अदालत लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ समरुं शासन स्वामिकुं, त्रिकरण शीश नमाय ॥ झगडो चेतनकर्मको, न्याव कहुं चित्त चहाय ॥१॥ अथ धोसो ॥ समरुं गुणधर संघपति, जैन शुद्ध जति, शारदा सति, असल द्यो मति, पुण्यकी रति, वृद्धि करो अति, करो कर्म कति, देवो सिद्ध गति, चाहुं नगति, अनंत शक्ति जी ॥ १ ॥ अथ घन ॥ धर्मकी बनी कचेरी नारी, सिंहासन धीजे रूप धारी ॥ बेठे प्रभु जिस पर हुसियारी, सनामें जुडे तीर्थ चारी ॥ अदालत करे सत्त जहारी, खोटेकी नहिं हे कबु यारी ॥ दंगा जीव चेतनका हे वंका, न्याव तुम सुण लो निःशंका जी ॥१॥ अथ लावणी ॥ मेरी धन दोलत्त जमीन, अचल दिलवाणा ॥ अचल दिलवाणा ॥ तुम करो अदालत मेरी, ज

गतपति राणा ॥ ए टेक ॥ खुद चेतन मुदेइ,बणा हे जहारी ॥ब०॥ आतुं कर्म मुद्दाल, कपट नंमारी ॥ धीरजका इष्टांप, शोध कर लाया ॥ शो० ॥ सझाय ध्यान मजमून, सच्च बणवाया ॥ अर्जी आन गुजारी, क्षमा तलवाणा ॥ क्ष० ॥तुम० ॥ १ ॥में जाता शिवपंथ, कर्म दिया घेरा ॥ क० ॥ धोका दे मिले संग, लुंटा सब मेरा ॥ ल क्ष चोरासीकें बीच, मोकुं अटकाया ॥ मो० ॥ फिर राग द्वेष दृढ बंध, मोकुं बंधवाया ॥में पाया डुःख अनंत, नेद नहिं जाणा ॥ने० ॥ तुम० ॥ २ ॥ ए टंटा हे बेपार, बोत हे जूना ॥ बो० ॥ में रहा नोलपके मांहि, माफि करो गूना ॥ मोय मिले नहिं वकील, सच्चे का नूना ॥ स० ॥ ए ऊघडा बढा बहोत, दिने दिन दूना ॥ में तो न या बलहीण, बढे कर्म दाणा ॥ब०॥तु०॥३॥ अब खुली कछु तकदीर, पुण्य परनावें ॥ पु० ॥ जाणा में हुं सच्च, हारुं नहिं न्यावें ॥ सत्तावीश गुणधार, वकील कानूना ॥ व० ॥ जाणे अर्जकी मर्ज, बहोत मजमूना ॥ में किया जाकें मिलाप, बहुत हरखाणा ॥ब०॥ तुम० ॥ ४ ॥ उन देख शास्त्रका न्याय, नेद बताया ॥ ने० ॥ में जाना कर्मोंका जुल्म, मसोदा बनवाया ॥ तुम बिन करें कुण न्याय, अर्जी में लाया ॥ अ० ॥ सुमति गुप्ति ए आठ, गवा बुलवाया ॥ शील असेसर चौधरी, उस्कुं बुलवाणा ॥ उ० ॥ तु० ॥ ५ ॥ अब अर्जी गुजरी उस वखत, हुकुम फरमाया ॥ हु० ॥ प्रभु ज्ञान चपडासी नेज, मुद्दाल बुलवाया ॥ सो बोले हम संग, कछु नहिं दावा ॥ क० ॥ चेतन ऊगडे जूठ, खलकमें गवा ॥ पंच प्रमाद विखवाद, गवा संग आणा ॥ ग०॥तु०॥ ६ ॥ हम घर आया यह, उपत चलाइ ॥उप०॥ खाया हे कर्जा बहोत, हमसें उमाइ ॥ राचा नोग विलास, मन बच काया ॥ म० ॥ घटा नफा नहिं जाना, कर्जा चढाया ॥ जब हम मंगण गये, तबे गन्नराणा ॥ त० ॥ तु० ॥ ७ ॥ हाजर खडे गवाइ, हाल सुणाया ॥ हा० ॥ त

ब चेतन दे उत्तर, सुणो जी महाराया ॥ इमानदार हे सच्चे, मेरे गवाइ ॥ मे० ॥ जाणत सबे जिहान, कूठ कछु नांइ ॥ बुडा दिनी मेरी वतन, अखुट धन नाणां ॥ अ० ॥ तु० ॥ ७ ॥ करम फरे बीदार, बहोत दुःखदाना ॥ब०॥ लूंट मचाइ बहुत, किया हेराना॥ लक्ष चोरासीमांहे, बहोत नमाया ॥ ब० ॥ बहोत कराया स्वांग, किया मुज काया ॥ लूंटे हरि हर इंद, चंद नरराणा ॥ चं०॥ तु० ॥ ए ॥ लूंटे केइ विद्वान, बडे पंमितकुं ॥ ब० ॥ मेले नरकके बीच, बहोतसें नितकुं ॥ कहा पुण्यका नाम, पाप करवाया ॥पा०॥ कर कर हिंसा काम, धर्म बतलाया ॥ बहोत फेलाया जाल, जिससें ललचाणा ॥ जि० ॥ तुम० ॥ १० ॥ एसा करो इनसाफ, चेतन दरसावे ॥ चे० ॥ अब करमोंकी अपील, होणे नहिं पावें ॥ जन्म मरण दुःख रोग, सोग मिट जावे ॥ सो० ॥ ज्ञान दरिसण सुनसफी, करकें समजावे ॥ चेतनका करजा करो अदा, नया फरमाणा ॥ न० ॥ तुम० ॥ ११ ॥ असल करज जो देनां, होता कमौंका ॥ हो० ॥ चेतनसें दिलवा दो, मिटे सब धोका ॥ तपका नाणां रोक, दिलवाया जहारी ॥ दि० ॥ शुद्ध संजम जमानत, करी हे तब सारी ॥ नया करजासें अदा, सदा सुखियाणा ॥ स०॥ तु० ॥ १२ ॥ अदल न्याय किया नाथ, हटाया तस्कर ॥ ह० ॥ चेतनकुं मिलि फारगती, रह्या दिल हस्कर ॥ उगणीशें अडतीस शाल, घोडनदी लश्कर ॥घो०॥ कीनी लावणी एह, समज दिलव्स्कर ॥ तिलोकरिख कहे सार, समजो कछु स्याणा ॥स०॥ तु०॥ १३॥

॥ अथ कर्मपच्चीशीकी लावणी ॥

॥ चैत पिछले पाख, रामनौमीको जन्म लियो रे ॥ ए देशी ॥

॥ करमकुं मत वांधे न्नाइ रे ॥ क० ॥ करम रेख नां टले करो कोई, लाखौ चतुराई ॥ ए टेक ॥ श्रीआदीश्वर अंतरायसुं, वरसें

अहार पाया ॥ वर्धमान प्रनु कर्म जोगसुं, ब्राह्मणीकुखें आया ॥ बातया इंदर जब जानी ॥ बा० ॥ हरण कराये मेल्या खत्री कुलमें, त्रसलादि राणी ॥ नयो ए अचरिज जगमांइ रे ॥ न०॥क०॥१॥ वारा बरस ठ मास संजममें,करि डक्कर करणी ॥ नर सुर तिरजंच दिया परीसा, वेदना हद बरणी ॥ उपसर्ग गोसालक दिया रे ॥उ०॥ लोहीगण ठ मास प्रनुके, केवलमांहे रीया ॥ खुलासा सूतर केमांइ रे ॥खु०॥क०॥२॥ कपट प्रनावें मल्लिजिनेश्वर, वेद धस्यो नारी ॥ ॥ सागरचक्रीकें साठ सहस्र सुत, गंगा लावण धारी ॥ काठा देवीने तोड नाख्यो रे ॥ का० ॥ सबही मरण पाया इक साथें, बाकी नहिं राख्यो ॥ नृप सुणचिंता अति आई रे ॥ नृ० ॥ क० ॥ ३ ॥ सनतकुमार चक्रीके तनमें, रगतपीती ठाइ ॥ संजम ले कियो मास मास तप, सातसें वर्ष तांइ ॥ आठमो चक्री मान लायो रे ॥ आ० ॥ सातमो खंम साधवा चडियो, करम उदय आयो ॥ मस्यो सो सागरमें जाइ रे ॥ म० ॥ क० ॥ ४ ॥ राम लठमण सीता सतिसंगें, विपत सही वनमें ॥ संबूक सूर्ज हंस खड्ग साध्यो, मास्यो गयो ठिनमें ॥ बाप चढ आयो हरि सामे रे ॥बा० खर दूषण त्रिशिर रण लडतां, तिनूं मरण पामे ॥ कुमतमति एसी बण आइ रे ॥कु०॥क०॥५॥ साहसक्त तारासुं मुरठो,विद्या मोत लीवी॥ लंकपति महावंककर्मसें,सीताहरण कीवी ॥ रामजी लंका चढ आया रे ॥ रा० ॥ लक्ष्मणवीर महाबलवंता, दश मस्तक घाया ॥ बिनीषण राजगादि पाइ रे ॥ बि० ॥ क० ॥६॥ श्रीमुनि सुव्रत शिष्य आग्या बिन,खंधकादिक जाणी ॥ पांचसें रिख गया दंमक देशमें, पीलाणा घाणी ॥ खंधकजीके आयो क्रोध नारी रे ॥ खं० ॥ मंमकी देशके बाल्यो असुर नव, विराधिक पद धारी ॥ बारमो चक्री नरक जाइ रे ॥बा० ॥ क० ॥ ७ ॥ पांमव पांच महा बलवंता, हारी द्रौपदी नारी ॥ वारे बरस लग वन वन नटक्या,

विपता सहि जारी ॥ किचकको कीचो कर नाख्यो रे ॥ कि० ॥ कौरवसुं कियो जुद्ध जोरावर, आपणो राज राख्यो ॥ द्रौपदी ले गयो सुर आइ रे ॥ द्रौ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पांडव कृष्ण गया खंडधा तकी, पद्मोत्तर आयो सामें ॥ कर्मजोग पांडव महाबलिया, रणमें हार पामे ॥ नृसिंह रूप धार्यो गिरिधारी रे ॥ नृ० ॥ द्रौपदी लाया गंगा उतरिया, रुस्या हे मुरारी ॥ दिसोटो दियो पंडव तांइ रे ॥ दि० ॥ क० ॥ ए ॥ कैदकेमांही जाया कृष्णजी, वध्या गोकुलगामें ॥ कंस पछाड सोरिपुर छोडी, रह्या द्वारकाग में ॥ जरासंध मार्या हे महाबंका रे ॥ ज० ॥ तिन खंडमें आण मनाइ, दिया जीतडंका ॥ द्विपायण रीसज नराइ रे ॥ द्वि० ॥ क० ॥ १० ॥ द्वारकानगरीमें दाहज दीनो, मात पिता तांइ ॥ रथमें वेगाय चल्या हरि हलधर, द्वार पड्यो आइ ॥ गया चल करतुं बी बन दोइ ॥ ग० ॥ मृगजरोसें जरा कुमरकें, बाण मार्यो जोइ ॥ पानी बिन हरि मृत्यु पाइ रे ॥पा०॥क०॥११॥ नल राजा दमयंती राणी, पाइ दुःख जारी ॥ हरिचंदराय तारादे नीच घर, माथे जर्यो वारी ॥ कुकडो चंदराजा कियो ॥कु०॥ रायचंद फिर वीरमतीको, रणमें प्राण लियो ॥ करणी फल छुटे नहिं कांइ रे ॥क०॥क० ॥ १२ ॥ नागसीरी धर्मरुचि मुनिकुं, कडवो तुंबो दीयो ॥ दुइ फजीति नरक सिधाइ, अनंत दुःख लियो ॥ जइ सुकुमालिका सा नारी रे ॥ ज० ॥ पंच जरतारी हुई कर्मसुं, लियो अपजस जारी ॥ समझो ए मतलब मनमांइ रे ॥स०॥क०॥१३॥ काचराकी खाल उतारी पूरवजव, हर्ष धर्यो मनमें ॥ तेरे क्रोड जव पाछे खंधकजीकी, खाल उतारी वनमें ॥ पुंडरिक शेष वर्ष संजम पाली रे ॥पुं०॥ डगीयो तीन दिवसमें मर कर, नरक गयो चाली ॥ कर्मको ख्याल अजब जाईरे ॥ क० ॥ १४ ॥ महापातकी राय प्रदेशी, संच्या नरक खाता ॥ केशी मुनि उपदेश सुणीने, श्रावक व्रत राता ॥ त

पस्या बेलें बेलें किवी रे कीवी ॥ दिन गुणचालीस मांही सुकृत कर, सुरगति जिण लीवी ॥ विचित्रगति कर्मोंकी गाई ॥ वि० ॥ क० ॥१५॥ वीरप्रभुको कुशिष्य कहियें, गोसालक जाणो ॥ अष्टांग निमित्त है बोल प्ररूप्या, जिन ज्यौं सो युं जाणो ॥ बडाई करी मुखसें भारी रे ॥ ब० ॥ मरणसमे जिण कर्मजोगसुं, आतमा धिक्कारी ॥ बारमे स्वर्गं उपज्यो जाई रे ॥ बा० ॥ क० ॥ १६ ॥ महावैराग्य परिणामें संजम, लीधो उलसाई ॥ क्षत्री राजकुमर जमाली, वीरजीको जमाई ॥ करम बस कुसरधा राच्यो रे ॥ क० ॥ श्रीजिनवचन उत्थापन कर कें,खोटो मत खांच्यो ॥ समझायो समज्यो कबु नांई रे ॥स०॥क०॥१७॥ वसुदेवसरखे जो पिता और,देवकी जैसी माता ॥ नेम प्रभु शिष्य गजमुनिवरके, हरि हलधर भ्राता ॥ देख सुसराकुं रीश आई रे ॥ दे० ॥ सिरपर बांधी पाल माटीकी,खीरा दिया ठाई ॥ भुक्त्या बिन छूटे कबु नांई रें ॥भु०॥क० ॥ १८ ॥ चंदनराय मलयगिरि राणी, सायर नीर भाई ॥ चोर ज्यौं ठाने निकल्या घरसें, दौकत बहु पाई ॥ कर्मबस चारूंही बिछडीया रे ॥ क० ॥ रातें चोर आय धन हरियो, बन बन रडवडिया ॥ बणजारो ले गयो माइ रे ॥ ब० ॥ क० ॥ १९ ॥ जातिमदसूं महत्तरके घर, जन्म लियो जाइ ॥ पुत्रपणे रह्या साहुकार घेर, आठ कन्या व्याही ॥ परण्या फिर श्रेणिककी बेटी रे ॥ प० ॥ सुनार घरे मेंतारज रिख शिर, बांध बांधी सेठी ॥ वेदना पाई अधिकाई रे ॥ वे० ॥ क० ॥ २०॥ मयणरेहा वश मोह्यो मणिरथ, बलपणो विचार्यो ॥ रण जीती आयो सुण पापी,जुगबाहु मार्यो ॥ आधिनिश निकल्यो मर आणी रे ॥ आ० ॥ सर्प भइयो मरियो वनमांहि, नरकगति ठाणी ॥ मयणरेहा वनमें पुत्र जांइ रे ॥म०॥क०॥२१॥ भगवंत भगत श्रेणिके कूणिक, पिंजरामें दीयो ॥ तीलपूट खाईने मरिया, नरकवास कीयो ॥ कुणिक लेऐं हार

हाथी तांई ॥कु०॥ एक क्रोड ने एंसी लाख नर, मरिया रणमांइ ॥ सार पण निकल्यो कछु नांइ रे ॥ सा०॥क०॥२१॥ मृगापुत्र सगड अनंग सेण, चिलाती चोर जाण्यो ॥ दुःख अनंतां पाया कर्मसुं, सूत्रमें वखाण्यो ॥ केइ तो कथामांहे जहारी रे ॥ के०॥ जिनचक्री हरि हर ईश दिक, कोइसुं नहिं यारी ॥ गोटा तो को सी गिणत मांइ रे ॥ गो० ॥ क० ॥ २३ ॥ चार ज्ञान चउदे पूरवधर, जेलो चारित्र पाइ ॥ पढ कर सो गया नरक अनंता, कह्यो सूत्रमांहि ॥ ईइ जीव उपजे थावर जाइ रे ॥ई०॥ एसी समज कर धूजो कर्मसुं, शंका कछु नांही ॥ बात ए जिनवर फरमाइ रे ॥ बा० ॥ क०॥२४॥ उगणीशें अडतीस वैशाख शुदि छठ, दक्षिणदेश जाणी ॥ सेकाकाल रह्या मिरिगाममें, भविजन हित आणी ॥ कर्मफल दृष्टांत बताया रे ॥ क० ॥ तिलोकरिख कहे तोड्या कर्म सब, सो शिव सुख पाया ॥ धर्म हे सदाहि सुखदाइ रे ॥ ध० ॥ क० ॥ २५ ॥

॥ अथ मूर्ख उपर लावणी ॥

॥ बालक संगत करे सो मूरख, काम विना पर घर जावे ॥ मात पितादिक बडे जो उनके, देत गालि नहिं सरमावे ॥ विना कामें सो बडेके सामे, वार वार इत उत फिरता ॥ विना हुंकारे वात करे शठ, परकुंइ दान मना करता ॥ प्रछन्न वात कहे त्रिया के आगें, नीच निगुणा नरसुं यारी ॥ एसें मूरखसें दूर रहो तुम, जो चहाते शोभा सारी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ धर्मकथामें चित्त न राखे, के ऊंघे के वात करे ॥ आपसें अधिक उससें अकडाइ, नरपतिका विश्वास धरे ॥ मरके ठिकाने जावे अकेला, गुरुका अवगुण वाद कहे ॥ अपणी पहूंच न देखे जरालर, वडे वडेकी होड चहे ॥ सहेज वात पर हाथ चलावे, विन मतलब देवे गाली ॥ ए० ॥ २ ॥ विण जाणेसें करे मस्करी, देन लेन घर साथ करे ॥ शुकन वर्जे

ता जावे अगाडी, बदल जाय जब गरज सरे ॥ नरी सजामें मी सर दाखे, विना दोष कडवुं बोले ॥ परनुकशानी देखि आणंदें, सत्य फूठ पक्ष नहिं तोले ॥ अपनी बडाइ करे पंमित बिच, नली शिक्षा लागे खारी ॥ ए० ॥ ३ ॥ अजीरण पर जमे रसोइ, ल कड फाडे जहां खडा रहे ॥ चाडि चूगल अदि सोनीका दिल,विस वास धरि मन मांहे चहे ॥ धर्मी पुरुषकी करे निंदना, सज्जन रु स्यो नहिं मनावे ॥ पाणी पीता हसे मूढ नर, रस्ते चलतां रोटी खावें ॥ लडका चेला रखे लाडमें,निरर्थक तोडे तरु मारी ॥ए०॥ ॥ ४ ॥ दान दे कें मगरुरी करे उर, कियो उपगार न माने रति ॥ हलकी बोली बोले परकुं, संतापे दुःखी साधु सती ॥ सुलटी कहें तां उलटी माने,हांसिकी वात पर रीश नरे ॥ छती शक्ति उपगार करे नहिं, दया दानमें शर्में मरे ॥ विनां सुहातो गायन गावे, वा त करे विन विचारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ विशवास दे कें बदल जावे उर, जूठा जूठा सोगन खावे ॥ अपना धर्मकी करें हीनता, पा प कर कें दिल पोमावें ॥ दो नर वात करे उसि ठामें, कान त्री जो नर लगावे ॥ प्रछन्न वात करें प्रगट परकी, त्रिया पर हाथ्ज उठावे ॥ रांम नांमसुं करें अडी उर, बद परेजी करे बिमारी ॥ ए० ॥ ६ ॥ गर्व करे तन धन जोबनका, बुद्धि नली नहिं फेलावे ॥ ज्ञान ध्यानको करे न उद्यम, विकथामें दिल रमावे ॥ तप ज प करतां आलस अधिको, पाप कर्ममें अगेवानी ॥ नर नव रत न फोकटमें खोवें, ए सब हे मूरख प्रानी ॥ तिलोकरिख कहे सत संगतसुं, वेगें तरो नवजल पारी ॥ ए० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ कक्का बत्तीसी उपर लावणी ॥

॥ कक्का कर्मकी अजब गति हे, मत करनां तुम नर नारी ॥ हस्तें हस्तें बांधे जीवडा, जुगते तब मुसकिल नारी ॥ छिनमें रा

वका रंक बणावे, छिनमें रांकको राय करे ॥ लक्ष चोराशी चार गतिमें, नाना विध जीव रूप धरे ॥ इंद्र चंद्र नरेंद्र सुरासुर, किस सुं नहिं रहेक यारी ॥ क० ॥ १ ॥ खख्खा खजाना संगी धर्मका, आगेकुं सुखदायक हे ॥ धर्म मूल क्षमा अगेवानी, जगतपतिका वायक हे ॥ गग्गा गर्व मत करो सियाना, गुरु कहेणी करो निःशंका ॥ गर्व किया राजा रावणने, खोय दीनी दममें लंका ॥ गर्व रह्या नहिं किसका जगमें, मगरूरी हे दुःखकारी ॥ क० ॥ २ ॥ घघ्घा तुं घर जो मानत मेरा, सो नहिं हे संगी तेरा ॥ तुं परदेशी चार दीनोंका, क्युं करता मेरा मेरा ॥ नन्ना नरमाइ रखना दिलमें, नरमाइ जगमें प्यारी ॥ करडा निसरडा वाजे जगमें, पावे नव नव दुःख भारी ॥ एरंड वृक्ष फल उपमा उसकें, धर्मी सबससुं नहिं यारी ॥ क० ॥ ३ ॥ चच्चा चर्चा तुम कर लो धर्मकी, कर्म भर्मकी खबर पडे ॥ मूढसुं वात करो मत बंदे, राग द्वेष उर क्लेश बढे ॥ छछ्छा छिन छिन छिजे उमर सब, किस्के भरोसें तुं अकडे ॥ काल अचानक एकदम अंदर, जेसें बाज तित्तर पकडे ॥ एसी समझकें छोड दे ममता, सतगुरु कहे रख हुशियारी ॥ क० ॥ ४ ॥ जज्जा जरासी कहुं हकीगत, जरा आया जोबन जावे ॥ जोर हवे जर जोरु जमी जन, तेरे संग कोइ नहिं आवे ॥ एसी जाण करो जैनधर्मकुं, जीवजन्ता बिन हे खुवारी ॥ झझ्झा झूठ मत बोलो बंदे, झूठी हे ममता माया ॥ झूठा लेणां झूठा देणां, झूठ झूठमें ललचाया ॥ आगूंका डर रख कर भैया, झूठ वात दे नीवारी ॥ क० ॥५॥ नन्ना नीम व्रत कर लो पहेली, जब लग बूढापा नहिं आवे ॥ रोग वदनमें आवे नहिं उर, इंद्रिका पूरण बल पावे ॥ टट्टा टेक तुम रखो धर्मकी, जब लग जीव रहे तनमें ॥ पापकी टेक करो मत कबहुं, मिले बदनामी जगजनमें ॥ सुभूमचक्री रावण चक्री, खोटी टेक लह्यो दुःख भारी ॥ क० ॥ ६ ॥ ठठ्ठा ठाठ

दुनीयांका बंदे, इंद्र धनुष बादल जेसा ॥ ठग पांचूंका संग न कर नां, परभवका रख अंदेसा ॥ फफ्फा फंक मत रखो दीलमें,साफीकी सुधरे करणी ॥ जिस्की बुराइ जिस्कुं पछाडे, जाय पडेगा नर्क वे तरणी ॥ बाप मारणकी दिलमें विचारी, नंदिवर्धन कुमर गयो मा री ॥क०॥७॥ ढढ्ढा ढूंढ ले सार वस्तुकुं, देव निरंजन जसवंता ॥ गुरु निर्ग्रंथ उर धर्म दयामें, तीन रत्न ए शिव कंता ॥ नन्ना नमो नित अरिहंत सिद्धकुं,आचारज उवझाय सदा ॥ साधु साधवी सं जमी सरणो,लेतां दुःख नहिं आवे कदा ॥ इनसुं जो रखे करडाइ, वे दुःख पाते गति चारी ॥क०॥८॥ तत्ता तत्त्व नवका करो निर्णय, त्रणकुं जाणो त्रणकुं छंडो ॥ संवर निर्झरा मोक्ष ए तीनुं, इनकुं शुद्ध मनसुं मंडो ॥ थथ्था थिर नहिं इंदर चंदर, अस्थिर ग्रह नक्षत्र तारा ॥ थिर नहिं इंद्र चंद्र हरि चक्री, सकल चराचर संसारा ॥ जन्मे सो मरे फुले सो कुमलावे,रखो धर्मकी हुशियारी ॥ क० ॥९॥ दद्दा दया नित पालो सियाना, दान देनां दिल हरखाइ ॥ विषय कषाय इंद्रीकुं दमन कर, ए करणी हे सुखदाइ ॥ धध्धा धर्मका सोदा कर लो,ज्ञान ध्यान तप जप सच्चा ॥ ए करणी हे स्वर्ग मो क्षकी, इस बिन सब सौदा कच्चा ॥ नन्ना नाम लो प्रभुका हर्द म, जो चढाते आतम तारी ॥ क० ॥ १० ॥ पप्पा पुण्यसें पाया नर भव, आरजदेश उत्तम कुलमें ॥ लंबो आउखो जोग मुनिको, क्युं तुं पडा हे जग भुलमें ॥ फफ्फा फूल मत तन धन देखी, चार रोज चटको मटको ॥ आखरमें सब जानां छोड कें, एसी सम झके दिल हटको ॥ बब्बा बडाइ जिनकी खलमें, रखे धर्मकी तै य्यारी ॥ क० ॥ ११ ॥ भभ्भा भलाइ कर लो भइया, पुण्य पाप संग आवेगा ॥ धरा रहेगा माल खजाना, जस अपजस रह जावेगा ॥ मम्मा मान ले मुनिवर कहेणी,मन वंदरकुं कर वशमें॥ मान माया मोह ममत मेट दे, आयु छिजे ज्यों जल पसमें ॥ मि

त्रपणुं कर छक्कायासुं, अजयदान हे सुखकारी ॥ क० ॥ ११ ॥ यय्या याद रख चर्चा धर्मकी, या देही मुश्कल पाया ॥ एसी ब खतमें धर्म किया नहिं, सो भव भवमें पस्ताया ॥ ररा रोष मत करो किसीकुं, रोष किया तप फल हारे ॥ खंधक द्वीपायन रोष कियासुं, अनेक कोटि प्राणी मारे ॥ जन्म मरण दुःख लहेगा ज गमें, तपकरणी सो गया हारी ॥ क० ॥ १२ ॥ लल्ला लोजकी लाय बुरी हे, लालच वश दुःकृत करते ॥ हत्या करे बोले मुख जूठ, थापण दाबे परधन हरते ॥ ववा वाणी वीतराग प्ररूपी, सच्चि जाणि व्रत आदरनां ॥ विना धर्मको मूल जमा कर, आ ठ कर्म वशमें करनां ॥ शश्शा सत्य हे सार सकलमें, साचकुं आं च न लगारी ॥ क० ॥ १४ ॥ षष्षा करो षट् कायकी रक्षा, निज आतम सम सब प्राणी ॥ दुःख मरण सो कोइ न चहाते, दया भगोती सुखदाणी ॥ सस्सा ए संसार समूदर, विषय जोग कीचड जाणी ॥ अब थब आठ करमका इसमें, अनंत वर्गणाका पाणी ॥ धर्म जाजमें बेठ सियाना, उतर जाउ भवजल पारी ॥ क० ॥ १५॥ हहा हाल ए सुन के हियामें, हरदम श्रीजिनकुं भ जनां ॥ हेत रखो छक्काय जीवसें, हाय हरामी हठ तजनां ॥ ह रो क्रोध माया मद तृष्णा, पाप करतां दिलमें लजनां ॥ दया दान सत्यशील अमम, धर्म क्रिया करतां गजनां ॥ इण भवमें तन धन जन संपति, परभवमें लहो जयकारी ॥ क० ॥ १६ ॥ उगणीशें अडतिस वैशाख उज्जल पर्व, तिथि वारस दिन बुधवा रें ॥ तिलोकरिख कहे ककाबत्तीसी, सुणकें भविजन अवधारे ॥ तो उनकुं सुमति शुद्ध आवे, मिथ्या भर्म सो भग जावे ॥ जाने अथिर संसारकी रचना, जैनधर्म शरणो चहावे ॥ कर्म भर्मको मर्म विचारी, परम पद होय अविकारी ॥ क० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ केदी उपर भावदृष्टांतनी लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ इस दुनियामें जीव सो, भूल रहे भर्ममांय ॥ समजानेके वास्ते, कहुं दृष्टांत बणाय ॥ १ ॥ प्रथम नमुं जिनराज चरणकुं, ए देशीमें छे ॥ इस दुनियाके अंदर भैया, केदी खाना भयंकार ॥ जीसमें केदी पडे अपार ॥ एक रोजका जक्रि सुनो सब, सफी लगी री महा भार ॥ केदी कोइ जागे सोउ सवार ॥ उसी बखतमें बिजली चमकी, देखे दृष्टि पसार ॥ पहेरायत सोते निंद मझार ॥ दोहो ॥ केदी कहे सुणो यार, अब वखत मल्या श्रीकार ॥ जेज करो मत पलककी, निकलो तुरंगके बहार ॥ गफलतसें होवेगे खूब खुवार, समजके निकल चलो हुशियार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ कोइ कहे तब तनक निंद ले, फेर चलेंगे यार ॥ इरादा हेगा हमारा सार ॥ लेट रहे सो रहे केदमें, पस्तावे दिल सोय ॥ गुजारे रोज सबे रोय रोय ॥ जो निकले सो पहोंचे घरकुं, माने मोज अपार ॥ मिला जिनकुं अपना परिवार ॥ दोहो ॥ इस दृष्टांतें पड रहे, मोह तुरंगके मांय ॥ जगतवासी सब दुःख सहे, लक्ष चोराशी मांय ॥ रस्ता हे जैनधर्म सुखकार ॥ स० ॥ २ ॥ मोह कर्मकी भींत पडे कबी, विजली दमक अवतार ॥ इसीमें चेते भवि नर नार ॥ छूटे मोहके केद खानासें, जावे भुगत मझार ॥ मिले निज गुण संपत परिवार ॥ अजर अमर अविनाशी निरंजन, सिद्ध सदा जयकार ॥ जिनोंके नाम लियां निस्तार ॥ दोहो ॥ कर्म भर्म दूरे रहे, परम पद निराकार ॥ धर्मपंथ साधन किया, वरतें मंगल चार ॥ आराधो समदृष्टि नर नार ॥ स० ॥ ३ ॥ विषय कषायमें मस्त रहे केइ, दिलमें रखे अहंकार ॥ नहिं हे हमसो कोइ शिरदार ॥ टेडी टेडी पघडी रखके, चले निरखतो छांय ॥ मरोडे मूछ रहे अकडाय ॥ कर्मगतिका अजब तमासा, छिनकमांहि

बिरलाय ॥ कोटिध्वज भीख मांग कर खाय ॥ दोहो ॥ गरव करो मत चातुरा, हरि हर चक्री राय ॥ मर कर उपजे नरकमें, पऽ्या पऽ्या विललाय ॥ भुक्ते वे परवश जमकी मार ॥ स० ॥ ४ ॥ मेरी मेरी करे दिवाना, जर जोरु जमी परिवार ॥ संगी नहिं हे कोइ तेरे यार ॥ एसी साहित फिर मिलणी मुश्किल, उत्तम कुल अवतार ॥ कहिण हे तरणां भव जल पार ॥ चेत चेत रे चेत सियाना, धरम दया दिल धार ॥ सेवो गुरु पंच महाव्रत धार ॥ दोहो ॥ सुगुरु शीख माने हिये, सुधरे सघलां काज ॥ इस भवमें शोभा लहे, परभव अविचल राज ॥ तिलोकरिख कहे ता पर उपगार ॥ समज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मराठी भाषामें लावणी लिख्यते ॥

॥ लुच्चे सोदे हिरसे टट्टु, ह्यांची संगति धरूं नको ॥ नरदेहासी येउन प्राण्या, दुष्टवासना धरूं नको ॥ ध्रु० ॥ भंगी चंगी बटकी लटकीं, ह्यांच्या मेळ्यांत बसुं नको ॥ बिकट वाट वहिवाट नसावी, धोंपट मार्गा सोडूं नको ॥ संसारामधि ऐस आपला, उगाच भटकत फिरूं नको ॥ चल सालसपणा धरूं निखालस, बोला खोट्या बोलूं नको ॥ परधन परनार ह्यांस पाहुनी, चित्त भ्रमुं देउं नको ॥ आगे नम्रता सदा असावि, राग कुणावर धरूं नको ॥ नास्तिक पणांत शिरूनि जनाचा, बोल आपना घेउं नको ॥ भले भलाई कर कांहीं पण, अधर्ममार्गी शिरूं नको ॥ चाल ॥ माय बापावर रुसुं नको, दूर एकला बसुं नको ॥ व्यवहारामधि फसुं नको, कधी रिकामा असुं नको ॥ चाल पहेली ॥ उलटाली भलभलत्या, पोटासाठी करूं नको ॥ लुच्चे० ॥ १ ॥ वर्मे काढुनी शरमायाला, उणे कुणाला बोलुं नको ॥ बुडवाया दुसऱ्याचा ठेवा, करूनि हेवा झटुं नको ॥ मीं मोठा शाहाणा धनाढ्यहि, गर्वभार हा वाहूं नको ॥ एकाहुन एकचढीं जगा मधी, थोरपणाला मिरवुं न

को ॥ हिमायतिच्या बळें गरीब गुरि,बाळां तूं घुरकावुं नको ॥ दो दिवसाची जाइल सत्ता, अपयश माथा घेउं नको ॥ बहुत कर्ज बाजारी होउनी, बोज आपला दौडुं नको ॥ स्नेहासाठी पदर मोड कर, परंतु जामिन होउं नको ॥ चाल ॥ विडपैजाचा उचलुं नको, उणी तराजु तोलुं नको ॥ गहाण कुणाचा रुलवुं नको, असल्यावर भिख मागूं नको ॥ चाल पहेली ॥ नसल्यावर सांगणे कशाला, गाव तुझा भिड धरूं नको ॥ लु० ॥ २ ॥ उगीच निंदा स्तुति कुणाची, स्वहिता साठी करूं नको ॥ बरी खुशामत शाहाणाचीही, मूर्खाची ती मैत्री नको ॥ कष्टाची बरि भाजी भाकरी, तुप साकरेची चोरी नको ॥ आल्या अतिथि मूठभर द्यावा, मागे पुढती पाहुं नको ॥ दिल्ही स्थिती देवाने तीतज, मानी सुख कधी विटुं नको ॥ आसल्या गांठी धन संचय कर, सत्कार्यां व्यय हटुं नको ॥ आतां तुझेही गोष्ट सांगतो, सत्कर्मा ओसरुं नको ॥ सत्कीर्ती नौबतिचा झंका, गाजे मग शंकाच नको ॥ चाल ॥ सुविचारा कातरूं नको, सतसंगत अंतरूं नको ॥ द्वैताला अनुसरूं नको, हरि भजना विस्मरूं नको ॥ गावयांस अनंतफंदीचे, फटके मागे सरूं नको ॥ लु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ लावणी बीजी मराठी भाषामां ॥

॥ येउं देवाचे नाम देवाचें, अष्टौ प्रहरा जप जिनवर ॥ दे टाकुनि हे बंद वावुगे, फंद विषयेंची काय मजा, प्रभु नामाची लावी ध्वजा, असार हा संसार त्यजा, शांति गुणाला देवरजा, रजकर्मांची दूर भजा, भाव विमलची करी पूजा, क्षमा शांति मन धरी तजा ॥ पंच महाव्रत सुमति गुप्ति, भिक्षा मागे घर घर ॥ येउं दे०॥१॥ परोपकारा शरीर झिजावें,जैसा मैला गिरि चंदन, करी सज्जन चरणी वंदन, काम शत्रुचे निकंदन, गृह

वैनव वाजी स्यंदन, अशाश्वती ह्याहो धुंदन, आठी वमनी सि द्धारथ नंदन, तिलोक म्हणे धर्म करुंनी नविका ॥ लवकर शिव सुंदर वर वर ॥ येउं देवाचे० ॥ २ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ गणधर सझाय प्रारंनः ॥

॥ धन धन आज दिवस नलो ऊग्यो ॥ ए देशी ॥ चउदासें बा वन गणधर बंदो, नवडुःख दूर निकंदो रे ॥ निज आतम अव गुण ते निंदो, मोहजाल मत फंदो रे ॥ च० ॥ १ ॥ रिखन जिणं दजिके पुंमरीक आदि, चोराशी गणधर जाणो रे ॥ अजितनाथ जीके सिंहसेन धुर, कह्यो पिचाणुं परमाणो रे ॥ च०॥ २ ॥ एक सो दोय संनव जिनवरके, चारुजी मुख्य कहीजें रे ॥ अनिनंदन जीके वज्रनाभादिक, एकसो सोला लहिजें रे ॥ च० ॥ ३ ॥ सुम ति प्रनुजीके चरम नाम धुर, एक सो पूरा कहिया रे ॥ प्रद्योतन पहेला पद्मप्रनुजीके, एक सो सात सब गहिया रे ॥ च० ॥ ४ ॥ विदर्भि नाम सुपारसजीके, पिच्चाणुं गुणवंता रे ॥ दिन आदिक श्री चंदा प्रनुजी के, त्राणुं थया शिवकंता रे ॥ च० ॥ ५ ॥ वाराहक आदि सुविधि नाथजीके, गणधर कह्या अठयाशी रे ॥ नंद आ दिक शीतल जिनवरके, जाणो सर्व इक्याशी रे ॥ च० ॥ ६ ॥ कच्छपादिक श्रेयांस प्रनुके, बिहोंतर गुणराशी रे ॥ सुनूमादिक ठा सठ वासुपूज्यकें, पाया पद अविनाशी रे ॥ च० ॥ ७ ॥ सत्ताव न श्री विमल प्रनुजीके, मंदिर रिख धुर नामो रे ॥ अनंतजीके पचा स जस आदिक, पाया शिवपुर ठामो रे ॥ च० ॥ ८ ॥ तिन चा लिश श्रीधर्म प्रनुके, अरिष्ट नाम जस धारी रे ॥ शांतिजिनंदके चक्रायुधादिक, ठत्रिशें वरी शिवनारी रे ॥ च० ॥ ९ ॥ सांब आदि क पेंतिस कुंथु जिनके, आगममें दरसाया रे ॥ कुंन प्रमुख तेतिस अर प्रनुके, सर्वेही मोक्ष सिधाया रे ॥ च० ॥ १० ॥ मल्लिनाथजी

के अग्निकेआदि,अठाविश फरमाया रे ॥ अढारा मुनि सुव्रतस्वामी, मल्लि आदिक शिव पाया रे ॥ च० ॥ ११ ॥ नमि नाथजीके गणध र सतरा, शुन्न नामें शुन्नकारी रे ॥ रिष्टनेमजीके वरदत्त आदि, इ ग्यारा सुविचारी रे ॥ च० ॥ १२ ॥ आर्यदिन्नादिक पारस प्रनुके, दश कह्या सूत्र मझारो रे ॥ महावीरजीके इंद्रनूति प्रमुख, इग्या रा गणधारो रे ॥ च० ॥ १३ ॥ त्रिपदी ज्ञान पूर्वधर सारा, सिद्ध पदवी सहु पाई रे ॥ तिलोकरिखजी कहे मन वचन तन, वंद ना होजो सदाई रे ॥ च० ॥ १४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सौधर्म स्वामीनी सद्याय प्रारंन्नः ॥

॥ जमी कंदमें रे जीव जाइ उपनो ॥ ए देशी ॥ वीर जिनेश्वर पट्टोधर नमुं, श्री श्री सौधर्मा स्वामी ॥ मगध देशें रे को राखी पु र नलो, सोहे सुरतरु आराम ॥ वी० ॥ १ ॥ पिता धर्मिल रे माता धारिणी, रूपें काम कुमार ॥ चारु बुद्धि रे धीरजता घणी, पूरण नण्या वेद चार ॥ वी० ॥ २ ॥ पुराण अढार वै शास्तर वली, चउदे विद्या निधान ॥ सोमल ब्राह्मण यज्ञके कारणें, बू लाया देइ सन्मान ॥ वी० ॥ ३ ॥ तिण अवसरमें रे त्रिशला नंद जी, घनघातिक कर्म टाल ॥ केवल पाया रे आया तिणपुरें, जग नायक जगपाल ॥ वी० ॥ ४ ॥ चोसठ इंद्र आया तिणपुरमें, वली सुर सूरि अपार ॥ रच्यो त्रिगडो रे महिमा विस्तरी, आण्यो सो अहंकार ॥ वी० ॥ ५ ॥ चर्चा करवा रे गया उमंगशुं, रचना दें खी सो नयण ॥ गर्वज उतर्यो रे संशय टालियो,प्रन्नुनां अमृत वय ण ॥ वी० ॥ ६ ॥ दीक्षा धारी रे परम वैरागशुं, पंचसया परिवार ॥ त्रिपदी ज्ञानें रे लब्धि ऊपनी, चौदे पूरव धार ॥ वी० ॥ ७ ॥ मति श्रुति अवधि रे मनःपरजव वली, उपनां ज्ञान ए चार ॥ नि शिदिन उद्यम रे करे तप जप तणो, नावना नावे सो वार ॥वी०

॥ ८ ॥ वरस पचासें रे रह्या गृहवासमें, त्रीश वरस लग जाण॥ सेवा कीनी रे जगनायक तणी, प्रभु पहुता निर्वाण ॥ वी०॥ ए॥ आचारज पद बार वर्ष लगें, दीपायो जैनधर्म ॥ अपूरव करण शुक्ल ध्यानथी, हणियां घातिक कर्म ॥ वी० ॥१०॥ केवल पाया रे सोहम स्वामीजी, रचना जाणी रे सर्व ॥ शिष्य थया बीजा रे जंबुसारिखा, नन्याणुं कोडी रे द्रव्य ॥ वी० ॥ ११ ॥ रातें परण्या रे आठ कामिनी, पांचशें सत्तावीश लार ॥ दिन उगंता रे संजम आदर्यो, धन धन तस अवतार ॥ वी० ॥ १२ ॥ आठ वर्ष लग रे केवल पद रह्या, पहोता मुगति मझार ॥ अजर अमर सुख रे पाया सासतां, नामथकी निस्तार ॥ वी० ॥ १३ ॥ संवत् उगणी शेरें उगण चालीसका, पौष शुद आठम जाण ॥ केलपिप्पल गाम में रे कीधी सझाय ए, दक्षिण देश वखाण ॥वी० ॥ १४ ॥ तिजो करिख दाखे रे पाटवी शिष्यना, चरण शरणना आधार ॥ जिम तिम करिने रे पार उतारजो, विनति ए अवधार ॥ वी०॥ १५॥

॥ अथ इग्यारागणधरकी सझाय प्रारंभः ॥

॥ पास जिनेश्वर रे सामी ॥ ए देशी॥ गणधर समरो रे नाइ॥ दिनदिन अधिक संपत सुखदाइ॥ विघन न व्यापे रे कोइ,श्री श्री मनवंछित लहे सोइ ॥ ग० ॥ १ ॥ वीरप्रभु केवलरे पाया, वाद करणने अधिक उमाया ॥ नमें निवार्यो रे स्वामी, संजम प्रभुयें लियो शिर नामी ॥ ग० ॥ २ ॥ छठ छठ तपस्या रे कीनी, तेजो लेश्या सो वश कर लीनी ॥ सव शिष्यमांही रे पहिलां, इंद्रनूति प्रणमूं अलवेला ॥ ग० ॥ ३ ॥ अग्नीनूति रे वीजा, वायुनूति प्रणमूं नित्य त्रीजा ॥ ए त्रिहूं सगा रे भ्राता,तोड दिया मोहनी दुःख ताता ॥ग० ॥४॥ वसुनूति चोथा रे जाणो, पंचमा सुधर्मास्वामी वखाणो ॥ वीरजीके पाटें रे सोहे,निरखत नविजननां मन मोहे

॥ ग० ॥ ५ ॥ जंबू जैसा चेला रे थईया, कोडि नन्याणुं त्याग सोनैया ॥ रातें परण्या रे नारी, दिन उगां लियो संजम धारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ मंन्दितपुत्र छठा रे कहियें, मौर्यपुत्रजी जपतां सुख लहियें ॥ अकंपित आठमा रे वंदो, नव नव दुःकृत दूर निकंदो ॥ ग० ॥ ७ ॥ नवमा अचलजी रे गावो, नव नव दुःकृत दूर नसावो ॥ मेतारज दशमा रे ध्यावो, कर्म नर्म नय दूर पलावो ॥ग० ॥८॥ प्रनासजी ग्यारमा रे सेवो, प्रात उठी नित नामज लेवो ॥ चउदे पूरव रे धारी, पूछ्या प्रश्न विविध प्रकारी ॥ ग०॥ ए ॥ तप कियो दुःकर रे कारी ॥ तास्या बहु नवियण नर नारी ॥ समता सागर रे पूरा, कर्मरिपुना कस्या चकचूरा ॥ गु० ॥ १० ॥ सहु जण केवल रे पाया, होय अजोगी मुगति सिधाया ॥ तें सब प्रणमूं रे नावें, जनम मरण नय जिम मिट जावे ॥ ग०॥ ११ ॥ उगणीसें छतिस रे सालें, चोमासें रह्या घोडनदी वरसाले ॥ गणधर मुनिवर रे गाया, तिलोकरिखजी प्रणमे नित पाया ॥ ग० ॥ १२ ॥

॥ अथ द्वितीय सवाय प्रारंन्नः ॥

॥ देशी केरबामें ॥ गणधर ग्यारा वंदियेंजी, जिनने किनो महा उपगार ॥ नलां रे मुनि किनो० ॥ ग० ॥१॥ मान धरी गया वाद करणकूं, दियो हे नर्म निवार ॥ न०॥दि०॥ग०॥२॥ इंद्रनूतिजी लियो संजम प्रनुपें, छठ छठ तप लियो धार ॥ न०॥छ०॥ग० ॥ ३ ॥ तेजोलेश्या वश कर लीनी, नणिया अंग प्रनु बार ॥ न०॥न०॥ग०॥४ ॥ अग्निनूति वायुनूति त्रीजाजी, ए तीनु बंधव विचार ॥ न० ॥ए०॥ग०॥५॥ वसुनूति चोथा नित्य प्रणमुं, शूर वीर शिरदार ॥ न० ॥ शू०॥ ग०॥६॥ वीर पट्टोधर स्वामी सुधर्मा, रूप अनूप उदार ॥न०॥रू०॥ग०॥७॥ मंन्दितपुत्रजी ने मौर्यपुतर, अकंपित सुखकार ॥ न० ॥ अ०॥ग०॥८॥ अचल वली प्रणमूं मे

तारज, सब गया मुगति मझार ॥ भ० ॥ स० ॥ ग० ॥ ए ॥ प्रभास जी इग्यारमा प्रणमूं, शिवसंपतिना दातार ॥ भ० ॥ शि० ॥ ग० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे गणधरजीकूं, नित नित होज्यो नमस्कार ॥ भ० ॥ नि० ॥ ग० ॥ ११ ॥

॥ अथ तृतीय सझाय प्रारंभः ॥

॥ देशी प्रभाती ॥ प्रात उठि प्रणमो भवि भावें, नित नित गणधर ग्यारा ॥ ए टेक ॥ इंद्रभूति अग्नि भूति वंदूं, वायुभूति सुखकारा ॥ वसुभूति सुधर्मा स्वामी, नाम लियां निस्तारा ॥ प्रा० ॥ १ ॥ मंमितपुत्र मौर्यपुत्र अकंपित, अचल अचल अविकारा ॥ मेतारज आरजबुद्धिवंता, प्रभासजी प्राण पियारा ॥ प्रा०॥२॥ अग्यारा गणधर महा गुणसागर, चुम्मालिशसें परिवारा ॥ वीरप्रभुके पासें एकदिनमें, व्रत कियां अंगीकारा ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ चउदा पूरब धारक तारक, वारक सर्व विकारा ॥ विमल केवल कमलाधारी, कर गया सो खेवा पारा ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इण समरंतां संकट नासे, रहे अखूट भंमारा ॥ तिलोकरिख कहे चरण सरण मुझ, कीजो भव निस्तारा ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ सझाय प्रारंभः ॥

॥देशी फागणका ख्यालमें॥समरोनित समरो नित,ग्याराइ गणधरकूं ॥स०॥ इंद्रभूति अग्निभूति बंदो,वायुभूति बंदो जोडी करकूं ॥ स० ॥ १ ॥ वसुभूति सुधर्मास्वामी बंदो, मंमितपुत्र ठोडी जगदरकूं ॥ स० ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र अकंपित अचलजी, मेतारज जी ठेठ्या साते मरकूं ॥ स० ॥ ३ ॥ इग्यारमा श्रीपरभासजीकूं वंदो, ठोड दिया हे सज्जन घरकूं ॥स०॥ ४ ॥ चउदाई पूरव धारक सारा, उपदेश दिया हे धर्मका परकूं ॥स०॥ ५ ॥ ग्याराहि तप संजम शुद्ध पाली, टाल दिया आठ कर्म अरिकूं ॥ स० ॥ ६ ॥ चुमा

लिशउं एकदिनमें दीक्षा धारी, इग्याराई गया शिवमंदिरकूं ॥ ७ ॥ स० ॥ उंगणीशें अडतीस आंबोरी पेठमें, तिलोकरिख प्रणमे सदा मुनिवरकूं ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम सझाय प्रारंभः ॥

॥ दया धरम दिलमांही लावे रे ॥ ए देशी ॥ बंदो नित गण धर ग्यारा रे,मिटे जिम भर्म अंधारा रे ॥ ए टेक ॥ चउदा सहस्र अणगारमें जी, ज्येष्ठ शिष्य जशवंत ॥ इंद्रभूति सुख कारणा जी, रचिया ज्यां सर्व सिद्धांत ॥ १॥ अग्निभूति स्वामी दूसरा जी,वायु भूति त्रीजा जाण ॥ ए तीनूं सगा बंधवा जी,गोतम गोत्र वखाण ॥ बं० ॥ २ ॥ वसुभूति चोथा मुनिजी, नाम लिया निस्तार ॥ सूत्र भगवतीमें चालियो जी, परशननो अधिकार ॥ बं० ॥ ३ ॥ वीरजीरे पाटे दीपता जी,धन धन सुधर्मा स्वाम ॥ श्रीजिन धर्म दीपाइने जी, सारियां वंछित काम ॥ बं० ॥ ४ ॥ शिष्य थया जंबू सरिखा जी, रातें ते परण्या नार ॥ कोडि नन्याणुं त्यागिने जी, लिधो संजम भार ॥ बं० ॥ ५ ॥ मंडितपुत्र मौर्यपुत्र दीपता जी, अकंपित जस धार ॥ अचलजीने जपतां थकां जी, तरियें भव जलपार ॥ बं० ॥ ६ ॥ मेतारज आरजमति जी, निज कारज कियां सिद्ध ॥ बंदुं प्रभासजी इग्यारमा जी, जाका नाम लिया नव निध ॥ बं० ॥ ७ ॥ ए इग्यारा गणधरू जी, चउदा पूरव धार ॥ शिष्य थया श्री वीरना जी, चुम्मालिशशें परिवार ॥बं०॥ ८ ॥ इण दुःखम आरा विषे जी, सूत्र तणो छे आधार ॥ ते सब जाणो भविजना जी, गणधरजी उपगार ॥ बं० ॥ ए ॥ तिलोकरिख कहे जगतमें जी, श्री जिनमारग सार ॥ गणधर ग्यारा गाइयें जी, नित नित जय जय कार ॥ बं० ॥ १० ॥

॥ अथ श्रीदशवैकालिकसूत्र दश अध्ययन प्रत्येक उद्देशा पीठिका संयुक्त पन्नर सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम पीठिकासज्झाय प्रारंभः ॥

॥मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी॥ जयजिनराया,जय जिनराया,जय सतगुरुजिनने धर्म बताया॥जय०॥१॥भवजन तारक शिवसुख दाणी, प्ररूपी डुवादश अंगकी बाणी ॥जय०॥२॥ श्रुति सागर गणधर जीय झेली,सूत्ररचना रची नयरस केली ॥जय०॥ ३ ॥ सौधर्मा स्वामी पट्टोधर पहेला,तस शिष्य प्रथम केवली भेहेला ॥ जय०॥ ४ ॥ श्री श्री जंबू गुणनिधि अंबु, भव ताप हरण दृढ स्वब सुतंबू ॥ जय० ॥ ५ ॥ तस शिष्य सफल कियो नर भव जी, पर भव सुधाख्यो श्री प्रभवजी ॥ जय० ॥ ६ ॥ माहागुण संभव सिय्यंभव भारी, तस्य पुत्र मनक भया अणगारी ॥ जे० ॥ ७ ॥ पूर्वके मांही गणिवरजी बिचारी, अवस्था थिति रही खट मासकी सारी ॥ जय० ॥८॥ तब तिणें मनमांही कियो बिचारो, किणविध होयगा भव निस्तारो ॥ जय०॥ ए ॥ ग्रंथ लघु निर्ग्रंथ महंतो, मार्गसिद्धांत रचनेकी करी खंतो ॥ जय०॥ १० ॥ आतम प्रवादथी धर्म पन्नत्ति उच्चाख्यो, कर्म प्रवादथी पिंमेषणा साख्यो ॥ जय० ॥ ११ ॥ वचनसुधी सत्य प्रवादथी धारो, शेष अध्ययन सात सुविचारो ॥ जय० ॥ १२ ॥ पूर्व नवमो आचारवत्थु त्रीजी जाणो, वेयालु समे सूत्र यथा परिमाणो ॥ जय०॥१३ ॥ दशविकालिक दियो नाम उच्चारो, तीन मंगल इणमें सुखकारो ॥जय० ॥१४॥ आदि मंगल प्रभुने नमस्कारो, निर्विघ्न शास्त्र भणी दूजी धारो ॥जय०॥१५॥ अंत मंगलिकथी लहो सुखमुक्ति, शास्त्र मंगल पद सुणो आगें जुक्ती ॥ जय०॥ १६ ॥ धम्मो मंगल मुक्किट्ठं आदि जाणो, नाणं दंसण संपन्नं मध्य ठाणो ॥ जय० ॥ १७ ॥

निक्कम्म माणाय बुद्धिवयणें, अंत मंगलिक सोचो दीर्घनयणें ॥ जे० ॥ १७ ॥ प्रथम अध्ययनमें धर्म प्रशंसा, द्वितियाध्ययनें धीरज पर अंसा ॥ जे० ॥ १ए ॥ अनाचीरनको त्रीजामें विस्तारो, चोथे बकाय तणो हितकारो ॥ जे० ॥ २० ॥ पंचमे विशुद्ध निक्षा शिक्षा आणी, बठे मुनिगुण किरिया वखाणी ॥ जे० ॥ २१ ॥ वचन सुधी सातमे परधानो, आठमो विचारो आचार निधानो ॥ जे० ॥२२॥ नवम अध्ययने विनय मूल दाखे,दशमे अध्ययने निरकुगुण नाखे ॥ जे० ॥ २३ ॥ समुच्चय नाम कह्यां इहां संतो, अनंत नयातम बचन महंतो ॥ जे० ॥२४॥ सूत्र समुद्रपार कुण पावे, गगन शशी शिशु देख बमावे ॥ जे०॥२५॥ तैसें हूं आलसी मह्य अल्पबुद्धि, जिनागमकी नहिं पूरण शुद्धि ॥ जे० ॥ २६ ॥ प्रत्येक अध्ययन उद्देशा विचारो, कहुं निज नाषामें गुरु उपगारो ॥ जे० ॥ २७ ॥ पाले आराधे नाव शुद्ध आणी, तिलोकरिखजी कहे सो वरे शिवराणी ॥ जे० ॥२७॥ इति पीठिका सञाय ॥

॥ अथ प्रथम द्रुम्मपुष्फियाध्ययन सद्याय प्रारंनः ॥

॥ नावपूजा नित कीजीयें ॥ ए देशी ॥ धर्म मंगल उत्कृष्ट बे, सासतो ए त्रिहुं कालो जी ॥ अहिंसा लक्षण धर्मनो, नांख्यो बे दीनदयालो जी ॥ १ ॥ धरम आराधो जी नावशुं, संजम सतरे प्रकारो जी ॥ बारे नेदें तपस्या करे, द्रव्य नाव सुविचारो जी ॥ ध० ॥ २ ॥ चार जातिका देवता, हरि हर चक्री उदारो जी ॥ धर्म विषे सदा मन रहे, तिणने नमे वारंवारो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिम तरु फूलें अलि चित्त रली, पीवे सो मकरंदो जी ॥ पीडा नहिं देवे कुसुमने, पोतें तृति आणंदो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ तिम मुनि लोक विषे कह्या, आरंन परिग्रह निवारो जी॥ नमर निक्षायें खणी ग्रहे, जो देवे शुद्ध दातारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ संजम नार निन्नाववा,

ब कारण करे आहारो जी ॥ हर्ष शोक आणे नहिं, भंफे बय प्र कारो जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ दुःख नहिं देवे परप्राणीने, नव कोटी सु विचारो जी ॥ गृहस्थ करे निज कारणें, भ्रमर ज्युं ग्रहे अणगारो जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, उत्तम अवसर जा णो जी ॥ दुम्मपुप्फिया अध्ययनमें, जगगुरु कियां बखाणो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ सूत्र प्रमाणें विधि ग्रहे, शूरवीर शिरदारो जी ॥ ति लोकरिखजी कहे नित जे नणी,प्रणमुं में वारंवारो जी ॥ध०॥ए॥

॥ अथ द्वितीय सामान्यपूर्वी अध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ मगधाधिप श्रेणिक सुखकारी ॥ ए देशी ॥ ए संसार नयंकर जाणी, अहिकंचुक जिम छंफो ॥ श्रीजिनधर्म परम सुखदाता, सं जमसुं चित मंफो के ॥ सुगुणा,अनुनव ज्ञान विचारो ॥ होवें ज्यूं नव निस्तारो के ॥ सु० ॥ १ ॥ त्रिविधें त्रिविधें त्याग करीने, का मनोग अनिलाषे ॥ पगले पगले विषवाद उपावे, संकल्प वश चित्त राखे के ॥ सु० ॥ २ ॥ वस्त्र नूषण ने नामिनी आदि, नहिं जिणने वशमांही ॥ नोगवे नहिं पण सो नहिं त्यागी, जगतारक दरसाइ के ॥सु०॥ ३ ॥ रिद्ध घणी जिणने वशमांही, पण ते नहिं अनुरागी ॥ ते त्यागी जगदीश पयंपे, जाणो महाबडनागी के ॥ सु० ॥ ४ ॥ इम सोची समता करता कदाचित्, निकले चित्त सं जम घरथी ॥ सोचे वस्तु नहिं हुं एहनो, क्यों करे ममता अपर थी के ॥ सु० ॥ ५ ॥ नोग रोग दुःखदायक जाणी, काया कोम लपणुं छंफो ॥ शीत उष्ण परिसह सब खमिया, शिववधूसुं प्री ति मंफो के ॥ सु० ॥ ६ ॥ राजिमती सती रहनेमीनां, विकल व चन सुणि जंपे ॥ अति जाज्वल्य धगधगतो अग्नि,सपरिताप तन कं पे के ॥ सु० ॥७॥ अंग धन कुल जातिनो फणिधर, जाय पडे ति णमांही ॥ वम्यो ऊहेर नहिं ते वंछे,समझो न्याय लगाई के ॥सु०

॥८॥ धिक्कार हो तुझ अपजस कामी, असंजम जीवित चहावे ॥ वम्यो जोग वंछणो नहिं जुगतो, मरण जलो तुझ थावे के ॥ सु० ॥ ए ॥ जिहां जिहां तुं देखिस त्रिया नयणें, अथिर जाव तुझ था सी ॥ हडवृक्ष जिम पडे पवन प्रतापें, तिम तुझ संजम जासी के ॥ सु० ॥ १० ॥ अंकुशथी जिम गज वश थावे, जिम सती मावत जेमो ॥ ज्ञान अंकुश करीने वश लाइ, उन्मत्त गज रहनेमो के ॥ सु० ॥ ११ ॥ धर्मे खुटे मुनि थिर करि थाप्यो, दोनुं लह्यो शिव वासो ॥ इम जाणी मुनि मन वश करि राखे, छूटें तस गर्नवासो के ॥ सु० ॥ १२ ॥ सामान्यपूर्वि अध्ययन छे दूजो, बुझो जविजन जावें ॥ तिलोकरिख कहे सुझो जिनमारग, सो इम मन सम झावे के ॥सु०॥ १३ ॥ इति सामान्यपूर्वि अध्ययनं ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय खुडियाराध्ययन सवाय प्रारंजः ॥

॥ यें करज्यो शाणा धर्म ते वार, आखा तीजको ॥ अथवा ॥ आरस सेलडी आदिजिणेसर कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ संजम धा रे ममत निवारे, छकाया प्रतिपाल ॥ ते बावन अनाचीरण व रजे, जिन आणा उजमाल हो ॥ यें सुणो जवि प्राणी, धन जे परमेश्वर वाणी, आदेरे आज्ञा आदरे ॥ १ ॥ आरंज करी कियो आहार उद्देशिक, मोल आण्यो मुनिकाज ॥ नित्य पिंम वली सा हामो आण्यो, सो नहिं ले रिखराज हो ॥ यें० ॥ २ ॥ रात्रिजो जन स्नान सुगंध तन, पेहरे नहिं वली माल ॥ न करे विंजणो रात्रे स्निगंध दे, गृहस्थ पातर टाल हो ॥ यें० ॥ ३ ॥ दानशा लानो आहार न लेवो, मर्दन नहिं करे तेल ॥ दातण मीसी गृ हस्थसें शाता, तजे चोपडादिक खेल हो ॥ यें० ॥ ४ ॥ मुख नहिं जोवे दर्पणमांही, छत्र धरें नहिं शीश ॥ सावद्य औषधि वर्जे पगरखी, साचा जेह मुनीश हो ॥ यें० ॥ ५ ॥ तेउ आरंज तजे

आहार सिज्यातरी,बैठे न मांचे पलंग ॥ विण कारण गृहस्थ घर नहिं बैठे,टाले उवटणो अंग हो ॥ थें० ॥ ६॥ वेयावच्च गृहस्थकी करे न रिखजी, जाति जणाइ आहार ॥ मिश्र पाणी वली दुःख आया, सरणो न वंछे परिवार हो ॥ थें० ॥ ७ ॥ मूलो आदूं खं भ सेलभी, कंद मूल फल बीज ॥ संचलादिक पंच लूण आदि दे, तजे सचेत सब चीज हो ॥ थें० ॥ ८॥ शोभा कारण वस्त्र धूप धोवण, वमन वस्ती कर्म जेह ॥ विरेचन अंजण दंत पखालण, शरीर शुश्रूषा तेह हो ॥ थें० ॥ ए ॥ इत्यादिक अनाचीरण टाले, निर्ग्रंथ संजम धार ॥ उग्रविहारी आश्रव वर्जे, खटकाया सुख कार हो ॥ थें० ॥ १० ॥ उष्ण कालें आतापना लेवें, शीतकालें सहे ठंभ ॥ चोमासे थिर तन तप धारे, जैन धर्मका मंभ हो ॥ थें० ॥ ११ ॥ सहे परिसह मोह हगावे, दुष्कर किरिया धार ॥ केइक पावे स्वर्ग तणां सुख, केइक मुक्ति मझार ॥ थें० ॥ १२ ॥ खुडियार नामाध्ययन तीसरो, दाख्यो मुनि आचार ॥ जे पाले शुद्ध तिलोकरिख तस, प्रणमे वारं वार ॥ थें० ॥ १३ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ छज्जीवणियाध्ययन सद्याय प्रारंभः ॥

॥ मानव जनम जनम, रतन तेने पायो रे ॥ ए देशी ॥ श्री जिनधर्मको सारो रे, खट काया उगारो ॥ श्री० ॥ ध्रु० ॥ पट्टोधर श्री सुधर्मास्वामी, जंबु पूछे तिणसुं शिर नामी रे ॥ चौथा अध्ययन मझारो, किस्यो छे अधिकारो ॥ कहो तस विस्तारो ॥ श्री० ॥ १ ॥ इम सुणी कहे जिम प्रभु फरमायो, तिम कहूं तुझसुं सुणवायो रे ॥ पृथिवी वली पाणी, तेउ वाउ वखाणी ॥ वनस्पति तस गणी ॥ श्री० ॥ २ ॥ निज आतम सम कह्या छकाया, सुखवंछक प्रभु दरसाया रे ॥ सब जीवणो चहावे,दुःखसुं थररावे ॥ आगम दरसावे ॥ श्री० ॥३ ॥ इम जाणी त्रिविध त्रिविध भव प्रा

णी, छकायरक्षा सुखदानी रे ॥ क्रोध लोभ भय हास्या, वश मत बोलो भाषा ॥ सत्यव्रत सुख खासा ॥ श्री० ॥४॥ गाम नगर वन अल्प बहु छोटो मोटो, जाणो अदत्त सब खोटो रे ॥ सुर नर तिरजंचो, मैथुनथकी वंचो ॥ त्यागो यह परपंचो ॥ श्री० ॥ ॥ ५ ॥ अल्पबहु छोटो मोटो सचित्तो, मिश्र वली अचित्तो रे ॥ परिग्रह दुःखकारो, भरमावे संसारो ॥ करियें परिहारो ॥श्री०॥६॥ असणादिक जे कह्या चउ आहारो, निशिभोजन परिहारो रे ॥ एह खटव्रत सुखकारो, पाल्यां भव निस्तारो ॥ इम जाणीने धारो ॥श्री० ॥ ७ ॥ वस्त्र पात्र उपगरण सारां, ते पूंजो पलेवो वारं वारा रे ॥ त्रस थावर प्राणी, करो जत्न पेछाणी ॥ इम आगम वाणी ॥श्री० ॥८॥ अजयणासुं चाले तथा उभो रहेवे, बेठे सुवे खावे मुख केवे रें ॥ प्राणीनी हिंसा थावे,पापकर्म बंधावे ॥ अति कटु फल पावे ॥ श्री० ॥ ए ॥ शिष्य पूछे तब किणविध करीयें, गुरु कहे जयणा आदरीयें रे ॥ पाप कर्म न लागे, रूंधे आश्रव सागे ॥ अविचल सुख आगें ॥ श्री० ॥ १० ॥ प्रथम ज्ञान पछें दया थाणी, कांइ जाणे जे पाप अनाणी रे ॥ सूत्र सुण्यां बोध आवे, आश्रव छिटकावे ॥ संजम पद पावे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ धारे उत्कृष्ट संजम धारो, कर्म भर्म करे छारो रे ॥ केंवल पद पावे, शिवपुरमें सिधावे ॥ शाश्वतां सुख पावे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ इम जाणी वृद्ध पणे पण किरिया, धारी अनंताही तरिया रे ॥ छज्जीवणीया अधिकारो, शुद्ध पाले नर नारो ॥ तिलोकरिखजी सोही सारो ॥ श्री० ॥ १३ ॥इति॥

॥ अथ पंचम पिंडेषणाध्ययनस्य प्रथम उद्देशा सद्याय प्रारंभः ॥

॥ सोवन सिंहासण रेवती ॥ ए देशी ॥ शास्त्रविधि किरिया शुद्ध आदरे, द्रव्यक्षेत्र विधि जाण रे ॥ गजगति जिम जति संचरे,देखी

धुसरा प्रमाण रे ॥१॥ हुं बलिहारी जाउं रिखचरणकी, त्रस थाव र प्रतिपाल रे ॥ कोयला रुंख भस्मी पुंज पर, चाले नहिं शंका निहाल रे ॥ब०॥२॥ वेश्यावासमें नहिं संचरे, नवी प्रसूत श्वाननि गाय रे ॥ उन्मत्त बेल हय गज जिहां लडे, मुनि दूर वर्जीने जा य रे ॥ ब० ॥ ३ ॥ धम धम चाल चाले नहिं, हसे बोले नहिं पंथ रे ॥ चाले नहिं महेल देखतो, अंधारुं घर ते तजंत रे ॥ ब० ॥ ४ ॥ दुगंछनिक अप्रतीति कारीयो, कुल तिहां मुनि नहिं जाय रे ॥ पडदो किमाड आग्या विना, खोले नहिं रिखराय रे ॥ ब० ॥ ५ ॥ दोष बियालीस टालिनें, सुझतो ले भिक्षु आहार रे ॥ उ परंत दोष विधि पिंडनो, सुणजो कांईक अधिकार रे ॥ ब० ६ ॥ दोजणा सामिल आहार ते, निमंत्रें एक तिण वार रे ॥ ते मुनीसर वर्जे सही, विहरे जुगहामी जेवार रे ॥ ब० ॥ ७ ॥ गर्भिणी अर्थे भोजन कियो, जिम्या पहिली परिहार रे ॥ उछेसरके बोराव ण भणी, पूरण मास गर्भपुत नार रे ॥ ब० ॥ ८ ॥ बालक धव रावती जुवती, छोडावतां रोवे जे बाल रे ॥ दान पुण्य मंगत अर्थे जे, कियो ए सहु दे रिख टाल रे ॥ ब० ॥ ए ॥ अल्प खाणो बहु नाखणो, मुनिजन तें वर्जंत रे ॥ तरखा बूझे नहिं जिण ज लें, ते नहिं वहोरे गुणवंत रे ॥ ब० ॥ १० ॥ उपयोग विना लेवा णो कदा, परठवे तेह एकंत रे ॥ अणासक्ति स्थानकें आणनी, गृहस्थ घरे आज्ञा ग्रहंत रें ॥ ब० ॥ ११ ॥ विधिशुद्ध आहार क रतां कदा, काष्ठ कांकरो निकलंत रे ॥ हाथमें ग्रही मूके तदा, पण मुखसुं नहिं थूकंत रे ॥ ब० ॥ १२ ॥ जो निजस्थान आवे मु नि, निसही शब्द कहंत रे ॥ करे काउस्सग्ग इरियावहि, अतिचा र सहु ते चिंतंत रे ॥ व० ॥ १३ ॥ आलोवे शुद्ध विधिगुरु कने, जि णघर जिणविधि अहार रे ॥ सज्झाय करो विश्रामो लेई, आमंत्रे जे अणगार रे ॥ व० ॥ १४ ॥ शाक सहित रहित तया, अरस

विरस जे आहार रे ॥ मधु घृत जिम मुनि भोगवे,स्वाद न करे लगार रे ॥ ब० ॥ १५ ॥ डुल्लहा वहा मुहा दोई कह्या, मुहा जीवि इम जाण रे ॥ दोई जावे सुभगति विषे,अनुक्रमें लहे निरवाण रे ॥ ब० ॥ १६ ॥ पंचमुं अध्ययन पिंमेषणा, प्रथम उद्देशा मझार रें ॥ तिलोक रिखजी कहे वर्णव सी, पाले सो धन अणगार रे ॥ ब० ॥ १७ ॥ इति पिंमेषणाध्ययन प्रथमउद्देक सचाय ॥

॥ अथ पंचम पिंमेषणाध्ययन द्वितीयोद्देश सद्याय प्रारंभः॥

॥ प्राणी आउखो टुट्याने,सांधो को नहीं ॥ ए देशी ॥ पात्राविषे जे मुनि वहोरीयो रे,डुर्गंध सुगंध जे कोई आहार रे ॥ भोगवे जिम भुजंग बीलमें धसे रे,पण परठवे नहिं सो लगार रे ॥ प्रभु आग्या आराधो मुनिवर भावशुं रे ॥ १ ॥ जो चाहो भवोदधि पार रें ॥ अल्पकाल ते डुःख देहीने रे, सुख अनंत अपार रें ॥ प्र० ॥ २ ॥ कालोकाल सुक्रिया विधि साचवो रे, अणमलियाथी शोच न कोय रें ॥ चुगो जो लेवें जिहां पंखीयां रे,वली भिक्षुक मागतो होय रें ॥ प्र० ॥३॥ ते देखी मुनि नहिं संचरे रे, जिहां परप्राणी नहिं डुहवाय रे॥ जो करे गृहस्थी आदर बंदणा रे,वलि वलि तिन घर नहिं जाय रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वंदे तो हरख आणे नहिं रे, विण वांद्यांसुं नहिं कुमलाय रे ॥ कठिण वचन रिख बोले नहिं रे, समता सागर मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ बिन बताया गुरुदेवने रे, भोगवे नहिं सो लगार रे ॥ किंचित छानो सो राखे नहिं रे, कपट न करें आपागार रे ॥ प्र०॥ ६ ॥ नीसा सहित आहार नहिं भोगवे रें, जिणथकी संजम हाण रे ॥ परमगुरु दोष महोटो कह्यो रे,त्याग्याथी होय कल्याण रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तप वय रूप आचार वलि भावना रे, चोर कह्या पंच प्रकार रे ॥ ते थावे किल्बिषी देवता रे, कह्यो डुर्गति अवतार रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ एलक मूकपणे होवें ति

हांथी मरी रे, नरक तिरियंच गति जाय रे ॥ समकित धर्म इर्जन कह्यो रे, इम जाणी गेडे मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ शिक्षा निक्षा शुद्ध ग्रहणनी रे, दूजा उद्देशानी मांय रे ॥ तिलोकरिखजी कहे जे व्रतें क्रिया रे, तिनने हुं वंदूं शीश नमाय रे ॥ प्र० ॥ १० ॥

॥ अथ षष्ठ धर्मार्थकामाध्ययन सद्यायप्रारंभः ॥

॥ आज नलो दिन उग्यो जी, श्रीसीमंधर स्वामी जिन वंदस्यां ॥ ए देशी ॥ ज्ञान दरिसणे संपूर्ण गे हो कर्मगिरि चूरण कारणें, मुनि तप संजम वज्रधार ॥ ध्रु० ॥ एहवा गुणमणि गणिवर हो मुनिसर आइ समोसस्या, कांई कोइक उद्यान मजार ॥ राय प्रधान जो आवे हो उमाहे क्षत्री माहणा, कांई पूछे प्रश्न बिचार ॥ग्या० ॥ १ ॥ जगतारक सुखकारक हो उद्धारक धर्म किस्यो कह्यो, कांई सो दाखो अणगार ॥ सो निसुणी इम बोले हो कांई खोले हो आगम संघने, कांई निन्न निन्न करि विस्तार ॥ ग्या० ॥ २ ॥ जे धर्मारथ कामी हो शिवगामी वामी नोगने, मुनि वर्जे स्थानक अढार ॥ परथम थानक दाखे हो अनिलाखे जीवदया नली, मुनि सब जीवा हितकार ॥ ग्या० ॥ ३ ॥ सहु जीव जीवणो चावे हो थरर विमरण विमासिने, कांइ प्राणवध नयंकार ॥ इम जाणी मुनिराया हो मन काया बचन जोगथी, त्रिकरण हिंसा परिहार ॥ ग्या० ॥ ४ ॥ निजपर अरथें सावद्य हो क्रोधादिक वश मृषा गिरा, कांई निंदीसहू अणगार ॥ अविश्वासनुं कारण फूरज हो ते उंव समुं जाणी करी, करो अलिक नाषापरिहार ॥ ग्या० ॥ ५ ॥ तुप तरणादिक चोरी हो इःख उंरी दोरी नरकनी, करे स्वर्ग सुख संहार ॥ प्रमाद तणी या हेतु हो कांइ केतु अपकीर्त्ति तणी, कांइ कुशील इःशील आचार ॥ ग्या० ॥ ६ ॥ लुण वली विगय पांची हो जाची नहिं राखे रेणमें, कांइ ए आज्ञा जगतार ॥

वस्तर पातर धारे हो ते संजम लज्जा कारणें; रिख करे मूर्छा प
रिहार ॥ ग्या० ॥ ७ ॥ अहोनिश तप जे कहीयें हो कांइ हियें
समता भावने, कांइ एक भक्त परिहार ॥ पृथिवी पाणी तेउ वाउ
हो वनस्पति त्रस जाणियें, कांइ छेइ काया जीव भगार ॥ ग्या०
॥ ८ ॥ एकेकीकायनघावे हो हणावे तिहां प्राणी घणा, कांइ
गोचर अगोचर धार ॥ दुःख दुर्गति वधारण हो भवारण्य कारण
जाणिने, कांइ हिंसा सर्व निवार ॥ ग्या० ॥९॥ छ व्रत वली छका
या हो पाले त्रिकरण जोगसुं, कांइ ए थयां स्थानक बार ॥ पिंड
शय्या वस्त्र पात्रां हो चातुर मुनि लेवे सूझतां, कांइ दोष न क
रे अंगीकार ॥ ग्या० ॥ १० ॥ कांस्यादिक पात्रमांही हो नहिं
भोगवे आहार पाणी कदा,कांइ भ्रष्ट थाय आचार ॥ पलंग मांचा
दि आसण हो सिंहासण पर बेसे नहिं, कांइ पडिलेहण दुःक
रकार ॥ ग्या० ॥ ११ ॥ जावे गोचरी काजें हो विराजे नहिं गृह
स्थी घरे, कांइ उपजे दोष अपार ॥ वृद्ध रोगिया तपसी राया
हो जस कायामें शक्ति नहिं, कांइ कल्पे त्रिहुं अणगार ॥ ग्या०
॥ १२ ॥ स्नान वर्ज्यो जिनराया हो बहु काया थाये विराधना,
कांइ व्रतमें लागे अतिचार ॥ सुगंधिकें चंदन केशर हो परमेश्वर
वर्ज्या साधने, कांइ दृढ कर्म बंधणहार ॥ ग्या० ॥ १३ ॥ जे श
म दम उपशम सागर हो रतनागर रिख बहु गुण तणा, कांइ क
र्म खपावण हार ॥ पापपुंज खपावे हो तन तावे तप जप साध
णा, करे कपट क्रोध परिहार ॥ ग्या० ॥ १४ ॥ ज्ञान ध्यान रंग
राता हो जगना ताता तोडणें,कांइ शशिसम जस निर्मल धार ॥
तिलोकरिखजी कहे धर्मार्थे साधी हो आराधी सीधी कोइ स्वर्गमें,
कांइ उपजे त्रायी अणगार ॥ ग्या० ॥ १५ ॥ इति धर्मार्थाध्ययनं ॥

॥ अथ सप्तम वाक्यशुद्ध्यध्ययन सझाय प्रारंभः ॥

॥ बंधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ चउभाषा जिनवर कही,

जाणे रिख बुध बुद्धिवंता हो ॥ दो सीखे दो वर्जित करे, जे च तुर महंता हो के ॥ १ ॥ मुनिवर वस बोले हो, जिहां सावद्य तिहां सत्य नहीं, इम अनुभव तोले हो के ॥ मु० ॥ २ ॥ सत्य विहार समाचरे, कूड मिश्र टाले हो ॥ निरवद्य अकर्कश असंदेह सो, बुद्धिवंत गिरा झाले हो के ॥ मु० ॥ ३ ॥ अतीत अनागत वर्तमानमें, एकांत नहिं ताणे हो ॥ निःसंदेह निश्चें तजे, जे अ वसर जाणे हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ निःसंदेह साची वली, जिणथी जीवणा हो ॥ ते पण रिख वर्जे सही, जिहां पाप बंधावे हो के॥ मु० ॥ ५ ॥ काणो न कहे एकनेत्रीने, पंडग पंडगरोगी हो ॥ चोरने चोर कहे नहिं, जे मुनि उपयोगी हो के ॥ मु० ॥ ६ ॥ मूरख गोलो कूतरो, क्रोधी कपटी भिखारी हो ॥ वर्जे इत्यादिक भाषा जे, लागे परने खारी हो के ॥ मु० ॥ ७ ॥ दादी पडदादी माता, धुया सखी चोरी ठकुराणी हो ॥ इत्यादिक शोले प्रकारनी, वर्जे रिख वाणी हो के ॥ मु० ॥ ८ ॥ नाम गोत्र जिम तेहनां, तिमहीज बतलावे हो ॥ तिमही पुरुष नाता सहू, वर्जे बतलावे हो के ॥ मु० ॥ ए ॥ मनुष्य पशु पंखी अही, गाय बैल तरु खेती हो ॥ भोजनादिकये सहू, देखी बोले सो चेती हो के ॥ मु० ॥ १० ॥ रुडो विवाह किधो इणे, भली निपजी रसोई हो के ॥ वारु छेद्यो शाक भलो मखो, दाखे नहिं रिख जोई हो के ॥ मु० ॥ ११ ॥ भलुं हराणुं द्रव्य मुंजीनुं, भलुं गयुं धन एहनो हो ॥ ए कन्या सुंदर सी रे, इम वचन केहणो हो ॥ मु० ॥ १२ ॥ रूडो कीधो तप परिपक्वशीलें, छेद्यो मोहणी तांतो हो ॥ पंडितम रण क्रोधादिक हस्यो, भलो कह्यो तिण वातो हो के ॥ मु० ॥ १३ ॥ भलो थयो कर्म खाली थयो, साधुकिरिया भलेरी हो ॥ इत्यादिक भापा वदे वली, जिणमें बुद्धि गहेरी हो के ॥ मु० ॥ १४ ॥ आ वो जावो तेडी लावो, उठो बैठो खावो पीवो हो ॥ इत्यादिक मु

नि जंपे नहिं, जाके अनुनव दीवो हो के ॥ मु० ॥ १५ ॥ कर जो सामायिक पडिक्कमणो, सुणजो सूत्र प्राणी हो ॥ पालो द या देवाणुप्रिया, बोलो मृडु सत्यवाणी हो के ॥ मु० ॥ १६ ॥ देव मनुष्य तिर्यंचमें, होवे क्लेश लडाई हो ॥ हार जीत अमुका तणी, चिंते नहिं मनमांई हो के ॥ मु० ॥ १७ ॥ वायु वर्षा शीत उष्णता, वंछे नहिं वृद्धि हाणी हो ॥ क्रोध लोन नय हास्यकारि णी, रिख बोले न वाणी हो के ॥ मु० ॥१८॥ सुवाक्य सूधी वि चारीने, नाषा दोष निवारे हो ॥ कषाय टाले पाले देवा, क र्मशत्रु प्रहारे हो के ॥ मु० ॥ १९ ॥ केवल लेइ शिवपुर लहे, सु वाक्यशुद्धि प्रनावें हो ॥ तिलोकरिखजी कहे आराधिक, सदा तस शीश नमावे हो के ॥ मु० ॥ २० ॥ इति सुवाक्यशुद्धिअध्ययनं ॥

॥ अथाष्टमाचाराध्ययन सद्माय प्रारंनः ॥

॥ दया धर्म दिलमांही नावे रे ॥ ए देशी ॥ मुनिजन आज्ञा आराधो रे, निजातम कारज साधो रे ॥ ध्रु० ॥ आचार निधान ने पामीने जी, वरते जिम अणगार ॥ सुण जंबु किरिया नली जी, जंपी परम दातार ॥ मु० ॥ १ ॥ पृथिवी पाणी तेउ वायरो जी, वनस्पति त्रसकाय ॥ तीन करण तीन जोगसुं जी, हिंसा वर्जे मु निराय ॥ मु० ॥ २ ॥ सूक्ष्म धुंवर फुल कंथुवा जी, किडी नांगरा दिक उत्तंग ॥ फूलण खसखसादिक बीज सो जी, उगता अंकूरा अंग ॥ मु० ॥ ३ ॥ ईंमां कीडादिकनां कह्यां जी, ए अष्ट सूक्ष्म जाण ॥ दया पालो गाढा उपयोगसुं जी, पडिलेहणा परिमाण ॥ मु० ॥ ४ ॥ घर घर फिरे रिख गोचरी जी, देखे सुणे बहु कान ॥ थिर राखे निज आतमा जी, तप संजम सावधान ॥ मु० ॥ ५॥ थोडो थोडो ग्रहे आहार सो जी, लूख वृत्ति अणगार ॥ ऊणोदरी आहार तृप्ता रहे जी, क्रोध न करे लगार ॥ मु० ॥ ६ ॥ देहें डुः ख दीधां संपजे जी, महासुख कह्यो वीतराग ॥ चंचल नहिं ती

न जोगसुं जी, निर्मलचित्त महाजाग ॥ मु० ॥ ७ ॥ अथिर जीवित जाणिने जी, धर्म धारे तजि जोग ॥ अवसर जाणि मुनीश्वरु जी, संजममांही आयोग ॥ मु० ॥ ८ ॥ जिहां लगें जरा पीडे नहिं जी, व्याधि न अंग बढंत ॥ इंद्रिय बल हिण होवे नहिं जी, तिण पेहेली धर्म चढंत ॥ मु० ॥ ए॥ क्रोधसुं नाश प्रीति तणो जी, मानथी विणयगुण जाण ॥ मायाथी नाश मित्राइनो जी, लोजें सकलगुण हाणि ॥ मु० ॥ १० ॥ क्षमाथी क्रोध जावे सही जी, विनयथी मान हणाय ॥ कपटाई सरलस्वजावशुं जी, लोज संतोषथी जाय ॥ मु० ॥ ११ ॥ चउगति वृक्ष पुष्टि होवे जी, कषायको जल सिंचाय ॥ इम जाणी चारे निवारजो जी, श्री गुरुजक्त मनाय ॥ मु० ॥ १२ ॥ निंडा हास्य विकथा तजो जी, सद्याय ध्यान धरंत ॥ बहुसूत्री सेवा करो जी, गुरुविनय अधिक साधंत ॥ मु० ॥ १३ ॥ निंदा करे नहिं कोइनी जी, बोले विचारी बोल ॥ ङवादश अंगी खल विकदाई जी, नहिं करे हास्य कुतोल ॥ मु०॥१४॥ ज्योतिष निमित्त जांखे नही जी, रहेवें निरवद्य थान ॥ स्त्री पशु वर्जित सही जी, नारीकथा सुणे नहिं कान ॥ मु० ॥ १५ ॥ कुकडीका बाल बिलायशुं जी, मरे जिम नारीथी संत ॥ चित्राम न देखे तेह तणुं जी, ब्रह्मचारी गुणवंत ॥ मु०॥ १६॥ हस्त पाय कर्ण नासिका जी, छेदाणां वृद्ध नार ॥ तेहवी पण ब्रह्मचारी तजे जी, वली शोजा सरस आहार ॥ मु०॥ १७ ॥ जिन सरधायें निकले जी, पाले तिम जावजीव ॥ साहसिंघसिंह जेहवा जी, कर्मासुं जूझे अतीव ॥ मु० ॥१८॥ अग्निसुं धमी निर्मल करे जी, रूपाने जिम सोनार ॥ तिम कर्म खार करे वेगलो जी, तपस्या अग्नि प्रचार ॥ मु० ॥ १ए ॥ केवल लइ शिवपद ग्रहे जी, चंड ज्युं सोहे आकाश ॥ आचार निधान अध्ययनमें जी, तिलोकरिखजी कहे सुविलास ॥ मु० ॥ २० ॥ इति आचाराध्ययन ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य प्रथम उद्देशक सझाय प्रारंभः ॥

॥ श्रीजिन मुजनें पार उतारो ॥ ए देशी ॥ रे भाई विनय धर्म सुखदाई ॥ तिणसुं कमी तिणसुं कमी रहे नहिं कांई रे भाई ॥ विन मान क्रोध छल लोभसुं प्राणी, विनयनहिं सीखे गुरु पासें ॥ ग्यान भणे तोई विपत सवाई, फल आया वास विनासे रे भाई ॥ वि० ॥ १ ॥ मंद प्रकृति अल्पश्रुत वय छोटा, हिलणाथी आशातना लागे ॥ आचारवंत वर श्रुतगुण सागर, तिणनोही विनय कोइ त्यागे रे भाई ॥ वि० ॥ २ ॥ तिणने जिम अग्नि भस्म करे वस्तु, तिम ज्ञानादिक गुण नासे ॥ सर्प छोटो तोइ डस्या प्राण खोवे, अविनीत दुर्गति दुःखि पासें रे भाई ॥ वि० ॥ ३ ॥ आशीविष प्राण लेवे एक भवमें, गुरु आशातना भव भवमें॥ दुःख देवे बोधबीज नहिं आवे, जाय पडे दुःखदवमें रे भाई ॥ वि० ॥ ४ ॥ अग्निने पग करीने जो चाहे, सर्पने कोप चडावे ॥ जीवितअर्थे खावे झहेर हलाहल, पर्वत शिरथी हणावे रे भाई ॥ वि०॥ ५ ॥ सूतो सिंह जगावे बोला कर, बरछी पर हथेली प्रहारे ॥ इण दृष्टांतें आशातना करे गुरुनी, वली सुख चित्त विचारें रे भाई ॥वि० ॥ ६ ॥ दैवजोगें जो वरते सुखदायी, आशाताना फल टले नांई ॥ विनयविमोखो गुरुहिलणियो, जगतारक फरमाई रे भाई ॥ वि० ॥ ७ ॥ तिण कारण शिवसुखना अर्थी, अग्नि जिम गुरुने सरीजें ॥ धर्मपद एक शिखे जिण पासें, तिणनो पण विनय करीजें रे भाई ॥ वि० ॥ ८ ॥ लज्जा दया संजम शील ए चारु, अर्थी पुरुष शिवगामी ॥ करे गुरुभक्ति तो भर्म पुलावे, तम हरे ज्युं दिनस्वामी रे ॥ वि० ॥ ए ॥ जिम शशी सोहे ग्रहगण मांही, तिम आचारज पण छाजे॥ विनीत शिष्य रत्नाकर जेहवो,

मुक्तिके मांही बिराजे रे नाई ॥ वि० ॥ १० ॥ विनयसमाधि प्रथम उद्देशामें, एह वरणन कह्यो सारो ॥ तिलोकरिखजी कहे विनय जो आराधे, सोही लहे नवपारो रे नाई ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य द्वितीय उद्देशक सद्याय प्रारंनः ॥

॥ देशी केरबामें छे ॥ जिम वृक्षने मूल खंद पछें शाखा, पान फूल विस्तार ॥ नलां रे ज्ञानी ॥ पा० ॥ विनयवर धर्म आराध जो कांइ, जो चाहो नवनिस्तार ॥ नलां रे ज्ञानी ॥ जो० ॥ विन० ॥ १ ॥ तिम धर्म तरु विनय मूल परुप्यो, जगतारक जसधार ॥ न० ॥ ज० ॥ वि० ॥ २ ॥ क्रोधी अज्ञानी मानी छुष्ट नाषक, कपटी धूरत नर नार ॥ न० ॥ क० ॥ वि० ॥ ३ ॥ संसार सागरमें तणावे एसा छुष्टी, काठ नदीपूर मझार ॥ न० ॥ का० ॥ वि० ॥ ४ ॥ नली शीख देतां उलटी धारे ज्यूं, शिरे अति दंम प्रहार ॥ न० ॥ शि० ॥ वि० ॥ ५ ॥ अविनीत नवदंम छुःख पावे, सदा दारिद्र घर बार ॥ न० ॥ स० ॥ वि० ॥ ६ ॥ विनीत नर नारीने इण नव सुखसंपत, परनवमें जय जयकार ॥ न० ॥ प० ॥ वि० ॥ ७ ॥ सुर नवपद विचार कर होवे, अविनीतपणुं छुःखकार ॥ न० ॥ अ० ॥ वि० ॥ ८ ॥ विनीत गुरु अनिप्रायनो जाणक, नमन करें वारंवार ॥ न० ॥ न० ॥ वि० ॥ ए ॥ शीखे सूत्र अर्थ धर्म धन धारक, उतरे नवजल पार ॥ न० ॥ उ० ॥ वि० ॥ १० ॥ तिलोकरिखजी कहे अध्ययन नवमामें, दूजे उद्देशें अधिकार ॥ न० ॥ दू० ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति द्वितीय उद्देश सद्याय ॥

॥ अथ नवम विनय समाधि अध्ययनस्य तृतीय उद्देशक सद्याय प्रारंनः ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ श्री गुरु आज्ञा शिर

धरो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ विवेकी ॥ अग्निहोत्री जिम अग्निनें, सेवे तिम सेवो पाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ १ ॥ अंगचेष्टा जाणे गुरु तणी, करो शुश्रूषा वारंवार ॥ वि० ॥ वय छोटा दीक्षा करि बडो, साधो तस विनय व्यवहार ॥ वि०॥ श्री०॥२॥ दोष बयालीस टालिने, लेवतो सुझतो आहार ॥ वि० ॥ संथारो शय्यासन लो गवो, हर्ष शोक परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वचन कांटा दुर्धर कह्या, खमे मुनि समताधार ॥ वि० ॥ पर अवगुण वैरीपणुं, अप्रियवचन परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ लोलुपी कौतुकीमाइ पणो, वर्जे विनीत अणगार ॥ वि० ॥ चुगल नहिं दीनवृत्ति नही, निजप्रशंसा निवार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ज्ञानादिक गुणें साधु हुवे, कामार्थी गुणथी असंत ॥ वि० ॥ इम जाणी गुण संग्रह करो, राग द्वेष दोइ हणंत ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जिम कन्या ज णी तात देवे, देखी घर वर ठाम ॥ वि०॥ तिम गुरु सुशिष्यने ज ली, शिक्षा देई देवे शिवधाम ॥ वि० ॥ श्री०॥ ७ ॥ सुशिष्य माने गुरु आज्ञा, जावे मुगतिने मांय ॥ वि० ॥ त्रीजो उद्देशो नवमा ध्ययननो, तिलोकरिखजी कहे बखाय ॥ वि० ॥श्री०॥८॥ इति ॥

॥ अथ नवमविनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थ उद्देशक सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ चार पहेरको दिन होवे रे ॥ ए देशी ॥ सौधर्मास्वामी रूडी रीतसुं रे, आर्जजंबूसुं कहे एम रे ॥ चतुर मुनि ॥ जिम श्रीजिन मुझशुं कह्यो रे, दाखूं हूं तुझथकी तेम रे ॥ च० ॥ चार समाधि चित्त धरो रे ॥१॥ प्रथम विनय विचार रे ॥च०॥ गुरुशिक्षा सुणो खंतसुं रे, वरतो सम व्यवहार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ २ ॥ सूत्रमें किरिया करणी कही रे, साचवो कालो काल रे ॥ च० ॥ मन अभिमान आणो मति रे, हुई सुविनीत विशाल रे ॥ च० ॥ चा०

॥ ३ ॥ सूत्र समाधि दूजी चिंतवे रे, जाणसुं सूत्र विचार रे ॥ च० ॥ सूत्र शीख्याथकी माहेरो रे, रहेशे चित्त थिरकार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ४ ॥ थापसुं आतमा धर्ममें रे,समझावसुं नवि लोक रे ॥ च० ॥ मान वरजी चिहुं कारणें रे,संगृह करे सूत्र थोक रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ५ ॥ त्रीजी समाधि तपस्या तणी रे, इह लोक लब्धि आदिक काज रे ॥ च० ॥ परलोक सुर सुख कारणें रे, नहिं करे तप मुनिराज रे ॥ च० ॥ चा० ॥६॥ सर्व दिशा कीर्त्ति नणी रे, नली मानसी घणा जन रे ॥ च० ॥ एम उवर्जी निर्जरा नणी रे, मुनि धारे तपस्या रतन रे ॥ च० ॥ चा० ॥७॥ चौथी आचार समाधि सी रे, तप कारण जे कह्यां चार रे ॥ च०॥ ते वर्जी शिवकारणे रे, पाले किरिया आचार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ८ ॥ चोथो उद्देशो विनय समाधिनो रे, दाख्यो वीर जिणंद रे ॥ च० ॥ तिलोकरिखजी कहे तिम आदरे रे, पामे परमानंद रे ॥ च०॥ चा० ॥ए॥ इति नवम विनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थोद्देशकः ॥ ४ ॥

॥ अथ दशम भिक्षुनामाध्ययन सझाय प्रारंभः ॥

॥ कुविस्त मारगमाथे धिकधिक ॥ ए देशी ॥ तजत आश्रव घर,नजत संवर वर, श्रीजिनवाणी धार हो ॥ चित्त समाधि,नित्य आराधी, त्रिया वशमें न लगार हो ॥ १ ॥ धन एसा संत करुणा रस सागर, गुणरतनागर पूर हो ॥ ज्ञान उजागर नागर पंमित, संजम किरियामें शूर हो ॥ ध० ॥ २ ॥ पृथ्वी न खणे न खणावे रखीश्वर, पीये न पावे सचित्त नीर हो ॥ जलन जलावे, तेउ महा सस्तर, विंजणे न करे समीर हो ॥ ध० ॥ ३ ॥ छेदे न छेदावे वनस्पतिने, न करे सचित्त आहार हो ॥ नव कोटि शुद्ध ग्रहे रिख भिक्षा, प्रजु वाणी अवधार हो ॥ ध० ॥ ४ ॥ आतमा सम जाणे छेकाया, पंच महाव्रतवंत हो ॥ आश्रव रुंधे कषा

यके टाले, ध्रुवजोगी धनवंत हो ॥ ध० ॥ ५ ॥ वर्जे जोग सावद्य समदृष्टि, अर्थिज्ञान तप चरण हो ॥ पाप प्रहारे थिर जोग धारे, जे मुनि तारण तरण हो ॥ ध०॥६॥ चार आहार वाशी नहिं राखे, जोगवे साधर्मिकी आमंत्र हो ॥ सजाय ध्यान मेली नहिं रहे नित आतमा, निज राखे स्वतंत्र हो ॥ ध० ॥ ७ ॥ विग्रहकारिणी दुःख वधारणी, न कथे विकथा प्रबंध हो ॥ न करे राग द्वेष क्षमा धारक, संजम तप ध्रुव बंध हो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पंच इंडीने कंटक सम लागे, आक्रोश वचन परिहार हो ॥ अट्ट हास्य शब्द परम जयंकर, सम सुख विचार हो ॥ ध० ॥ ९ ॥ पडिमाधारक सात जय वारक, ममता नहिं तन तुष तोल हो ॥ पृथिवी समान जप धान आराधे, वर्जे नियाणो कितोल हो ॥ ध०॥ १० ॥ सहत परिसह लडत अरिसें, कुगतिसें आतम टालंत हो ॥ जनम मरण जव वर्जण कारण, संजम तपस्या साधंत हो ॥ ध० ॥ ११ ॥ हाथ पाय बांह इंद्रिय संजय, सद्यायरक्त सूत्र जाण हो ॥ जांम उपकरण मूर्छा नहिं राखे, जे जिक्खु चाहे कल्याण हो ॥ ध०॥ १२ ॥ अज्ञात कुलें गृहे अल्प आहार रिख, न करे विणज वेपार हो ॥ छोडे कुसंग मूर्छे नही जोजन, नहिं वंछे पूजा सत्कार हो ॥ध०॥१३॥ कोप वशें कुजाषा न जंपे, छंडे छल अजिमान हो ॥ पुण्य पाप फल प्रत्यें विचारे, जे जिक्खुआगम जाण हो ॥ ध० ॥ १४ ॥ धर्मदेव धर्मदेशना दायक, नायक या एक जेम हो ॥ श्रीजैनधर्मने धीरे धरावे,वरजे कुशील लिंग प्रेम हो ॥ ध० ॥ १५ ॥ देहको वास अशुचि डुर्वासक, असासतो विद्युत्संझावान हो ॥ ममता त्यागी अनुरागी मुगतिका, निजपर आतम सुखदान हो ॥ ध० ॥ ॥ १६ ॥ जनममरण रणझरण मिटाइ,चरण करण उद्धार हो ॥ चरण सरण धर तरण तारणको, केवल कमला जरतार हो ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुक्ति महेलकी सहेल अचल पद,अजर अमर अविकार हो ॥ अलख निरंजन जविम

न रंजन, वरते जेजेकार हो ॥ ध० ॥ १७ ॥ दशमुं अध्ययन भिखु मारगनुं, जे कर्मभेदनहार हो ॥ आराधना करे शम दम परिणामें, पावें नव निस्तार हो ॥ ध० ॥ १ए ॥ संवत् पंदरेशें एकतिस संवछर, उतख्यो भसमग्रहकूर हो ॥ श्रीजिनसासण उदे पूजा प्रगटी, समकित जोत सनूर ॥ ध० ॥ २० ॥ गुर्जर देश विशेष प्रसिद्धता, अहमदाबाद मझार हो ॥ शुद्ध श्रद्धाधारक श्रावक लुंका जी, किनो ज्ञान उपगार हो ॥ध० ॥ २१ ॥ ततदेशना सुणि एकदिनमांही,मुख्य भाणो जी बखाण हो ॥ पेंतालिस जणा संगें संजम धाख्यो, चित्त दढता अति आण हो ॥ ध०॥२२॥ ङःकर ङःकर करणी धारी, दयाधरम थयो परकाश हो ॥ सातमे पाटे सत्तरेसें पूज, पद धारक विमास हो ॥ध०॥ २३ ॥ श्रीश्री कान्हजी रिख महाराया, दीपायो जैनधर्म हो ॥ चालीस सहस्र ग्रंथ आगम कंठागर, टाल्यो अज्ञान को भर्म हो ॥ ध० ॥ २४ ॥ तत् पाटोधर पूज्यता रिखजी, काला रिखजी गुणवंत हो ॥ बगसू रिखजी तस पाट विराज्या,शूरवीर महमंत हो ॥ ध० ॥ २५ ॥ तत् अंतेवासी पूज्य धनजी, शम दम उपशम धार हो॥ तत् शिष्य श्रीअयवंता रिखजी, चरण करण दातार हो ॥ ध० ॥ २६ ॥ चरण सरण तस ग्रहण करीने,बाल ख्याल जिम जाण हो ॥ प्रत्येक अध्ययन उद्देशाकी किंचित,रची रचना हित आण हो ॥ ध० ॥ २७ ॥ हीण अधिक पद अर्थ जो दीसे, बुध जनसुं अरदास हो ॥ शुद्ध करि लीजो हास्य न कीजो, जयणा शुद्ध भणजो उल्लास हो ॥ ध० ॥ २७ ॥ संवत् उगणीशें चालीस संवछर, चैत्र शुक्ल बीज जाण हो ॥ वार चंद देश दक्षिणमांही, अहमद नगर प्रमाण हो ॥ ध० ॥ २ए ॥ तिलोकरिखजी कहे धन जिनागम,सर्धे जो भविक मन खंत हो ॥ अनंत संसार परित कर देवे,पाले सो होय शिव कंत हो ॥ ध० ॥ ३० ॥ हीण अधिक जे आग्यानी बाहिर, जो कोइ जोडाणो होय हो ॥ देव गुरु धर्म आतमा साखें,

मिछामि डुक्कड मोय हो ॥ध०॥३१॥ अरिहंत सिद्ध साधु धर्म ए चारी,होजो सदा शरण चार हो ॥ रिद्धि सिद्धि सुख संपत अविचल, दीजो परम दातार हो ॥ध०॥३२॥ कलश ॥ जिनराज वाणी, सुखदाणी, नविक प्राणी,सुख नणी ॥ सप्त नंगी,कही चंगी,नविक रंगी,रुचि घणी॥ जे पाले नावें,कर्म घावे,केवल पावे,सार ए ॥ तिलोक रिख जी इम, सीख गुरुगम,ए रचि सझाय,सुखकार ए ॥ध०॥३३॥ इति निरकुअध्ययनम् ॥ इति दशवैकालिकसूत्रजीकी पीठिका सहित अध्ययन उद्देशा प्रत्येक पन्नर सझाय संपूर्ण ॥ सर्व गाथा ॥२३२॥

॥ अथ गुरुगुण सझाय प्रारंनः ॥

॥ देशी केरबामें छे ॥ प्रणमुं गुरु गुणवंत नगीना, रिद्ध सिद्ध दातार ॥ नलां रे ज्ञानी ॥ रिद्ध० ॥ गुरुगुण हिरदे वस रह्या, म्हारे जीवन प्राण आधार ॥ गु० ॥ १ ॥ गुरुगुण सागर परम उजागर, नागर नवल व्रतधार ॥ न० ॥ ना० ॥ गु० ॥ २ ॥ ज्ञान को अंजण दे मनरंजण, नंजण नर्म अंधार ॥ न० ॥ नं० ॥ गु० ॥३॥ धीरज मंदिर सोम ज्युं चंदर, धरम धुरंधर धार ॥न०॥ ध० ॥ गु० ॥ ४ ॥ करमके गंजन अलख निरंजन, शिवपदके दातार ॥ न० ॥ शि० ॥ गु० ॥ ५ ॥ आप तरे पर तारण हारा, राग द्वेष परिहार ॥ न० ॥ रा० ॥ गु० ॥ ६ ॥ मात तात सुत न्रात कामिनी, सगपण सर्व असार ॥ न० ॥ स० ॥ गु० ॥ ७ ॥ गुरु सम नहिं को हित कारक छे, विपत विम्हारणहार ॥ न० ॥ वि० ॥ गु० ॥ ८ ॥ चित्रावेल चिंतामणि पारस, इण नवमें सुखकार ॥ न० ॥ इ० ॥ गु० ॥ ए ॥ सतुगुरु इणनव परनवमांही, दे सुखसंपत सार ॥ न० ॥ दे० ॥ गु० ॥ १० ॥ मोतिसा मलीने खांम्हसा खारा, आतमा समअपियार ॥ न० ॥ आ० ॥ गु० ॥ ११ ॥ गुरु कृपासें रायसंजेती, लीयो संजम नार ॥ न० ॥ ली० ॥गु०॥१२॥ पापी पूरो परदेशी राजा, दीयो सुर अवतार ॥ न० ॥ दी० ॥ गु०

॥ १३ ॥ चार हत्या करी दृढ प्रहारी, पायो मोक्ष डुवार ॥ज० ॥ पा० ॥ गु० ॥ १४ ॥ गुरु विण जुगत मुगति नहिं पावे, गुरु बिन घोर अंधार ॥ ज० ॥ गु० ॥ गु० ॥ १५ ॥ इत्यादिक अनंत हि तरिया, कियो सतुगुरु उपगार ॥ ज० ॥ कि० ॥गु० ॥ १६ ॥ पुछ कान्हजी रिखजी वरतायो, दयाधरम विस्तार ॥ ज० ॥ द० ॥ गु० ॥ १७ ॥ पुछता रिखजी तस पाटें, कालाजी रिख गुणधार ॥ ज० ॥ का० ॥ गु० ॥ १८ ॥ तस पाटें श्रीबगसू रिखजी, धन जी रिख हितकार ॥ ज० ॥ ध० ॥ गु० ॥ १९ ॥ तस शिष्य श्री अयवंता रिखजी, बाल जति ब्रह्मचार ॥ज०॥बा० ॥ गु० ॥२०॥ श्रीगुरु मुज पर परम मया कर, दिन्हो संजम जार ॥ ज० ॥ दि० ॥ गु० ॥ २१ ॥ तिलोकरिख गुरुगुणकी महिमा, सरस्वती पावे नहिं पार ॥ ज० ॥ स० ॥ गु० ॥ २२ ॥ गुरुगुण गावे मन शुद्ध करिने, वरते मंगल चार ॥ ज० ॥ व० ॥ गु० ॥ २३ ॥

॥ अथ बार जावनागर्जित उपदेशछत्रीशी सझाय प्रारंजः ॥

॥ प्राणी कर्म समो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ रे प्राणी जगमा या सब काची ॥ थें किम करी मानी छे साची रे ॥ प्राणी० ॥ ए टेक ॥ श्रीजगदीश के शीश नमाइ, कहुं उपदेशी रसालो ॥ ज वि प्राणी सुणो थिर चित्त करिने, मिथ्या जर्म थें टालो रे ॥प्रा० ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर हाट हवेली, बाग बगीचा निवाणो ॥ उ पद चउपद वस्तर गहेणां, हिरण्य सुवर्णादिक नाणो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ देहसुं नेह करे किम विरथा, पुजल शोजा छे सारी ॥ पर वस्तु विना लागें जयंकर, देखो ज्ञान विचारी रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ मात पिता सुत नारी सहोदर, स्वजन कौटुंबिक सारा ॥ अनंत वार सगपण सब जोड्यां, तोड्यां अनंतही वारा रे ॥ प्रा० ॥४॥ डुशमन मर कर सज्जन होवे, सज्जन डुशमन थावे ॥ राग द्वेष क रमाको बंधण, क्यों निज माल गमावे रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ मरन

रोग दुःख आवे जो तनमें, शरणागत नहिं कोइ ॥ तेरो साहाय क जैन धर्म हे, इण नव पर नव जोइ रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ प्रजु सरण बिना चउगति नटक्यो, पायो दुःख अनंतां ॥ ते बेदना निज आतमा जाणे, के जाणे नगवंता रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ जन्म लियो जब कोइ न साथी, मरतां पण नहिं लारी ॥ बंधी मुठीयें जन्मज लीनो, जावे हाथ पसारी रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ जायो जा यो कहे जनमतां, बाहेर पडियो रोवे ॥ जन्मतांही अपशुकन जो लीधां, रेणो किस विध होवे रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ सुख दुःख करता आतमा जाणो, नूगते आप अकेलो ॥ इम जानी दुःकृत परहरि यें, सुकृत किरिया सो फेलो रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ धन कुटुंब रिद्ध संपत पाइ, सो निज पुण्य प्रनावें ॥ जिण समे पुण्यको छेडोज आ वे, देखतमें विरलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ जिम तरुवर पर आवे पंखेरु, निज निज स्वारथ कामें ॥ पान फडे पंखी उड जावे, बेठे हया वृक्षगामें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ बाजीगर जब ख्याल रचावें, लोक होवें बहु नेला ॥ बाजी नयासुं सब नग जावे, जैसा जीव अकेला रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ गुवालके संगें गायको टोलो, कहे धेनु सब महारी ॥ जब आवे सो अपने घरमें, रहे अकेलो दंमधारी रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ देह अपावन परम घिनापन, मल मूतरकी या क्यारी ॥ अशुचि आहार करी ए तन निपज्यो, चर्मकी शोना छे ज हारी रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ सागर जल करी जो नित धोवे, तो पण शुचि नहिं थावे ॥ हाम करंमिया नंम मीटीकी, इणिपर क्यों तुं पो मावे रे ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ सहस्र दिनारको एक कवोलेवो, जीमे एम सदाही ॥ तो पण दे दगो एक पलमें, काढे जीवनें साही रे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ रोग सोग नय दुःख उच्चाटण, जनम मरण घर का या ॥ कोड जतन करतां पण जावे, इण पर क्यों तुं लोनाया रे ॥ प्रा० ॥ १८ ॥ दिन दिन चलनो नेडोज आवे, शंका नहिं छे लगा

रो ॥ श्वासोश्वासें ए तन छीजे, अंतमें होसी या छारो रे ॥ प्रा०॥ ॥ १९ ॥ उंची उंची निम लगावे, उंची मजला चढावे ॥ साडा तिन कर हे घर तेरो, क्यौं तुं पाप कमावे रे ॥ प्रा० ॥ २० ॥ हरि हर इंदर सुर असुर नर, जे जगमें देह धारी ॥ काल व्याल सबी ने गटकावे, चेतो चेतो नर नारी रे ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ कुरंग पतंग भ्रमर मत्स्य मरे,एक इंद्रिय वशें प्राणी ॥ जें पांचु इंद्रिय वश प डिया, तेणें डुर्गति खाणी रे ॥ प्रा०॥२२॥ ए तन पाय महा तप कीजें, लीजें श्रीजिन नामो ॥ दीजें अजय दान सकलने, सीफे वंछित कामो रे ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ जोग हलाहल फेहरसुं जादां, फ ल किंपाक समानो ॥ जोगवतां लागे मन गमता, पावें महा डुः ख दानो रे ॥ प्रा० ॥ २४ ॥ संवर मारग तारक सांचो, नवा क रम सब टालें ॥ हाट कपाट समान ए जाणो, आगम साख देखा ले रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ गया कालमें कर्मज कीनां, तेह हगवण कामें ॥ तपस्या डुवादश जेद करीजें, राखी सम परिणामें रे ॥प्रा० ॥ २६ ॥ अनंत अनंत मेरु परिमाणें, मिश्रीदिक वस्तु सारी ॥ अ नंत वार इण जक्षण कीणी, दीजें ममत सब मारी रे ॥प्रा०॥२७॥ जणणी दूध पियो इण चेतन, सब सागर जल वारी ॥ तो पण तृष्णा रंच न बूफी, समफो सुगुणा नर नारी रे ॥ प्रा० ॥ २८॥ लोक स्वरूप संठाण विचारो, पुण्य पाप फल देखो ॥ करमवशें प डिया सब जगमें, ज्ञानी बतायो ठे लेखो रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ देव निरंजन गुरु निर्लोजी, दयामांही जाणो ॥ ए तिनुं तत्त्व सा र पदारथ, निश्चल श्रद्धा ठाणो रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ जिहां लगें न हिं आवे वृद्धपणुं तन, रोग सोग नहिं आवे ॥ इंद्रिय पंच सो ही णी न होवे, उद्यम पहेली सरावे रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥ धरम ध्या न करहो एक चित्तें, कीजो सफल जमारो ॥ इण जिन चउगतिमें डुःख पायो, आगममें विस्तारो रे ॥ प्रा० ॥ ३२ ॥ रत्न चिंताम

णि नरभव पायो, उत्तम कुल अवतारो ॥ तप जप सुकृत उद्यम करजो, बाजी सार्थे मत हारो रे ॥ प्रा० ॥ ३३ ॥ अनंत जीव तरया धर्म प्रभावें, वली अनंताही तरसी ॥ इम जाणी प्रभु आज्ञा आराधे, सो शिव सुंदर वरसी रे ॥ प्रा० ॥ ३४ ॥ सत्गुरु तो कहेणेका हे गरजी, परउपगारी थें जानो ॥ जो नहिं मानो तो मरजी तुमारी, ए घोडा ए मेदानो रे ॥ प्रा० ॥ ३५ ॥ उगणीशें अडतिश जेठ शुद्ध सातम, गाम खरोंमीके मांही ॥ तिलोकरिख उपदेश बत्तिसी, भावना शुद्ध बणाइ रे ॥ प्रा० ॥ ३६ ॥

॥ अथ अनित्य भावना सद्याय प्रारंभः ॥

॥ संत चरणारी जाउं बलिहारी ॥ ए देशी ॥ ए संसार अनित्य भयकारी, नित्य जैनधर्म जो धारी ॥ ए० ॥ ए टेक ॥ गढ मढ मंदिर हाट हवेली, जाली झरोंकातें बारी ॥ जो बंध्या सो सकल ढल जावे, महेल गवाक्ष अटारी ॥ आरंभ मत करजो लगारी ॥ ए० ॥ १ ॥ पाट पीतांबर शाल डुशाला, हीर चीर जर तारी ॥ जो बणिया सो सकल बिनाशक, रेशमी थान किनारी ॥ करो कोई जत्न हजारी ॥ ए० ॥ २ ॥ बाजुबंध भुजदंड चोकडां, हारकडां पोंची भारी ॥ घडिया मढिया जडिया सुवर्णसें, हीरा रत्न झलकारी ॥ संग नहिं आवेगा थारी ॥ ए० ॥ ३ ॥ हरि हर इंद्र चंद्र सुर मानव, बाल तरुण जराधारी ॥ राव रंक नीरोगी सरोगी, अथिर सकल संसारी ॥ देखो भवि दृष्टि पसारी ॥ ए० ॥ ४ ॥ कूवा बावडी बाग बगीचा, वृक्ष बिचित्र मनोहारी ॥ न रहे वस्तु न रहे करता, करतां क्रोड प्रकारी ॥ वात ए जगमांहे जहारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जग पेदल दल रथ तुरंगम, सेना चार प्रकारी ॥ म्याना पालखी अस्तर शस्तर, रेवे नही तस धारी ॥ चराचर हे गतचारी ॥ ए० ॥ ६ ॥ मात पिता बंधव अरु भगिनी, काका

काकी सुत नारी ॥ न्याती गोती सजन सनेही,सचल सकल परिवारी ॥ मरे जिणे देही जो धारी ॥ ए० ॥ ७ ॥ धरतिअ कनक वारी सदाही, वर किया अनंत अपारी ॥ भूमि भुजंग जो सबी गिलजावे, तो पण कहे रिद्ध म्हारी ॥ देखो ये अचरिज नारी ॥ ए० ॥ ८ ॥ नित्य श्री जैनधर्म निरंतर, दृढमन लो इम धारी ॥ भरत नरिंद ज्युं केवल कमला, पावोगा नर नारी ॥ तिलोकरिखजी कहे सुबिचारी ॥ ए० ॥ ए ॥

॥ अथ असरण भावना अधिकार सझाय प्रारंभः ॥

॥ सामी सुणे और सुंदरी भांखे ॥ ए देशी ॥ सरणागत नहिं कोई इण जगमें, मात पिता सुत नारी रे ॥ न्याती गोती मित्र सनेही, हे सब स्वार्थकी यारी रे ॥ स० ॥ १ ॥ हीरा माणक माल खजीना, रथ पेदल गज घोडा रे ॥ काल रिपु जब आवे चलाई, धया रहे सब तोडा रे ॥ स० ॥ २ ॥ असंख्य कोटि सुर नायक इंदर, रत्न जडित घर जाणो रे ॥ आतमरक्ष सुर सेवे निरंतर, तो पण जम करे घाणो रे ॥ स० ॥ ३ ॥ लक्ष चोरासी हय गय रथ जस, पायदल छन्नवइ कोडी रे ॥ नवनिधि चउदे रतन घर पण तस, काल ले जावे दोडी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ द्वारकानाथ श्रीकृष्ण कहाया, छपन कोडी परिवारो रे ॥ दुःख आया कोइ आडो नहिं आयो, अंतर्ज्ञान विचारो रे ॥ स० ॥ ५ ॥ वज्र कोट मोट परकोटो,कंगुरे कोडि सिपाई रे ॥ सात भुयरामें राखे तोही पण, काल ले जावे साही रे ॥ स० ॥ ६ ॥ दो दो तरकस तीर जो बांधे, चाल चले अति अकडी रे ॥ जाणे में न मरशुं कदा पण, काल ले जावे फकडी रे ॥ स० ॥ ७ ॥ धन कुटुंब सजन जे जगमें, शरणागत मत मानो रे ॥ मृगतृष्णा जिम सत्य न होवे, भांखी हे त्रिजगभानो रे ॥ स० ॥ ८ ॥ को नवि सरनं को नवि सरणं, खि

अनाथी इम जाणी रे ॥ रिख तिलोक कहे धर्म शरण कर, पाया पद निर्वाणी रे ॥ स० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ संसार नावना सचाय प्रारंनः ॥

॥ सिद्धचक्रजी ने पूजो रे नविका ॥ ए देशी ॥ ए संसार च लाचल इणमें, नमियो चउगति प्राणी ॥ चोविश दंमक लक्ष चौरासी, पायो डुःख अनाणी ॥ संसार महाडुःख खाणी रे, नवि का,धर्म सदा सुखदाणी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ नरक विषे गयो वार अनं ती, क्षेत्रवेदना जिहां नारी ॥ परमाधामी महानिर्दयी,मारे विविध प्रकारी रे ॥ न० ॥ २ ॥ पल सागर थिति नोगवे परवश, आरत अधिकी आणे ॥ के तो तिणरो जीवज वेदे, के परमेश्वर जाणे रे ॥ न० ॥ ३ ॥ तिहांथी मरी तिरजंच गतिमें, निगोदपणामें संच रियो ॥ साडी पेंसठ हजार ठत्तिस नव, मुहूर्त्त एकमें मरीयो रे ॥ ॥ न० ॥ ४ ॥ सत्त्वविकलेंडी संझी असंझी, नमतां नरनव पा यो ॥ देश अनारज नीच ऊंच कुल, डुःखमें जन्म गमायो रे ॥ न० ॥ ५ ॥ अज्ञान कष्ट अकाम निर्जरासुं, सुरगतिमें अवतरीयो ॥ ना टक करकें रीझाया अपरनें, मरण समे डुःख धरीयो रे ॥ न० ॥ ॥ ६ ॥ औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण, सास उसास मन नाषा ॥ पुजल परावर्त्त सातुहि कीधा, अनंत वार इम आखा रे ॥ न० ॥ ७ ॥ इव्य क्षेत्र काल नाव ए चारु, सूक्ष्म बादर कहीयें ॥ ए पण वार अनंतही जाणो, सूत्र बचन सर्द्दहीयें रे ॥ न० ॥ ८ ॥ रोग सोग संजोग बिजोग वली,सुख डुःख अनुनव्यां सारां ॥ नाता स ब जोड्या वार अनंती, पण रह्या धर्मसें न्यारा रे ॥ न० ॥ ए ॥ खाया पिया पहेर्या उढया, सब सणगारज कीना ॥ ठाकर चाकर पद सब पायो, मुनिदरिसण नहिं नीना रे ॥ न० ॥ १० ॥ पाप सूत्र सब नणीयां सो निन्न निन्न, कर्म ध्यान सब धाया ॥ पाप

दान पण दीयां घणेरां,सुपात्र दान नहिं चढायां रे ॥ ज०॥११॥ तीन वेद पण अनुजविया सारा, सर्व जातिमांही जायो ॥ सर्व पाखंममें मरणज कीनां, जैनधर्म नहिं धायो रे ॥ज०॥१२॥ जन्म समे गुल दे बालकने, तेगुल मेरु अनंता ॥ जरकणकीया एक एक प्राणी, नांखे श्री जगवंता रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ जैनधर्म बिना संस गे करिया, जटक्यो सब कुल कोडी ॥ वालाग्रमात्र नूमि नहिं राखी, मिथ्या संगति जोडी रे ॥ ज० ॥ १४॥ धन्ना शालिजड् जद् पणासुं, मनमांही एसी बिचारी ॥ तिलोकरिख कहे जग बटकाई, वेगें वरी शिवनारी रे ॥ ज० ॥ १५ ॥

॥ अथ एकत्वजावना सचाय प्रारंजः ॥

॥ जमीकंदमें रे जीव जाईउपनो ॥ ए देशी ॥ रे चेतन तुं रे जग में एकलो, अनुजव दृष्टि बिचार ॥ काया माया रे ममता कारमी, कारमो सब परिवार ॥ रे० ॥ १ ॥ वर्णज पाचुं रे गंध दोई वली, आठ फरस रस पांच ॥ जोगज तीनुं रे आठुं करम तिका, जगमें नचावे रे नाच ॥ रे० ॥ २ ॥ कर्मावश कर फस रह्यो प्राणीयो, मोहणी जर्म विशेष ॥ ममता प्रजावें रे चउगतिने विषे, पायो अधिक किलेश ॥ रे० ॥ ३ ॥ जिहां जिहां जायो रे तिहां तिहां एकलो, एकलो परजव जाय ॥ हरि हर इंदर सुर असुर सहु, मरण समे पठताय ॥ रे० ॥ ४ ॥ रिद्ध नहिं जावे रें साथें प्राणीने, जावे हाथ पसार ॥ निज निज करणी रे फल सब जोगवे, शंका नहिं रे लगार ॥ रे० ॥ ५ ॥ जिम बाजीगर बाजी करे तदा, आवे बहु नर नार ॥ ख्याल जयासूं रे जावे दह दिशें, तिम सहु पुण्य परिवार ॥रे० ॥ ६ ॥ जिम तरुवरपर आवे पंखीयां, निज निज स्वारथ काम ॥ फल फूल कडीया रे सो सब खेचरु, जावे हरे तरु ठाम ॥ रे० ॥ ७ ॥ पाणी विना जिम माठलो डुःख लहे, धर्म विना

तिम जीव ॥ लक्ष चौरासी रे जीवा जोनिमें,दुःख यों पायो अती व ॥रे०॥८॥ इणविध हो सोची रे नेमी रायजी, छंडी राज भंडार ॥ तिलोक रिख दाखे रे संजम आदरी,पाया भवजल पार ॥ रे० ॥ ९ ॥

॥ अथ अन्यत्व भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ निज गुण उलख रे प्राणी, मान मान श्रीजिनजीकी वाणी ॥ निजपणो निजमें रे आणो, परद्रव्य सो अपणो मत जाणो ॥ नि० ॥ १ ॥ सिद्ध स्वरूपज रे तेरो, आंख मीच क्यों करत अंधेरो ॥ कस्तूरी मृगमें रे पावे, दोड दोड निज प्राण गमावे ॥ नि० ॥ २ ॥ तिम मत होवो रे भाई, तुं निरंजन निराकार सदाई ॥ कर्मसुं काया रे बंधी, श्रीजिन आगममें कही संधी ॥ नि० ॥ ३ ॥ क्यों करे तनने रे मातो, झूठो खोटो ए तन नातो ॥ इणसुं ममता रे टालो, अनुभव करी आतम अजुवालो ॥ नि० ॥ ४ ॥ ए तन तेरो रे नांहिं, या तो जड तुं चेतन मांई ॥ इणमें शंका रे नांइ, ममत कियासुं अधिक दुःख दाई ॥ नि० ॥ ५ ॥ नित नित भाडो रे दीजें, नित नित सार संभाल करीजें ॥ तोही न होवे रे या तेरी,क्यौं कहे निरर्थक मेरी या मेरी ॥ नि० ॥६॥ एकपखी प्रीती रे झूठी, या तो तुझ पर भव भव रूठी ॥ कायासुं ममता रे करणे, क्यौं तुं दुःख देवे जीव अपरणे ॥ नि० ॥ ७ ॥ जो जाणे मुझ तणी रे काया, सो तो मूढ गिमार कहाया ॥ इणसुं भवें भवे रे बीती, दुशमन प्रीति अंत फजीती ॥ ॥नि०॥८॥ मृगापुत्र एह विध रे जाणी, संजम ले गया पद निर्वाणी ॥ तिलोकरिख दाखे रे जाची, ज्ञान दर्शन किरिया सदा साची ॥

॥ अथ अशुचि भावना सझाय प्रारंभः ॥

॥ साधुजी सदाहि सुहामणा ॥ ए देशी ॥ देहसुं नेह न कीजीयें, देह अशुचिनुं गेह हो ॥ भवियण ॥ मल मूतर रुधिर भरी,

राचे मूरख जेह हो ॥ज०॥दे०॥१॥ माता रुधिर पिता शुक्रनो, कीधो प्रथम आहार हो ॥ ज०॥ गर्भवेदना सही आकरी, ते जाणे किरतार हो ॥ ज०॥ दे०॥ २ ॥ मास सवा नव फूलीयो, उंधे मुख गर्भवास हो ॥ ज० ॥ जन्म थयो दुःख वीसर्यो, झुलि गयो दुःख राश हो॥ज०॥दे०॥३॥ दिन दिन तन महोटो थयो, करे शुश्रूषा अपार हो ॥ ज० ॥ दुगंछा आणे अपर तणी, निज उत्पत्ति तो संजार हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ४ ॥ सात धातु इण देहीमें, सात कही उपधात हो ॥ ज० ॥ सातु मल निशिदिन झरे, तन ऊपर त्वचा कही सात हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ५ ॥ सातशें सर इणमें सही, तिनसें हाम करंम हो ॥ ज० ॥ वात पित्त कफ दोष जो, अधिक विनापन जंम हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ६ ॥ सागरजलसुं पखालीयें, तोहि विमल नहिं थाय हो ॥ ज० ॥ मान करणे किण कारणें, चर्मकी शोजा देखाय हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ७ ॥ काचा कुंज तणी ऊपमा, संजा फूलवो जेम हो ॥ ज० ॥ इंद्र धनुष जल मोतिको, नास होणेको नहिं नेम हो ॥ ज० ॥ दे०॥ ८ ॥ आहार आधारें ए रहे, रोग तणो जंमार हो ॥ज०॥ तप जप रत्न संग्रह करो, इणमें एहीज सार हो ॥ ज० ॥ दे० ए ॥ जो जाणे शुचि कायने, ते तो मूढ गिमार हो ॥ ज० ॥ चिंतामणि जवहारणो, खावे नरकमांही मार हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ १० ॥ चक्री सनतकुमारजी, जाणी काया असार हो ॥ ज० ॥ तिलोकरिख कहे तप करी, पाया जवजल पार हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ११ ॥

॥ अथ आश्रव जावना सद्याय प्रारंजः ॥

॥ बंधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आश्रव करमाको बंध बे, जगजीवने जाणो हो ॥ शुज अशुज नय जेद दो, सिद्धांत पे गणो हो के ॥ सुगुणा आश्रव टालो हो ॥ १ ॥ ए टेक ॥ जि

म जलधर सरोवर नरे, तिम कर्मज आवे हो ॥ अथवा नावा छिद्रमें, जल नरीयां मूबावे हो के ॥ सु० ॥ २ ॥ अधिक आश्रव कर्मबंधसुं, नरकगति जावे हो ॥ दीर्घस्थितिसु निगोदमें, अनंतकाल गमावे हो के ॥ सु० ॥ ३ ॥ इंद्रिय कषाय अव्रत वली, तीन जोग कहीजें हो ॥ पच्चिश क्रिया नेद जोडतां, बईयालिस लहीजें हो के ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्रोत्र इंडी वशें मृगलां, बनमें मृत्यु पावे हो ॥ नयन वश पतंग सो, निज अंग दझावे हो के ॥ सु० ॥ ५ ॥ घ्राण अली रस माछलो, वश प्राण गमावे हो ॥ स्पर्श वश कुंजर मरे, मन महिष हणावे हो के ॥सु० ॥६ ॥ एक एक इंडी वश मस्या, जगजीव अनंता हो ॥ जे बैही वशमें पड्या, नवनवमें मरंता हो के ॥ सु० ॥ ७ ॥ होतो सात लव आउखो, तो मोक्ष सिधाता हो ॥ अनुत्तरवासी अव्रतवशें, फिर नव दुःख पाता हो के ॥सु०॥८॥ शुन आश्रव शुन जोगथी, पुण्य बंधन जाणो हो ॥ पुण्यानुबंधी पुण्यसो, सुकृत सुख दाणो हो के ॥ सु०॥९॥ समुद्रपाल इम जाणीने, छंमी जगमाया हो के ॥ तिलोकरिखजी कहे धन सो नवि, आश्रव छिटकाया हो के॥सु०॥१०॥

॥ अथ संवरनावना सचाय प्रारंनः ॥

॥ सोवन सिंहासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सार संवर क्रिया आदरो, दादरो ए शिववाट रे ॥ हाट कपाट सम जाणीयें, आश्रव रज देवे दाट रे ॥ सा० ॥ १ ॥ त्याग करी आश्रव नालाने, रोकियें मन बच काय रे ॥ कर्म जाल सो कीये तप करी, धोकीयें श्रीजिन राय रे ॥सा०॥ २ ॥ अष्ट प्रवचन सत आदरो, जीतो परिसह बावीश रे ॥ धर्म दश विध साधु तणे, नावना वारे जगीश रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ पंच चारित्र समाचरो, नेद सत्तावन एह रे ॥ अनुनव ज्ञान दिशा करी, जाण संवर सु

ख गेह रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ संवर अंबर उढियें, मोडीयें नवदुःख ताप रे ॥ विषय रूप शीत सो लागे नहिं, चिपके नही आश्रव आप रे ॥ सा० ॥ ५ ॥ जीव तलाव जलकर्म ते, आश्रव नालां करो बंध रे ॥ अंध होवो मत मोहमें, ए जिन आगम संध रे ॥ सा० ॥ ६ ॥ वश करो चार कषायनें, गेडदो पंच प्रमाद रे ॥ आदरो शुद्ध समकित क्रिया, मेटजो नर्म अनाद रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ श्रीजिन आज्ञा आराधियें, पालीयें संजम नार रे ॥ जनम मरण विपता टले, उतरो नवजल पार रे ॥ सा० ॥ ८ ॥ एसी नावना मनमें ग्रही, धन हरिकेशी अणगार रे ॥ रिख तिलोक कहे धन जिका, धारे संवर सुखकार रे ॥ सा० ॥ ए ॥

॥ अथ निर्जरानावना सद्याय प्रारंनः ॥

॥ सुरीजन सांनलिजो सब कोय ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन मारग उलखो, कांई निर्जरा नाव बिचार ॥ शुके सर जल तापथी, कांइ तिम हिजे कर्मको वार ॥ चतुर नर ॥ अनुनव दृष्टि निहार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ देही नाजन जीव घृत ठे, कांइ कर्म ते गास समान ॥ तप हुताशन निन्न करे, कांइ हेम कीट इम जाण ॥ च० ॥ २ ॥ ते तप वारे प्रकारनुं, कांई अणसण ऊणोदरी नाम ॥ निख्याचरी रस त्यागणो, कांई जाणी निर्जरा गाम ॥ च० ॥ ३ ॥ कायकिलेस संलीनता, कांई वाह्य तप खट प्रकार ॥ प्रथम प्रायछित तप कह्यो, कांई विनय वेयावच्च धार ॥ च०॥ ४ ॥ सझाय ध्यान काउसग्ग नलो, कांई ए अप्निंतर सुविचार ॥ इह लोक पर लोककिर्ती विना, कांई सो निर्जरा तप सार ॥ च० ॥ ५ ॥ कर्म पहाड नेदण नणी, कांई करणी या वज्र समान ॥ पुद्गल ममता त्यागीयें, कांई शुद्ध नाव सुख दान ॥ च० ॥ ६ ॥ क्षण अगनि क्षण नीरमें, कांई लूहार साणसी जेम ॥ पुण्य पा

प फल जोगवे, कांई दोनुई बंधन तेम ॥च०॥७॥ जिहां लगें मोक्ष न सर्वथा, कांई तिहां लगें निर्जरा जाण ॥ सर्वथा निर्जरा होय तदा, कांई लहीयें पद निर्वाण ॥ च० ॥ ७ ॥ इम जाणी शम दम जावसुं, कांई करी अर्जुन अणगार ॥ तिलोकरिखजी कहे बमासमें, कांई पाया जवजलपार ॥ च० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ लोक स्वजाव तथा लोक संठाण जावना सद्याय प्रारंज्ञः ॥

॥ सुमति सदाई दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ लोक स्वरूप बिचारीयें, मूल जेद कह्या तीन ॥ सुग्यानी ॥ ऊर्द्ध अधो तिर्यग् सही, व्यवहार नयें इम चीन ॥ सु० ॥ लो० ॥१॥ ऊर्द्ध सनीचर उपरें, मृदंगके संठाण ॥सु०॥ कांईक कम सात राजनो, दाखीयो त्रिजगजाण ॥ सु० ॥ लो० ॥२॥ तिणमें कल्प द्वादश कह्या, नव लोकांतिक जाण ॥ सु० ॥ नवग्रैवेयक तिण उपरें, पंच छे अनुत्तर विमाण ॥ सु०॥लो०॥३॥ तीन किल्बिषी वली तेहमें, बासठ प्रतर ठाण ॥ सु० ॥ लक्ष चौरासीके उपरें, सत्ताणुं सहस्र विमाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ४ ॥ तेवीश वली अधिका कह्या, रत्न जडित जलकंत ॥ सु० ॥ तप संजम जिणें आदस्यो, सो सुरगति उपजंत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध विमाणसुं, बारा जोजन प्रमाण ॥ सु० ॥ सिद्ध शिला चित्ता छत्र ज्यों, पूरण चंद्र संठाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ६ ॥ पेंतालिस लक्ष योजन कही, लंबी पहोली सो जाण ॥ सु० ॥ अष्ट योजन जाडी बिचें, अर्जुन सुवर्णमय बखाण॥ सु० ॥ लो० ॥ ७ ॥ जोजन जाग चोविशमो, उपरें सिद्ध अनंत ॥ सु० ॥ अनंतसुख माांही झिल रह्या, अष्ट कर्म करी अंत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ७ ॥ निचें शनिचरें विमाणसुं, अगारेसें जोजन जाण ॥ सु० ॥ तिर्छो लोक श्री जिन कह्यो, झल्ल

रीके संठाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ए ॥ समय क्षेत्र अछे सासतो, ल क्ष पैंतालीश मांय ॥ सु० ॥ दीप अढाइ समुद्रसों, नांख्या श्री जिनराय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १० ॥ पंच महा विदेहमांही शाश्वतां, जघन्यपदें जिन वीश ॥ सु० ॥ दोय कोडी केवली कह्या, दोय को डी सहस्र मुनीश ॥ सु० ॥ लो० ॥ ११ ॥ ते सब प्रणमुं नावसुं, थापे तीरथ चार ॥ सु० ॥ नरत ऐरवत दश क्षेत्रमें, ठ आरानो व्यवहार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १२ ॥ अकर्मनूमिनां वली, क्षेत्र क ह्यां प्रनु त्रीश ॥ सु० ॥ अंतर द्वीप छप्पन अछे, नोगवे पुण्य जगी श ॥ सु० ॥ लो० ॥ १३ ॥ द्वीप असंख्याता बाहिरे, सागर पण सुविचार ॥ सु० ॥ जंबूद्वीप पूर्ण चंद्रसो, अवर सो वलयाकार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १४ ॥ अधोलोक व्यंतर तलें, वेत्रासन सात रा ज ॥ सु० ॥ सात नरक दुःख दोहिलुं, पाप तणो एह साज ॥ सु० ॥ लो० ॥ १५ ॥ उगणपचास छे पाथडा, सातुंही नरक मि लाय ॥ सु० ॥ नरकवास गिणतां थकां, लाख चोराशी सो थाय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १६ ॥ परथम नरक बारे अंतरा, खाली छे उप रला दोय ॥ सु० ॥ दशमांहे दश नवनपति, शंका मत राखजो कोय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १७ ॥ सात क्रोड नवन तेहमें, अधिक बोहोंत्तर लाख ॥ सु० ॥ देव असंख्याता छे तेहमें, छे सूत्र तणी साख ॥ सु० ॥ लो० ॥ १८ ॥ धर्माधर्म आकाशास्ति, पुजल जी व अने काल ॥ सु० ॥ ए खट द्रव्य सदा लोकमें, दाखी दीनद याल ॥ सु० ॥ लो० ॥ १ए ॥ जिण सुकृत करणी करी, ते उप न्या शुनगाम ॥ सु० ॥ जिणें दुःकृतपणुं आदर्युं, ते पाया दुःख धाम ॥ सु० ॥ लो० ॥ २० ॥ शिवराज रखि इम नावना, नेव्या श्रीवर्द्धमान ॥ सु० ॥ तिलोकरिख कहे ध्येयध्यानसुं, लहीयें शिव पुर थान ॥ सु० ॥ लोक सरूप विचारीयें ॥ इति लोक स्वनाव तथा लोक संठाण नावना सद्याय ॥

॥ अथ बोधबीज भावना सद्याय प्रारंभः ॥

॥ सीमंधर साहिब, दिल वसो ॥ ए देशी ॥ समकित रत्न चिंतामणि, वंछित सुखनी दातारो जी ॥ जतन करी अति राख जो, टालो पंच अतिचारो जी ॥ स० ॥ १ ॥ पुण्यजोगें मानव भव लह्यो, उत्तम कुलमें अवतारो जी ॥ समकित सरधा छे दोहेली, कोथले भरणो वयारो जी ॥ स० ॥ २ ॥ अनंतानुबंधिकी चोकडी, मोहणी तीन प्रकारो जी ॥ सातु प्रकृति उपशमे तदा, उपशम समकित धारो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ कांइक क्षय कांइक उपशमे, क्षयोपशम कहे जगभाणो जी ॥ सास्वादन पडतायकांकी, वेदे सो वेदक जाणो जी ॥ स० ॥ ४ ॥ सातु क्षयथी क्षायिक होवे, दाखी श्रीजिनराया जी ॥ क्षायिक आइ जावे नही, आगम भेद बताया जी ॥ स० ॥ ५ ॥ ए निश्चें समकित तीका, ते तो केवली जाणे जी ॥ छद्मस्थ तो व्यवहारथी, द्रव्य क्रियाने पेछाणें जी ॥ स० ॥ ६ ॥ देव अरिहंत निर्ग्रंथ गुरु, धर्मजिन आज्ञा प्रमाणो जी ॥ ए तिहुं तत्त्व समाचरे, सो व्यवहार बखाणो जी ॥ स० ॥ ७ ॥ छे आवलिका प्रमाणही, फरसे समकित प्राणी जी ॥ अर्ध पुजलमें सो शिव लहे, भांखी केवल नाणी जी ॥स०॥८॥ समकित समकित सब कहे, कठिन छे समकित भावो जी ॥ निश्चय व्यवहार ने उलखे, तारक भवजल नावो जी ॥ स० ॥ ए॥ तप संजम किरियो करे, जो समकित बिना कोई जी ॥ छार उपर जिम लीपणुं, अंक बिना शून्य होई जी ॥ स० ॥ १० ॥ इण कारण सुणो बुध जना, समकित दृढ करी राखो जी ॥ मिथ्या भर्म निवारियें, जो शिवसुख अभिलाखो जी ॥ स० ॥ ११ ॥ मास मास तपस्या करे, कूस अगर जल आरो जी ॥ समकित सहित भोकारसी, तुल्य न आवे लगारो जी ॥ स० ॥ १२ ॥ श्रेणिक कृ

ल्म नरेश्वरु, रिखब जिनंदजीका नंदो जी ॥ समकित विशुद्ध प्र भावना, टाल्या भवदुःखफंदो जी ॥ स० ॥ १३ ॥ समकित क्रिया बिना जगतमें, नहिं कोई तारणहारी जी ॥ तिलोकरिखजी कहे इम सर्दहो, जे सुगुणां नर नारी जी ॥ स० ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ धर्म भावना सझाय प्रारंभः ॥

॥ देशी कडखामें ॥ सेव नित्यमेव, जैनधर्म सुरतरु सदा, धीरजकी धरणी,संतोष पाणी ॥ ज्ञानको बीज, तस मूल समकित क्रिया, कंद विनय खंद, दया बखाणी ॥ से० ॥ १ ॥ सत्य शाखा महा, भेद प्रतिशाख तस, मधुर बचन दल, अधिक सोहे ॥ कुसुम शुभध्यानके, कीर्त्तिसौरभ्य अति, मोक्ष फल मधुर सुख, स्वाद मोहे ॥ से० ॥ २ ॥ चिदानंद पंथी, सुखा नंदछायमें, निजानंद पणेथिर, भाव सेरी ॥ कषाय भव ताप, संताप दूरें हठे, बलीहारी ए कल्पतरु, धर्म केरी ॥ से० ॥ ३ ॥ एह संसारमें, धर्म आधारथी, रिद्ध सिद्ध संपदा, अनंत पाया ॥ बापडा जीव केइ, भर्मे कर्मावशें, कल्पवृक्ष छोडी, बांबुल लोभाया ॥ से० ॥ ४ ॥ केइ हिंसा करे, पाप पिंमज भरे, दयाधर्म उपरें,द्वेष राखे ॥ भ्रष्ट कुगुरु तणा, कर्म बांधे घणां, गज परें निजशिरें, धूल नाखे॥ से० ॥ ५ ॥ हार नर भव करे, छार चिंतामणि, सो सहे परवशें, खड्ग धारा ॥ विभ्रमे चउगति, जीव जे डुर्मति, धारे नहि धर्मके, धिट्ट गिमारा ॥ से०॥६ ॥ धर्म विन सरण नहिं, धर्म विन तरण नही, धर्म विना नहिं कछु, सुखदाता ॥ मात पिता सुत, भ्रात धन धान वित्त, मरण वेदनी समे, नहिं हे त्राता ॥से०॥७॥ दोड रे दोड, जैनधर्म तरु ग्रहणकुं, छोड रे छोड, भवताप तांई ॥ पोढ रे पोढ तुं, उपशम छायमें, छोड रे छोड ए सुख दाई ॥से०॥८॥ झटक दे झटक दे, कर्मकी रेणुका, पटक दे पटक दे, पाप भारो ॥

हटक दे हटक दे, जोग विपरीत पण, गटक ले धर्म, अमृत अहारो ॥ से० ॥ ए ॥ गाल रे गाल, अष्टमद त्रिहुंगर्वने, टाल रे टाल, प्रमादघांटी ॥ पाल रे पाल, छकाय प्रितपाल तूं, बाल रे बाल कूलमें टाटी ॥ से० ॥ १० ॥ दया उपरांत नहिं, धर्म कोई जक्त में, ग्यानको सार, एहीज बखाणी ॥ दया रुचि बिना, सर्व किरिया वृथा, कंत विन रामा ज्यौं, वेलु घाणी ॥ से० ॥ ११ ॥ सात नामें करी, सूत्रमें वर्णवी, दया भगवती अति, सुख दाणी ॥ धर्म रुची मुनि, देह ममता तजी, किडियां परें करुणा सो, अधिक आणी ॥ से० ॥ १२ ॥ कडुवां तुंबा तणो, आहार अमृत समो, कर लियो सम परि, णामें स्वामी ॥ तीक्ष्ण वेदना, खेद नहिं आण मना, सर्वार्थ सिद्ध लही, मोक्ष पामी ॥ से० ॥ १३ ॥ मात मरुदेवी, सेवी जिन धर्मके, भाव चारित्र करी, कर्म घाया ॥ ध्यान शुकल धर्यो, ज्ञान केवल वर्यो, होय अजोगी, मुक्ति सिधाया ॥ से० ॥ १४ ॥ धर्म वरभावना, जो कोई धावेगा, पावेगा सो शिव, गढ निःशंका ॥ रिखतिलोक कहे, धर्म परभावथी, इह भवें परभवें, जीत डंका ॥ से० ॥ १५ ॥

॥ अथ तेरे काठियानी सझाय लिख्यते ॥

॥ श्रीजिनमारग पाइजी कमाई कीजो धर्मनी, कांइ तेरे काठीया टाल ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम आलस जाणोजी दारिद्र मूल पिछाणियें, कांई धरम करणकी जेज ॥ हाल बखत छे नाहीं जी समायिक पोसा वखाणकी, कांइ काल गमावे सेज ॥ श्री० ॥ १ ॥ मात पिता सुत भाइजी कायाने माया कारमी, कांइ भांखी छे जिनराय ॥ तिणसुं ममता बांधेजी नही साधे आतम काजनें, कांइ मोह काठियो दुःखदाय ॥ श्री० ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म मांइजी करडाइ राखे जीवडा, कांइ लोक वडाई रीत ॥ तडके तोड वोलेजी नहिं

तोले हिरदें न्यावने, कांइ अविनय विपरीत ॥ श्री० ॥ ३ ॥
जाणे में हुं शाहाणो जी अकल बलरूपें जातिमें, कांई सघलामें शि
रदार ॥ परनी करे बुराईजी बडाई करे आपनी, कांइ राखे मन अ
हंकार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कोइक देवे तुंकारोजी देवे शिक्षाधर्मनी,
कांइ आणे अधिको क्रोध ॥ लालनेत्र करी बोले जी वली बोलें
मर्मेज पारका, कांइ होवे धर्मविरोध ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रमाद घ
णो अंग लावे जी नहिं लावे धर्मनी वातडी, कांइ समरे नहि नव
कार ॥ नरभव एल गमावे जी नहिं चावे जप तप साधना, कांइ
धिक तिणरो अवतार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पाप करी धन जोडे जीव
दोडे देश प्रदेशमें, कांइ तृष्णा अपरंपार ॥ घर छोडयां नहि जावे
जी किम थावे धर्म तिण जीवसुं, कांइ लोभ महादुःखकार ॥
श्री० ॥ ७ ॥ सिंह सरप सुर देणो जी वली घरको खरच निभाव
णो, कांइ डर आणे मनमांय ॥ धर्म किसबिध थाये जी नहिं ला
वे धीरजता हियें, कांइ सोचो ज्ञान लगाय ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इष्ट
तणो संजोगो जी विजोगज होवे इष्टनो, कांइ रोगादिक तनमांय
॥ शोक घणेरो लावे जी गभरावे निशदिन प्राणियो, कांइ पामे धर्म
अंतराय ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जीव अजीव नहिं जाणे जी वली सम
झे नहिं पुण्यपापमें, कांइ लीणो श्रीजिनधर्म ॥ अज्ञान पणामें राचे
जी वली खांचे खोटी रूढीने, कांइ अधिका बांधे कर्म ॥ श्री० ॥
१० ॥ विकथा करे पराइ जी कमाइ टोटा खरचकी, कांइ काम
भोग अधिकार ॥ हाथ कांइ नहिं आवे जी गमावे निजगुण
जीवडा, कांइ भटके अनंत संसार ॥श्री०॥ ११ ॥ देखे ख्याल त
मासाजी वली बोले भापा हांसीनी, कांइ करे कुतूहल वात ॥
लाखेणी घडी खोवेजी विगोवे भव चिंतामणि, कांइ होवे धर्मकी
वात ॥ श्री० ॥ १२ ॥ निशिदिन निशिदिन खाणोजी वजाणा
ताणो खेलणो, कांइ नाहाणो धोणो अंग ॥ तिणमें काल गम

वे जी नहिं ध्यावे श्री जगदीशनें, कांइ होय धर्ममे नंग ॥ श्री० ॥१३॥ कावीया ए डुःखदायी जी लगा छे संग अनादिका, कांइ धर्म रतनका चोर ॥ इणसुं बहु डुःख पायो जी नहिं आयो नेडो धर्मने, कांइ कीधो कर्म कवोर ॥ श्री० ॥ १४ ॥ उगणीसें गुण वालिशजी वदि मास आषाढतिथि चोथमें, कांइ पुना शहेर मझार ॥ तिलोकरिख कहे टालो जी ए काविया तेरे नावशुं, कांइ उतरो नवजल पार ॥ श्री० ॥ १५ ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ ग्रंथानुसारसें एकसोबत्रीशबोल अथवा कर्मविपाक माला सझाय प्रारंनः ॥

॥ देशी चलत चालमें ॥ चिंतामणि सम नर पाइ, निरर्थक जनम गमावेगा ॥ नानाविध जीव करम करीने, नानाविध डुःख पावेगा ॥ सुण नाइ रे उदे नयां पस्तावेगा ॥ सुण नाइरे तेरा किया तुंही पावेगा ॥ १ ॥ फूलबीजके बिंद बिंदकें, गजराहार बणावेगा ॥ इण करणीथी परनवमांइ, एक नेत्र नहीं पावेगा ॥ सुण० ॥ २ ॥ त्रस थावर प्राणीने जो तुं, जलके मांही डुबावेगा ॥ इण कर तबसें परनवमांइ, जनम अंधपण आवेगा ॥ सुण० ॥ ३ ॥ माखी मालका वांता तोडें, धूंवे करीने गनरावेगा ॥ इण पातकसूं ते परनवमें, आंधा बेहेरा थावेगा ॥ सु०॥ ४ ॥ रूप रंग देखी तिरियाको, खोटी दृष्टि लगावेगा ॥ सतगुरु देखी होवे डुमणो, जलमल तो तास देखावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ एकेंड्रिय जीवाको करे जो चूरण, सलियां धान्य पिसावेगा ॥ इण अनर्थसूं परनवमांइ, कूबडापणो सो पावेगा ॥ सु० ॥ ६ ॥ बेल घोडादिक चौपद उपर, अधिको नार नरावेगा ॥ चांदी पडिया पण नहिं वोडे, गडगुंबड अंग आवेगा ॥ सु० ॥ ७ ॥ पंखेरूकी पांख उखाडे, वृक्षकी माल कटावेगा ॥ इण करणीसूं परनवमांही, टूंटा पग हो जावेगा ॥ सु०

॥ ८ ॥ एकेंद्रियकी जड उखाडे, पशुजीव संतावेगा ॥ वतें मार ग लीलोतरी चांपे, पंगुला पग हो जावेगा ॥ सु० ॥ ए ॥ संजमी शीलवंत जन केरी, निंदा कर हरखावेगा ॥ इण करणीसूं परजव मांही, गूंगो बोबडो थावेगा ॥ सु०॥ १० ॥ करे वैदक उषध मा त्रा, हिंसा करि निपजावेगा ॥ इणकरणीसूं परजवमांइ, खोजाप ण सो पावेगा ॥ सु० ॥ ११ ॥ वनस्पतिको छेदन जेदन, हियसूं कर पोमावेगा ॥ इण करणीसूं परजव प्राणी, बेरो पांगुलो थावे गा ॥ सु० ॥ १२ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, जिनकी अव गुण गावेगा ॥इण करणीसूं परजव मांइ, गुंगो बेहेरो हो जावेगा ॥ सु० ॥ १३ ॥ हिरण्य सुवर्णादिक धातु जे, जिनका आगर खोदावेगा ॥ इण अनरथसूं परजवमांही, गलत कोढ अंग आवे गा ॥ सु० ॥ १४ ॥ सावद्य उषध जेखज केरो, अधिको संजोग मिलावेगा ॥ तिणसूं जस करतां पर उपर, अपजस कमावेगा ॥ सु० ॥ १५ ॥ खारी लूणका आगर खोदावे, लुणको बिणज कमावेगा ॥ इण करणीसूं परजवमांहे, आंख बाबणी थावेगा ॥सु०॥ १६ ॥ सौम्य सुंदर नेत्र जें परनां, द्वेषथी मंद कर देवेगा ॥ तिणकरणीसूं परजवमांहिं, आंख मांजरी रहेवेगा ॥सु०॥१७॥ महोटी काया देखि आपणी, अहंकार मन लावेगा ॥ इण करणी सूं परजवमांही, बावनी काया पावेगा ॥ सु० ॥ १८ ॥ फंफ आ करो करे उरकूं, अधिको त्रास वतावेगा ॥ इण करणीसूं परजव मांही, रूंढ मुंढ अंग थावेगा ॥ सु० ॥ १ए ॥ पंचेंद्रिय जीव हणे निज हाथें, मुखसूं अधिक सरावेगा ॥ तिणकरणीसें परजवमांही, रोग जगंधर थावेगा ॥ सु० ॥ २० ॥ दूसराके धन आतो देखी, विच अंतराय लगावेगा ॥ तिण कर्मे धन इछा राखे, पण लक्ष्मी नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २१ ॥ तीव्रजावें मैथुन सेव्यां, पथरीका रोगज आवेगा ॥ कांटाने विंधि माछलां मारे, कंठमाल रोग था

वेगा ॥ सु० ॥ २२ ॥ धूणी घाली जीव संतावे, हरस रोग दुःख आवेगा ॥ जुवारा बोवे वेलडी तोडे, बाल बहू पडजावेगा ॥ सु० ॥ २३ ॥ लांच लेइने झूठुं बोले, सच्चाकूं गभरावेगा ॥ तिणसूं रोग घणो दुःख अंगमें, लोकके नहिं देखावेगा ॥ सु० ॥ २४ ॥ कृतघ्न पणुं कपट घणेरो, मित्रसूं छलपणुं लावेगा ॥ तिणसूं सुख संजोग मिलावे, विजोग आय पड जावेगा ॥सु०॥२५॥ फल तोडी दोरामें प्रोइ, अधिको रूप दिखावेगा ॥ इण करणीसें परभवमांहि, खोटो वर्णज पावेगा ॥ सु० ॥ २६ ॥ कूवा बावडी सरवर जलका, वणावे पाल फोडावेगा ॥ इण करतव्यसें परभवमांइ, रोगपाठाको आवेगा ॥ सु० ॥ २७ ॥ कोटवालको करम करे कोइ, बहोत प्राणी मर पावेगा ॥ तिणसूं मरपणपणो घणो अंगमें, मार घणेरी पावेगा ॥ सु० ॥ २८ ॥ जू मांकडादिक त्रेंद्रिय प्राणी, तावडे नाखीने धावेगा ॥ तिणसूं खाजा फूटणी अंगमें, पीडा अधिकी थावेगा ॥ सु० ॥ २९ ॥ क्रोध घणेरो करे और पर, फूठ आल लगावेगा ॥ तिणसूं मिथ्या सरधा करकें, फूठी बात जमावेगा ॥ सु० ॥ ३० ॥ घृत तैल मधुआदिकका वासण, उघाडा राखे रखावेगा ॥ सूत्र भणावे करे वेयावच्च, उलटा सो अवगुण गावेगा ॥ सु० ॥ ३१ ॥ कपट करिने परधन लेवे, मागे तब नट जावेगा ॥ तिण करणीसूं परभवमांहे, इस्त्री नपुंसग थावेगा ॥ सु० ॥ ३२ ॥ पृथिवीको करे खांमण पीसण, आरंभ अधिक करावेगा ॥ तिण करणीसूं होवे कोढीयो, भव भव गोथां खावेगा ॥ ॥ सु० ॥ ३३ ॥ माछलाको करे आहार घणेरो, जुवा अधिक संतावेगा ॥ तप जप मद करे तिण करमें, तप अंतरायज आवेगा ॥ सु० ॥ ३४ ॥ अविश्वासी कृतघन दुष्टी, मित्रद्रोही पणो लावेगा ॥ ज्ञान ध्यान तप जप करे बहुलां, पण परने नहिं सुवावेगा ॥ सु० ॥ ३५ ॥ वचन कला मधुरता बोली, जिणको गरभ जला

वेगा ॥ तिणसें परजवमांही वचन सो, परकूं नहिं सुहावेगा ॥ सु० ॥ ३६ ॥ रूपको मद करे मनमांही, रूप जयंकर पावेगा ॥ कूडो कलंक देवे परजनकूं, खोटा आलज आवेगा ॥ सु० ॥ ३७ ॥ जाइ जोजाइ देराणी जेठाणी, सासूकी ईर्ष्या लावेगा ॥ तिण कर णीसें परजव मांहे, अणकिधो अपजस आवेगा ॥ सु० ॥ ३८ ॥ आपणी थापे परकी उथापे,बे जरोंसो मन लावेगा ॥ तिण कर में जिहां बेठे रहेवे,अणआदर पणुं आवेगा ॥ सु० ॥ ३९ ॥ ला लच लोज जो राखे घणेरो,क्रोध हिये नहिं मावेगा ॥ परका ला जमें धको देवे, अलाजपणो तस थावेगा ॥ सु० ॥ ४० ॥ मुंढो मुंदी फांसी देवे, परप्राणीने धावेगा ॥ हीणो शब्द अटकती बोली, बोलतां अति गजरावेगा ॥ सु० ॥ ४१ ॥ सुस्वर कंठको गर्व किया सें, कराइ कररावेगा ॥ निर्वेद मीठी वाणी बोल्यांथी, सुस्वर शब्द सुहावेगा ॥ सु० ॥ ४२॥ तीव्रजावें मांस जक्षणथी, इंडिय बलहि ण पावेगा ॥ तीव्रजावें मद पीयाथी, निड्रा घणी संतावेगा॥ सु० ॥ ४३ ॥ संजोगतणो विजोग पाड्याथी, वंछित वस्त न पावे गा ॥ कूकडादिक मांस जक्षणसेंती, तनशक्ति घट जावेगा ॥ ॥ सु० ॥ ४४ ॥ जाखसीमांही रूंधी प्राणी, उपर खार छुर कावेगा ॥ इण करणीसूं परजवमांही, मूको बोलो थावेगा ॥ सु० ॥ ४५ ॥ अनंतकाय कंद मूल जक्षणथी, रोणो घणोज आवे गा ॥ असन्नी पचेंड्रिय जीव हण्याथी,हांसी नहिं समावेगा ॥ सु० ॥ ४६ ॥ तरुण पचेंड्रिय मनुष्यघातसें, साधुने नहिं सुहावेगा ॥ विकलेंड्रियकी विराधना कीधां, सजनने नहिं सुहावेगा ॥ सु० ॥ ४७ ॥ प्रेम धरीने जोग जोगव्या, जोबनमें नार मर जावेगा ॥ स्त्रीपुरुष संजोग मिलाया, नारी पुरुष मर जावेगा ॥ सु० ॥ ४८ ॥ दारु पियाथी डुर्गंध प्रसवे, कूडी साख जरावेगा ॥ काम करे सत चित्त लगाई, परने प्रतीत न आवेगा ॥ सु० ॥ ४९ ॥ दान पुण्य

दया नहिं पाले, दारिद्रपणो तस आवेगा ॥ देव गुरु धर्म खोटा सरध्या, प्रिय कुटुंब मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५० ॥ गुणसीत्तर कोडा कोडी सागर, मोहणी थिति क्षय जावेगा ॥ तब इण चेतनकूं अं तसमे, धर्म करण मन थावेगा ॥ सु० ॥ ५१ ॥ एक कोडी साग र उपर, मोहणी थिति बढ जावेगा ॥ तब उण प्राणीने धर्म ध्या नकी, किंचित रुचि नहिं आवेगा ॥ सु० ॥ ५२ ॥ तीव्रनावें कु शील सेवावे, मनमें अधिक हर्षावेगा ॥ तिणसूं परधन संपति दे खी, निःश्वास नाखि मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५३ ॥ निलिका कुंम्न करावे तिण कर्में, बद्मस्थ थानकमें जावेगा ॥ शिलावट कर्म ति णकर्में, रक्तपित्त कीडा पड जावेगा ॥ सु० ॥ ५४ ॥ खेत्र खेडा बे हल हंकावे, क्षुधा घणी उपजावेगा ॥ लीलां फाडकी फालि क टाया, आंगुलि ठंठी पावेगा ॥ सु० ॥ ५५ ॥ रंगरेज पणाका कर्म कियाथी, बोलतां जीन्न अटक जावेगा ॥ लुहार कर्म वली तीव्र रोषसूं, मृगीको फोलो आवेगा ॥ सु० ॥ ५६ ॥ गोबर सडावे उ करडी बंधावे, बाणां थापे थपावेगा ॥ थुंक लाल चुवे मुखसेंती, मुख डुर्गंध नलकावेगा ॥ सु० ॥ ५७ ॥ मात्रामांही करे मातरो, पायखानामें दिसा जावेगा ॥ तिणसूं नदी समुदरमांही, अचक नाव डुब जावेगा ॥ सु० ॥ ५८ ॥ पायखानां फाडे तिण कर्में, बाल मरण मन चावेगा ॥ निवाण सुकावे तिणसूं नाकको, खेल मुंढामें आवेगा ॥ सु० ॥ ५९ ॥ शल्यां धान्य सेकावे निंजावे, लि पणे रोगी थावेगा ॥ कूडा सोगन खाया पृथिवीमें, ठंठो आउखे जावेगा ॥ सु० ॥ ६० ॥ हांसीमें कूडो वचन बोले, कूडोइज आल लगावेगा ॥ उंडे आउखे प्राणीमांही, उपजी बहु डुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ६१ ॥ वनकाटी जे करावे प्राणी, कृत नपुंसक थावेगा ॥ कपास लोढावे घाणी करावे, सो वेश्यानव पावेगा ॥ सु० ॥ ६२ ॥ नरम वनस्पति फल फूलादिक, जो कोइ चूंटे चूटावेगा ॥ जोबन

में धोळा केसज आवेगा, दांत दाढ ऊट जावेगा ॥ सु० ॥ ६३ ॥ फळविरी मशालो नरिमांइ, नडनींगल गुंबडां थावेगा ॥ घणा दिव सकी लूणी तपावे, दासी नवमांही सिदावेगा ॥ सु० ॥ ६४ ॥ कसाइपणां कर्म कियाथी, नासुर तन पड जावेगा ॥ रसोइदार का पाप प्रनावें, नलुं करतां बूराइ थावेगा ॥ सु० ॥६५॥ थोडो अपराधी नर बे तिण पर, खार लूण नुरकावेगा ॥ किडीनांगरा उपजे तिण करमें, अधिक दुःख गनरावेगा ॥ सु० ॥ ६६ ॥ बाग वाडी बगीचा वणाइ, फळ फुलादिक तोडावेगा ॥ स्त्रीपणाका न वके मांहि, योनिशूल अंग थावेगा ॥ सु० ॥ ६७ ॥ फळ चीरीने करे आथाणो, फूलण जीव संतावेगा ॥ तपस्या करे घणी दुःकर कारी, लोक प्रतीत न लावेगा ॥ सु० ॥ ६७ ॥ हरियां फळ मंगा इने बेदे, दया घटमें नहिं लावेगा ॥ तिणसूं वस्तु चोरीनें दूजो, उन उपर आळ लगावेगा ॥ सु० ॥ ६ए ॥ सांग पिलावे नगरने वाले, सोळा रोग समकाळ आवेगा ॥ कसाइ कर्मका हांसल लेवे, सो गर्नमें आडे कटावेगा ॥ सु० ॥ ७० ॥ फूगो आळ देवे साधु ने, असूजतो आहार वहोरावेगा ॥ उबे आउखे नरनव पाइ, ग र्नमांही गळ जावेगा ॥ सु० ॥ ७१ ॥ आखी रातको मात्रो नेळो, करिने फेर ढोळावेगा ॥ तिणसूं बेडपणे नारीकूखमें, बारा वरष रह जावेगा ॥ सु० ॥ ७२ ॥ फुलमाळा करावे कोइ, अंगपर मर्दन करावेगा ॥ तपत रोग उपजे तिण कर्में, वळन वळन उठ जावेगा ॥सु०॥७३॥ किंचित् पुण्यकी करणी धारे, सींसाका आगर करावेगा ॥ धनवंतके घर जनम पायकें, नीख मांग कर पावेगा ॥ सु० ॥ ७४ ॥ तीव्र नावें मैथुन सेवे, दूजाने साह्य लगावेगा ॥ बोडे म रीने बेडमें उपजे, चोवीस वर्ष दुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ७५ ॥ ना नाविधका फूल तोड्याथी, वंजा नारी थावेगा ॥ उगता अंकुरा जो कोइ चूंटे, मृतवंका सो काहावेगा ॥ सु० ॥ ७६ ॥ बीजकी मिंजी

कढाइ छेके, निर्बीज पुरुष सो थावेगा ॥ हलालखोरका कर्म किया सूं, चोर जूगारी थावेगा ॥ सु० ॥ ७७ ॥ वनस्पतिको सरखो करावें, आप पियो पर पावेगा ॥ अनेक स्त्रीपरणें तो पण, सकल बंझा रे जावेगा ॥ सु० ॥ ७८ ॥ बकरा भेंसादिक दोपद मारे, गलफांसी सो पावेगा ॥ तरुण वनस्पति छेदन किया, जन्म मरण दोइ सार्थे आवेगा ॥ सु० ॥ ७९ ॥ उगती कूंपल तोडे तोडावे, मुखसूं अधिक सरावेगा ॥ तिणपातकथी बालपणामें, मात पिता मरजावेगा ॥ सु० ॥ ८० ॥ दान तणी अंतराय जे देवे, मरमकी बात दरसावेगा ॥ मुनि पडिलाभणकी घणी इछा, अंतराय रहे जावेगा ॥ सु० ॥८१॥ सोनारकी धमण धमावे, तिणसूं रोग जलोदर थावेगा ॥ गर्भ पाडिने छानो राखे, गेब धसकें मरजावेगा ॥ सु० ॥ ८२ ॥ अनंतकाय कंद मूलकों छेदी, जिणका चूरण करावेगा ॥ धन संपत पाइने ते नर,चोरंगीयो हुइ जावेगा ॥ सु० ॥ ८३ ॥ उलट परिणामें दान देईने, फिर पाछें पस्तावेगा ॥ धनसंपत्तको लाभ घणेरो, भोग अंतराय बंध जावेगा ॥ सु० ॥ ८४ ॥ हिंसा करे कूड मुख बोले, मुनिका अवगुण गावेगा ॥ लंबो आउखो रहे दरिद्री, फूर फूरने मर जावेगा ॥ सु० ॥ ८५ ॥ देव गुरु धर्मशास्त्र उथापे, निंदा कर हरखावेगा ॥ सो किल्बीषी हूइ होयगा बक्कर, जैनधर्म नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ८६ ॥ ज्ञानको वेरी निंदक द्वेषी,आशातना अंतराय लगावेगा ॥ तिणसूं ज्ञानावरणी बंधना, ज्ञान कबू नहीं आवेगा ॥ सु० ॥ ८७ ॥ दर्शनवंतको वैरी निंदक, न्याय अन्याय बतावेगा ॥ दर्शनावरणी बंधनसेंती, नव प्रकृति उपजावेगा ॥सु०॥ ८८ ॥ दान शियल तप भावक्षमा गुण, परजीवने शाता उपजावेगा ॥ तिणसूं इणभव परभवमांइ, शाता वेदनी पावेगा ॥ सु० ॥ ८९ ॥ धाडा पाडे करे परनिंदा, परप्राणी संतावेगा ॥ तिणसूं इणभव परभव मांही, अशाता वे

दनी आवेगा ॥ सु० ॥ ९० ॥ देव गुरु संघ सूत्र धरमकी, निंदा कर हरखावेगा ॥ दर्शनमोहनी बंधे जिणसें, जैनधर्म नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ९१ ॥ तीव्रकषाय हिंसादिक कर्तव्य, पोतें करिने सो करावेगा ॥ चारित्र मोहणी बंध पड्याथी, संजम पद धसकावेगा ॥ सु० ॥ ९२ ॥ पंचेंद्रिय घात करे आहार मांसको, आरंन परिग्रह बढावेगा ॥ ए चारो बोल धरीयाथी चेतन, नरकगति दुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ९३ ॥ माया गुंम्फ माया मृषावाणी, तोलां मापां खोटां चलावेगा ॥ ए चारी बोले सो परनवमें, तिर्यंच गति दुःख आवेगा ॥ सु० ॥ ९४ ॥ नद्रक परिणामी सरल स्वनाविक, विनीतपणे दया लावेगा ॥ ए चारी बोले मनखामें उपजे, पुण्यथकी रिध पावेगा ॥ सु० ॥ ९५ ॥ अज्ञान कष्ट अकाम निर्जरा, साधु श्रावकपणो गावेगा ॥ ए चारी बोले पुण्य संचको, देवगतिमें जावेगा ॥ सु० ॥ ९६ ॥ जिनमारग रागी दया परिणामी, शिवपुर पदवी चावेगा ॥ ए तिहूं बोले नाम कर्मसुं, बंधणथी सुख पावेगा ॥ सु० ॥ ९७ ॥ मिथ्या उपदेशें दान न देवे, धर्मदाय नही आवेगा ॥ इत्यादिक अनुनव परिणामें, अशुन नाम बंध जावेगा ॥ सु० ॥ ९८ ॥ जति कुलादिक आठ मद कियां, नीचवस्तु सो पावेगा ॥ मद त्यागयाथी ऊंच गोत्रको, बंधण ऊंच सो थावेगा ॥ सु० ॥ ९९ ॥ दान लान अंतराय पांचसो, दियाथी अंतराय रे जावेगा ॥ अंतराय तोड्या वस्तु मिले सो, सुख संपत्त रिध आवेगा ॥ सु० ॥ १०० ॥ नद्रक नाव वली अल्पआरंनी, मावितकी नक्ति मनावेगा ॥ तिण करमसूं सो नर मरिने, युगलीयां मनुष्यमें, जावेगा ॥ सु० ॥ १०१ ॥ देव गुरु शुद्ध धर्म आराधी, उत्कृष्ठ नाव चढ जावेगा ॥ गोत्र तीर्थंकर बंध पडियासूं, त्रिजग पूजनिक सो थावेगा ॥ सु० ॥ १०२ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्तर तपस्या, करकें घनघातिक खावेगा ॥ केवलज्ञान ने केवल दरिसण, सब जग

जाएक थावेगा ॥सु०॥ १०३ ॥ मन मचन काया त्रिजोग रोकके, शैलेशी परिणाम चढावेगा ॥ अजर अमर अविकार निरंजण, सिद्धकी पदवी आवेगा ॥ सु० ॥ १०४ ॥ जेसा जेसा कर्म करेगा, तेसा तेसा पावेगा ॥ मात पिता धन कुटुंब कबीला, पांत कोइ न पडावेगा ॥ सु० ॥ १०५ ॥ हलूकर्मी नवि प्राणी जिनके, जिनवाणी हिए सुहावेगा ॥ भारीकर्मी अनंत संसारी, हांसीमें बात उमावेगा ॥ सु० ॥ १०६ ॥ कर्मविपाक सुण सरधे कोइ, पाप कर्म घटावेगा ॥ तिलोकरिख कहे सो नवि प्राणी, अजर अमर पद पावेगा ॥ सु० ॥ १०७ ॥ कलश ॥ उगणीशें गुण चालीशवर्षें, माघशुकल त्रयोदशी ॥ देश दक्षिण पेंठ मनचर, सूत्रवाणी शशितम वसी ॥ एकसो बतीस बोले नीरणो, करी तिलोक रिख कहे ॥ धन जिनागम आरधता लहे, शिवसिरी हिँ श्री लहे ॥ १ ॥ इति कर्म विपाकमाला सझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेश सवैया, गाम उपर लिख्यते ॥

अमदानगर पाई, करज गाम जावे मती, कूडगाम वसियासुं, तले गाम जावेगा ॥ रस्तापुर वासी तुं तो, हियडामें सोच कर, सो नई विचारेगा तो, वेलापुर पावेगा ॥ काकिणीके काज तुं तो, फिरत लाखण गाम, पुना बिना कोरे गाम, बडा होय जावेगा ॥ कहत तिलोक तुं तो, सदरको पंथ धार, वाकी कीजो वाट, लिया धुले गाम आवेगा ॥ १ ॥ राय गाम बोडे मती, लाम गाम मर राख, जाम गाम लिया विना, घुमरी लगावेगा ॥ देव गढचहाय करो, छोड दे बावल वाडो, नाण गाम सोध कर, निरालो सिधावेगा ॥ मनवाडा कर ले तो, कोल गाम वास मिले, घाट सरम मिल्यो तोय, जाते पछितावेगा ॥ कहेत हे तिलोकरिख, साइ खेडो ध्यान कर, कुंदेवाडी छोड कर रामपुरी पावेगा ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ चउद नियम सच्चाय प्रारंभः ॥

श्रीसिद्धचक्रजीने पूजो रे, जिनमार ग जाणो ॥ सुधो ज्ञान विचारो, जासूं जनम सुधारो ॥ चउदे नियम चितारो,संवरमारग धारो॥ रे नविका,चउद नियम चितारो ॥ ए आंकणी ॥१॥ श्रीजिनमारग तारक जगमें, अनुनवज्ञान विचारो ॥ जो संयमपदकी नही शक्ति, तो निरर्थक पाप निवारो रे नविका ॥ च० ॥ संवर० ॥ २ ॥ नू ण पाणी हरि बीजादिक वस्तु, सचित्त होवे जो कोइ ॥ तिनरी मरजादा संख्या करी लीजें, तृष्णा रोक्यां सुख होइ रे ॥ न० ॥ च० ॥ संवर० ॥ ३ ॥ स्वाद वले सो अलग द्रव्य लेखो, रोटीपुडादिक जाणो ॥ सचित्त अचित्त दोइ अणगणतीमें, उपरांतर पच्चखाणो रे ॥न०॥च०॥सं०॥ ४ ॥ दूध दहीं घी तेल गोल सक्कर, पांच विगय परमाणो ॥ धार विगय खंद दो नेद इणमें, इछा रोक व्रत गणो रे ॥न०॥च०॥सं०॥५॥ पगरखी मोजा पावडी आदिक, नीकी मरजादा कीजें ॥ आपकी परकी गणती करीजें, अदकी नही पहेरीजें रे ॥न०॥च०सं०॥॥६॥ लुंग एलाइची पान सुपारी, खावें मुख शोधन काजें॥ तेलतंबोलकी संख्या करीजें,उपरांत नही खाजे रें ॥न०॥च०॥सं०॥७॥ पेरण उढन कारण वस्त्र, शिरपाव संख्या करो नाइ॥ कारण विशेषें जो संगटो लागे, सो विण त्याग करीजें रे ॥न० ॥च०॥सं०॥८॥ जाइ जुइ आदिक फुलसुगंधी,अत्तर विविध प्रकारो॥ इछा उपरांतका त्याग करीजें, नांगा कारण विचारो रें ॥न० ॥ च० ॥सं०॥९॥ बेल घोडा रथ दंती पालखी, इत्यादिक वायण कांइ ॥ गिणती संखाकरोसे वस, धारजो व्रतविध जोइ रे ॥न०॥च०॥सं० ॥१०॥ खाट पाट पाटला चोकी, सुवो बेगे बीगवो ॥ तेसेजाणी संखा करवी मनमें, अधिका ते न लगावो रे ॥न०॥च०॥सं०॥११॥ केसर चंदन कंकुआदिक जे,विलेपणमें गणाइ ॥ गनती कीजें मन

तरसनाको, विरथा अवर टालो रे ॥ज०॥च०॥सं०॥१२॥ दिवस तथा निशिपेरकी संखा, त्यागो कुशल नर नारी ॥ उरदिन त्याग करो मन राखे, विरथा पाप टालो रे॥ज०॥च०॥सं०॥१३॥ उंची नीची तिरछीदिशि करी, कर परिमाण सीयाणो ॥ पांच आश्रव त्याग कर लीजो,पालो श्रीजिन आणो रे ॥ज०॥च०॥सं०॥१४॥ हाथ पाव मुख धोवणसो, दे सिनान कहावे ॥ सबसनान सरब अंगधोवण, त्याग करी सुख होइ रे ॥ज०॥च०॥सं०॥ १५ ॥ जो जन पाणीका वजनकी संख्या, उनमानसुं त्याग करियें॥ मनशुद्ध राखो निर्मल पालो, अविरतिशुं अति मरीयें रे ॥ज०॥च०॥सं० ॥ १६ ॥ इणविध नीत सांज सवारें, आदि करो नित्य त्यागो ॥ नाम नेम प्रमाद छोडीने, मोहनिद्राथकी जागो रे ॥ज०॥च०॥सं० ॥ १७ ॥ उगणीसें गुणचालीश फागण, शुकल परव छठ जाणो ॥ तिलोकरिखजी कहे जिन आण आराधो, लेशोपद निर्वाणो रे ॥ ज० ॥ च० ॥ सं० ॥ १८ ॥ ॥

॥ अथ धर्मपर्व तथा लौकिक पर्व तथा अध्यात्मस्वाध्याय लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ पजूसणपर्वस्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ सिद्ध चक्र ने पूजो ॥ए देशी॥ पर्वपजूसण कीजो रे जविका, नर जव सफल करीजें ॥ ए टेक ॥ पजूसण सम परव नहिं दूजो, जैन धरम थंज साचो ॥ इणने जो कोई साधे जावशुं, मिटे कषायकी आंचो रे ॥ ज० ॥प०॥ १ ॥ आठ करमदल वरण कारण, आठ मदके सब छोडो ॥ अष्ट प्रवचन रचन अष्टसिद्धि, अष्ट गुणातम जोडो रे ॥ ज० ॥ प० ॥ २ ॥ अष्ट दिवस अष्ट जाम निरं

तर, धर्मध्यान चित्त ध्यावो ॥ वैर विरोध जो होवे अपरछुं, उपति ने जाय खमावो रे ॥ न० ॥ प० ॥ ३ ॥ क्रोध कलेश विकथा सव वरजो, फरजो आश्रव करणी ॥ अष्टम तप तो अवश्य करीजें, दुःख टल जाये वेतरणी रे ॥ न० ॥ प० ॥ ४ ॥ इण दिन त्रस थावर केरी जतना, चार खंध शुद्ध पालो ॥ आश्रव टालि इंद्रिय पंच जीतो, पंच प्रमादके टालो रे ॥ न० ॥ प० ॥ ५ ॥ विणज वेपार करो मत तृष्णा, अपर गामें नही जाजे ॥ स्नान मंजण हीजमत नहिं कीजें, सुकृतमें चित्त लगाजे रे ॥ न० ॥ प० ॥ ॥ ६ ॥ पर्व निमित्तें लीपण गवण, न्हावण धोवण वरजो ॥ खांडण पीसण रांधण सीधण, हिंसा करतबसुलरजो रे ॥ न० ॥ प० ॥ ७ ॥ सामायिक पडिक्कमणो, बखत बखत नित्य साधो ॥ देव गुरु धर्म तत्त्व ए तीनुं, नाव नगतिशुं आराधो रे ॥ न० ॥ प० ॥८॥ सहस्त्रकाम संसारका गेडो, गुरुमुख सुत्र सुणीजें ॥ हिरदामें धारजो एकमने शुद्ध, उंघ आलस सो तजीजें ॥ न० ॥ प० ॥ ॥९॥ सार पासा चोपड मत खेलो,खेलो धर्म वागमांही ॥ संवछरीको उपवास म गेडो,प्राण रहे जब तांई रे ॥न०॥प०॥१०॥ इण विध करणी करजो उछंगें, जिन आगममें जो बरणी ॥ तिलो करिख कहे सुगुणा जनसेंती, नवजल तरणी करणी रे ॥ न०॥प०॥११॥

॥ अथ द्वितीय ध्यात्मपर्व दशहारा स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ लावणीकी चालमें ॥ विजय दशमी दिन विजय करो तुम, ज्ञानदृष्टि करनारी ॥ धर्म दशहरा कर लो उमंगसें, मिथ्यामोह रावण मारी ॥ ए टेक ॥ ए संसार सागरके अंदर, कर्मरूप अब थब पानी ॥ नर्म रूप पडे नरतइरइसीमें, डूब जाता जहां जग प्राणी ॥ तीन दंभ त्रीकूट दीप हे, लालच लंका वंक वणी ॥ माहामोह रत्नश्रवा नामक, राक्स राजा इसमें

श्रणी ॥ कलेश केकसी राणी हे उसकी, अकलदार समजो ज हारी ॥ धर्म० ॥ १ ॥ मिथ्यामोहनी उसका फर्जंद, दश मिथ्या दश आनन हे ॥ विस आश्रवकी भुजा हे उस्के, कपटविद्या की खानन हे ॥ सम्यक्त्कमोहनी बिभीषण दूजा, नंदन सो कुब हे न्यायी ॥ मिश्रमोहनी कुंभकर्ण ए, उचपिच वातमें अधिकाई ॥ मा हामोहके ए तिहु नंदन, समजो सुगुणा नर नारी ॥ धर्म०॥ २ ॥ परपंच नाम मंदोदरी नामें, मिथ्यामोह रावन राणी ॥ विषय इंद्रजित अहं मेघवाहन, मिथ्या रावणके सुखदाणी ॥ कुमति नाम चंद्रन खा बहेन हे, कठिन क्रोध खरके व्याही ॥ दूषण दूषण तिन शल्य त्रिशिरा, ए दोनुंहि उस्के भाई ॥ संज्वल तिक चंद्रनखा संबुक, कबु एक आयो हुसियारी ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ ज्ञानरूप सूर्यहंस खड्गकूं, साधनकी दिलमें आइ ॥ मात पिताका हुकम न माना, रह्या वो उपशम रणमांइ ॥ उसी बखतमें राय राजगृहि, दश लक्षण द शरथ राया ॥ संवर भावना राणी कौशल्या, धर्मराम पूतर जाया ॥ समकित सुमित्रा राणी दूसरी, सत लछमनकी महतारी ॥ धर्म०॥४॥ सुमति सीतासें धर्मरामका, बहोत ठाठसें वियाव भया ॥ एक दिवस वो पिता हुकमसें, तिनुही संजम बनमें गया ॥ सत लछमन वो खड्ग पकड कर, संजल संबुकका शिर घाया ॥ कुम ति चंद्रनखा कही पतिसुं, खर दूषण त्रिशिरा धाया ॥ सतलछ मन तब चढे सामने, उन तीनुंकुं लिया मारी ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ मिथ्यामोह रावणके पास वो, सुमति सीता की बडाइ ॥ करी बो त तब लालच वश वहां, चल आया लंका सांई ॥ छल विद्याका नाद सुना कर, सुमति सीताकी किवि हे चोरी ॥ राम लछमन जब जाना भेद ए, सोचे अबलानी हे दोरी ॥ जूठ साहीसक्रुद्धि हे उसकी, सतलछमणनें करी खुवारी ॥ धर्म० ॥६॥ संतोषसुग्रीव जब भया पक्षपर, बहोत भूप उसकी संगें ॥ जाम जांबुवाहन नील

नलादिक, सुमन नाम हनुमंत अंगें॥ खबर लाया वो सुमति सी ताकी, बहुत जोरावर डुनियामें ॥ दान शियल तप नावकी सेना, ले कें गया लंका गामें ॥ मिथ्यारावण सुनी वात ए, किवी आपकी हुसियारी ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ चार कषाय राक्षस दल नारी, कुध्या न धजाके फररावे ॥ अपकीर्त्तिका बजे नगारा, विकथाका कडखा गावे ॥ कुशील रथमें वेग हुसियारी, सात विसन शस्तर धारे ॥ राग द्वेष उमराव जोरावर, सहेज सुनटसें नहिं हारे॥ नय नेंजा सझाय घोष दे, राम आय चड तिनवारी ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ सत लछमन तब धीरज धनुष ले, वेठे शीलरथके मांइ ॥ अरू बरू ज व मिले आण कर, मिथ्यारावणकूं रिश आइ ॥ अज्ञानचक्र मेला लछमन पर, जोर चला नहिं लीगारे ॥ ज्ञानचक्र जब मेला हरि ने, एकदममें रावन मारे ॥ राम लछमनकी जीत नइ जब, जगमें नया जय जय नारी ॥ धर्म० ॥ ए ॥ सुमति सीताकुं ले कर आये, मुक्ति अयोध्या राज करे ॥ जन्म मरण नय डुःख मिटे जिहां, राम राजा सो जगमें खरे ॥ संवत उगणीसें शाल अडतिसका, पेठ आंबोरी दक्षिणमांइ ॥ बिजयदशमी दिन कीवि लावणी, स मझदारके दिल नाइ ॥ तिलोकरिख कहे सत्यरामायण, धर्म पर्व यों सुखकारी ॥ धर्मदशेरा क० ॥ १० ॥ इति संपूर्ण ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय धनतेरश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ सुख देख्यो हम पारसको ॥ ए देशी ॥ देशी केरवामें ठे ॥ ऐसी धनतेरश कर लीजो जो,चाहो यें धनको नंमार रे ॥ नलां रे ज्ञानी ॥चा०॥ऐ०॥ए टेक ॥१॥ कांतक कहे यें कातक रहिया,धन तेरस सुविचार ॥ नलां रे ज्ञानी, धनतेरश सुविचार रे ॥ ऐ० ॥ ॥२॥ अहिंसा सत्य दत्त ब्रह्म असमत्व,पंच माहाव्रत सार ॥न०॥ पं० ॥ ऐ०॥३॥ ईर्जा नाषा एषणा आदिक, समिति ठे पंच प्रका

र ॥ न० ॥ स० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ मन वचन काया तिन गुपति, ए तेरस सुखकार ॥ न० ॥ ए० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ खंति मुत्ति अज्जव म द्दव, त्रीजे अंगें कह्यां डुवार ॥ न० ॥ त्री० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ए चउ द्वार खुला शिवमंदिर, शिवलछमी हे तैयार ॥ न० ॥ शि० ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ पाप कीयासुं लछमी जावे, शंका नहिं हे लगार ॥ न० ॥ शं० ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे शिवधन थिर हे, खरचता आवे नहिं पार ॥ न० ॥ ख० ॥ ऐ० ॥ ए ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ रूपचउदश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभः॥

॥ धन धन आज दिवस भलें उग्यो, पर्व दीवाली केरो रे ॥ ए देशी ॥ एसी रूपचउदश नित नित कीजें, निजरूप प्रगट करीजें रे ॥ इंद्रिय मन मुंमन करी लीजें, जप तप स्नान करीजें रे ॥ए०॥१॥ पापको मेल परवालन कीजें, सुमन साबु लगाजें रे ॥ धीरज धोती सुव्रत वाघो, संवरपाग शिर छाजे रे ॥ए०॥ २ ॥ दया डुपट्टो किरियाको अत्तर, धर्मध्यान सोला भेदो रे ॥ ए सोला शिणगार सजणकी, चित्तमें राखो उमेदो रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ सत्यबचन तंबोल सुहावे, तत्त्वको तिलक करीजें रे ॥ ज्ञानको दीपक भर्मकी बाती, कर्मको तेल पूरीजें रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ उंगणीसें अडतिश रूप चउदश दिन, एह सज्झाय बणाई रे ॥ तिलोकरिख कहे रूप जो चाहो, तो इम करो भाई बाई रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ मानवजन्म मानवजन्म रे रतन तेने पायो रे ॥ए देशी॥दीपमाला दीपमाला परव एसो करीयें रे,सिद्ध लछमी वरीयें॥ दीप० ॥ ए टेक॥ ड्व्यातम घर निर्मल करियें, कषायकी धूल परहरियें रे ॥ आश्रव खाड़ पूरावो, त्याग लींपण लींपावो,गुण रंग लगावो॥ दी०॥ १ ॥ पुण्य पापको लेखो लगावो, पापको खातो घटावो रे ॥ सुमतिगा

दी बिछावो, गुप्ति तकिया बेछावो, शल्य धूल उडावो ॥ दी० ॥ २ ॥ करुणाको दीपक भर्मकी बाती, समकित ज्योति सुहाती रे ॥ कर्मतैल पूरावो, मिथ्यातम सो नसावो, सुज्ञान दीपावो ॥ दी० ॥ ३ ॥ सत्यको कंकु विनयकी पिंगाणी, किरियाकी केसर घसाणी रे ॥ पूजो वही जिन वाणी, शुद्ध न्याय बताणी, भविजन सुखदाणी ॥ दी० ॥ ४ ॥ क्षमाका खाजां ने प्रेम पतासी, समता का गुंजा विमासी रे ॥ संवर सेरणी बनावो, आश्रव मेल छटावो, अति रुचि करि खावो ॥ दी० ॥ ५ ॥ तत्त्वको तिलक लिलाडें ल गावो, संजमको शिरपाव बणावो रे ॥ तप शीयलको गेणो, पान मधुगिरा लेणो, मानो सतगुरु केणो ॥ दी०॥ ६ ॥ उगणीसें अडतीस साल बखाणो, दीपमालिका दिन जाणो रे ॥ तिलोकरिख दरसावे, भविजन मन भावे, दया धर्म दिढावे ॥ दी०॥७॥इति॥५॥

अथ पंचम दीपमालिका द्वितीय अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभः

॥ देशी प्रभाती ॥ मंगलमाला पर्व दीवाली,भविजन भावें करजो रे ॥ मंगलमाला० ॥ ए टेक ॥ मोहणीजाला कर्मको कचरो, संवर बूहारीसुं हरजो रे ॥ भर्मकी खाफ मिटावो आगमसुं, शुद्ध उत्तर रस भरजो रे ॥ म० ॥ १ ॥ शुक्कलेश्या खडी भावना भींतके, चित्त लगाई ओसरजो रे ॥ पंच आचारका रंग लगावो, ज्ञानको दीपक करजो रे ॥ म० ॥ २ ॥ कर्मको तेल कुध्यानकी वाटी, समकित ज्योतिसुं सरजो रे ॥ समताको ढंकण भावना फाणस, तृष्णावायुके वरजो रे ॥ म० ॥ ३ ॥ क्षमाकी गादी सुमतिका तकीया, गुप्ति मिछाई आचरजो रे ॥ धर्मको नाणो जीव कोथली, मिथ्या चोरसुं डरजो रे ॥ मं० ॥ ४ ॥ सतरा संजम पूजा रचावो, मेटो पापको करजो रे ॥ मोक्षनगरकी हुंडी चलावो, सदा सरापी गरजो रे ॥मं०॥५॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा नरने, पापदीवाली वरजो

रे ॥ धर्मदीवाली शिवसुखदाता,सो नित नित आदरजो रे ॥मं०॥६॥

॥ अथ षष्ठ अनुनव संक्रांतिपर्व स्वाध्याय प्रारंनः ॥

॥ न्यालदेकी देशीमें ॥ पर्व संक्रांति मनावियें जी२ कांइ, अनुनव दृष्टि लगाय ॥ जिम संघति लहे शाश्वती जी२ कांइ, कर्मी रहे नहिं कांय ॥ प० ॥ १॥ ज्ञानरवि वृद्धि होवे जी२ कांइ, कुमति रयणी घटंत ॥ समकित किरण पसरें घणी जी२ कांइ,मिथ्या हेमालो गलंत ॥ प० ॥ २ ॥ तृष्णाजलहानी होवे जी२ कांइ, संतोष नूमि देखाय ॥ धर्मदिवस महोटो हुवे जी२ कांइ,नविजनने सुखदाय ॥ प० ॥ ३ ॥ तपस्यातिल संग्रह करो जी२ कांइ,समता सक्कर मिलाय ॥ प्रेमकी पापडी बणावजो जी२ कांई, धीरजकी थाली बनाय ॥ प० ॥ ४ ॥ क्षमाको खीच बणावजोजी२ कांई, दयारूपी दूध बनाय ॥ मेवो मिलावो शुन मन तणो जी२ कांइ, हिरदे हांमीके मांय ॥ प० ॥ ५ ॥ तत्त्वका तंडुल शुद्ध करो जी२ कांइ, इंद्रिय मनरूपी दाल ॥ खिचडी इण विध रांधजो जी२ कांइ, धर्मरुचि घृत माल ॥ प० ॥ ६ ॥ दान अनय नित दीजियें जी२ कांइ,पालो शीयल अखंम ॥ बारेई नावना नावजो जी२ कांइ, बोडो मिथ्या अफंम ॥ प० ॥ ७ ॥ उगणीसें गुणचालीसका जी२ कांइ, पौषशुद्धपंचमी जाण ॥ तिलोकरिख कहे पुनासहेरमें जी२ कांइ, धर्मसंक्रांति बखाण ॥ प० ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम बसंतपंचमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंनः ॥

॥ देशी वसंतमें छे ॥ सदा बसंत पंचमी एसी कर रे ॥ स० ॥ ए टेक ॥ काया नगर मनमहेलके मांही, नावनाचित्र अंदर रे ॥ केवल नूप सुमति पट्टरागणी, धर्म नामें मंत्रीसर रे ॥स०॥ १ ॥ चोकस चपडासी दान हलकारो,समकित कर तलवार रे ॥ साधुसाधवी श्रावक श्राविका,तीर्थसना रही नर रे ॥स०॥२॥ मन मादल

शुद्ध्यानकी भेरी,सुगुण वाजां विचित्तर रे ॥ पंच सज्झाय सूत्र अनु रागें, धर्मकथासुं उच्चर रे ॥ स० ॥ ३ ॥ संबर अंबके ज्ञान मंज री ले, सत्यवचन पत्तर रे ॥ बंधनमाल कर त्याग मोरमें, बांध ले अपने घर रे ॥ स० ॥ ४ ॥ शील सिरपाव शरमको भूषण, सुजस गुलाल प्रवर रे ॥ हिरदेको होद संतोषको पाणी, शुभ लेश्या रंग धर रे ॥ स० ॥ ५ ॥ साधर्मी अंग रंग छिटकावो, दीजें अति आदर रे ॥ इण भवें शोभा परभव संपत, हिंसापर्व परिहर रे ॥ स० ॥ ६ ॥ उगणीसें अडतिस बसंत पंचमी दिन, अह मद नाम नगर रे ॥ तिलोकरिख कहे एसी करे जो पंचमी, सो बसंतपंचमी गत नर रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम अध्यात्म स्वाध्यायफाग प्रारंभः ॥

॥ देशी फागकी छे ॥ ऐसो खेलजो हांरे ॥भविका॥ऐ०॥ फाग सदा सुख पावो ॥ ऐसो खेलजो० ॥ ए टेक ॥ धर्म बाग फूली सम कित सरधा, बिरति कोयलनाद करे ॥ ऐ० ॥ १ ॥ कुमति होलि काने दीजो मंगलायने, कर्मकी धूल उमावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २ ॥ समता सरोवरमें स्नान करो सुगुणा, पापको मेल पखालो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धीरजको धोतियो थें पहेरो घणा प्रेमसुं, जय णाको जामो थें पहेरो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ परमारथ पाघडी अ पोगकी उपरणी, शीलको शिरपेच थें बांधो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ क्षमारूप छोगो मेली टाटो बांधो सांचको, तप रूपी तुररो फूका वो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ करुणाका कुंमल चोकसीका चोकडां, भक्तिकी भमरकडी पहेरो ॥भ०॥ऐ०॥७॥ दशविध धर्मको हार हिये पहेरजो, दान मान कडां हाथ पहेरो ॥भ०॥ऐ०॥८॥ वेयावच्च विंटी दश आंगुलीमें पहेर लो,किरियाको कंदोरो थें पहेरो॥ भ० ॥ ऐ०॥ ए ॥ भावकी भांगकुं थें घुंट घुंट पीवजो, संतोषकी सक्कर मिला

वो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १० ॥ धरम कुटुंब संग सुमति सोहागण, हिल मिल गेर खूब खेलो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ सझायको ढफ लो ने झांझ लो नजनकी, प्रभुगुण ख्याल खूब गावो ॥न०॥ ऐ० ॥ १२ ॥ लोनरूपें लो जी महानिर्लज जगमें, जिणके थें खुब निरसावो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ जिनवाणी पानी वैराग रंग घोलजो, उपदेशकी पिचरकी नर मारो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १४ ॥ शुक्ललेश्याकी झोली गुलाल शुनध्यानकी, नर नर मुठ उमावो ॥न० ऐ० ॥ १५ ॥ विनय विवेकका थें वाजां रे वजावजो, नेमका निसाण थें फररावो ॥ न०॥ ऐ०॥ १६ ॥ संवरकी सुखडीने गोठ करो ज्ञानकी, गेर काढो चार तीरथ ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १७ ॥ तेरे क्रियाको थें न्हावण करजो, दयाकी डुकान मांम बेंगे ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ॥ १८ ॥ एसो फाग रमो साल दर साल थें, सिद्धपुर पाटणमें वसो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १९ ॥ नारी करमा जाके दाय नहिं आवसी, हलुकरमी सो हरखावे ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २० ॥ जो नहिं मानसो तो आगें पसतावसो, सतगुरु ज्ञान बतायो ॥ न० ॥ ऐ० ॥२१॥ उगणीसें सेंतीस फागणबिदमें, बीज बुधवार दिन आयो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २२ ॥ तिलोकरिख कहे मिरज गाममें, धर्मको फाग सरसायो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २३ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम शीलासप्तमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ नावपूजा नित्य कीजीयें ॥ ए देशी ॥ पूजो जिनवाणी माता शीतला, शीतल चित्त करो नावें जी ॥ संसारदावानल उपशमे, नविजन सुणी उलसावे जी ॥ पू० ॥ १ ॥ चतुराई चूलो थापजो, कर्म इंधण करो नावो जी ॥ तप अग्नि संधूकजो, कायाकडाई चढावो जी ॥ पू० ॥ २ ॥ करुणारस घृत पूरजो, निर्ममता करो मेंदो जी ॥ क्षमारूप खाजां करो, सुगुण गुंजा उमेदो जी ॥ पू०

॥ ३ ॥ परमारथ पूडी करो, पुण्य पापड खिच जाणो जी ॥ संतो षरूप करो लापसी, समता सक्कर बखाणो जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ धर्म मोदना मोदक करो, जयणा जलेबी बणावो जी ॥ प्रतीति रूप पें मा करो, प्रेमका घेवर आणो जी ॥ पू०॥ ५ ॥ दयाको दूध उंटा वजो, दानको दहिं जमावो जी ॥ सुबुद्धिरूप बरफी नली, अयोग का उंला बणावो जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ बडां करो बिज्ञानका, गुलगुलां गुप्ति रसालो जी ॥ नावना रूप नुंजा करो, हेतु दृष्टांत मशालो जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ गुरुसेवा रूप सेवां सीरे, तत्त्वको तेवन गावो जी ॥ नज नय कोडी चरपरी, सुकथा कचोरी सरावो जी ॥ पू० ॥ ८ ॥ चोकसी चोखा आणीने, रूप रुचराई करीजो जी ॥ घाट राब करबोकरो, हिरदे हांमीमें धरजो जी ॥ पू० ॥ ए ॥ स्नान करो नपशमजलें, पापको मेल पखालो जी ॥ शीलशणगार सजो शिरें, कषाय अग्निके टालो जी ॥ पू० ॥ १०॥ सुगुरु केण कलश विषे, ज्ञानको जल नर लेवो जी ॥ मेंदी ग्रहो अनुमोदना, सुमति सोपारी सो ठेवो जी ॥ पू० ॥ ११ ॥ थिरपरिणाम थाली करो, विवेककी बाटकी जाणो जी ॥ विनय पिंगाणी बणावजो, सत्यको कंकु घोलाणो जी ॥ पू० ॥ १२ ॥ अक्षय गुण आखा चढाश्यें, प्रश्नका पान बिचारो जी ॥ कीर्तिफूल शुन वासना, ध्यानकी धूप उदारो जी ॥ पू० ॥ १३ ॥ शुक्ल लेश्याकी रुइ करो, नेम को नैवेद्य लीजो जी ॥ आवृतरज परिटालवा, त्यागको गरणो ढांकीजो जी ॥ पू० ॥ १४ ॥ परमेष्ठीगुण शुद्ध दाखिया, गावजो गीत रसालो जी ॥ पूजा करो इम सासती, सकल करम होय टालो जी ॥ पू० ॥ १५ ॥ धर्म पुत्र चोखो रहे, रिद्धसिद्ध बहु थावे जी ॥ शिवरमणी वरे सासती, डुःख कदे नहिं आवे जी ॥ पू० ॥ १६ ॥ उंगणीसें अडतिस शीतला दिने, किधी एह सझायो जी ॥ तिलोक रिख कहे अध्यातमपणो, नविजनके मन नायो जी ॥ पू०॥ १७॥

॥ अथ दशम अध्यात्मगिणगोर स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी तीजकीमें छे ॥ शिवरमणीका साहेबा, थें तो देखोने एह गिणगोर ॥ मुगतिका साहेबा थें तो, राचो ने एह गिणगोर ॥ ए टेक ॥ धीरजको करो सरावलो जी, क्षमामिटी अनुभव नीर ॥ सत्यको बीज थें बोवजो कांइ, सुख अंकूरा वृद्धि थिर ॥ शि० ॥ १ ॥ केवल ज्ञान सरोवर तणो जी, जल हिरदेकलशमांय ॥ श्रद्धानारी सोहागणी कांइ, तिण सिर दीजो चढाय ॥ शि० ॥ २ ॥ भावना नार सोहासिणी कांई, भूषण सुअध्यवसाय ॥ गीतगुणी गुण गावणां कांइ, सुजसका बाजां बजाय ॥ शि० ॥ ३ ॥ इम काढो कलशा भणी, नित नित अधिक आणंद ॥ धर्मतत्त्व तिजतिथि दिने कांइ, तिज शणगारो गुणिवृंद ॥शि०॥४॥ सुमति विरति गोर बणाय लो कांइ, द्वादश अंग शरीर ॥ उपांग बारेइ दीपता कांइ, शीलको उढावो थें चीर ॥शि०॥५॥ लज्जाको लेंगो पेरावजो कांइ, किरियाकी कंचुकी पहेराय ॥ महमद मारद माथा तणो जी कांइ, राखडी रुचिकी बणाय ॥ शि० ॥ ६ ॥ समकेकी बिंदी शिरें कही कांइ, अयोगका उगन्यां कान ॥ पुण्यकी पानडी झगमगे कांइ, तपस्याको तिलक वखाण ॥शि०॥७॥ विनयको बोर बिचारजो कांइ, तत्त्वकी टोटी ने झाल ॥ कुमणां पहेरावो विवेक कांइ, झेलो जयणाको रसाल ॥ शि० ॥ ८ ॥ चोंप जडावो चोखा बचनकी कांइ, मिष्ट बचन मसी जाण ॥ निरवद्य सत्य बचन तणां कांई, मुखतंबोल वखाण ॥ शि० ॥ ९ ॥ शरमको काजल आंजवो कांई, नेमकी नथ सुखकार ॥ ज्ञानकी गलसीरी कंठमें कांइ, दशविध धर्मको हार ॥ शि० ॥ १० ॥ तुसी संतोषकी जाणजो कांइ, तेज्यो परतीतको जाण ॥ तणमन्यो देव गुरु धर्मको कांइ, चेतना चंपकली ताण ॥ शि० ॥ ११ ॥ चंद्रहार सौम्यतापणो

कांई, बाजूबंध विवेक ॥ लुंबा फूंदा तरंगका कांइ, जवल्यो करो श तटेंक ॥ शि० ॥ १२ ॥ करमदी करो शुभ करणकी कांइ, सुकला कंकण सार ॥ चूडो बत्तिस जोग संग्रहको जी कांइ, मणगरा सुम न विचार ॥ शि० ॥ १३ ॥ वेयावच्च वींटी पहेरावजो कांइ, अनु मोदना मेंदी लाल ॥ सुनय सांकलां पायमें कांइ, साहस कडां सुविशाल ॥ शि० ॥ १४ ॥ तोडा सझायका वाजणा कांइ, नीति नेउर झणकार ॥ हथपान पगपान प्रेमका कांइ, बिद्याका बिंछिया सार ॥ शि० ॥ १५ ॥ ईर्याका अणवट सासता कांइ, प्रीतिकी पोलरी जाण ॥ नंग तरंगकी सांकली कांइ, घुघरी प्रश्न बखान ॥ शि० ॥ १६॥ चेतनजी ईश्वर दीपता जी कांइ,चार तीरथ परि वार ॥ धर्मबागमांही संचरो कांइ, स्तवनगीत उच्चार ॥ शि० ॥ ॥ १७ ॥ बिज्ञानका बाजोठ पर थापिने कांइ, ज्ञानादिक चार प्रकार ॥ फेरा फेरावो तेहशुं कांइ, होमजो कर्मबिकार ॥ शि० ॥ ॥१८॥ ध्यानकी धूप लगावजो कांइ,प्रीतिका फूल चढाय ॥ सुकृत नैवेद्य चढावजो कांइ, थापो शिवमंदिरमांय ॥ शि० ॥ १९ ॥ ऐसी तीज मनावसी कांइ, जे भवियण नर नार ॥ ते सुख पावें सासतां कांइ, शंका नहिं छे लगार ॥शि०॥२०॥ पाप तहेवार मना वतां कांइ, कर्मको बंधन थाय ॥ रूले चउगतिमें जीवडा कांइ, विष ए महा डुःखदाय ॥ शि०॥ २१ ॥ अनुभव ज्ञान लगावजो कांइ,सुगणा मनावो तहेवार॥ तिलोकरिख कहे सुख पावशो कांइ, वर्त्तसी जय जयकार ॥ शि० ॥ २२ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश अखात्रीज अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ या रस सेलडी, आदि जिनेश्वर कियो पारणों ॥ ए देशी ॥ थें कर लो स्याणा, धर्म तहेवार आखातीजको ॥ थें० ॥ ए टेक ॥ आखातीज तहेवार भलेरो, कर लो धर्मविचार ॥ इण

सरखो नहिं उर जगतमें,बारा मासको सार रे ॥ थें० ॥ १ ॥ दा न पुण्य सुकृतकी करणी, करजो मनशुद्ध चहाय ॥ सदा तृप्त रहो नूख न लागे, मिलसी सुख सवाय रे ॥ थें०॥ २॥ अक्षयगु णका आखा लीजें, करवल धीरज धार ॥ मूसल लीजें ज्ञानको सो कांइ, मोहणी तुष निवार हो ॥ थें० ॥ ३ ॥ शुद्धनावको सुपडो करिने, फट्टको पापरज दूर ॥ क्षमाचुलो संतोषकी हांमी, कर्म इंधन नरपूर हो ॥ थें० ॥ ४ ॥ तपकी अगनि सलगावजो जी कांइ, विनयको जल सुविचार ॥ उरो आखा खीच बणावो, सम ता सक्कररस सार हो ॥ थें० ॥ ५ ॥ करुणा कडछी थिरमन था ली, जीमो सुगुणा लोक ॥ सदा तृपत रहो सुख अनंतां, मिलसी सारो थोक हो ॥ थें० ॥ ६ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र निजगुण, अखे आशातनमांय ॥ इनमें शंका रंच न आणो, शोधो श्रीजि नवाय हो ॥ थें० ॥ ७ ॥ उगणीसें अडतिस आखातिज दिन, मिरी गामके मांय ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा नरने, एसो पर्व सुखदाय हो ॥ थें० ॥ ८ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ घादश राखीपर्व अध्यात्म स्वध्याय प्रारंनः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ राखी तहेवार करो धर्म राखी, मिथ्याडुर्मति द्यो दूर नाखी ॥ रा० ॥ १ ॥ सत रूपी बंधव महासुखकारी, सुबुद्धि नाम बेन गुणधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ नावकी मोर रक्षा हीर जाणो,मन गुप्तिको व्यो मोतिको दा णो ॥ रा० ॥ ३ ॥ नावको नोमल लेश्या शुनरंगी, धर्मरिद्धिकी राखी शुन चंगी ॥ रा० ॥ ४ ॥ त्यागकी गांठ दे कर मांही बाधो, समताकी सेवां नली विध राधो ॥ रा०॥ ५॥ करुणा कंसार करो नलि नातें, समताको श्रीफल देवणो हाथे ॥ रा० ॥ ६ ॥ ध्या नको नाणो सो रोकडो दीजें, किरियाकी कंचूकीको खंम दीजें ॥

रा० ॥ ७ ॥ समकित कुंकुम ज्ञानको पाणी,घोलो विवेक सुविनय पिंगाणी ॥ रा० ॥ ८ ॥ तपको तिलक चोकस गुण चोखा, ऐसा तहेवारसुं सुख अनोखा ॥ रा० ॥ ९ ॥ तिलोकरिख कहे राखीपर्व करियें, सुखें सुखें भवजलनिधि तरियें ॥ रा० ॥१०॥ इति॥

॥ अथ त्रयोदश बारमासनी सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी माचका दोहाकी ॥ चेतक हे तुं चेत चतुर नर,पायो अवसर सार ॥ सुकृत करणी भवजलतरणी,वरणी शिवदातार रे॥ या बारे मासकी,शिक्षा थें लीजो हिरदे धारिने ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ वैशाख कहे बे साख सुधारो, सूत्र चारितर जाण ॥ दोइ साख जो जासी हातसुं, पेसी मण पछताण रे ॥ या० ॥ २ ॥ ज्येष्ठ कहे करो ज्येष्ठ जो करणी,तो पावो पद ज्येष्ठ ॥ ज्येष्ठ थान पर वास मिलेगा, अजर अमर सुखश्रेष्ठ रे ॥ या० ॥ ३ ॥ अषाढ कहे नसाड पापने, कर लो श्रीजिनधर्म ॥ तप जप खप कर पावो केवल, तोडो आगें कर्म रे ॥ या० ॥ ४ ॥ श्रावण कहे सुणो सूत्र श्रवणसें, ऊंघ आलस परिहार ॥ मिथ्या भर्म टले हिरदाको, प्रगटे समकित सार रे ॥ या० ॥ ५ ॥ भाद्रव कहे भाद्रवकी चर्चा, निरणो करो नर नार ॥ निजगुण ऊलख परगुण छोडो, तो उतरो भवपार रे ॥ या० ॥ ६ ॥ आसोज कहे नासोज पारका, अवगुण तुं मनमांय ॥ निजगुण खोज सोज ज्ञान उर, कमी रहे नहिं कांय रे ॥ या० ॥ ७ ॥ कातिक कहे थें कां तक रहिया, धर्म रतन ले संग ॥ अनंत काल गयो तकतां तकतां, सहियां कष्ट अभंग रे ॥ या० ॥ ८ ॥ मृगशीर कहे जो मृग शिर उपर, सिंह तणो भय जाण ॥ तुझ शिर पर ज्यों काल जोरावर, परभवको डर आण रे ॥ या० ॥९॥ पोष कहे तुं पोष छे काया, तव निज प्राण पोषाय ॥ इनमें शंका रंच न कीजें, श्रीजिन गया फरमाय रे ॥ या०॥१०॥

माहा कहे महा शत्रु कर्म हे, इनमें फरक न कोय ॥ धर्म राजा हे निपट जोरावर, सरणासुं सुख होय रे ॥ या० ॥ ११ ॥ फागण कहे थें खेलजो फागण, कुमति होलिका बाल ॥ कर्म धूल उम्काय दीजीयें, गावो धर्मका ख्याल रे ॥या०॥ १२ ॥ बारे मास कहे बारे अव्रत, ढोडो सुगुणां लोक ॥ बारे भेदें तप बारे भावना, धास्यासूं शिवथोक रे ॥ या० ॥ १३ ॥ मधुमास उगणीसें अडतिश, पूनमतिथि गुरुवार ॥ तिलोकरिख कहे परउपगारें, पेठ आंबोरी मझार रे ॥ या० ॥ १४ ॥ बारे मास इम सुन कर सरधे,भविजन मन उल्लास ॥ कर्मभर्म सब दूर निवारी, पासी शिवपुर वास रे ॥या०॥ १५ ॥ इति ॥१३॥

॥ अथ चतुर्दश पन्नर तिथि अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी उपर प्रमाणें ढे ॥ पडवा कहे एकनिश्चें राखो,धर्मथकी सुख होय ॥ ढे आवलिका फरस्यां मुगति, अर्ध पुगलके मांय हो ॥ १ ॥ इम पंदरा तिथिको, अनुभव थें विचारो सूतर न्यावसुं ॥ ध्रु० ॥ दूज कहे दो बिध हे बंधन,राग द्वेष दुःखकार ॥ तप जप करिने काटो इणने, पामो भवजलपार रे ॥ इ० ॥ २ ॥ तीज कहे तिन तत्त्व आराधो, साधो गुप्ति तीन ॥ तीन शल्य तिन दंम तजीने, अनंत प्राणी शिव लीन रे ॥ इ० ॥ ३ ॥ चोथ कहे चौभेद मुगतका, आराधो भविलोक ॥ चार कषायकी लाय बुझाई, लहो अविचल शिवथोक रे ॥ इ० ॥ ४ ॥ पंचमी कहे पंचमीगति इछा, तो पंच महाव्रत पाल ॥ पंच समिति शुद्ध भाव आराधो, पंच प्रमाद द्यो टाल रे ॥ इ० ॥ ५ ॥ ढठ कहे ढकाय बंचावे, ढ व्रत लीजो धार ॥ बाझ अभ्यिंतर ढै ढै तप कर, उतरो भवजल पार रे ॥ इ० ॥ ६ ॥ सातम कहे नित साति वार थें, सात विसन दो ढोड ॥ सात भय सब दूर निवारो, पामो अविचल ठोर रे ॥ इ०

॥ ७॥ आठम कहे छोडो आठूं मदके, आठुं प्रवचन अराध ॥ आठुं कर्म सब दूर निवारी, राखो चित्त समाध रे ॥ इ० ॥ ८ ॥ नोम कहे नव तत्त्वनिरणो, करजो भिन्नभिन्न शोध ॥ नवनियाणां दूर करीजें, नव समकित करो बोध रे ॥ इ० ॥ ए ॥ दशमी कहे दश भेद धर्मका, पालजो आणी प्रेम ॥ दश परकारें मुंफ थयासूं, पा सो अविचल खेम रे ॥ इ० ॥ १० ॥ इग्यारस कहे इग्यारे बो लको, जाणपणो करो सार ॥ ग्यारे पडिमा शुद्ध आराधो, सी खो अंग इग्यार रे ॥ इ० ॥ ११ ॥ बारस कहे बारा व्रत पालो, भा वना भावो बार ॥ बारा प्रकारें तप करीनें, करो करमकी छार रे ॥ इ० ॥ १२ ॥ तेरस कहे तेरे किरियाको, निरणो करो न र नार ॥ छोडवा जोग सो छोड दीजियें, पामो केवल सार रे ॥ इ० ॥ १३ ॥ चउदश कहे चउदे गुणठाणां, राखो चढता भा व ॥ चउदा भेद कह्या जीवका प्रभुजी, तिणको करो बंचाव रे ॥ इ० ॥ १४ ॥ पूनम कहे पूनम ज्युं निर्मल, पंझा भेद सिद्ध जाण ॥ जिणने करो नित नित उठ बंदण, पावो पद निर्वाण रे ॥ इ० ॥ १५ ॥ अमावास्या कहे कर्मराहुसूं, जे वश पडिया जीव ॥ पंझा परमाधामी जिणने, देवे दुःख अतीव रे ॥ इ० ॥ १६ ॥ पंझा तिथिको ज्ञान बिचारी, जो कोइ होय हुसियार ॥ इणभवमें पासी सुख संपत, परभव जय जयकार रे ॥ इ० ॥ १७ ॥ मधुमास उगणीसें अडतिस, पेठ अंबोरी मझार ॥ तिलो करिख ए जोडी जुगतिसुं, करवा परउपगार रे ॥ इ० ॥ १८ ॥

॥ अथ पंचदश सातवार अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी उपर प्रमाणें छे ॥ रविवार कहे ज्ञान रवि जिम, जगमें पर गट भाण ॥ मिथ्या भर्म हरणनो कारक, सीखो हितगुण जाण रे ॥ शुद्ध सात वारकी, कहेणी परमाणें सुगुणा चालजो ॥ १ ॥

चंद्रवार कहे चंद ज्यों शीतल,राखो सम परिणाम ॥ चार कषाय को ताप निवारो, लहेशो शिवसुखधाम रे ॥ शु० ॥ २ ॥ मंगल वार कहे मंगल चारू, उत्तम सरणां चार ॥ धर्मको मंगल हिरदे धारो, जिम होवे नवपार रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ बुधवार कहे बुद्धि पाय कें, खरचो धर्म मझार ॥ पाप घटावो पुण्य बंधावो, बुद्धिको एहिज सार रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ गुरुवार कहे गुरुपद सेवो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ गुरुविन कुगति मुगति न पावे, सेवो श्रीगुरु पाय रे ॥ शु० ॥ ५ ॥ शुक्रवार कहे सुकृत कर ले, ज्ञान ध्यान मनरंग ॥ तप जप साधो धर्म आराधो, करो कर्मसूं जंग रे ॥ शु० ॥६॥ स्थावर कहे थिर मन तन करिने, थापो समकित नीव ॥ पाप पराल ढाल दे छिनमें, लहिसो सुख अतीव रे ॥ शु० ॥ ७ ॥ सा तुं वार वार वार चेतावे, वारेई सब कर्म ॥ वार वार नहिं आवे जगतमें,ए जिन आगम मर्म रे ॥ शु० ॥ ८ ॥ उगणिसें अडतिस चेतकी पूनम, पेठ अंबोरीमांय ॥ तिलोकरिख कहे गुरुसुपसायें, पासी नविजन दाय रे शु० ॥ ए ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश अध्यात्मबाग स्वाध्याय प्रारंनः ॥

॥ देशी केरबामें छे ॥ बाग बगीचा देखण किम नटके, कर्मबंधण दुःखकार ॥ नलां रे ज्ञानी ॥क०॥१॥ धर्मका बाग बनाय लेनां, तेरी कायामें गुलजार ॥ न० ॥ ते० ॥ ध० ॥२॥ मनका रे माली कर ले स्याणा, उपशम सरोवर सार ॥ न० ॥ उ० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ज्ञानको पाणी निर्मलशीतल, धीरजकी धरती सुधार ॥ न० ॥ ॥ धी० ॥ ध० ॥ ४ ॥ कपट लोनकी खाम्फ दूर दे, पावडी संतोष सम्मार ॥ न० ॥ पा० ॥ ध० ॥ ५ ॥ दूंठ उडा दो क्रोध मानका, क्षमा कुदाली करो त्यार ॥न०॥क्ष०॥ ध० ॥६॥ किरियाकी क्यारी खात क्रोधका, समझकी धोरण धार ॥ न० ॥ स० ॥ ध० ॥ ७ ॥ नि

श्रय विवहारका बेल जोत दे, उपदेश चडस नर वार ॥ न० ॥ उ० ॥ ध० ॥ ७ ॥ थिर नावको थालो बांधी, जतन सुपुण्यकी पाल सुधार ॥ न० ॥ ज० ॥ ध० ॥ ए ॥ संबरको बंगलो करो मनमोहन, सातूं नयखिडकी बिचार ॥ न० ॥ सा० ॥ ध० ॥ १० ॥ करुणाकी खूरची मेज मयाका, शुन मन पंखो कर प्यार ॥न०॥ शु० ध० ॥ ११ ॥ सरलनावकी सडक बणाय लो, विनयकी वेलू तुं संचार रे ॥ न० ॥वि०॥ ध० ॥ १२ ॥ वाडका कोट विवेककी फाटक, प्रेमकी महेंदी परचार ॥ न० ॥ प्रे० ॥ ध० ॥ १३ ॥ शीयलकी केलि संतोष सीताफल, जयणाका जाम विचार ॥ न० ॥ ज० ॥ ध० ॥ १४ ॥ दृष्टांत लिंबू चोज आमली,दानको वड विस्तार ॥न०॥ दा० ॥ ध० ॥ १५ ॥ आतम अनुनव करो अंबराई, गुण गुल विविध प्रकार ॥ न० ॥ गु० ॥ ध० ॥ १६ ॥ विनयकी वनराई ठाई घटमें, सुकृत फल श्रेयकार ॥ न० ॥ सु० ॥ ध० ॥ १७ ॥ कीर्त्तिसुगंध अधिक महकावे, नविजन नमर गुंजार ॥ न० ॥ न० ॥ ध० ॥ १७॥ उगणिसें अडतिस चेत सुकल पक्ष,पंचमी तिथि रवि वार ॥ न० ॥ पं० ॥ ध० ॥ १ए ॥ अहमदनगरसुं विहार करी आया, सिक्ष्वर बाग मकार ॥ न० ॥ सि० ॥ ध० ॥ २० ॥ तिलोकरिख कहे धर्म बागमें, खेलजो नवि नर नार ॥ न० ॥ खे० ॥ ध० ॥ २१॥ ज्ञानकी गोठ ने सुखडी तप जप, चार तीरथ परिवार ॥न० ॥ चा० ॥ ध० ॥ २२॥ इणनव रोग सोग नहिं आवे,परनव जयजयकार ॥ न० ॥ प० ॥ ॥ ध० ॥ २३ ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश अनुनव सुखशय्या स्वाध्याय प्रारंनः ॥

॥देशी गिणगोरकी गीतकी॥ ऐसी सुखसेजमें सोवजो,मानो मानो रे चतुर आतम ज्ञानी ॥ दान शीयल तप नावना, ए चारु पाया चंग ज्ञानी ॥ उपशम संवर कंपलां कांइ,तप जपकी इंस रंग ज्ञानी ॥ ऐ०

॥ १ ॥ वाण बणावजो ज्ञानको जी कांइ, संतोष सेज रसाल ज्ञानी ॥ संजम डुलाई तुम पाथरो कांइ, विनय उसीसो लाल ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ २ ॥ समकित गालमसुरीयां जी कांइ, विंजणो व्यो व्रत बारे ज्ञानी ॥ क्षमाको खाट पछेवडो कांइ,लेश्या उज्ज्वल सुविचार ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धरम सीरख जली उढजो जी कांइ, पडपाया शुभध्यान ज्ञानी ॥ दश पच्चरकाणकी दावणी जी कांइ, सरधानां बंधणां जाण ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ ज्ञान दीपक रुचि चंदवो जी कांइ, किरिया कसीदोकडावो ज्ञानी ॥ मच्छरदानी धीरज तणी जी कांइ, मिथ्या मच्छर जगावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ काया नगर मनमहेलमें जी कांइ, ऐसी सेज बिछावो ज्ञानी ॥ विरति किमाड लगावजो जी कांइ, जिनशिक्षा सांकल लगावो ज्ञानी ॥ ऐ०॥६॥ समता निंदमें सोवजो जी कांइ, कुमति नार जगावो ज्ञानी ॥ जो चाहो निशदिस संपदा जी कांइ, सुमति सुहागण चहावो ज्ञानी ॥ ऐ०॥७॥ एसी सुखसेजमें पोढिने जी कांइ, पाया छे सुख अनंत ज्ञानी ॥ तिलोकरिख कहे ते सही, जी कांइ, सो होसी जगवंत ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ श्री अध्यात्मभवानी स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी भेरूजीका गीतरी ॥ या दया भवानी माता रे, देवे श्री संघने शाता रे ॥ या समता देवल छाने रे, या विनय सिंहासण राजे ॥ १ ॥ यो सीयलको लेंगो जाणो रे, लज्जाको चीर वखाणो ॥ या क्रियाकंचुकी सोहे रे, शिर तत्त्वतिलक मन मोहे ॥ २ ॥ करुणाका कुंभल झलके रे, संवर मुख अधिको मलके ॥ तिन गुप्ति त्रिशूल ज्युं सोवे रे, या शत्रु सर्व नमावे ॥ ३ ॥ मूलथानक श्रीजिनपासें रे, स्थापना निजहिरदे भासे रे ॥ जात्री चउ तीरथ आवे रे, सो निरख निरख हरखावे ॥ ४ ॥ नियमव्रत नैवेद्य सो चढावे रे,

तो जात्रा सफल कहावे ॥ रिद्ध सिद्ध सुख संपत देवे रे, जो इणविध माता सेवे ॥५॥ उगणीशें अडतिस जाणो रे, वैशाखपूनम परमाणो ॥ गामबामणी दक्षिणमांइ रे, तिलोकरिख दयामांई गाई ॥ ६॥

॥ अथ श्रीदसोटण कविता लिख्यते ॥

॥ श्रीवर्द्धमान जिनेसर केरो, कहुं दसोटण नाव नलेरो ॥ सिद्धारथ नृपकुलमें आया, त्रिशलादे राणीजी जाया ॥१॥ चैतर शुदि तेरस तिथि जाया, छपनकुमारी मंगल गाया ॥ इंदर मिल कर मोछव कीयो, वीर जिनेश्वर नामज दीयो ॥ २ ॥ दिन उगा नृप मोछव कीना, जाचकलोक अजाक चीना ॥ त्रीजे दिन चंद सूरज दिखावे, छठे दिन सो रात जगावे ॥ ३ ॥ ग्यारमे दिन अशुचि टाले, बारमे दिन नोजन उजमाले ॥ नोजनशाला अधिक विशाला, चित्रविचित्र सुरंग रसाला ॥४॥ जरी जर तार चंदवा सोहे, मुक्ता फल ऊमणुं मन मोहे ॥ बनात कनात मखमलकी चंगी, सोहत सुंदर नव नव रंगी ॥५॥ बाजोठ चोकी पाट मंगाया, थाल सुवर्ण रूपाकी लाया ॥ रतनकटोरी बाटकी ढाल्यां, मांहे नोजन बहुविध घाल्यां ॥ ६ ॥ आया क्षत्री राजा ताजा, अति आमंबर खाजां गाजां ॥ केइक हाथी केइक घोडे, पालखी आगल पैदल दोडे ॥ ॥७॥ केइ डंदाला फाक फमाली, दीसे केश नमरा जिम काली॥ जिमणने आवे उजमाला, केइक सुसरा नें केईक साला ॥ ८ ॥ केइ जमाई माहाजोधाला, नव नव नूषण रूप रसाला ॥ केइक नाई साढु नासा, मामा दोयती व्याही खासा ॥९॥ छत्तिस कुलका नोत्या क्षत्री, बुलवाया देइ मंगलपत्री ॥ वर्जी माननें अणनोत्या आवे, तेड्या तो कहो क्यूं नहिं आवे ॥ १०॥ जिमण खारो किणने लागे, ले लोटीने आगें नागे ॥ सरसां नोजन आदर सारो, कोण निर्नागी करे नकारो ॥ ११ ॥ जीमण आया अधिक उमाया, पं

क्तिबंध वेग सब काह्या ॥ गंगोदक कंचनकी जारी, वेग जिमण सब हुसियारी ॥ १२ ॥ जब लग जोजन होवे त्यारी, मेवा परो से सुंदर नारी ॥ पेह्ली किसमिस दाख मनुका, केला कतली देश कोकनका ॥ १३ ॥ पिंम खजूर गुटली करी न्यारी, काजू कली बदाम सुप्यारी ॥ चिरोजी अंजिर पिस्तां जलेरां, अंगुर दाडिम खो परां गहेरां ॥ १४ ॥ चटका करकें सकर मिलाइ, जर जर मूग मे ले जमाइ ॥ रूपपाट सोवनकी थाली, पक्कान्नकी मनवारा चाली ॥ १५ ॥ लाडु सिंह केसरिया नीका, मोतिचूर चोगणीका नीका ॥ चुंटिया चुरमा लाडु दालका, मगद मनोहर राय सालका ॥ १६ ॥ वेसण उर बाटीका जाणो, मूंग दालका सरस बखाणो ॥ सक्कर चासणी उडद दालका, जुवार मक्की सो ततकालका ॥ १७ ॥ कंसारकिटीयां जुवार धाणीका, बतीसा संधाणा साणीका ॥ चावल उर उलाका जारी, राजगरा तिल्लिका जहारी ॥ १८ ॥ सुंठ गुंदका और पिस्ताई, बदाम चिरोजी सकर मिलाई ॥ इत्यादिक बावन्न प्रकारी, कब लग नाम कहुं में न्यारी ॥ १९ ॥ दूधपेंमा कुंदाका ताजी, घी सुकोमल खांम ने खाजी ॥ चरपरा गांठ्या सक्कर पारा, डुधरा बज्या मांही बुहारा ॥ २० ॥ बरफी केसरिया पिस्ताई, कीनी मेवा अधिक मिलाई ॥ सरस जलेबी गरमा गरमी, गेडे नहिं कोइ शरमा शरमी ॥ २१ ॥ कलाकंदमें मेवा जाजा, होय खुसी देखी सब राजा ॥ असल चिरोजी सेव सिंगोडां, गवा जर जर मेली गोडा ॥ २२ ॥ सूत्रफेणी और चिरोजी दाणा, सांपसाई की अधिक रसाना ॥ अकबरी और अदरकजाणा, नुक्तिदाणा मध्य दरसाणा ॥ २३ ॥ घेवर सुरसां खांमका फीका, मुरकी पतासा पेडा नीका ॥ दहिंथरां और सूठ ने खुर्मा, घी सक्कर मेवाका चुर्मा ॥ ॥ २४ ॥ दरावो दोगां पूरी कचोरी, मालपुवा और सेवडी सोरी ॥ सिरो साबुणी मिठी सुंवाली, तिलकी पापडी सक्कर घाली ॥

॥ २५ ॥ कुम्नला पुम्नला अवर घणाई, केह्तां ढाल अधिक बधि जाई ॥ मुंगफलीका लोट नलेरा, मोण देइने कीना गहेरा ॥२६॥ इंदरसा गुंजा गणी धामें, लूची लापसी चांदसइब्बामें ॥ गुलधाणी गुंदपाक अमका, दूध उंटाई मेल्या थका ॥ २७ ॥ खारी सेव और वक्का दाली, गुलगुला बडा नुंज्या सुविशाली ॥ दहीकी जावणी मेली आई, खाटा मीठाको मेल सदाई ॥ २८ ॥ आंबफलवती साख आमकी, जांबु निंबु कतली जामकी ॥ सीताफल रामफल खडबूजा, इरंम्द काकडी और तर्बूजा ॥ २९ ॥ खिरणी चकोत अरु देशी केली, जंबीर बिजोरां आखरोट मेली ॥ फूट काचरा काचरी न्यारी, फणस रतालु तलमा त्यारी ॥ ३० ॥ कालो पोडाकी साकी गाठा, काट छिल कर मेल्या साठा ॥ टिंबरू करोंदा पाका अलेली, सरस खजूरा धामण्या मेली ॥ ३१ ॥ कविट आंबली पेमली बोरां, श्रीफल काचां मीठा घणेरां ॥ गुंदा फुंदा रायण आदी, नानाविध फलबातजांखादी ॥ ३२ ॥ अब नोजनकी नई तयारी, कबु एक नाम सुणे नर नारी॥ अतलस गादी बाजोठ सुरंगी, थाल सुवर्ण हिरा जडी चंगी ॥ ३३ ॥ रतन कचोलां नानी कटोरी, मांजि धोय पूंछी करि कोरी ॥ घउं मेंदाकी रोटी धोली, मीठी रोटी पूरणपोली ॥३४॥ काठी कनककी रोटी ठोटी, डुपडी सतपुडी साठाकी मोटी ॥ बाटी बाफला फलका गोला, रेलमाखुचा दशमी उंला ॥ ३५ ॥ चरपरी पूरण रोटी खीरकी, गुंदकी रोटी विना नीरकी ॥ पोटा वामाकोलमाकी पूडी, मुंग मोठ हरबराकी रूडी ॥३६ ॥ लूण मिरच नर गरम मसाला, खाखरा तालमा रोटी रसाला ॥ फिका मीठा चोखा सुगंधी, नात केसरिया अधिक सुगंधी ॥ ३७ ॥ राम खीचडी मेवाकी साधी, मुंग तुयर मिलमां केई रांधी ॥ दूधरावडी थूली ढीली, काठी थूली जावरीगी

ढीली ॥३७॥ घृतगायको नवो तपाई, घिलोडी मुख आदि नमाई ॥ ज्यो ज्यो करतां मुंढो थाके, कुण जोरावर जो फिर हा के॥३ए॥ सक्कर बूरो गोल ने मिशरी, काकब मेलन रंचन बिसरी॥ सेव रबीच और खीर बणाई, खिचडो घुघरी राब सवाई॥४०॥ खीच्यो पापड मुंग उडदका, चणा बटला रुयर विधविधका॥ सेक्या तलिया पतला मोटा, थाली पीठ बाजरी मोटा॥४१॥ मर्कीमा लक गुनी जब जाणी, रालोबरटी कुलथ बखाणी॥ जालरो तिवडो सामो जाणो, कोदरा बरटी रोट बखाणो॥४२॥ कर चतुराई मस्या मसाला, धान्य चोविसकी जिनस रसाला॥ रसोइदार केइ देश देशका, अनेक रसोइ बहोत नेदका॥४३॥ मिरची पकोडी चरमरी नावे, तलण वडी वडा अरबि आवे॥ दाल मुंग और मठ मसुरकी, उडद चणा बटला बिध तुयरकी॥४४॥ पतली काठी सीसबांतलीया, मसाला नानाविध नलिया॥ कढी ठाठ अमचूरकी जाणो, आवलां नाजी की पण मानो॥४५॥ बेलां फबका रेलमाचूरकी, अमटी अमरत्यो नाजी न्नुरकी॥ बडी फोलकी उर कोरडी, निपजायो अति चतुर गोरडी॥४६॥ डाख वडी नाजीको रायतो, अमलपाणी बघार चायतो॥ कंनी ठाठ वघारी नारी, लुण मिरच राई ठमकारी॥४७॥ दहिको सीखरण मेथी दाणा, सक्कर सामल अमल बाणा॥ खारावडी ठाठवडी नलेरी, पेंमा वडी और चिणी बहुतेरी॥४७॥ पापडवडी खीचावडी जाणो, पतलापतो डकी अधिक रसाणो॥ पाठवडी पतोड कुडलाई, रसो ठावो दक्षिणमांही॥४ए॥ अंमृत्यो रसको ठमकास्यो, पुरवो अंबाको सूधास्यो॥ करपटा नीला चणा करेलां, टींमोरी और काचां केलां॥५०॥ निलां वेर केर खडबूजां, फूट काकडी फोग तरबूजा॥ कलिंगडा और गिलकी तरोई, बंगा काचरी मुह्मिातोई॥५१॥ निंमा जिमा कोठकी कोडा, खेलराटिंडसी करमदा उंडा॥ कोलां

॥ २५ ॥ कुमला पुमला अवर घणाई, केहतां ढाल अधिक बधि जाई ॥ मुंगफलीका लोट नलेरा, मोण देइने कीना गहेरा ॥२६॥ इंदरसा गुंजा गणी धामें, लूची लापसी चांदसझ्झामें ॥ गुलधाणी गुंदपाक अमका, दूध उटाई मेल्या थका ॥ २७ ॥ खारी सेव और वक्ता दाली,गुलगुला बडा नुंज्या सुविशाली ॥ दहीकी जावणी मेली आई, खाटा मीठाको मेल सदाई ॥ २८ ॥ आंबफलवती साख आमकी, जांबु निंबु कतली जामकी ॥ सीताफल रामफल खडबूजा, इरंम काकडी और तबूजा ॥ २९ ॥ खिरणी चकोत अरु देशी केली, जंबीर बिजोरां आखरोट मेली ॥ फूट काचरा काचरी न्यारी, फणस रताळु तलमा त्यारी ॥ ३० ॥ कालो पोडाकी साकी गाग, काट छिल कर मेल्या साग ॥ टिंबरू करोंदा पाका अलेली, सरस खजूरा धामण्या मेली ॥ ३१ ॥ कविट आंबली पेमली बोरां, श्रीफल काचां मीठ घणेरां ॥ गुंदा फुंदा रायण आदी, नानाविध फलबातजांखादी ॥ ३२ ॥ अब नोजन की नई तयारी, कबु एक नाम सुणे नर नारी ॥ अतलस गादी बाजोठ सुरंगी, थाल सुवर्ण हिरा जडी चंगी ॥ ३३ ॥ रतन कचोलां नानी कटोरी, मांजि धोय पूंछी करि कोरी ॥ घउं मेंदाकी रोटी धोली, मीठी रोटी पूरणपोली ॥३४॥ काठीकनककी रोटी ठोटी, ऊपडी सतपुडी साठाकी मोटी ॥ बाटी बाफला फलका गोला, रेलमाळुचा दशमी उला ॥ ३५ ॥ चरपरी पूरण रोटी खीरकी, गुंदकी रोटी विना नीरकी ॥ पोटा वामाकोलमाकी पूडी, मुंग मोठ हरबराकी रूडी ॥३६ ॥ लूण मिरच नर गरम मसाला, खाखरा तालमा रोटी रसाला ॥ फिका मीठ चोखा सुगंधी, नात केसरिया अधिक सुगंधी ॥ ३७ ॥ राम खीचडी मेवाकी साधी, मुंग तुयर मिलमां केई रांधी ॥ दूधरावडी यूली ढीली, काठी यूली जावरीगी

ढीली ॥३८॥ घृतगायको नवो तपाई, घिलोडी मुंख आडि नमाई ॥ ल्यो ल्यो करतां मुंढो थाके, कुण जोरावर जो फिर हाके॥३९॥ सक्कर बूरो गोल ने मिशरी, काकब मेलन रंचन बिसरी ॥ सेव रबीच और खीर बणाई, खिचडो घुघरी राब सवाई ॥ ४० ॥ खीच्यो पापड मुंग उडदका, चणा बटला रुयर विधविधका ॥ सेक्या तलिया पतला मोटा, थाली पीठ बाजरी मोठ ॥ ४१ ॥ मक्कीमालक गुनी जब जाणी, रालोबरटी कुलथ बखाणी ॥ जालरो तिवडो सामो जाणो, कोदरा बरटी रोट बखाणो ॥४२॥ कर चतुराई मस्या मसाला, धान्य चोविसकी जिनस रसाला ॥ रसोइदार केइ देश देशका, अनेक रसोइ बहोत नेदका॥४३॥मिरची पकोडी चरमरी नावे,तलण वडी वडा अरबि आवे ॥ दाल मुंग और मठ मसुरकी, उडद चणा बटला बिध तुयरकी ॥४४॥ पतली काढी सीसबांतलीया, मसाला नानाविध नलिया ॥ कढी ढाढ अमचूरकी जाणो, आवलां नाजी की पण मानो ॥ ४५ ॥ बेलां मबका रेलमाचूरकी, अमटी अमरत्यो नाजी छुरकी ॥ बडी फोलकी उंर कोरडी, निपजायो अति चतुर गोरडी ॥ ४६ ॥ डाख वडी नाजीको रायतो, अमलपाणी बघार चायतो ॥ कंनी ढाढ वधारी नारी, लुण मिरच राई ढमकारी ॥४७॥ दह्निकोसीखरण मेथी दाणा, सक्कर सामल अमल बाणा ॥ खारावडी ढाढवडी नलेरी, पेंमा वडी और चिणी बहुतेरी ॥ ४८ ॥ पापडवडी खीचावडी जाणो, पतलापतो डकी अधिक रसाणो ॥ पाढवडी पतोड कुडलाई, रसो ढावो दह्निणमांही ॥ ४९ ॥ अंमृत्यो रसको ढमकास्यो, पुरबो अंबाको सूधास्यो ॥ करपटा नीला चणा करेलां, टींमोरी और काचां केलां ॥ ५० ॥ निलां वेर केर खडबूजां, फूट काकडी फोग तरबूजा ॥ कलिंगडा और गिलकी तरोई, बंगा काचरी मुह्निमातोई ॥ ५१ ॥ निंमा फिमा कोढकी कोडा, खेलराटिडसी करमदा उंडा ॥ कोलां

चकीआल तुंबडा, सूरजणा कांचरा और फूमडा ॥ ५१ ॥ वा
लोल फली चवलाकी नारी, गवारफली सांगरी ठमकारी ॥ कम
लगट्टा वेंगण रतालु, सकरकंद मूला पिंमालु ॥ ५२ ॥ सुवो वाथ
लो खाटी नाजी, मेथी चणा वथुवाकी ताजी ॥ अमलमूला
और चंदलोई, पालको ढिमरो पोचो जोई ॥ ५४ ॥ अंबाडी
करडी अजमाकी, रालरो लुण्यो पुवाड समाकी ॥ घोञ्या
घोल पोकली जाणो, चिपाडी ठीक चुका करिमाणो ॥ ५५ ॥ फां
दिसेंपा और परजणाकी, सरूखरुडवा और सिंधवणाकी ॥ चिल
री राई राजगरारी, करंजरो और हेसरवारी ॥ ५६ ॥ चणा ठो
ल वाह्गिकी नाजी, जीमे लोक ऊडा ऊड राजी ॥ कूबी सूवी औ
र घणेरी, कहां लग नाम कहुं में हेरी ॥ ५७ ॥ लोजी आंब आं
बली केरी, गरम मसाले धुंगारी गहेरी ॥ चटणी कोथमीरकी
जाणो, कविट अमकी अधिक रसाणो ॥ ५८ ॥ श्रीफल तीली
लुण मिरचकी, हवडीरोड मासरसुचिचकी ॥ गरम मसालाकी
केइ चटणी, नात नातकी वटणी ठटणी ॥ ५९ ॥ अथाणो
वली आम वखाणो, लिंबु मिरची आदो जाणो ॥ वांसोढा और
निंमी तरोई, गिलकी वालोल फलीकी जोई ॥ ६० ॥ चवला ब
टला मेथी दाणाको, करमदा खारक केर चणाको ॥ गुवार फली
सुरजणाकी जाणो, नात चोरासी अधिक रसाणो ॥ ६१ ॥ पुडियान
र नर आगें मेले, जिमणवाला लेतां ठेले ॥ बालक बूढा तरुणा रोगी,
वणी रसोइ सो सबजोगी ॥ ६२ ॥ नाम न आवे पूरां जिणसूं, थो
डिक रचना कहि में तिणसूं ॥ जीमे सघला होंसें होंसें, किंचि
तमात्र कोई न रोसे ॥ ६३ ॥ हम न पीरसी कोइ न वोले, र
ह्यो नहिं कोई नाले नोले ॥ जिमता जिमता थाक्या पूरा, एक
कवो लेवण नहिं सूरा ॥ ६४ ॥ सघला वोले नाजी नाजी, कोई
न वोले मेलो हाजी ॥ पीरसणवाला अधिक मनावे, जीमण वा

ला करडा थावें ॥ ६५ ॥ मेले शुद्धसुगंधिक पाणी, हाथ धोया स
ब हट अधिकाणी ॥ हलवें हलवे पुंछे पुपुं, गोडे हाथ देईने ऊठे
॥ ६६ ॥ पेट भराणां तंग मतंगा, सहु अघाणा छोड उमंगा ॥
सघला हलवे हलवे चाले, उतावला फिर कोइ न हाले ॥ ६७ ॥
बोले धीरें धीरें चालो, भोजण जिम तिम बैठो थालो॥ एसी रीतें
चल कर आया, जाजम गादी तकिया बिछाया ॥ ६८ ॥ तिन
अहारको कियो बखाणो, मुखशोधन मुखवास सुहाणो ॥ जाय
पत्री और लविंग सुपारी, दालचिणी एलायची प्यारी ॥ ६९ ॥
काली मिरच सुंठ सवादी, कबाबचणी पीपर हरे व्याधि ॥ कपू
र सुवासिक कत्थो चूनो, नागरवेलीको दल दूनो ॥ ७० ॥ बिडो
वाल कें देवे आई, लेवे सघला चित्त हरखाई ॥ लिंम्डीपिंपर सरसो
अजमो, चूरणसवादी आहार हजमो ॥ ७१ ॥ पहेराई फूलनकी
माला, देवे पचरंगी जरी डुसाला ॥ केइने दूपट्टावर जोडी, केइनें
चीरा पाग पिछोडी ॥ ७२ ॥ पंच पोशाक पेरावे चंगी, जामो अं
गरखी वर पचरंगी ॥ दीवि मंम्मिल बालाबंदी, देंखत तन मन हो
य आणंदी ॥ ७३ ॥ केइके कंठी हारज दीना, केइने कुंम्मल अधिक
नवीना ॥ बाजुबंध अंगुठी चंगी, सिर सिरपेच दीवी मनरंगी
॥७४॥ हाथी घोडा रथ पालखी, केइने दीना गाम नालकी ॥ ज
थाजोग सबने सन्माने, द्वादशमे दिन मोछव ठाने ॥७५॥ सिद्धा
रथ नृप सहुने बोले, कुंवरनाम थापणने खोले॥ जिण दिन राणी
कूखें आया, तिण दिनथी दल बल सवाया ॥७६॥ दिन दिन वृद्धि
कारण मानो, वर्द्धमान कुंवर इम ठाणो ॥ सहु सुणी हरखाणा
गोती, नाम यथागुण कुंम्मल मोती ॥ ७७ ॥ घर घर मंगलमाल
बंधावे, गोरडियां मिल मंगल गावे॥ तिडकिड तिडकिड त्रांसां वाजे,
धिं धिं धिं धिं नौबत गाजे ॥ ७८ ॥ दों दों धप मप मादल रंगी,
कुण कुण कुणकुण करे सारंगी॥ झालर वाजे झण झण झण झण,

घुघरी घमके खण खण खण खण ॥ ७ए॥ तुंतुनो करें तुन तुन तुन तुन, करतालो करें बुन बुन बुन बुन ॥ घणणण घंटानाद उच्चारें, नरसिंगो धु धु धु धुकारे ॥ ७० ॥ धनिकट धनिकट वजे नगारा, इत्यादिक गुण पच्चास प्रकारा ॥ नाचे पातर लला मलारी, दियो दसोटण हर्ष अपारी ॥७१॥ तिलोकरिखजी कहे प्रघुपुण्य नारी, नाम लिया हरखें नर नारी ॥ जो कोइ दसोटण के गावे, खावे नहिं तो मन हरखावे ॥ ७२ ॥ श्रीजिनराज की कथा विस्तारे, करे अनुमोदन प्रेम अपारे ॥ तो पण निर्जरा पुण्य हे नारी, इम जाणी सुणजो नर नारी ॥ ७३ ॥ संवत उगणीसेंसेंतिश सालें, अहमदनगर दक्षिण वरसालें ॥ नाइवकृष्ण चवदस तिथि जाणो, वार शुकर शिवजोग बखाणो ॥ ७४ ॥ श्रीवर्द्धमान दसोटण केरी, कीनी कविता एह नलेरी ॥ श्रीजिनपुण्य प्रशंसा जाणो, सुण कर आरंन नहिं बधाणो ॥ ७५ ॥ ऐसा नोजन वार अनंती, कीना पण तृष्णा न बुऊंती ॥ इणमें शंका रंच न मानो, केवलज्ञानी किहाही वाणो ॥ ७६ ॥ इम जाणी तप जप आदरजो, चितमें समता नवकी करजो ॥ अनुनवज्ञानी दिशारस आसो, सदा तृप्त रहेशो पद पासो ॥ ७७ ॥ अधिको उंगो जोड्यो कोइ, मिछामि डुक्कडं तस होइ ॥ सूत्र बचन प्रमाण सदाइ, पाले सो धन धन जगमांही ॥ ७७ ॥ इति माहावीर स्वामीनी दसोटणनी स्वाध्याय समाप्त ॥

॥ अथ माहावीर स्वामिनुं चोढालियुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ सासणनायक सुरतरु, वर्द्धमान सुखकंद ॥ प्रणमी कहुं तिणनीचरी, सुणतां परमानंद ॥ १ ॥ समकित आई जिहांथकी, नव सत्यावीश मूल ॥ पंच कल्याणिक वरणवुं, आगमवयण कबूल ॥२॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ धर्म पावेतो कोइ पुण्यवंत पावे ॥ ए देशी ॥ जय जय सास
ण स्वामी दयाला, परमपति उपगारी जी ॥ नयसार प्रथम भ
वमांही, उपशम समकितधारी जी ॥ ज० ॥ १ ॥ तिहांथी सुरभ
वथिति क्षय करिने, थया भरतजीका नंदो जी ॥ मिरियच ना
म कहाणो तिण भव, संजम मंद स्वछंदो जी ॥ ज० ॥ २ ॥ ता
पस व्रत पाली भव चोथे, लीनो सुर अवतारो जी ॥ तिहांथी
तापस निर्जरभव, वली तापस व्रतधारो जी ॥ ज० ॥ ३ ॥
तिहांथी अंबर तापस किरिया, वली गयां देव विमाणे जी ॥ ति
हांथी तापस सुरपद पाया, तापसनाकने गाणे जी ॥ ज० ॥४॥
ए सोला भव महोटा करीने, रुलीयो बहुसंसारो जी ॥ विश्वभू
तिभवें करे नियाणो, तिहांथी सुर अवतारो जी ॥ ज०॥५ ॥ उग
णीशमे भवें हरिपद पाया, नाम त्रिपृष्ठ कहाणो जी ॥ सातमी पृ
थिवी निकली तिहांथी, सिंहतणो भव जाणो जी ॥ ज० ॥ ६ ॥
नरक गया तिहांथी कर्मावश, चक्रवर्त्तिपद पाया जी ॥ संजम
पाल्यो कोडि वरस लग, अंते अणसण गाया जी ॥ ज० ॥ ७ ॥
तिहांथी सातमे सरग सिधाया, चोविशमा भवमांय जी ॥ तिहां
थी पच्चिशमा भवमांइ, हुवा नंद महाराय जी ॥ ज० ॥ ८ ॥
संजम ले कर तप आदरियो, मास मास तप गाया जी ॥ एक
सठ सहस्र ने लाख अग्यारा, दोसें अधिक दरसाया जी ॥ ज०
॥ ए ॥ वीश बोल सेवन कर बांध्यो, गोत्रतीर्थंकर तामो जी ॥
तिहांथी दशमे सर्गे सिधाया, विश सागरथिति गामो जी ॥ ज०
॥ १० ॥ तिहांथी भवथिति क्षय करी स्वामी, मास अषाढ मझा
रो जी ॥ शुकलपक्ष छठ मध्यनिशामें, फाल्गुणी उत्तरा विचा
रो जी ॥ च० ॥ ११ ॥ खत्रीकुंभ सिद्धारथ राजा, त्रिशलादे
राणी सुजाणो जी ॥ चउदे सपना देइने उपना, पुण्य तणे प

रमाणो जी ॥ ज० ॥ १२ ॥ चेतशुद तेरश अधरयणी, जनम्या अंतरजामी जी ॥ चोसठ इंद मिल मोछव करकें, मेल गया शिर नामी जी ॥ ज० ॥ १३ ॥ सिद्धारथ नृप मोछव कीधो, निज सहु जाति जमाई जी ॥ नाम दियो वर्द्धमान कुमर जी, दिनदिन अधिक वडाइ जी ॥ ज० ॥ १४ ॥ त्रीस वरस ग्रहवासमें वसिया, पुत्री एकज जाणो जी ॥ मात पिता पोहोता सुरलोके, अभिग्रह ताम पूराणो जी ॥ ज० ॥ १५ ॥ वरसीदान दियो नित्य साहिब, जाव संजमका आया जी ॥ तिलोकरिख कहे पहेली ढालमें, जव सत्याविश दरसाया जी ॥ ज० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मागशिरवदि दशमी तिथि, छठ तपस्या प्रभु धार ॥ एकाकी साहसपणे, लीनो संजमभार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी हमीरियाकी ॥ धन धन त्रिशलानंद जी, सिद्धारथ कुलचंद ॥ जिनेश्वर ॥ तप तप्या प्रभु आकरो, तोड्या कर्मना वृंद ॥ जि० ॥ १ ॥ नव चोमासी तप कीयो, एक करी छ मास ॥ जि० ॥ अभिग्रह दूजी छमासीमें, तेरा बोल विमास ॥ जि० ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ एकसो पंचोतेर दिवसमें, चंदनबाला हाथ ॥ जि० ॥ जोग मिल्यो कोसंबीमें, पारणो कियो जगनाथ ॥ जि० ॥ ध० ॥ ३ ॥ मास खमण डुवादश कीया, पक्ष बहोंतेर कीध ॥ जि० ॥ आसण विवध प्रकारनां, सूतरमें सहु विध ॥ जि० ॥ ध० ॥ ४ ॥ अढाइमासी तिनमासी दो, दोयमासी खट जाण ॥ जि० ॥ देढमासी वली दो करी, दोसे गुणतीस बेलां मान ॥ जि० ॥ ध० ॥ ॥ ५ ॥ भद्र माहाभद्र शिवभद्र तपे, सोला दिन इम जोय ॥ जि० ॥ भिख्कुपडिमा अष्टम तणी, कीनी डुवादश सोय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ६ ॥ साडी अग्यारा वर्षनी उपरें, पचिस दिन तप धार ॥ जि० ॥

एक कम साडातिनसें, पारणे तास्या दातार ॥ जि०॥ध०॥७॥ देश अनारज विचरिया, सह्या परिसह कठोर ॥ जि० ॥ कूतां लगाया भरामणां, बंध बंधण कह्या चोर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ८ ॥ श्रवणें खीला खोडीया, पग पर रांधी खीर ॥ जि० ॥ डंक दीयो चंडकोशीये, रह्या अचलगिरि धीर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ए ॥ अज्ञव्यसंगमो देवता, आणी डुष्ट परिणाम ॥जि०॥छमास लगें डुःख दीयो, राखी समता स्वाम ॥ जि०॥ध० ॥ १० ॥ नर सुर तिर्यंचना सहु, सह्या परिसह सर्व ॥ जि० ॥ शम दम उपशम जावथुं, रंच न आण्यो गर्व ॥ जि०॥ध०॥ ११ ॥ चउविहार तपस्या सहु, निद्रा मुंहूरत एक ॥ जि० ॥ तिणमांही सपनां दश लह्यां, गोदूज आसण टेक ॥ जि० ॥ ध० ॥ १२ ॥ धन धीरज प्रज्जुजी तणी, धन करणी करतूत ॥ जि० ॥ धन कुल जिहां प्रज्जु जनमिया, धन जाया एहवा पूत ॥ जि० ॥ ध० ॥ १३ ॥ मावडी जायो एहवो, दूजो नहिं संसार ॥ जि० ॥ क्षमाशूरा अरिहंतजी, उपमा सूत्रमझार ॥ ॥जि०॥ ध०॥ १४ ॥ करम जरम चकचूरिया, दूजी ढालमझार ॥ जि०॥ तिलोकरिख कहे धन प्रज्जु, प्रणमुं वारं वार ॥ जि०॥ध०॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुक्लदशमी वैशाखनी, दिन ऊगत परमाण ॥ वीर जिनेश्वर पामिया, निर्मल केवल नाण ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ कर्मसमो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ जाणी लोकालोककी रचना, खटड्व्य गुणपरजायो ॥ चोतिस अतिशय पेंतिस वाणी, जग तारक जिनरायो रें ॥जविका॥ श्रीजिनपर उपगारी ॥ तार्यां बहु नर नारी रे ॥ज०॥१॥ चोसठ इंद्र आया तिण अवसर, त्रिगडो रच्यो तिण वारें ॥ स्फाटिक सिंहासन उपर बिराजे, अमृतवेण उच्चारे रे॥ज०॥२ ॥ मध्य पापापुरिमें तिणवेला, यज्ञ रचाणो छे जारी ॥ बहु पंमि

तनो थयो समागम, जावे सुर गगनविहारी रे ॥ न० ॥ ३ ॥ महि मा देखी मानविशेषें, पंचसया परिवारें॥ इंद्रनूति चल आया प्रनु पें, संशय गर्व निवारी रे ॥ न० ॥ ४ ॥ संजम ले गणधर पद लीनो, अग्निनूति चल आवे ॥ ते पण संशय दूर नयासुं, संजमसुं चित्त लावे ॥ न० ॥ ५ ॥ इम अग्यारा गणधर रचना, चुम्मालिशसें संख्या जाणो ॥ एकण दिनमें लीनी ज्यां दीक्षा, गुण रत्नागर खाणो रे ॥ न० ॥ ६ ॥ तिनसें चौदा पूरवधारक, तेरशें रिख उहिनाणी ॥ पांचशें मनःपरजव मुनि जाणो, बोले यथातथ वाणी रे ॥ न० ॥ ७ ॥ सातशें वैक्रिय लब्धिना धारक, चारसें चर्चावादी ॥ आठशें अनुत्तरविमानें विराज्या, सातसें रिख शिव साधी रें ॥न० ॥ ८ ॥ चउदा सहस्र रिख संपदा सारी, ज्येष्ठ गौतम गणधारी ॥ चंदनबालादिक सहस्र छत्तिसी, थइ समणी सुविचारी रें ॥ न० ॥ ए ॥ एक लाख गुणसठ सहस्रश्रावक, आणंदादिक व्रतधारी ॥ अगरा सहस्र तिन लाख श्राविका, सुलसादिक अधिकारी रे ॥ न० ॥ १० ॥ विचस्या गाम नगर पुर पाटण, तास्यां बहु नर नारी ॥प्रथम चोमासो अस्थिग्राममें, दूजो प्रष्ठचंपा मोझारी रें ॥ न० ॥ ११ ॥ त्रीजो चंपा चतुरसावत्थी, विशाला वाणिय कह्या बारा ॥ चउदा चोमासा राजगृहीमें, मथुरामें खट सारा रे ॥ ॥ न० ॥ १२ ॥ नद्दलपुरीमें दोय दिपाया, आठतीस एम जाणो ॥ एक आलंबिका एक सावत्थी, एक अनारज थाणो रे ॥ न० ॥ १३ ॥ तास्या बहु नवियण नर नारी, विचरता श्रीजिनराया ॥ अनुक्रमें आया पावापुरीमें, हस्तिपाल जिहां राया रे ॥न०॥ १४॥ कर जोडी प्रनुशुं करे अरजी, रथशालाने मझारो ॥ अबके चोमासो इहां करो प्रनुजी, विनति ए अवधारो रे ॥न०॥ १५ ॥ क्षेत्रफरसना जाणी दयानिधि, कीनो चरम चोमासो ॥ धरम दिवाकर धर्म दीपायो, पूरी नविजन आशो रे ॥ न० ॥ १६ ॥ तिलोक

रिख कहे त्रीजी ढालें, धन धन अंतरजामी ॥ गुण रतनागर पर
म उजागर, वंडुं नित शिर नामी रे ॥ भ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथो मास वरसातनो, पक्ष सातमो जाण ॥ तेरश आधी
रातसुं, अणसण धास्यो जाण ॥ १ ॥ देश अढारना नूपति, छठ
तप पोषध कीध ॥ सोला प्रहर लग देशना, स्वामी निरंतर दीध ॥
॥ २ ॥ सूत्र विपाकज उचस्यो, उत्तराध्ययन छत्तिस ॥ नविजीवां
हितकारणें, पूरी एह जगीश ॥ ३ ॥ गौतम मोहिणी टालवा,
जोइ अवसर सार ॥ पर उपगारी परमगुरु, शिवसुखना दातार ॥
॥ ४ ॥ कार्तिक वदि अमावस्या, कहे गौतमसुंस्वामि ॥ देवशर्मा
विप्र बोधवा, जावो तिणने गाम ॥ ५॥ तहत्ति करी तिहां संचस्या,
पीछें दीन दयाल ॥ जाय बिराज्या मोक्षमें, नवफेरा दिया टाल ॥६॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ क्षमावंत जोय नगवंतनो रे ज्ञान ॥ ए देशी ॥ श्रीजिनशिव
पुर संचस्या जी, थयो जगमें अंधकार ॥ गौतमस्वामी जाणीयो जी,
आरत आइ अपार ॥ जिनेश्वर॥ हवे मुज कवण आधार ॥ १ ॥
ए टेक ॥ धसकी पड्या धरणी तदा जी, शुद्धि न रही लगार ॥ धिक
धिक मोहनी कर्मने जी, देखो कर्मविकार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे मुझक
वण आधार ॥ २ ॥ एक मुहूरतने आंतरे जी, आइ चेतना ताम
॥ मोहवशें करे झूरणा जी, छोडी गया केम स्वाम ॥ जि०॥ह०॥३॥
अंतेवासी हुं आपको जी, रहेतो जिम तन गाय ॥ छेले समे कियो
आंतरो जी, ए तुम जुगतुं नाय॥जि०॥ह०॥४॥ हुं पल्लो नहिं झालतो
जी, जातां मोक्ष मझार ॥ जाग्या पण नहिं रोकतो जी, किम आ
यो तुम खार ॥जि०॥ह०॥५॥ बाल ज्यों आमो न मांझतो जी, नाग
न मागतो ज्ञान ॥ अणख न करतो आपशुं जी, लागो तुमशुं ध्यान
॥जि०॥ह०॥६॥ कारमो राग होतो नहिं जी, तुमशुं माहरो नाय

॥ तुम सम माहरे दूसरी जी, होती नहीं कोइ आथ ॥ जि० ॥ ह०॥७॥ एकपखी जे प्रीतडी जी, पार पडे नहिं तेह ॥ आज जाणी में परतिखे जी, इणमें नहिं संदेह ॥ जि०॥ह०॥८॥ गोयम गोयम नाम ले जी, कुण बोलावसी मोय ॥ कुणकने लेशुं आज्ञा जी, चिंता मुजने सोय ॥जि०॥ह०॥ए॥ जो मुज मन शंका होती जी, पूछतो सहु तत्काल ॥ नर्म सहु तुमें टालता जी, प्रत्यक्ष दीनदयाल ॥जि०॥ह०॥१०॥ तुम दरिसण अविलोकतां जी, रोमरोम उल्लसंत ॥ हवे दरिसण किहां आपनां जी, नयभंजण भगवंत ॥ ॥जि०॥ह०॥११॥ तुम वाणी अमृत समी जी, साकर दूध सवाय ॥ हवे किणनी सुणशुं गिरा जी, जगतारक जिनराय ॥ जि० ॥ ह०॥१२॥ वली मनमांही चिंतवे जी, धिक धिक मोहनी कर्म ॥ धन धन श्रीजिनरायने जी, साध्यो आतमधर्म ॥जि०॥ह०॥१३॥ दुष्टकर्मपरभावथी जी, रुलियो चउगतिमांय ॥ एकाकी तिहुं कालमें जी, ए जिनशासन राय ॥जि०॥ह०॥१४॥ वीतराग प्रभुनी दिशा जी, शंका नहिं लगार ॥ तुं किम भूल्यो भर्ममें जी, शम दम उपशम धार ॥जि०॥ह०॥१५॥ ध्यान शुक्ल तिहां ध्याइयो जी, हीनां कर्म खपाय ॥ केवलज्ञान प्रगट थयो जी, आरत रहि नहिं कांय ॥जि०॥ह०॥१६॥ केवलमहोत्सव सुरपति कीयो जी, निर्वाण पण तिण गाम ॥ चार तीर्थ मली थापीया जी, पाटें सुधर्मा स्वाम ॥ जि०॥ह०॥१७॥ शिष्य थया जंबु जिस्या जी, रातें परणीया नार ॥ कोडि नन्याणुं त्यागिने जी, दिन ऊगां व्रत धार ॥जि०॥ह०॥१८॥ तिन पाट थया केवलीजी, श्रीजिन आगम वयण ॥ जे धारे भवि प्राणीया जी, उघडे अंतर नयण ॥ जि०॥ह०॥१ए ॥ दीपायो जिन धर्मने जी, पूरव वर्ष हजार ॥ हवे तो सूत्र व्यवहार छे जी, हवणां परम आधार ॥ जिनेश्वर॥ हवे प्रवचन आधार॥ ए टेक ॥२०॥ इण परमाणें चालसी जी, टालसी आतमदोष ॥ तो भवि प्राणी

जीवडा जी, अनुक्रमें जासी मोक्ष॥जि०॥ह०॥२१॥ सवंत उगणी
शें जाणीयें जी, सेंतिस वर्ष मझार ॥ दीपमाला दिने एकथ्योजी,
तिलोकरिख सुविचार ॥जि०॥ह०॥२२॥ अहमद नगर देश दक्षि
णें जी, सुखें रहिया चोमास ॥ जणशे गुणशे जावशुं जी, लेहेशे
शिवसुख वास ॥जि०॥ह०॥२३॥ कलश ॥ समकीत पाया, जव
घटाया, सत्ताविश भुल, जागिया ॥ तेह वरणव, जवि कहे ते, चा
र ढाल, वखाणीया ॥ सासण नायक, सुखदायक, प्रणमुं वारं, वा
र ए ॥ तिलोकरिख कहे, नाथ अरजी, करजो जव, निस्तार ए ॥
प्रभु दीजो जेजे, कार ए ॥ १ ॥ इति श्रीवर्द्धमान जिनेश्वर चौढा
लीयुं संपूर्ण ॥ सर्वगाथा ॥ ८२ ॥

॥ अथ खंधकजीको चोढालीयो लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं जगनायक सदा, जयजंजण जगवंत ॥ आचारिज उ
वझाय जी, गौतमादिक सब संत ॥१॥ श्रीगुरुचरणांबुज नमुं, सम
रुं सरस्वति माय ॥ खंधक मुनिगुण गावशुं, सुणजो चित्त लगाय ॥२॥

॥ ढाल पेहली ॥

॥ रे प्राणी कर्म समो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ सावत्थि नामें न
गरी जलेरी, गढ मढ पोल प्रकारो ॥ हाट हवेली महेल मालीयां,
शोजा विविध प्रकारो रे ॥ प्राणी धर्म सदा सुखदायी ॥ १ ॥ कन
ककेतु तिहां नूपति जाणो, धर्मकेतु गुणवंतो ॥ शूरवीर महीमंम
लमांही, प्रजा जनक जसवंतो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ मलया राणी
पतिसुखदाणी, वाणी मधुर गजगमणी ॥ चंद्रवदन मृगनयणी
शाणी, शीलरूप गुणरमणी रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तस नंदन सुखकं
द सकलने, खंधक नामें कुमारो ॥ गुण तस वंदक चंद ज्यों शीत
ल, शूरवीर शिरदारो रे ॥ प्रा० ॥४॥ बोहोंतेर कलामांही अधिक
विचक्षण, दिन दिन कीर्ति सवाई ॥ मात पिताकी जक्ति कारक,

नइक नाव सदाइ रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ तिण अवसर मुनि विजय सेण रिख, गुणरतनाकर नारी ॥ परम वैरागी आश्रवत्यागी, धर्म रागी तपधारी रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ श्रीसंघमंमण नर्म विहंमण, बहु शिष्यने परिवारें ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, नवि प्राणी बहु तारे रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ अनुक्रमें आया तिण पुरमांही, उतस्था बाग मफारो ॥ श्रावक सुणके अधिक आणंदे, वंदण गया अणगारो रें ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ नूपति निजसंपति सब लेइ, मुनिवंदण परवरिया ॥ अवसर देखी देशना देवें, ज्ञानगुणका सो दरिया रे ॥ प्रा० ॥ ॥ए ॥ ए संसार सुपनवत माया, देखतमें विरलावे ॥ धन संपत सब कारमी जाणो, ज्यों वादलदल ठावे रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ नीट नीट एह नरनव पायो, रोटीसाटे मति हारो ॥ धर्मरतन राखो अतिजतनें, परनव खरचिया लारो रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ कर्म निवारो धर्मज धारो, वारो विषय विकारो ॥ केवल पावो मुक्ति सिधावो, उतरो नवजल पारो रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ इत्यादिक उपदेशना दीनी, प्रथम ढालके मांही ॥ तिलोकरिख कहे नविजन प्राणी, सुणके हरख्या घणाइ रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ खंधक कुमर तब वीनवे, जोडी दोनुंइ हाथ ॥ सतवाणी प्रनु ताहरी; धर्म बोलावुं साथ ॥ १ ॥ आथ नहिं इण सारखी, में जाणी निर्धार ॥ मात पिता आज्ञा लेई, लेशुं हुं संजमनार ॥ २ ॥ मुनिवर कहे जिम सुख होवें, तेम करो ततकाल ॥ धर्में ढील न कीजियें, नांखी ए दीन दयाल ॥ ३ ॥ मुनि वंदी घर आविया, खंधक नाम कुमार ॥ किणविध मागे आगना, ते सुणजो अधिकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नंदन जसधारी, हुवा ठे देवकी मायना ॥ अथवा ॥ माचका दूहामें देशी ठे ॥ कुमर कहे करजोडिने सो कांइ, यह संसार असार ॥

धन संपत सब कारमी स कांइ,शंका नही लगार हो ॥ माताजी मोरां, आज्ञा देंवो तो संजम आदरुं ॥ १ ॥ ए टेक ॥ वचन सुणी इम पुत्रका स कांइ, मूर्छाणी तत्काल ॥ शुद्ध बुद्ध सघली वीसरी स कांइ, मोहकी महोटी जाल हो ॥ मा० ॥ २ ॥ शीतल नीर समीर प्रभावें, कांइक थई हुसियार ॥ करुणा स्वरें नयणां जल वरसे, ज्युं श्रावण जलधार हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुं मुज नंद ए काकी कुलमें, जीवन प्राण आधार ॥ उंबरफूल सम दरिसण थारो, मत ले संजमभार हो ॥ सुण नंद हमारा, जोबन ढलिया सुं लीजें जोगने ॥ ए टेक॥ ४ ॥ विनय करीने कुमर पयंपे, काल व्याल विकराल ॥ हरि हर इंद चंद नहिं छोडे, छिनमें करे बेहाल हो ॥ मा० ॥ ५ ॥ जिणने हेत होय कालरिपुसें, भाग जाणे की पहोंच ॥ अथवा जाणे हुं कदी न मरशुं, उणके तो नहिं सोच हो ॥ मा० ॥ ६ ॥ राजलक्ष्मी संपत बहुली, हय गय दल बल पूर ॥ ए भोगव फिर संजम लीजे, मान केणी जरूर हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ धन दोलत उर माल खजीना, ज्यों विजली झबकार ॥ चोर अग्नि सजन भय धनमें, नरकगति दातार हो ॥ मा० ॥ ८ ॥ कोमल काया कंचन वरणी, तरुणीसुं सुख भोग ॥ वृद्धपणो जब आवे तनमें, तब आदरजे जोग हो ॥ सु० ॥ ए॥ काया माया वादल छाया, मल मूतरभंभार ॥ रोग शोगको भाज न इणमें, तप जप संजम सार हो ॥ मा० ॥ १० ॥ भोग हलाहल झहेरसुं जादा, फल किंपाक समान ॥ अल्प सुखसुं दुःख अनंतां, सहेतबुरी जिम जाण हो ॥ मा० ॥ ११ ॥ रतनपिंजरें शुक नहिं राजी, तिम हुं इण संसार ॥ जनम मरण दुःख मोहनी बंधण, कहेतां न आवे पार हो ॥ मा० ॥१२॥ मोह ताता वश माता बोले,तुं वत्स अति सुकुमाल ॥ पंच महाव्रत मेरु समाना, तोडणो मोहजंजाल हो ॥ सुण पुत्र पियारा,संजम लेवो जी

डुक्करकार छे ॥ एटेक ॥१३॥ पग अणवाणे चालणो स कांइ,लोचन सोच अपार ॥ बाविश परिसह जीतणा स कांइ,चलणो खांमाधार हो ॥ सु०॥१४॥ घर घर भिक्षा मागणी स कांइ, दोष बइयालीस टाल ॥ कोइक देशे उलट प्रणामें, कोइक देशे गाल हो ॥ सु० ॥ ॥ १५ ॥ वाय भरेवो कोथलो स कांइ, डुक्कर छे जगमांय ॥ शिला अलूणी चाटणी स कांइ, दीक्षा अति डुःखदाय हो ॥ सु०॥१६॥ कुंवर पयंपे सत्य कही सब, कायर नरने जाण ॥ शूरवीरने सहे ज छे संजम, शंका रंच न आण हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ तिलोकरिख कहे दूजी ढालें, लीनी दृढता धार ॥ मात पिता थाकां समजातां, आज्ञा दी तिणवार हो ॥ सु० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कियो मोछव दीक्षा तणो,सूत्रमांहे विस्तार ॥ पंच महाव्रत आदर्यां, धन खंधक अणगार ॥ १ ॥ मात पिता मोहनी वशें, पंचसया परिवार ॥ राख्या रक्षाकारणें, सुभट बडा हुसियार ॥ २॥ जिहां जिहां मुंनिवर संचरे, तिहां तिहां रहे सो लार ॥ नृप चूकावे नोकरी, जाणे नहिं अणगार ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज आणंद घण जोगीसर आया ॥ ए देशी ॥ खंधकमुनि गुणवंदक जगमें, पंचमहाव्रत पाले रे लो ॥ पांच समिति तिन गुप्ति आराधे, पंच प्रमाद मद टाले रे लो ॥ खं० ॥ १ ॥ छै काया प्रतिपाल दयानिधि, पांचु क्रिया परिहारी रे लो ॥ सतरा भेदें संजम पाले, द्वादश तपस्याधारी रे लो ॥ खं०॥२॥ चाकर ठाकर शत्रु सज्जन, सम जाणे रिखराया रे लो ॥ क्षमासागर गुणर त्नागर, त्यागी जगतकी माया रे लो ॥ खं० ॥ ३ ॥ सहे परिसह शूर परिणामें, चार कषाय निवारी रे लो ॥ मास मास तप करत निरंतर, शम दम उपशमधारी रे लो ॥ खं० ॥ ४ ॥ ज्ञान प्रबल

मुनि ध्यानमें शूरा, एकाकी पडिमा विहारी रे लो ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, तारे बहु नर नारी रे लो ॥ खं० ॥ ५ ॥ एक दा मासखमण तप करतां, कुंति नगरीमें आया रे लो ॥ सुभट विचारे इहां मुनिवरनां, बहेन बनेवी राया रे लो ॥ खं० ॥ ६ ॥ इहां भर कारण नहिं जरा भर, उतर्या बाग मझारो रे लो ॥ लागा सहु भोजन करवाने, ते मुनिवर तिणवारो रे लो ॥ खं० ॥ ७ ॥ प्रथम पहेरमें सूत्र चितारे, डुजीमें ध्यानज गाया रे लो ॥ त्रीजी पहेरसी पारणा कारण, मुनि गोचरीयें सिधाया रे लो ॥ खं० ॥ ८ ॥ कोमल काया पग अणुवाणे, परसेवे भींज्यो शरीरो रे लो ॥ खड खड वाजे हाड मुनिनां, चाल चले अति धीरो रे लो ॥ खं० ॥ ए ॥ चल आवे नृप महेलनी पासें, राजाजी तिणवारो रे लो ॥ राणीसंघातें चोपड खेले, हर्षवदन हुसियारो रे लो ॥ खं० ॥ १० ॥ राणीकी दृष्टि पडी रिख उपर, मनमें ताम विचारी रे लो ॥ मुज बंधव पण संजम लीधो, सहेतो होसी डुःख भारी रे लो ॥ खं० ॥ ११ ॥ भणारत आणी अति राणी, आंसु त तक्षण आयां रे लो ॥ नृप पूछे सा कांइ न बोली, नीचें देख्यो त ब राया रे लो ॥खं०॥१२॥ मुनिवर देखी वेरज जाग्यो,अधिको क्रोध भराणो रे लो॥ ए मोडो इण पंथें क्यों आयो,चाकरसुं कहेवाणो रें लो ॥खं०॥ १३ ॥ पकड ले जावो जंगलमांही, सब तन खाल उतारो रे लो ॥ छोडो मत एह कोइ प्रकारें, मानो हुकम ए माहरो रे लो ॥ खं० ॥ १४ ॥ आघी पाछी कांइ न सोची, पूरव वैरप्रभावें रे लो ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालें, राय हुकम फरमावे रे लो ॥ खं० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुभट आया तत्क्षण तदा, ते मुनिवरनी पास ॥ ग्रहवा लाग्या कर भणी, तब पूछे मुनि तास ॥ १ ॥ सो कहे आज्ञा राय

नी, खाल उतारण काज ॥ ले जावा समसानमें, तब बोल्या रिख राज ॥ २ ॥ हाथ ग्रहो मत माहरा, हुं आवुं तुम लार ॥ मुनि पहुता समसानमें, मनमें साहस धार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ बलती द्वारिकां देखिने रे ॥ ए देशी ॥ खंधकमुनि समसानमें रे, आलोयणा शुद्ध कीध ॥ नमोत्थुणं सिद्धने दियो, दुजो अरिहंताने दीध रे ॥ धन धन मुनिराया ॥ १ ॥ पाप अगारा त्यागीया रे, जावजीव चोविहार ॥ काया माया ममता तजी कीयो, पादोपगमन संथार रे ॥ ध० ॥२॥ उन्ना मुनि निश्चलपणे रे, ज्यों पाट्यो ठोले सुतार ॥ राय सुनट लीया पाठणां नाइ, तीखी छे तिणरी धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ खाल उतारी देहनी रे, चरड चरड तिण वार ॥ तरड तरड रुधिर वहे नाइ, दया न आणी लगार रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ शिरसूं लगाइ पग लगें रे, छोली मुनिवर खाल ॥ नाकें सल लाया नहिं नाइ, मेटी क्रोधकी जाल रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ उजली वेदना ऊपनी रे, कहेतां न आवे पार ॥ के दुःख जाणे आतमा नाइ, के जाणे किरतार रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ मुनिवर मनमें चिंतवे रे, उदे थयां तुऊ कर्म ॥ समपरिणाम राख्या थका नाइ, निपजसी आतमधर्म रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ अज्ञानपणे अति हरखसुं रे, बांध्यां निकाचित पाप ॥ नूक्त्या विण छूटे नहिं नाइ, नोगवे आपो आप रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ तुं पुजलसुं निन्नता रे, अजर अमर अविकार ॥ नाश नहिं त्रिहुं कालमें नाइ, मनमांही साहसधार रे ॥ ध० ॥ए॥ थिरपरिणामें मुनिवरु रे, ध्यायो शुकलज ध्यान ॥ अंतगडकेवल पायने, पाया पद निर्वाण रे ॥ ध० ॥ १० ॥ धन जननीजिणें जनमिया रे, धन धन ते अणगार ॥ पाछें देही पडी नूपरें नाइ, पहेली लह्यो नवपार रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ हवे वीतक सुणो पाछलुं रे, सुनट जे मुनिवर लार ॥ देख्या नहिं रिख नयणसुं

जाइ, शोधे नगर मझार रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ तिणसमे दासी राव ली रे, उंलखिया असवार ॥ पूछ्युं कारण तिणे दाखीयुं जाइ, रा णीथी कह्या समाचार रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ राणी कह्युं निजकंतसुं रे, सुण राजा मुरझाय ॥ वीतक वात कही तदा जाइ, राणी प डी मूर्छाय रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ फिट फिट कंता शुं कियो रे, महोटो एह अकाज ॥ मुझ वीरो हीरो गुण तणो जाइ, महामहोटो रिखराज रे ॥ध०॥ १५॥ क्षण एक तो धरणी ढले रे, क्षण एक नाखे निसास ॥ क्षणएक दे उंलंजडा जाइ, रुदन करे अति त्रास रे॥ध०॥ १६ ॥ रोवे राणी रावली रे, कानें सुणी नहिं जाय ॥ रोतां सहु रोवाडीयां जाइ, हाहाकार पुरमांय रे ॥ ध० ॥ १७ ॥ फूरे सुनंदा बेनडी रे, फूरे पुरिससेण राय ॥ महोटुं अकारज ए थयुं जाइ, घात करी मुनिराय रे ॥ ध० ॥ १८ ॥ तिणसमे केवल धारणा रे, समोसर्या मुनिराय ॥ राय गयो वंदण जणी जाइ, पूछे शीश नमाय रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ निरपराधी महामुनि रे, किम उपनो मुझ द्वेष ॥ पूरव वैर कांइ हुतो जाइ, ते दाखो कर्म रेख रे ॥ध० ॥ २० ॥ मु निवर कहे सुण नृपति रे, पूरव जवह मझार ॥ काचरानो जीव तुं हतो जाइ, नृपनंद खंधकुमार रे ॥ ध० ॥ २१ ॥ छाल उतारी हरखयुं रे, आणंद अंग न माय ॥ कीधी सरावणा तिण तिहां जाइ, वार वार मन वाय रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ कर्म निकाचित बां धियो रे, तेरें क्रोड जव मांय ॥ काचरानो जीव तुं थयो जाइ, तें तो थयो मुनिराय रे ॥ ध० ॥ २३ ॥ वैर जाग्यो रिख देखीने रे, कर्म न छोडे कोय ॥ जिन चक्री हरि हर जणी जाइ, हिरदे विमा सी जोय रे ॥ ध० ॥ २४ ॥ कर्म समो शत्रु नहिं रे, कर्म करो मत कोय ॥ रखवाला पांचशें सुजट था जाइ, आडो न आयो कोय रे ॥ ध० ॥ २५ ॥ राणी राय अने सुजटा रे, सांजली ए अ धिकार ॥ संजम लेइ मुक्तें गया जाइ,वरत्यो जयजयकार रे ॥ध०

॥ २६ ॥ संवत उंगणीशें गुणचालिशमें रे, ज्येष्ठशुक्ल डुज जाण ॥ लश्करघोडनदीविषे नाइ, गुणि गुण कीयां वखाण रे ॥ ध० ॥ २७ ॥ खंधक जिम क्षमा करो रे, तो उतरो नवपार ॥ तिलो करिख कहे चोथी ढालमें नाइ, धर्म सदा श्रीकार रे ॥ध०॥ २८ ॥

॥ अथ मेतारज मुनिनुं चोढालियुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिन समरुं नावशुं, सतगुरु लागुं पाय ॥ कथाअनुसारें गावशुं, मेतारज मुनिराय ॥ १॥ पूरवनव दो मित्र था, ब्राह्मण केरी जात ॥ देशना सुणि रिखराजकी, संजम लियो संघात ॥२॥ संजम पाले नावशुं, तपस्या करे करूर ॥ एक दिन मनमें चिंतवे, पूरवपाप अंकूर ॥३॥ जैनधर्म श्रीकार हे, शंका नहिंअ लगार ॥ स्नान नहिं इण मार्गमें, एतो कहि आचार ॥ ४ ॥ कुलमद डुर्गंछा नावथी, नीच कुलबंधन कीन ॥ आलोयणा विण सोचवी, सुरगति दोनुं लीन ॥ ५ ॥ दोय मित्र तिहां देवता, बोले आपसमांय ॥ जो पहेलो नरनव लहे, घालीजें धर्ममांय ॥ ६ ॥ संजम लेवाणो तिण नणी, करि कोइ दाय उपाय ॥ इम संकेत कीधो उन्ने, सुरनव आपस मांय ॥ ७ ॥ कुलमद जिण कीनो हुंतो, ते पहेलो चव्यो तेय ॥ मातंगकुलमें अवतस्यो, उदय कर्मके हेत ॥८॥ शेष पुण्यप्रतापथी, पायो संपति सार ॥ किणविध तिण संजम लियो, ते सुणजो अधिकार ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ सोवन सिंहासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सहेर राजगृही दीपतुं, राज करे श्रेणिक राय रे ॥ शेठ युगंधर दीपतो, लक्ष्मीवंत कहाय रे ॥ स० ॥ १ ॥ श्रीमतीनार सुलक्षणी, रूप गुणें अधिकाय रे ॥ अवगुण कर्म प्रनावथी, मृतवंझणी ते थाय रे ॥ स० ॥ २ ॥ ए

कदा गर्भ रह्यो तेहने, चिंतवे ते मनमांय रे ॥ जीवे नहिं बालक माहरे, धन रखवालक नांय रे ॥ स० ॥ ३ ॥ जिम संतति रहे कुल विषे, तिम करुं कोइ उपाय रे ॥ एटले आवी मातंगणी, गर्भवती सा देखाय रे ॥ स० ॥४॥ तिणने एकांतें लेई करी, दीयो घणो सन मान रे ॥ संपति छे मुझ घर घणी, जीवे नहिं मुझनां संतान रे ॥ स० ॥ ५ ॥ जो तुझ होवे नंदन कदा, गुप्तपणे घर मोय रे ॥ मेलजे तुं निशिने समे, ठीक पडे नहिं कोय रे ॥ स० ॥ ६ ॥ द्रव्य देशुं तुझ सामटुं, होसी सुखी तुझ पूत रे ॥ प्रेम हुं राखशुं अतिघ णो, रहेसी मुझ घरतणो सूत रे ॥ स० ॥ ७ ॥ राजी थइ तिणें मानीयो, जनमीयो नंद जिणवार रे ॥ प्रछन्नपणे तिणें मोकल्यो; ठिक नहिं पुर नर नार रे ॥ स० ॥८॥ जनम मोछव सबही कियो, दिवस थया जब बार रे ॥ दीयो दशोट्टण जातमें, वरतियां मंगल चार रे ॥ स० ॥ ९ ॥ नाम मेतारज थापीयुं, प्रतिपालण करे पंच धाय रे ॥ पूरव पुण्य प्रभावथी, रूपगुणें अधिकाय रे ॥ स० ॥ १० ॥ कुलमद कियो तिण कर्मथी, महेतर घर अवतार रे ॥ बीज शशी परें दिन दिने, वधे तस जश विस्तार रे ॥ स० ॥ ११ ॥ बहोंतेर कलामें पंमित थयो, आवियो यौवनमांय रे ॥ तिलोकरिख कहे पहेली ढालमें, पुण्यथी सुख सवाय रे ॥ स० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाइ सात ॥ पंच इंद्रिय सुख भोगवे, आणंदमें दिन रात ॥ १ ॥ हवे तिण अवसरने विषे, पूर्वे कीनो करार ॥ ते सुर आई उपदिशे, ले तुं संजम भार ॥ २ ॥ तल्लालीन ते भोगवे, माने नहिं लगार ॥ किनी सगाइ वली तिणें, ते सुणजो अधिकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इण सरवरीयारी पाल, उभी दोय रावली ॥ माहारा लाल उ०

॥ए आंकणी॥ आठमी कन्या तेह, परणवा उम्मह्या॥ माहारा लाल॥ परणवा०॥कीनी सजाइ जान, जानी भेला थया ॥मा०॥जा०॥ केश रीयो जामो पहेर, मुकुट शिरपर धर्यो ॥ मा०॥ मु०॥ माथे बांध्यो मोड, विंदनो वेश कर्यो ॥मा०॥विं०॥१॥ शिरपर शिरपेच जडाव, तुरो झगझगे सही ॥ मा० ॥ तु० ॥ कलगी तिण उपर जाण, अधिक भलकी रही ॥ मा० ॥ अ० ॥ झगमगे कुंमल कान, हार झगझग करे ॥ मा० ॥हा०॥ बाजुबंध भुजदंम, पहोंची कडां कर सिरे ॥ मा० ॥ प० ॥२ ॥ मुद्दी अंगुलीके मांय, झलके हीरातणी ॥ मा० ॥ झ० ॥ कमर कंदोरो जडाव, सुवर्णकी खिंखणी ॥मा०॥ सु० ॥ अत्तर अंग लगाय, तिलक भालें कर्यो ॥ मा० ॥ ति० ॥ कियो उत्तरासण तेण, सुरथकी सो नहिं मर्यो ॥ मा० ॥सु०॥३॥ वेगो हय असवार, लामो बण्यो सो सही ॥ मा० ॥ ला० ॥ गावे मंगल नार, अधिक उच्छावही ॥ मा० ॥ अ०॥ धप मप मादल नाद, के साद सुहामणो ॥ मा० ॥ के० ॥ धडिंदा धडिंदा ढोल, तिड किड त्रांसा तणो ॥मा०॥ ति० ॥ ४॥ चाल्या अधिक उत्साह, व्याव करवा भणी ॥ मा० ॥व्या०॥ आया मध्य बजार, बणी शोभा घणी ॥ मा० ॥ ब० ॥ तिणसमे सो सुर कीध, वात कौतुक तणी ॥ मा० ॥ वा० ॥ ॥ मातंग मन दियो फेर, हेर अवसर अणी ॥ मा० ॥ हे० ॥ ५ ॥ लीनो हाथमें लठ, धठ धीगे घणो ॥ मा० ॥ ध० ॥ आयो जानकेमांय, धरी कुलंगपणो ॥ मा० ॥ध० ॥ माने नहिं कछु शंक, वंक एकी जणो ॥ मा० ॥ वं० ॥ आयो सो विंद हजूर, काम नहिं दूर तणो ॥ मा०॥ का० ॥ ६ ॥ सघलाही रहीया देख, बोले सुणो नंदना ॥मा०॥बो०॥ हुं छुं सगो तुझ बाप, जाणे मत फंदना ॥ मा० ॥जा०॥ सात कन्या व्याहि वणिक, परणाउं एक माहरी ॥ मा० ॥ प० ॥ पकडी अश्व लगाम, कोई नहिं बाहरी ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ वदलायो चित्त

लोक, धोको सबने पड्यो ॥मा०॥ धो०॥ साची दीसे ए वात, जो ग इसडो घड्यो ॥ मा०॥ जो०॥ लोक गयां सब ठाम, बिंद रह्यो एकलो ॥ मा० ॥ बिं०॥ अधिक खीसियाणो होय, देखे सो नूंइ त लो ॥ मा०॥ दे० ॥ ८ ॥ तिणसमे सो सुरवेण, कहे शरवण विषे ॥मा०॥क०॥ ले हवे संजम ताम, कहे सो नूंमी दीसे ॥मा०॥क० हवे पाछो होय सुजस, परणुं कन्या वणिकनी ॥ मा० ॥ प० ॥ नवमी परणुं नूप, धूया श्रेणिकनी ॥ मा०॥ धू० ॥ ए ॥ बारा वर्ष गृहवास, रहुं तदनंतरें ॥ मा० ॥ त० ॥ लेशुं पछें संजम नार, वचन ए नहिं फिरे ॥ मा० ॥ व० ॥ एम सुणी सुरवे ण, सेण मन फेरियो ॥ मा० ॥ से० ॥ जूठी मातंगनी वात, बींद वली हेरीयो ॥ मा० ॥ बिं० ॥१०॥ हुइ सजाइ सवे, तिहां वली व्यावनी ॥ मा० ॥ ति० ॥ आया सोही बजार, बात थइ न्यावनी ॥ मा० ॥ बा० ॥ महेतर आयो सो चाल, जानमांही दोडिने ॥ मा० ॥ कण मदिरा पीध, बोले कर जोडिने ॥ मा० ॥ बो० ॥११॥ ए नहिं माहरो नंद, खोटो हुं बोलियो ॥मा० ॥ खो० ॥ माफ करो अपराध, कह्यो बे तोलीयो ॥ मा० ॥ क० ॥ न मे टल्यो सहु लोक, कन्या परणी सही ॥ मा० ॥ क० ॥ तिलोक रिख कहे दूजी ढाल, डुग्धा राखी नही ॥ मा० ॥ डु० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजसुता परणावणी, सुर सोचीने तास ॥ दीनी बकरी रूयडी, उगले रतन उजास ॥ १ ॥ रत्नराशि झगमग करे, देखे बहु नर नार ॥ पुरमें पसरी वारता, मेतारज पुण्य सार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वैदर्भीशुं मन वस्यो ॥ ए देशी ॥ राय सुणी इम वारता, मनमें विस्मय थाय हो लाल ॥ बकरी लावो वेगशुं, जेज करो म ति कांय हो लाल ॥ रा० ॥१॥ सुनट सुणी चल आविया, सुगंध

रने गेह हो लाल ॥ मागे बकरी शेठथी, उगले रत्नज जेह हो लाल ॥ रा० ॥ २ ॥ शेठ वदे सुनटा नणी, में नहिं मालक ता स हो लाल॥ मेतारजने पूढिने, लेइ जावो थें उल्लास हो लाल॥ रा० ॥३॥ कुमर कने जाची तिका, सो बोले तिण वार हो लाल॥ बकरी जीवन प्राण ठे, रत्नपुंज दातार हो लाल ॥ रा० ॥ ४ ॥ सुनट गया फिर रायपें, दाख्या सहु समाचार हो लाल ॥ सुणि क्रोधातुर बोलियो, जेज न करो लगार हो लाल ॥ रा०॥५॥ हलकाख्या सुनटा नणी, धसमस करता जाय हो लाल ॥ ढाली लाया ढोडिने, पूढ्यो तिणसुं नाय हो लाल ॥ रा० ॥ ६ ॥ राय कचेरी लाविया, क्षणअंतरनी मांय हो लाल ॥ बकरी ढेरी तिण समे, डुर्गंध रहि फेलाय हो लाल ॥ रा० ॥७॥ सना सहु व्याकुल थइ, उठि चाल्या सहु लोक हो लाल ॥ पूढे नूप कारण किस्युं, वात थइ ते फोक हो लाल ॥ रा० ॥ ८ ॥ सुनट कहे फूठी नहिं, एही रत्न दातार हो लाल ॥ पूढे कारण कुमरशुं, सुनट गया तिण वार हो ॥ रा० ॥ ए ॥ पूढ्यो कारण कुमरथी, किण कारण डुर्गंध हो लाल ॥ उगले नहिं किम रत्न ते,दाखो तेह प्रबंध हो लाल ॥ रा० ॥ १० ॥ सो कहे मुफ राजी करे, रत्न उगले श्रीकार हो लाल ॥ नहिं तो एढे रे बूरी, शंका नहिं लगार हो लाल ॥ रा० ॥ ११ ॥ राय कहे जे ढालिका, देवे रत्न श्री मोय हो लाल ॥ मुख मागी वस्तु तिका, देशुं हुं खुशी होय हो लाल ॥ रा० ॥ १२ ॥ सो कहे कन्या तुम तणी, द्यो मुफने परणाय हो लाल ॥ रत्न उगलसी ए नलां, हाम नरी तव राय हो लाल ॥ रा० ॥ १३ ॥ गुणमंजरी कन्या नली, कीधो व्याव उत्साह हो लाल ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें, कुमरनो पूग्यो उमाह हो लाल ॥ रा० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ नव कन्या परणी वली, नवनिधि पति जिम तेह ॥ जोग वे सुख संसारनां, दिन दिन वधते नेह ॥ १ ॥ बारा वर्ष इम वीतियां, सो सुर आयो चाल ॥ कहे ले हवे तुं वेगशुं, संजम चित्त उजमाल ॥ २ ॥ नहिं तो देउं संकट घणो, इणमें फेर न फार ॥ सियालपरें श्रीवीरपें, लीधो संजमभार ॥ ३ ॥ मनमें ताम विचारीयो, धिक धिक कामविकार ॥ पायो हीनता लोकमें, महेतर घर अवतार ॥ ४ ॥ हवे करणी दुःकर करुं, कर्म करुं सब छार ॥ मास मास तप धारीयो, नीरंतर चोविहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जमिकंदमें रे जीव जाइ उपनो ॥ ए देशी ॥ नित नित प्रणमुं रे मेतारज मुनि, तारण तरण जहाज ॥ परम वैरागी रे रागी धर्मना, साधे आतमकाज ॥नि०॥१॥ थिविरापासें रे शीख्या थिर मनें, नव पूरवको रे ज्ञान ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरतो, ध्यावे निर्मल ध्यान ॥ नि० ॥२ ॥ कोइसमे आया रे राजगृही वली, पारणो आयो रे ताम ॥ प्रभुआज्ञा लेइ गोचरी पांगुरया, भिक्षा निरवद्य काम ॥ नि० ॥ ३ ॥ मारग जातां रे सुवर्णकारकें, उलखिया रिखराय ॥ एह जमाइ रे थाय श्रेणिक तणा, गोचरी कारण जाय ॥ नि० ॥ ४ ॥ आवो पधारो रे अम घर साधु जी, कृपा करो मुनिराय ॥ वहोरो सूझतो आहार छे माहरे, बोले ते एम उमाय ॥ नि० ॥ ५ ॥ इम सुणि मुनिवर तिहां वहोरण गया, उभा रहिया रे बार ॥ सोनी घरमें रे आयो वेगसुं, वहोरावण भणी आहार ॥ नि० ॥६॥ सोवन जव था रे राय श्रेणिकना, कुर्कुट आयो रे चाल ॥ सो जव चूगिने रे गयो ते शीघ्रशुं, मुनिवर रहिया रे भाल ॥ नि० ॥ ॥ ७ ॥ बाहिर आयो रे आहार वेहेरायने, जव नहिं दीठा रे नयण ॥ कहो किण लीधा रे कुण आयो इहां, कहे रोषें भर्यो वयण ॥

नि० ॥ ८ ॥ मुनिवर सोचे रे देखिया ना कहुं, फूलज लागे रे मोय ॥ कुर्कुट चूगिया रे इम उच्चारतां, हिंसा पातक होय ॥ नि०॥ ॥ए॥ देख्यो अदेख्यो रे कांइ न बोलणो, निश्चय कियो अणगार ॥ मौनज पकडी रे आण अराधवा, धन्य सो करुणाभंमार ॥ नि० ॥ १० ॥ मौनज जाणी रे सुवर्णकार ते, आइ रीस अपार ॥ इण ना नेदमें थइ चोरी सही, पूछे वारंवार ॥नि० ॥ ११ ॥ मारे चपेटा रे कहे वलि चोर तुं, किम नहिं बोले रे साच ॥ मुनिवर क्षमा रे धारी तन मनें, बोले नहिं मुख वाच ॥ नि०॥१२॥ तिम तिम अधिको रे सो क्रोधें नयो, सोचे ए अति धिठ ॥ कूट्या विण रस ए देवे नहिं, मूरख चोल मजीठ ॥ नि० ॥ १३ ॥ मुनि कर पकडी रे ले गयो वाडामें, शिरपर आलो रे चर्म ॥ खेंचीने बांध्या रे तावडे राखिया, वेदना उपनी परम ॥ नि० ॥ १४ ॥ लोचन ठट कीरे बाहिर नीकल्यां,तड तड तूटी रे नाड ॥ मुनिवर थिर मन दृढ करी राखियुं, जेम सुदर्शन पहाड ॥ नि० ॥ १५ ॥ केवल पाई रे मुगत सिधाविया, अजर अमर अविकार ॥ देव वजावे रे डुंडुन्नि गगनमें, बोले जयजयकार ॥ नि० ॥ १६ ॥ तिणसमे मोली रे एक कठियारडे, नाखी धमकसूं ताम ॥ बिटज कीनी रे कुर्कुटन यवशों, जव पडिया तिण ठाम ॥नि०॥१७॥ सोनी देखी रे थर थर धूजीयो, कीधो महोटो अकाज ॥ में मूढनावें रे निरअपराधिया, घात करी रिखराज ॥नि०॥ १८॥ राजा श्रेणिक नेद ए जाणशे, करशे कुटुंब संहार ॥ एम जाणीने रे सहु श्रीवीरपें, लीधो संजम नार ॥ नि० ॥ १ए ॥ तप जप करणी रे कीधी सहु जणा, पाया सुर अवतार ॥ अनुक्रमें जासी रे कर्म खपाइने, सहु ते मोक्ष मकार ॥ नि० ॥ २० ॥ नव कोटी धन नव कन्या तजी, नवविध ब्रह्मचर्यधार ॥ नव पूरवधर नव संवर करी, पाया नवजलपार ॥ नि० ॥ २१ ॥ एहवा मुनिवर क्षमासागरु, तस गुण

गाया उमाय ॥ तिलोकरिख दाखे रे चोथी ढाल ए, सुणतां पातक जाय ॥ नि० ॥ २१ ॥ संवत उगणीशें रे गुणचालीशमें, आषाढ वदि पडवा वखाण ॥ दक्षिणदेशें रे पूना शहेरमें, नानाकी पेठमें जाण ॥ नि० ॥ २२ ॥ जोड जमावी रे विपरीत जो कथ्यो, मिछामिडुक्कड मोय ॥ नणशे गुणशे रे विधि शुद्धनावशुं, तस घर मंगल होय ॥ नि० ॥ २४ ॥ इति मेतारजमुनिनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ आणंदजी श्रावकनुं चोढालीयुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं परमातम प्रनु,शासनपति वर्धमान ॥ तास ज्येष्ठ श्रावक नला,आणंद आणंदधाम ॥१॥ नाम गाम शुन काम जिण, कीनां व्रत अंगीकार ॥ सप्तमे अंगें वर्णव्यां, ते सुणजो विस्तार ॥२॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ तिण कालें तिण अवसरें जी २ कांइ, वाणिय गाम मफार ॥ राय जितशत्रु जाणीयें जी २ कांइ, प्रजा नणी हितकार ॥ १ ॥ सुणो अधिकार सुहामणो जी२ कांइ, सूत्र तणे अनुसार,समकित व्रत होवे निर्मलोजी२कांइ, होवें ज्युं नवनिस्तार ॥सु०॥२॥तिणपुरआणंद नामथीजी२कांइ, गाथापति धनवान ॥ बारे कोडी सुनैयाजी२कांइ,कह्युं तस धन परिमाण॥सु०॥३॥ दशसहस्त्र गायां तणो जी२कांइ,एक गोकुल इम चार॥ धेनुवर्गे वखाणीयें जी २कांइ, शिवानंदा तस नार॥सु०॥४॥ पंच विषय सुख नोगवेजी२ कांइ,माने बहुजन वाय॥इम करतां बहुज दिन गयाजी२कांइ,कोइक अवसरमांय॥सु०॥५॥द्युतिपलाश नामें नलो जी२कांइ,चैत्य मनोहर जाण ॥ समोसस्या जगगुरु तिहांजी२कांइ, जगनायक जगनाण ॥सु० ॥ ६ ॥ नूप सुणी बंदण गयो जी २ कांइ, आणंद श्रावक ताम ॥ पाय विहारें संचस्या जी२ कांइ, नेव्या त्रिनुवन स्वाम ॥ सु० ॥

॥ ७ ॥ प्रज्ञुजी दी उपदेशना जी२कांइ, यो संसार असार ॥ तन ध न जोबन कारिमो जी२ कांइ, कारिमो सहु परिवार ॥ सु० ॥ ७ ॥ ए जीव आयो एकलो जी२ कांइ, परजव एकलो जाय ॥ धर्मरत्न संग्रह करो जी२ कांइ, जो शिवसुखतणी चहाय ॥सु०॥ए॥ इत्यादि क उपदेशना जी२ कांइ, प्रथम ढाल मऊार ॥ तिलोकरिख कहे आ गलें जी२ कांइ, सुणजो श्रेय अधिकार ॥ सु०॥ १० ॥इति॥

॥ दोहा ॥

॥ हवें आणंद सुणि देशना, बोले वयण विचार ॥ सत्य कहेणी प्र जु ताहरी, यह संसार असार ॥ १ ॥ धन्य जे राजराजेश्वरु, लेवे संजम जार ॥ मुऊ शक्ति ए बे नही, आदरशुं व्रत बार ॥ २ ॥ प्रजु कहे जिम सुख तिम करो, जेज न करो लगार ॥ हवे व्रतकरणी सांन जो, सूत्र तणे अणुसार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ या रस शेलडी, आदिजिणंद कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ प्रथम व्रतमें धारीयो जी कांइ, त्रस प्राणी जगमांय ॥ जाणी प्रीछी निर अपराधी, सो सब हणवा नांय हो ॥ जगतारक पासें, श्रावक आ णंदजी व्रत आदरे ॥ १ ॥ दूजो व्रत थूल मृषावादको, नूकन्या प शु काज ॥ कूठ न बोलुं उलुं न थापण, नहिं लुं जोले व्याज हो ॥ ज० ॥२॥ त्रीजो थूल अदत्त निवारुं, खात्र खणी गांठ छोड॥॥ पडकूं ची देइ न करुं चोरी, त्यागुं विरुद्ध जे खोड हो ॥ज०॥३॥ चोथो थूल मेहुण व्रतमें, सेवानंदा निज नार ॥ वर्जीने त्यागी सकल कांइ, ममता दीनी मार हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ व्रत पंचमो इच्छा परि माणे, चार क्रोड नूमांय ॥ चार कोडि घरवखरी राखी, एतोही व्याज कहाय हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ गोकुल चार धेनुका राख्या, खें तू वहू जाण ॥ पांचसें हलकी संख्या धरणी, गाडा गाडी सहस्र प्रमाण हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ चार मोटी चार छोटी जहाजां, राख्यां

पार्श्वसंतानीया गोशालकमें, जिम ते मिलीया जाय॥ तिम अन्य तीर्थी ग्रहिया साधु, तिणने हुं वंडु नाय हो ॥ज०॥२१॥ बतलाउं नहिं पहेलां उपति, धर्मबुध्दि सुविचार ॥ चार आहार नहिं देउं तिणने, ठ छंडी आगार हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ समण निर्ग्रंथने देउं सुजतो, चउदे प्रकारनुं दान ॥ इम व्रतधारी प्रजुने वंदी, आव्या ते निज थान हो॥ ज० ॥ २३ ॥ निजपत्नीसुं कहे प्रजु पासें, में धार्यां व्रत बार ॥ तुमें पण जाइ करो प्रजु वंदण, सफल करो अवतार हो ॥ ज० ॥२४॥ कंत वचन सुणी रथमें बेठी, वांद्या श्री जगदीश ॥ तिण पण श्रावक व्रतज धार्युं, पूरी मनह जगीश हो ॥ ज० ॥ २५ ॥ बे बे पोसा करे मासमें, नव तत्त्वका जाण ॥ तिलोकरिख कहे ढाल दूसरी, श्रावक करणी वखाण हो ॥ ज० ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ बारे व्रत पाले जलां, चउदा नियम विचार ॥ तीन मनोरथ चिंतवे, धारे शरणां चार ॥ १ ॥ निश्चल समकित दृढधर्मी, एक विश गुणका धार ॥ चउदे वर्ष एम वीतियां, करता धर्म उदार ॥ २ ॥ पंदरमुं वर्ष वर्ततां, एक दिन आधी रात ॥ जागरणा करे धर्मकी, ते सुणजो विख्यात ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज जलो दिन उग्योजी, सीमंधर स्वामीने वंदसां ॥ ए देशी ॥ आणंदजी विचारी हो सुखकारी किरिया धर्मनी, कांइ जवजल तारण हार ॥ वाणिय ग्रामपुरमांइ हो प्रजुताइ गावी माहरी, कांइ बहु नरने आधार ॥ मुज पर ममत सवाइ हो समरथाइ नांइ माहरी, कांइ डुःकर संजम जार ॥ आ० ॥ १ ॥ जब थावे दिन उगाइ हो निपजाइ चारी आहारने, कांइ बुलाइ निज परिवार ॥ सयण सजन जीमाइ हो समलाइ कामज घर तणां, कांइ धारणी पडिमा ग्यार ॥ आ०॥ २ ॥ थइ दिनकर उगाई हो कराई सहु वि

ध चिंतवी, कांइ ज्येष्ठपुत्र घरजार ॥ सोंपी सीधाइ आया हो, कां इ कोल्लागनाम संनिवेशें, कांइ वाणिय पुरने बार ॥ आ० ॥ ३ ॥ कोल्लाग सन्निवेशने मांइ हो जिहां मित्र घणा कुलघर घणां, रहे पोषधशाला मझार ॥ तिणशालाने प्रतिलेखी हो, कांइ देखी परठेव ण भूमिका, वली कीनो दर्भसंथार ॥ आ० ॥ ४ ॥ केवली भां ख्यो धर्मज हो ते पाले परम आणंदशुं, कांइ प्रथम पडिमा म झार ॥ समकित निर्मल पाले हो कांइ वंदे नहिं कोइ अन्य भणी, कांइ छे छंडी परिहार ॥ आ० ॥ ५ ॥ दूजी पडिमामांइ हो अ धिकाइ बारां व्रतमें, कांइ पाले निरअतिचार ॥ त्रिजीमें शुद्ध सामा यिक हो चित्त लाई पाले शुद्धपणे, कांइ बत्तिस दोष निवार ॥ आ० ॥ ६ ॥ चोथी पडिमामांइ हो चउदश ने आठम पूर्णिमा, कांइ अमावस्या तिथि धार ॥ मास मास खट पोसा हो धारे ते शुद्ध निश्चलपणे, कांइ वर्जित दोष अढार ॥ आ० ॥ ७ ॥ पंचमी पडिमा पाले हो ते टाले स्नान शोभा वली, कांइ दिवसें अब्रह्म निवार ॥ जे भाणे भोजन आवे हो नहिं खावे आप मंगायने, करे काउस्सग्ग पोषा मझार ॥ आ० ॥ ८ ॥ छठी पडिमा लेवे हो नहिं सेवे ते कुशीलने, कांइ नारीकथा परिहार ॥ सातमी प्रति मा जाणो हो प्रासुक ते खाणो मोकलो, कांइ नहिं करे सचित्त आहार ॥ आ० ॥ ९ ॥ आठमीमें आरंभ छंडे हो ते मंडे प्रीति छ कायसुं, कांइ तेंविशके भांगे विचार ॥ नवमीमें इम भाखे हो नहिं राखे दासी दासने, कांइ पोतें काम विचार ॥ आ० ॥ १० ॥ द शमी दुःकरकारी हो निज अरथें भोजन जे कर्यो, कांइ ते वरजे निरधार ॥ शिरपर मुंड करावे हो पर्यंपे भाषा दो भली, कांइ सत्य अने व्यवहार ॥ आ० ॥ ११ ॥ अग्यारमी पडिमा लेवे हो नहिं सेवे आश्रवद्वारने, कांइ वरते जिम अणगार ॥ मस्तक लोच क रावे हो फरमावे हुं साधू नहिं, कांइ भेख मुनिनो धार ॥ आ० ॥

१२ ॥ पहेले मास एकांतर हो कांइ डुजी पडिमा दो मासनी, कांइ छठ छठ तपस्या धार ॥ त्रीजी तिन मासमें तेलां हो चोथी ते चारज मासनी, कांइ चोले चोले आहार ॥ आ०॥१३॥ एक एक मास वधावे हो बढावे तप इम एमही, कांइ इम पडिमा अग्यार ॥ करतां सुक्के लुक्के हो लूखो अंग पडियो तदा, कांइ तन थयो पिंजराकार ॥ आ० ॥ १४ ॥ श्रावक सो विचारे हो नहिं सारे माहरी देहडी, कांइ शक्ति नहिं लगार ॥ आलोवि निंदी आतम हो निःशल्य थया शूरापणे, कांइ प्रणमी जगकिरतार ॥आ०॥ १५ ॥ पाप अगारा त्यागे हो कांइ वली जागे मोहनी निंदसें, कांइ थागे संवरद्वार ॥ धर्मध्यान चित्त ध्यावे हो कांइ त्यागे चारी आहारनें, कांइ जावजीव सुविचार ॥ आ० ॥ १६ ॥ इम निश्चल मन थापी हो तिण कापी ममता जालने, कांइ धार्यो अणसण सार ॥ तिलोकरिख कहे साची हो नहिं काची जाची नावमें, कांइ सफल कियो अवतार ॥ आ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर आणंदजी, विशुद्ध लेश्या शुभध्यान ॥ ज्ञानावरणी क्षयोपशमे, उपन्युं अवधिज्ञान ॥ १ ॥ पूरव लवण समुद्रमें, पंचसें योजन जाण ॥ एतोही दक्षिण पश्चिमें, उत्तर हिमवंत प्रमाण ॥ २ ॥ जाणे देखे ऊपरें, परथम सर्ग विचार ॥ नीचें जाणे रत्नप्रभा, स्थित चोरासी हजार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कीधां रे कर्म न छूटीयें ॥ ए देशी ॥ न्यायमारग जिनराजनो, भवदुःख भंजणहार लाल रे ॥ रिपुगंजण दृग अंजणो, शिव पदनो दातार लाल रें ॥ न्या० ॥१॥ तिणकालें तिण अवसरें, समोसर्या जगदीश लाल रे ॥ गौतम छठतप पारणो, प्रभुने नमायो शीश लाल रे ॥ न्या० ॥ २ ॥ कहे मुज छठतप पारणो, जो

तुम आज्ञा थाय लाल रे ॥ वाणियगाम नगर विषे, गोचरी जा ऊं चलाय लाल रे ॥ न्या० ॥ ३ ॥ अहासुहं प्रनुजी कह्यो, गौत मजी तिण वार लाल रे॥आज्ञा लेइने संचस्या,जोवतां ईर्याविहार लाल रे ॥ न्या० ॥ ४ ॥ गोचरी करतां सांजल्यो, आणंद अणसण लीध लाल रे ॥ चिंतवे हुं देखुं जई, इम निश्चें मन कीध लाल रे ॥ न्या० ॥ ५ ॥ पोषधशाला तिहां आविया, देखी आणंद सोय लाल रे ॥ रोम रोम हर्षित थया, बोले अवसर जोय लाल रे ॥ न्या० ॥ ६ ॥ शक्ति नहिं प्रनु माहरी, आवणरी तुम पास लाल रे ॥ उरहा पधारो नाथजी, मानो मुज अरदास लाल रे ॥ न्या० ॥ ७ ॥ चरणपें शीश नमाइने, प्रणम्या तीनज वार लाल रे ॥ पूछे उपजे के नहिं, अवधि गृहवास मजार लाल रे ॥ न्या० ॥८॥ गौतम सुणि स्वामी नणी, तब सो कहे सुविचार लाल रे ॥ मुज पण अवधि उपनो, कह्यो उदिशि विस्तार लाल रे ॥ न्या० ॥ ए ॥ इम निसुणी गोयम वदे, उहि उपजे गृहवास लाल रे ॥ पण एतो दीर्घ न उपजे, ए निश्चें वात विमास लाल रे ॥ न्या० ॥ १० ॥ ए स्थानक तुमें आलवो, ल्यो तप प्रायश्चित्त अंगीकार लाल रे ॥ तब आणंद वलता कहे, प्रनु सांनलो मुज समाचार लाल रे ॥ न्या० ॥ ११ ॥ सत्य उतां यथानाव ते, कहेतां नहिं दोष लगार लाल रे ॥ ए स्थानक तुमें आलवो, सुणि शंका पडी तिण वार लाल रे ॥ न्या० ॥ १२ ॥ आई पूछे प्रनुथुं तदा, आणंद कह्यो जे विचार लाल रे ॥ नाथ कहे ते साची कहे, थें लो प्रायश्चित्त तप सार लाल रें ॥ न्या० ॥ १३ ॥ जाय खमावो तिण प्रत्यें, इम सांनली गौतम वाय लाल रें ॥ प्रायश्चित्त लीनो प्रनु कने, खमावाने गया उमाय लाल रें ॥ न्या० ॥१४॥ वीश वर्ष श्रावकपणो, धारी पडिमा अग्यार लाल रे ॥ एक मास अणसण कह्यो, सौधर्मक ल्प मजार लाल रें ॥ न्या० ॥ १५ ॥ सौधर्मावतंसक विमानथी,

कूंण ईशाणने मांय लाल रे ॥ अरुणविमानमें ऊपना, चार पल्यो पम आय लाल रे ॥ न्या० ॥ १६ ॥ सुख नोगवी त्यांथकी चवी, महाविदेहक्षेत्र मफार लाल रे ॥ संजम ले करणी करी, कर्म करी सहु गार लाल रे ॥ न्या० ॥ १७ ॥ केवलज्ञान लेई करी, जावसी मुगतिनी मांय लाल रे ॥ अजर अमर सुख शाश्वतां, लेसी सुख सवाय लाल रे ॥ न्या० ॥ १८ ॥ संवत उगणीशें गुण चालीसे, पौष कृष्ण बुधवार लाल रे ॥ त्रीज तिथि दिन रूयडो, दक्षिणदेश विचार लाल रे ॥ न्या० ॥ १ए ॥ सहेर सतारो प्रसिद्ध छे, पेठ नवानी वखाण लाल रे ॥ जोड्यो चोढालियो चूंपसूं, सातमा अंग प्रमाण लाल रे ॥ न्या० ॥ २० ॥ अधिको उंगे जोड्यो हुवे, ते मिछामि डुक्कड मोय लाल रे ॥ तिलोकरिख कहे सुणि धारसी, तस शिव संपत होय लाल रे ॥ न्या० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ कामदेव श्रावकनुं चोढालीयुं प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहंत सिद्ध आचारजी, उवफाया मुनिराज ॥ प्रणमुं सतगुरु देवजी, पूरो वंछितकाज ॥ १ ॥ सातमे अंगें जाणीयें, दूजा अध्ययन मफार ॥ कामदेव श्रावक तणो, दाख्यो छे अधिकार ॥ २ ॥ तस अनुसारें वर्णवुं, किंचित तास समास ॥ सुणो श्रोता शुद्धनावशुं, समकित रत्न उजास ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ घोडा देश कमोदना ॥ ए देशी ॥ तिण कालें तिण अवसरें, चंपानगरी मफारो जी ॥ जितशत्रु तिहां राजवी, प्रजा नणी सुखकारो जी ॥ १ ॥ धन्य श्रावक जे शुनमति, कामदेव गाथापति जाणो जी॥ छकोडी डव्य धरणी विषे, छकोडी व्याज वखाणो जी ॥ध०॥२॥ छकोडी घर वखरी अछे,छ गोकुल वर्ग छे तासो जी॥

भद्रा घरणी जाणीयें, भोगवे भोग उल्लासो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ अ वररिद्धि आणंद परें, दाखी छे सूत्रके मांइ जी ॥ तिणकाले तिण अवसरें, जगगुरु जगसुखदाय जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ ग्राम नगर पुर विचरता, चंपानगरी मझारो जी ॥ वीरजिणंद समोसखा, करवा परउपगारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ राजादिक गया वांदवा, कामदेव पायविहारो जी ॥ वंदी बेठा प्रज्जु आगलें, मनमें हर्ष अपारो जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ प्रज्जु दीनी उपदेशना, धर्म सदा सुखकारो जी ॥ जो आराधे जावशुं, उतरे जवजलपारो जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ कामदेव सुणि हरखीया, कहे सत्य वेण छे थारो जी॥ संयमनी शक्ति नहिं, धरावो व्रत बारो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ आणंदनी पेरें जाणीयें, धन उपरंत पच्चरकाणो जी ॥ त्याग कखा शुद्ध जावशुं, बारा व्रत परिमाणो जी ॥ध०॥ए॥ सेवानंदा तिम जडायें,धाखां व्रत रसालो जी ॥ तिलोकरिख कहे सुणो आगलें, ए थइ परथम ढालो जी॥ध०॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ कामदेव श्रावक जला, टाले व्रत अतिचार ॥ चउद वर्ष इम वीतियां, पन्नरमा वर्ष मझार ॥ १ ॥ जागरणा आणंद जिम, ज्येष्ठ पुत्र घरजार ॥ देईने धारी तदा, पडिमा शुद्ध इग्यार ॥ २ ॥ एक दिन पोषधशालमें, पोषध लीनो जाव ॥ धर्मध्यान ध्याई रह्या, तिण अवसर प्रस्ताव ॥ ३ ॥ शक्रेंद्र सौधर्मपति, बेठा सजा मझार ॥ अवधिज्ञान करी जोइयो, कामदेव गुणधार ॥ ४ ॥ मुख जयणा करी बोलीयो, जरतक्षेत्रनी मांय ॥ धर्मिपुरुष निश्चलमति, कामदेव अधिकाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ धिक तेरा जीवडा न करता धरमकुं ॥ ए देशी ॥ निश्चल श्रद्धा समकित व्रतमांइ, इण अवसर कामदेव अधिकाइ ॥ नि० ॥ १ ॥ देव दानव असुर सुर जाइ, तिणने कोइ न स

के चलाइ ॥ नि० ॥ २ ॥ समदृष्टि सुर दीयो धनकारो, धन तिण नरनो सफल जमारो ॥ नि० ॥ ३ ॥ माहामिथ्यादृष्टि सुर तिणवारें, सुण कर सो मनमांहे विचारें ॥ नि० ॥ ४ ॥ अन्नको कीडो जीवे अन्न खाइ, तिणने एक छिनमें देउं चलाइ ॥ नि० ॥ ॥ ५ ॥ एसो विचार कियो मनमांइ, शीघ्रपणे तिहां आयो चला इ ॥ नि० ॥६॥ महंत पिशाचको रूप बणायो, महा विरूप नयंकरकायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ टोपला सरखो शिश बनायो, शूकर सरिखा केश जमायो ॥ नि० ॥ ८ ॥ कढायला सरखो कीयो कपालो, तालीकी पूंछ ज्युं नमु विकरालो ॥ नि०॥९ ॥ बाहिर छटक्या नेत्रका मोला,सूपडा सरिखा कान कुमोला ॥ नि०॥ १० ॥ गामर जिम चपटी तस नासा, फालीया सरखा दंतस त्रासा ॥ नि० ॥ ॥ ११ ॥ लटके उंट सा होठ कुरंगी, जिह्वा कतरणी जेम विनंगी ॥ नि० ॥ १२ ॥ खंध कस्या मृदंग आकारो, पुरपोल किमाड ज्यों हियो नयंकारो ॥ नि०॥ १३ ॥ नुजा बीजत्स शिला सी हथेली, खल बतासी अंगुलीकुं मेली ॥ नि० ॥ १४ ॥ सीपपुडसा तस नख विस्तारो, नाइ पेटी समथण नयनारो ॥ नि० ॥ १५ ॥ ढीलो छे संधी बंध सरीरो, देखतां कायर होत अधीरो ॥ नि० ॥ १६ ॥ कार्कीडा उंदराकी तनमाला, कुंमल नोलका अति विकराला ॥ नि० ॥१७॥ उत्तरासणनुजंगको अंग धरंतो, अट्टाट्टहास गर्जारव करंतो ॥ नि० ॥ १८ ॥ अति तीक्ष्ण खांमो कर सायो, पोषधशाला तिहां चल आयो ॥ नि० ॥ १९ ॥ बोले वचन जिम कोपियो कालो, तिलोकरिख कहे दूसरी ढालो ॥ नि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ऽहंनो कामदेव श्राद्ध तुं,मृत्युनो वंछणहार ॥ खोटा लक्षण ताहरां, हिरिसिरिवर्जणहार ॥१॥ धर्म पुण्य स्वर्ग मोक्षनो,तुं अछे वंछणहार॥ कल्पे नहिं तुऊ खंमवां, शीलादिक व्रत वार ॥ २ ॥ पण हुं आज

भंजावशुं, पोषधादिक व्रत जेह ॥ नहिं तो येही खड्गशुं, खंम्ड खंम्ड करुं देह ॥ ३ ॥ आरत रौद्र ध्यानवश, मरसी आज जरूर ॥ एक दोय तिन वार ते, बोले वेण करूर ॥४॥ वयण सुणी इम तेहनां, म रिया नही लगार ॥ धर्म ध्यान ध्यावे हिये, देव तदा तिण वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सूरिजन सांभलजो सब कोय ॥ ए देशी ॥ क्रोधातुर मिस मिस थको कांइ, त्रिशूल निलाडें चडाय ॥ तीक्ष्ण पाठणा धार सो कांइ, खड्गशुं खंम्डे काय ॥ भविकजन धन धन साहस धीर ॥ १ ॥ उजलीवेदना ऊपनी कांइ, कहेतां न आवे पार ॥ के तो जाणे आतमा कांइ, के तो जाणे किरतार ॥ भ० ॥ २ ॥ त्रास नहिं एक रोममें कांइ, राख्या सम परिणाम ॥ कामदेव सोचे तदा कांइ, मिथ्यात्वी सुरकाम ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए खंम्डे मुझ कायनें कांइ, मुंझ समकित व्रतबार ॥ खंम्डवा समरथ छे नहिं कांइ, जो आवे देव हजार ॥ भ० ॥ ४ ॥ थाक्यो देव तिण अवसरें कांइ, जोर न चाल्युं लगार ॥ पोषधशालाथी नीकली कांइ, पिशाचको रूप निवार ॥ भ० ॥ ५ ॥ सप्त अंग लागे धरणीशुं कांइ, धाख्यो तिणें गजरूप ॥ अंजनगिरिनी ऊपमा कांइ, दीसे महा विरूप ॥ भ० ॥ ६ ॥ पोषधशालामें आयीने कांइ, तीन वार वली जेह ॥ बोल्यो वचन पहेली तणा कांइ, रंच मख्या नहिं तेह ॥ भ० ॥ ७ ॥ क्रोधातुर ग्रह्या शुंढमें कांइ, पोषधशालानी बहार ॥ उछाल्या आकाशमें कांइ, तीक्ष्ण दंत मझार ॥ भ० ॥ ८ ॥ झालीने निज पगतलें कांइ, लोलव्या तीनज वार ॥ महावेदना तिणें अनुभवी कांइ, च लिया नहीअ लगार ॥ भ० ॥९॥ हस्तिरूप छोडी करी कांइ, सर्प बण्यो भयंकार ॥ लाल नेत्र मशीपुंज सो कांइ, करतो फूंफूंकार ॥ भ० ॥ १० ॥ पूर्वपरें वचन कह्यां कांइ, अणबोल्या रह्या सोय ॥ निश्चलपणुं जाणी करी कांइ, क्रोधातुर अति होय ॥ भ० ॥ ११ ॥

तीन वींटा दिया कंठमें कांइ,विष सहित हिया मांय ॥ मंक कियो अ तिजोरसुं कांइ, तो पण चलिया नांय ॥न०॥१२॥ थाको ते वेदनी देवतां कांइ, जाण्या दृढ परिणाम ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें कांइ, सुर कीधा वेदनी काम ॥ न० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ सर्परूप ठोडी करी, निजरूप दिव्य तें धार ॥ कानें कुंमल क गमगे, सजि शोला शिणगार ॥ १ ॥ दश दिश प्रज्ञा करतो थको, कटिघूघर घमकार ॥ हाथ जोडिने वीनवे, लुल लुल वारं वार ॥ २ ॥ धन्यपुण्यकृत लक्षणा, सफल तुक अवतार ॥ इंद्रें करी प्रशंसना, सौधर्मसन्नामकार ॥ ३ ॥ में मिथ्यात्वतणे वशें, सत्य नमानी वाय ॥ धर्म मिगावण कारणें, दीयो परिसह आय ॥४॥ खमजो मुक अपराध थें, नहिं करुं दूजी वार ॥ इम लघुता करी देव ते, संचस्यो सर्गमकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ मोने वालो लागे विंठीयो ॥ ए देशी ॥ हांरे लाला तिणका लें तिण अवसरें, समोसस्या वीर जिनंद रे लाला ॥ कामदेव सुणि धारीयो,पारणो करुं प्रज्ञु पेली वंद रे लाला ॥१॥ कामदेव श्रावक सिरें,जिणें पहेस्या सहु शिणगार रे लाला ॥ प्रज्ञु प्रणम्या शुद्ध नाव शुं, हियडे अति हर्ष अपार रे लाला ॥ का०॥ २ ॥ प्रज्ञु दीनी उप देशना, द्वादश परिषदाने मकार रे लाला ॥ कहे कामदेवथकी त दा, आजे आधी रात मकार रे लाला ॥का०॥३॥ तीन उपसर्ग दे वें दीया, ते खमीया समपरिणाम रे लाला ॥ एह अर्थ समरथ ठे के नहिं, सो दाखे हंता ठे स्वाम रे लाला ॥ का० ॥ ४ ॥ गौतमा दिक साधु साधवी, आमंत्रिने कहे जिनराय रे लाला ॥ गृहस्था श्रमें परिसह सह्या, तुमें तो थया मुनिराय रे लाला ॥ का० ॥ ५॥ द्वादश अंग नणीया तुमें, परिसह सहेवा जोग रे लाला ॥ तहत्ति व

चन करियां सहु, श्रमणादिक राखी उपयोग रे लाला ॥का०॥६॥ प्रश्न उत्तर भगवंतने, पूछी सहु गया निजगेह रे लाला ॥ आणंद जिम पडिमा वही, अंते ठायो अणसण तेह रे लाला ॥का०॥७॥ एकमास संलेषणा, प्रथम सरग मझार रे लाला ॥ अरुणाभ विमानें उपना, थिति दाखी पल्योपम चार रे लाला ॥ का० ॥ ८॥ चविने विदेहमें जावसी, तिहां लेसी नर अवतार रे लाला॥ संजम ले करणी करी, ते जावसी मुक्ति मझार रे लाला ॥का०॥ए ॥ संवत उगणीशें गुणचालीशमें, पोषवदि चोथ तिथि जाण रे लाला॥ देश दक्षिण कोकन विषे, शहेर सतारो वखाण रे लाला ॥का०॥१०॥ तिलोकरिख कहे सूत्रन्यायथुं, चोढालीयुं रच्युं सुखकार रे लाला॥ भणसी गुणसी शुद्ध सरधसी, तस होवसी खेवा पार रे लाला ॥ का० ॥ ११ ॥ इति कामदेव श्रावकनुं चोढालीयुं समाप्त ॥

॥ अथ एषणासमितिनुं चोढालीयुं प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ धरम मंगल उत्कृष्ट छे, संयम तपस्या मांय ॥ प्रणमे सुर नर जेहने, सदा धर्मे चित्त चढाय ॥१॥ जिम मधुकर कुसुम भणी, दुःख नहिं देवे लगार ॥ रस ले तृप्त करे आत्मा, तिम जाणो अणगार ॥२॥ तप संजम प्रतिपालवा, भाडो देत शरीर ॥ दोष बइयालीस टालिने, आहार लहे गुणधीर ॥ ३ ॥ भिन भिन वर्णन तासको, कहुं सूत्र अणुसार ॥ ते सुणजो भवियण तुमें, आलस उंघ निवार ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिणे पाइ ॥ ए देशी ॥ त्रीजी समिति एषणा नामें, भांखी श्री जिनराया ॥ पाले मुनिवर शुद्ध रीतिसें, शिवसुख गरजी म्हाया ॥ भोला श्रावक दोष लगावे, मुनिवर जाणे तो नट जावे ॥ १ ॥ ए टेक ॥ समुचय साधू कारण कीनो, असणादिक

चउ आहारो ॥ आधाकर्मी आहार सो कहीयें, महोटो दोष विचारो ॥ नोला० ॥ २ ॥ एक साधुको नाम थापीनें, करे सो उद्देशिक जाणो ॥ सुजतामांही सीत मिले सो, पूईकरम वखाणो ॥ नो० ॥३॥ गृहस्थी साधू दोइ अरथें, जेलो करि निपजावे ॥ मिश्रदोष कह्यो जगदीशें, कर्मबंध दरसावे ॥ नोला० ॥ ४ ॥ अवराने अंतराय दइने, थापे मुनिवर काजें ॥ पाहुणा आघा पाछाने ते,सरस आहारी रिख साजे ॥ नोला० ॥५॥ अंधाराथी करे उजवालो, वली वेंचातो लावे ॥ उधारो मांगीने देवे, बदलोकरपलटावे ॥ नो० ॥६॥ रिखजी काजें घरथी आणे, छांदो उघाडी देवे ॥ अबकेग में चडीने आपे, चडे गाम तले लेवे ॥ नोला० ॥७॥ निबला पासथी सबलो खोसे,अछिज्ज दोस ते कहीयें ॥ सबकी पातीमें एकज देवे, अणिसिठ दोष ते लहीयें ॥नोला०॥८॥ आंधणमांही अधिको ठेरे, वहिरावणने कामें ॥ उदगमन ए सोला कहीयें, गृहस्थी को छंदो हे जामें ॥नोला०॥९॥ असुजतो आहार वेरावे जो कोइ, ठंछो आउखो पावे ॥ सूत्र जगवती तथा ठाणांगें, श्रीजिनवर दरसावे॥नो०॥१०॥ देवावालो ऊहेरको दाता,तिणसुं अधिको जाणो॥ तिलोकरिख कहे सूजतो देवो,पावो पद निर्वाणो ॥ नोला०॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला दोष दातारना, रिख टाली ले आहार ॥
भिन्न भिन्नवर्णन करुं, सुणजो सव नर नार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ वाल रमावे चित्र वतावे, आहार कारण जिम थाय जी ॥ समाचार कहे सगा सयणना, दूतिकर्म सो कहाय जी ॥१॥ सोला दोप गुणीजन टाले, पाले एपणा शुद्ध जी ॥ वुद्धिनिर्मल होय संजम साधो, पावो वास विशुद्ध जी॥सो०॥२॥ जात जणावे गोत वतावे, आहार लेवणने काज

जी॥विण मिलीयां मुखडो कुंमलावें, जिम राजानो गयो राजजी॥सो० ॥३॥ दीन दयामणो होय हियामें, बोले भिखारी जेम जी ॥ विणिम गदोष कह्यो जगदीशें, आहार मिल्या चितक्षेम जी ॥ सो०॥४॥ उष ध भेषज केरें पडिगणो, आहार खुशामत काज जी॥ तिगिछा दोष कह्यो जगदीशें, निपजे महोटो अकाज जी ॥ सो० ॥ ५ ॥ क्रोधें भयो कहे रे रे कृपण, जो नहिं देवे हम आहार जी ॥ होशे हा णी तन धन जननी, माया नहिं आसी तुझ लार जी ॥सो०॥६॥ तुम दातार उदार भलेरा, उर नहिं तुम तोल जी ॥ थें नहिं देशो तो कुण देशे, मान चढावे इम बोल जी ॥ सो० ॥ ७ ॥ दूध द हीदिक वंछना मनमें, मुखसुं मांगे छास जी ॥ दाखे सीरादिक पातरामांही, भाषा बदल कहे वाच जी ॥ सो० ॥ ८ ॥ आहार स रस अधिको ते वहोरे, लोभ जणावे दातार जी ॥ दान दियासुं अधि को मिलशे, लोभ दोष ए जहार जी ॥सो०॥९॥ वहोरतां पहेली अथवा पाछे, बडाइ दोष दातार जी ॥ अथवा दोष लगावे कोइक, इणविध वहोरे आहार जी ॥ सो० ॥ १० ॥ विद्या शिखावे आ हार खुशामत, मंत्र जंत्र करि लेह जी ॥ चूर्ण वशीकरण जडी बु ट्टी, आहारकाजें करे जेह जी ॥ सो० ॥ ११ ॥ ज्योतिष शुकन शास्त्र प्रयुंजी, दाखे सुख दुःख जोग जी ॥ सुपनादिक फल आ हारलोभथी, मोहे इणविध लोक जी ॥ सो० ॥ १२ ॥ विहवा कारण गर्भ गलावें, मूलकरम एह दोष जी ॥ आहार लोलुपी करम करे ईम, पाप तणो करे पोष जी ॥ सो० ॥१३॥ ए सोला दोषसो लागे साधुथी, संजमनो होय नाश जी ॥ तिलोकरिख क हे दोष निवास्या, लहीयें अविचल वास जी ॥ सो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला उत्पादन तणा, दोष कह्या जगदीश ॥ जे शिवसाधन रुवियाʼ, टाले विशवा वीश ॥१॥ गृहस्थिघरे गोचरी गया. दश वली

टाले संत ॥ ते सुणजो आलस तजी, नांख्यो श्रीनगवंत ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नावपूजा नित कीजीयें ॥ ए देशी ॥ शोला दोष उदगम नना, एताह्नी उतपातो जी ॥ उंर कोइ दूषण तणी, शंका पडें कोइ वातो जी ॥ १ ॥ तो मुनिवर वेहरे नहीं ॥ ए टेक ॥ जे अवसरका जाणो जी ॥ आप तथा दातारनें, शंका अनिप्राय पिबाणो जी॥ तो० ॥ २ ॥ हाथरेखा आली होवें, अंगुलादिक ग मो जी ॥ चोटी पटा माढी मूबमें, आलो रहे कोइ जामो जी ॥ तो० ॥ ३ ॥ सचित्त इव्य नीचें धस्यो, उपर इव्य अचेतो जी ॥ अचेत उपर सचित्त धस्यो, गृहस्थी सो इव्य देतो जी ॥तो०॥४॥ लूण खडी जल सचित्तशुं, गाम जो खरडियो होवे जी ॥ तिणमें सो लावे आहारने, एहवो नाजन जोवे जी ॥तो०॥ ५ ॥ दातार अंधो ने पांगुलो, अथवा कंपण वाधी जी ॥ चालणकी शक्ति न ही, अथवा कंपण उपाधी जी ॥ तो० ॥ ६ ॥ पूरो शस्त्र नहिं प रगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहो जी ॥ होलावंबी पुंखडा आद दे, गृहस्थि वेहरावे तेहो जी ॥ तो० ॥ ७ ॥ तुरतको लीप्यो आं गणो, टपका पाडतो लावे जी ॥ एषणाना दश दोष ए, श्रीजिन वर फरमावे जी ॥ तो० ॥८॥ ए दश दूषण न जेहमें, वेहरावे दातारो जी ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें,दोषण तेणो विचारो जी ॥९॥

॥ दोहा ॥

॥ दोष वश्यालीस टालीने, आहार लावे अणगार ॥ पंच मां मला उपरें,दोष करे परिहार ॥१॥ ते सुणजो सुगुणा रखी,रसना वश करि राख ॥ तो सुख लहिशो शाश्वतां,सर्वसिद्धांतकी साख ॥२॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ एह रिख मारग रे नां ६, स्वाद करण करे आहार उमाही ॥ राजी गमतो रे आया,

अणगम तो करे सोच सवाया ॥ ए० ॥ १ ॥ ताकी ताकी रे जावे, ताजा ताजा माजज लावे ॥ नीरसने वहोरे रे नांइ,बण रह्या कुंदोलाल सदाइ ॥ ए० ॥ २ ॥ जीमण देखीरे धावे, रसलंपटने लाज न आवे ॥ मिलियाशुं शोना रे करतो, अणमिलीया पर निंदा उच्चरतो ॥ ए० ॥ ३ ॥ नांम ज्युं कहीयें रे तेहने, परनव खटको रंच न जेहने ॥ दूधज आयो रे फीको, सक्कर आया लागसी नीको ॥ ए० ॥ ४ ॥ दाल अलूणी रे आइ, लूण विनातो स्वाद न कांइ ॥ चटणी पापड रे लावे, नानाविध संजोग मिलावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ गमतो आहारज रे आवे, दाबी चांपीने अधिको खावे ॥ जिनजी की आज्ञा रे नंगे, वली आशाता अति उपजत अंगें ॥ ए० ॥ ६ ॥ नोजन आयो रें नातो, देखी मनमें अति हरखातो ॥ सबडका लेइने रे खावे, चटपट चटपट मुंढो वजावे ॥ ए० ॥ ७ ॥ गरम मशालो रें नारी, वघारी धुंगारी रूडी तरकारी ॥ चतुरणी नारीरे दीसे, उण घरें जावणो विशवाविशें ॥ ए० ॥ ८ ॥ खाता प्रशंसा रे करतो,दिन उग्याथी सांज लगे चरतो ॥ चारित्रने दाहज रे लागे, अंगारा सम उपमा सागे ॥ ए० ॥ए॥ आहारज नीरसो रे देखी, चित्तमें आरत आणे विशेषी ॥ मिरचां लूणज रे नांइ, वडनारी ए नही उमकाइ ॥ ए० ॥ १० ॥ बोले मुखशुं रे खोटो, पाडे संजम धनको टोटो ॥ कारणविना अहारज रे खावे, पंचमो दोष ए स्वामि सुणावे ॥ ए० ॥ ११ ॥ मंमलदूषण रे पांची, तिलोकरिख कहे सुणजो साची ॥ उगणीसें उत्तिस रे साले, ग्राम सोनइ दक्षिण सुविशालें ॥ ए० ॥ १२ ॥ आहारनां दूषण रे जाणो, चोथी ढाल रसाल वखाणो ॥ जे मुनि दूषण रे सेवे, ते तो नवजल मांहीज रेवे ॥ ए० ॥ १३ ॥ उन्नुं दूषण रे सारा, टाले सो धनधन अणगारा ॥ इण नव शोना रे नारी, आगें अजर अमर सुख त्यारी ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ विनयआराधनानुं चोढालीयुं प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिनराज प्ररूपीयो, विनयमूल जिनधर्म ॥ इम जाणी भवि आदरो, तूटें आठू कर्म ॥ १ ॥ विनय विना शोभा नहिं, नाक विना जिम नूर ॥ जीवविना जिम देंहडी, शस्त्रविना जिम शूर ॥ २ ॥ नमसी सो सुख आपने, इणमें शंक न कोय ॥ घालि तराजु तोलीयें, नमे सो भारी होय ॥ ३ ॥ आंब आंबली जंबुदिक, उत्तम वृक्ष नमंत ॥ तिम सुगुणी जन जाणीयें, मध्यम तरु अकडंत ॥४॥ मात पिताथी अधिकता, गुरुउपगार अपार ॥ टालो अशातना सर्वथें, जो तरणो संसार ॥ ५ ॥ धर्मगुरु मत वीसरो, पल पल गुण करो याद ॥ सुगुणा जन सुणजो तमें,गुरु गुण अगम अनाद ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥पास जिनेश्वर रे स्वामी॥ ए देशी ॥ गुरुगुण समरो रे भावें, मोक्षमार्ग गुरु विना नहिं पावे ॥ गुरु गुण सागर रे दरिया, चरण करण रत्नागर भरिया ॥ गु० ॥ १ ॥ मोति जेसा मेला रे कहीयें, सक्कर सरिखा खारा मनइयें॥सुमेरु ज्युं समजो रे न्हाना, अणगमता निज प्राण समाना ॥ गु० ॥ २ ॥ अधीरज कुंजर रे जेहवा, केसरीसिंह जेम कायर कहेवा ॥ गुणधर जेहवा रे विराधि, भारंडपंखी जिम परमादी ॥ गु० ॥ ३ ॥ सुरगुरु जेहवा रे अभणीया, वैश्रमण जेहवा मुंजि सो गुणीया ॥ क्रोधी पूरा रे दीसे, टले नहिं जे कर्म शत्रु अरिसें ॥ गु० ॥ ४ ॥ शशिसम उष्णता रे जाणो, अप्रतापी जिम दिनकर मानो ॥ सुरतरु जेहवा रे अदाता, श्रीजिन जेहवा लोभी विख्याता ॥ गु० ॥ ५ ॥ शम दम उपशम रे करणी, करे गुरुदेव सदा भवतरणी ॥ भवजल तारक रे वाणी, दे उपदेश

सदा सुखदाणी ॥ गु० ॥ ६ ॥ मोहनी कर्मे रे अंधो, करतो नीच अकारज धंधो ॥ दुर्गति पडतो रे राखे, निरवद्य वेण मधुर सत्य नांखे ॥ गु० ॥ ७ ॥ सतगुरु करुणा रे कीनी, बोधबीज समकित घट दीनी ॥ नर्म मिटायो रे नारी, सतगुरु सम नहिं कोइ उपगारी ॥ गु० ॥ ८ ॥ महिपति संजती रे नामें, पहुतो वनमृग मारण कामे ॥ गर्दनाली मुनिवर रे तार्यो, संजम लेइ निजकारज सार्यो ॥ गु० ॥ ९ ॥ परदेशी हत्या रे करतो, पाप करण सो रंच न मरतो ॥ केशी गुरु तार्यो रे सोइ, गुण चालीस दिनमें सुर होइ ॥ गु० ॥ १० ॥ दृढप्रहारी रे नामें, चार हत्या करी जातो परगामें ॥ सतगुरु बोधज रे दीनो, संजम देइ शिववासी सो कीनो ॥ गु० ॥ ११ ॥ एम अनंता रे प्राणी, तरिया सतगुरुकी सुणि वाणी ॥ सेवा करसी रे नावें, सो नर नव नवमें सुख पावे ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिणें गुरु आज्ञारे धारी, सो जिन आज्ञामें नर नारी ॥ गुरुकी तो महिमा रे नारी, तिलोकरिख कहे नित बलिहारी ॥ गु० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुरु कारीगर सारिखा, टांकी वचन उच्चार ॥ पत्थरकी प्रतिमा करे, जिम सतगुरु उपगार ॥ १ ॥ मूल तेतीस आशातना, उत्तर अनेक प्रकार ॥ गुरुनी टालो आशातना, जो तरणो संसार ॥ २ ॥ राग द्वेष पक्ष छोडजो, मत करजो मन रीस ॥ टाल्याथी सुख पावसो, नाख्यो श्रीजगदीश ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिण पाइ ॥ ए देशी ॥ अडतो आगें पाछे बरोबर, उभे बेठे चाले ॥ एक एकमें तीन गणीजें, ए नवभेद दीखाले ॥ १ ॥ जाणी करे आसातना प्राणी ॥ जिणने आगें नरक निसाणी ॥ ए आंकणी ॥ गुरुसंगाते थंडिल पहुता, शुचि करे पहेली चेलो ॥ कोइक वंदवा आवे तेहने, बतलावे गुरु पहेलो

॥ जा० ॥ २ ॥ गुरु शिष्य आवे साथें उपाश्रय, पहेली ईर्या गावे ॥ अवराने आगल आलोवे, आहार पाणी जे लावे ॥जा०॥३॥ गुरु पहेली बतावे परने, देवणकी मनवारो॥ गुरुने विण पूछा पर सोपें, सोलमी ये अवधारो ॥ जा०॥ ४ ॥ लूखो सूको निरसो विरसो, गुरुने दीनो चहावे ॥ सरस आहार मनगमतो देखी, आप लेइ हरखावे ॥ जा० ॥ ५ ॥ रात्रे सूतो गुरुजी पूछे, कुण सुतो कुण जागे ॥ सुण कर उत्तर दे नहिं जाणी, कामज करणो लागे ॥ जा० ॥ ६ ॥ गुरु बतलावे कारण पडिया, उत्तर दे आसण बेठो ॥ उठण केरो आलस अंगें, काम करणमे धिठो ॥ जा०॥ ७ ॥ गुरु बतलायो कोइक कारण, सुणीयो करे अणसुणीयो ॥ जाणे कोइक काम बतासी, राखे मन अणमणियो ॥ जा० ॥८॥ गुरु बतलायो बेगो बेगो,शुं कह्यो शुं कह्यो बोले ॥ तहत्त वाणी मथेण वंदामि, सो तो कहे न भोले ॥ जा० ॥ ए ॥ गुरु गरढा तपसीनी वेयावच्च, करता निर्जरा भारी ॥ एम सुणी सो कहे अपुछो, तुमने शुं नहि प्यारी ॥ जा० ॥ १० ॥ गुरु देवे हित शिक्षा आणी, ज्ञानदीपक उजवालो ॥ कहे अपुछो गुरुशुं मूरख, पोतें क्यों नहिं चालो ॥ जा० ॥ ११ ॥ तुं तुंकारो देवे गुरुने,एसो मूरख प्राणी ॥ गुरुउपदेश देवे भविजनने, आणे चित्त अकुलाणी ॥ जा० ॥ १२ ॥ गोचरी वेला हुइ जाफेरी, दिन चढियो नहिं दीसे ॥ वखाण थोभे नहिं भूखज लागी, बोले भरियो रीसे ॥ जा० ॥ १३ ॥ गुरुजी अर्थ कहे भविजनने, विचविचमांही बोले ॥ कहे थाने शुद्ध अर्थ न आवे, वरस निकाल्यां भोले ॥जा०॥१४॥ गुरुजी कहेतां शिष्य पयंपे, याद पूरी नहिं थाने ॥ में कहुं सावत वात वणाइ, गुरु कथा छेदी वखाणे ॥ जा० ॥ १५ ॥ गुरु वखाण करे तिणमांही, कोइक काम बताइ ॥ पर्षदामांही भेदज पाडें,मूरख समझे नांइ ॥ जा० ॥१६॥ गुरु वखाण करीने उठे, तिणहीज सभा मझारो ॥

॥ सोहीज सास्तर सोहीज गाथा, करे अरथ विस्तारो ॥ जा० ॥ ॥ १७ ॥ हीणता जणावे निजगुरु केरी, पंमितपणो बतावे ॥ लो कसरावण सुण कर मूरख, मनमें अति अकडावे ॥ जा० ॥ १८॥ गुरुनां आसण ऊंघो पुंजणी, पगसुं ठोकर देवे ॥ गुरुने आसणे सुवे बेसे, ऊंचो आसण ठेवे ॥ जा० ॥ १९ ॥ गुरुनी प्रशंसा करें न पोतें, सुण कर अति मुरझावे ॥ तेत्तिस आशातना मूल कही सो, जडामूलसुं ढावे ॥ जा० ॥ २० ॥ गुरुनें आगें वस्तर केरी, पालठी वाली बेसे ॥ कर बांधे किरसाण ज्यु नोलो, टेके बेठे विशेषें ॥ जा० ॥ २१ ॥ पाय पसारी आलस मोडे, पग पर पग चडावे ॥ विकथा मांझे कडका मोडे, गुरुने नहिं मनावे ॥ जा० ॥ २२ ॥ हडहड हसे शरम नहिं राखे, जिम तिम बोले वाणी ॥ काम करें गुरुने विण पूछ्यां, विच विच वात ले ताणी ॥जा०॥ ॥ २३ ॥ गुरुजी कोइक जिनस मंगावे, जावणको मन नांही ॥ उत्तर टाले चोज लगाइ, ते सुणजो चित्त लाइ ॥ जा० ॥ २४ ॥ हाल वखत नही गोचरी केरी, अथवा नर नहि घरमें ॥ दीया होसी कीवाड बारणें, मिले न इण अवसरमें ॥ जा०॥ २५ ॥ वेहेरावणरा नाव न दीसे, अथवा जिणरे नांइ ॥ असुजता के सुता होसी, वस्तु न मिलसी ठाइ ॥ जा० ॥ २६ ॥ अबार तो हुं अरकर सीखुं, लिखसुं पानो पूरो ॥ पलेवणो तथा थंमिल जाणो,अथवा घर छे दूरो ॥ जा० ॥ २७ ॥ सो तो कंजूस तथा मिथ्यात्वी, मुझने नहिं पीछाणे ॥ शरम आवे मुझ नीख मांगता, जाउं केम अजाणे ॥ जा० ॥ २८ ॥ मुझने थंड वाय नहीं सोसे, तडको चडीयां जासुं ॥ कहे उन्हालो पाव बले मुझ, दिन ढलीयाथी सिधासुं ॥ जा० ॥ २९ ॥ चोमासे कहे कीचड बहुलो, पग लपसे छे महारा ॥ नूख लागी थकेलो चडियो, पग अकड्या छे सारा ॥जा० ॥ ३० ॥ महारा शरीरमें अडचण दीसे, चालण शक्ति नांइ ॥ ए

क वारमें आणी दीधो, अब नेजो परताई ॥ जा० ॥ ३१ ॥ एक काम करावे तिणमें, जाणी ढील लगावे ॥ जाणे जलदी करसुं कारज, फेर मुऊ उर बतावे ॥ जा० ॥ ३२ ॥ विनयवंदणा करे न पहेली, कहे मुऊ ज्ञान शीखावो ॥ पाछे करजो काम तुमारो, पहेला बोल बतावो ॥ जा० ॥ ३३ ॥ संयम लीधो में तुम पासे, एता दिनके मांइ ॥ काम काममें काल वितावो, ज्ञान शीखावो नांई ॥ जा० ॥ ३४ ॥ अवगुण आपणा देखे नांइ, वात करण को तसियो ॥ पेट नरीने निंदल लेवे, विकथा सुणवा रसियो ॥ जा० ॥ ३५ ॥ समीसांजथी पाय पसारे, नणिउ सो न चितारे ॥ टेके वेग अक्षर शीखे, नली शीख नही धारे ॥ जा० ॥३६॥ गुरुकी कहेणी करे वेठ ज्यु, अवगुण ताके परका ॥ सुहर ब्रष्टा खावे खीर तज,ए लक्षण तिण नरका ॥ जा० ॥ ३७ ॥ अनिमानी अरु क्रोध घणेरो, चाले आपणे ढंदे ॥ आप करे गुरुछानो कारज, परना अवगुण निंदे ॥ जा० ॥ ३८ ॥ गुरु देखीने अक्षर घोकें, दीसे घणो सियाणो ॥ पीठ फेरीया ढांदें चाले, जाणे जग को राणो ॥ जा० ॥ ३९ ॥ आपणे हाथे कामज बिगडे, परने माथे नाखे ॥ गुरु पूछ्या घुररावे श्वान ज्युं, रंच न साचुं नाखे ॥ जा० ॥४०॥ और आशातना नेद घणेरा, पूरा कह्या न जावे ॥ तिलोकरिख कहे ढाल दूसरी, नविक सुणी हरखावें ॥जा०॥४१॥

॥ दोहा ॥

॥ जे अविनयथी मरे नही, करे आशातना कोय ॥ ते डुःख किण पेरें नोगवे, सांनलजो नविलोय ॥ १ ॥ सड्या कानकी कूतरी, जिणघरे जावे चाल ॥ नीकाले डुर डुर करे, इणविध होय हवाल ॥ २ ॥ परनव किल्विश देवमें, उपजे सो अविनीत ॥ तिहांथी मरी चउगतिमें, होवे पूरी फजीत ॥ ३ ॥ गुरु

बालक वृद्ध अणजाण्या, ते पण अविनय टाल ॥ अग्नि जेम सेवन किया, शाता लहे विशाल ॥ ४ ॥ सुतो सिंह जगावणो, खेर अंगारे पाय ॥ गिरि खणवो जेम नखथकी, पोतें अशाता थाय॥५॥ करतल मारे शक्तिपर, विष हलाहल खाय ॥ मिरचां आंजे आंखमे, पोतें अशाता थाय ॥ ६ ॥ एतो देवप्रभावथी, विघन करे नहिं कांय, आशातना फल नां टले, करतां कोइ उपाय ॥ ७ ॥ एक वचन ज्ञानीतणुं, जो धारे नर नार ॥ तास अविनय तजवो कह्यो, दशवैकालिक मांय ॥ ८ ॥ जिणपासे धारणकियो, संजम शिवदातार ॥ तेहनी करे आशातना,सो मूरख शिरदार ॥९॥ नीतिशास्त्रे पुण दाखीयो, सात वार होय श्वान ॥ सो भव लहे चांमालना, आगें लहे दुखःखान ॥ १० ॥ गुरुनी निंदा जे करे, महापापी कहेवाय ॥ सर्वशास्त्रें दरसावियो, मुगति कदहीं न जाय ॥ ११ ॥ के बेहेरो के बोबडो, के दुर्बल के दीण ॥ जिनमारग पावे नहीं, जो करे गुरुकी हीण ॥ १२ ॥ इम जाणी भवि प्राणिया, करो विनय गुरुदेव ॥ ते सुणजो सुगुणा तमें, किणविध करीयें सेव ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सोइ सयाणो अवसर साधे, अवसर साधे ने स्वामी अराधे ॥ ए देशी ॥ विनय करीजें भाइ विनय करीजें, विनय करीने शिवरमणी वरीजें ॥ ए टेक ॥ श्रीगुरुसेव करो मन रंगे ॥ मोह कलेष कुमति सब भंगे ॥ संजम किरिया गुरुमुख धारो, लुल लुल नमन करी गुरु गावो ॥ विन० ॥ १ ॥ गुरु बतलाया तेहत उच्चारो, क्रोध मान सब दूर निवारो ॥ कविण सुणी श्रीगुरुजीकी वाणी, रीश करो मत हेत पिछाणी ॥ वि० ॥ २ ॥ फरमावे गुरु काम जो कोइ, जेज न करणी अवसर जोइ ॥ गुरु मुझ उपर किरपा कीनी, निर्जरारूप प्रसादी दीनी ॥ वि० ॥ ३ ॥ अंगचेष्टा श्री

गुरुकी देखी, सो कारज करणो सुविसेखी ॥ वैय्यावच्च करतां आलस छोडो, नक्ति किया पहेली मत पोडो ॥ वि० ॥ ४ ॥ प्रश्न पूछंतां हाथज जोडो, शिश नमावो मानज मोडो ॥ मधुरवचन प्रशंसा करके, ज्ञान शीखो अति आणंद धरके ॥ वि० ॥ ५ ॥ छोटा मोटासुं हिलमिल रहीजें, अधिक नण्याको गर्व न कीजें ॥ खार इसको किणसुं राखणो नाइं, महारो थारो करो मत कांइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ वाद विवाद जोड मत मांमो, विकथा वात तणो रस छांमो ॥ वचन कहो मति कोइ मरमनो, मनमें सदा मर राखो कर्मनो ॥ वि० ॥ ७ ॥ रीशवसें पातरां मत पटको, फजको खाइ डुजापर तटको ॥ जेम तेम बड बड पण नहिं करीयें, लोक विवहारसुं अधिको मरीयें ॥ वि० ॥ ८ ॥ उंचे शब्दें करो मत हेला, सुण कर लोक होजावे ज्युं नेला ॥ जैनमार्गकी लघुता आवे, सांसारिक सगां सुणी डुःख पावे ॥ वि० ॥ ए ॥ प्रियधर्मीकी आस्ता बूटे, क्रोधरिपु संजमधन लूंटे ॥ एसो काम करो मत शाणा, इणनवे निंदा आगे डुःख पाणा ॥ वि० ॥ १० ॥ रिद्धि छोडी जिणरो गर्व न कीजें, अधिकगुणी पर नजर जो दीजें ॥ आगलका अवगुण मत देखो, अपणा अवगुणको करो लेखो ॥ वि० ॥ ११ ॥ बाल तरुण वृद्ध जो जो नर नारी ॥ सबथी जीकारे बोलो विचारी ॥ तुं तुंकारो उछी बोली, करीयें नहीं कबु थट्टा रोली ॥ वि० ॥ १२ ॥ नीचें देखी धीरे पग मेलो, न्याय प्रमाण सुणी मत ठेलो ॥ संजम काममें निर्जरा जाणो, उज्ज्वलनावें शंका मत आणो ॥ वि० ॥ १३ ॥ पंच व्यवहार प्रमाण करीजें, निश्चें व्यवहारकी नय सम लीजें ॥ उत्सर्ग अरु अपवाद पीछाणो, सतगुरु वयण करो परमाणो ॥ वि० ॥ १४ ॥ इणविध करणी नवजल तरणी, डुःख डुर्गति आपद नयहरणी ॥ त्रीजी ढालें विनयरीत वरणी, तिलोक रिख कहे शिवसुख वरणी ॥ वि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मान बडाइ ईरष्या, क्रोध कपट दे टाल ॥ म्हारो थारो छोडके, चाले रूडी चाल ॥ १ ॥ विनय करे गुरुदेवको, करे आज्ञा परिमाण ॥ तिणने म्हागुण नीपजे, ते सुणजो नवियाण ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रे नाइ सेवो साध सयाणा ॥ ए देशी ॥ रे नाइ विनयतणां फल मीठां, ह्लुकर्मी सुणकर हरखावे ॥ मुरझावे नर धिग रे नाइ, विनय तणा फल मीठां ॥ ए टेक ॥ प्रगमे नलो ज्ञान विनीत शिष्यने, ज्ञान थकी भ्रम नाजे ॥ नमे गयासुं समकित पुष्टि, समकितसुं व्रत छाजे रे ॥ ना० ॥ १ ॥ व्रत पाल्यासुं धन धन बाजे, आदर अधिको थावे ॥ खमा खमा करे नर नारी, मनगमती वित्तपावे रे ॥ ना० ॥ २ ॥ विनयवंत शिष्यने सीख चोखा, होवे सुशाताकारी ॥ इण नवमांही रिध सिध संपत, परनवमें सुख त्यारी रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ होय आराधक सुरपद पावे, महेलमनोहर नारी ॥ रतनजडित पचरंग मनोहर, वासकुसुम छबि प्यारी रे ॥ ना० ॥ ४ ॥ कंकर कंटक पंक रजादिक, नीच अपावन नांइ ॥ जाली झरोखा झगमग दीपे, सुगंध रही महकाइ रे ॥ ना० ॥ ५ ॥ बत्तिस नाटक पडे निश दिन जहे, राग छत्रिशें आलापे ॥ धप मप धप मप वाजे मृदंगा, सुणतां श्रवण नहिं धापे रे ॥ ना० ॥ ६ ॥ नाना प्रकार हार ज्यां लटके, तोरणा छे पंच प्रकारें ॥ आथडतां होय नाद मनोहर, जाणे कोइ देवी उच्चारे रे ॥ ना० ॥ ७ ॥ दोय सहस्र वर्ष छोटा नाटकमें, मोटामें दस हजारो ॥ एक महूरतको काल ज्युं वीते, विनयकरणी फल धारो रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ पल सागरथिति एम निकाली, तिहांथी चवी नर थावे ॥ संजमधारी करम निवारी, ज्ञान केवल सोहि पावे रे ॥

ना० ॥ ए ॥ होय अयोगी मुक्ति सिधावे, शाशवतां सुख जाणो ॥ विनय करणी फल पार न पावे, शास्त्रको नेद पहिचाणो रे ॥ ना० ॥ १० ॥ सुणतां तो आणंद बढावे, गुणतां बुद्धि प्रकाशो ॥ पालतां तो शिवनां फल लहीयें, राखो चित्त विश्वासो रे ॥ ना० ॥ ११ ॥ संवत उगणीसें बतिश साले, तेरशवदि वैशाखें ॥ विनय फल ढाल कही वर चोथी, सर्वे सिद्धांतकी साखें रें ॥ ना० ॥ १२ ॥ देश दक्षिण विचरंतां आया, खांनरा हिवडा मझारो ॥ तिलोकरिख कहे मूल धरमको, करवा पर उपगारो रे ॥ ना० ॥ १३ ॥ सुण कर राग द्वेष मत करजो, समुचय दियो उपदेशो ॥ नही मानो तो मरजी तुमारी, निजकरणी फल लहेशो रे ॥ना० ॥ १४ ॥ दान शियल तप नावना नावो, ए जगमें तंत सारो ॥ पालो अराधो विनय यथारथ, उतख्या चाहो नव पारो रे ॥ ना० ॥ १५ ॥ कलश ॥ विनय करणी, दुःखहरणी, सुख निसरणी, जाणीयें ॥ इणलोक सोना, आगें शुनगति, सिद्धांत न्याय, वखाणीयें ॥ धरम मूलसो, विनय दाख्यो, सींचे तो फल पाइयें ॥ कहे रिख, तिलोक नविका, आराध्या शिव जाइयें ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ १११ ॥ इति विनयअराधना चौढालीयुं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीसमकितबत्तिसी प्रारंनः ॥

॥ रे नाई सेवो साध सयाणा ॥ एदेशी ॥ समकित विण नमियो चउगतमें, दुःख पायो महानारी ॥ अपूर्वकरण आया विण नविका, समकित रहे सदा न्यारी ॥ रे नाई समकित रतन हे नारी, राखो जतन सुविचारी रे ॥ना०॥सम०॥१॥ आउखो वर्जी सात कर्मकी, थिति गणीयो नर नारी ॥ एक कोडा कोडी सागर बाकी, अंतर मुहूरत हिण तारी रे ॥ ना० ॥ स० ॥ २ ॥ अनंतानुबंधीकी चोकडी जाणो ॥ मिथ्यात मोहनी जहारी ॥ समकित मो

हनी मिश्र मोहनी, उपशमे सातु जे वारी रे ॥ ना० ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ उपशम समकित आवें जेवारें, खपायाथी क्षायिक धारी ॥ कांइक उपशमें कांइक क्षय थावे ॥ क्षयोपशम नाम विचारी रे ॥ ना० ॥ स० ॥ ४ ॥ पडति सास्वादन वेदें सो वेदक ॥ पांचु ए नाम विचारी ॥ उपशम सास्वादन उत्कृष्टी, फरसें जीव पंचवारी रे ॥ ना० ॥ ५ ॥ क्षयोपशम असंख्यातिवारज आवे, वेदक एकही वारी ॥ क्षायिक आइ न जावे कदा फिर, सदा काल रहे लारी रे ॥ ना० ॥ ६ ॥ पाछली चारमेंकी एक फरसे, अर्ध पुद्गलके मझारी ॥ पावे अजर अमर सुखनिश्चल, समकित की बलिहारी रे ॥ ना० ॥ ७ ॥ निश्चमें समकित केवली जाणे, छद्मस्थ तो व्यवहारी ॥ सतसठबोल अमोल आराधो, ते ते सुणजो विस्तारो रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ प्रथम चार सद्दहणा सरधो ॥ मोक्षमारग तंतसारी ॥ एहनो परचो करो निशिवासर, नवनवमें सुखकारी रे ॥ ना० ॥ ए ॥ दूजीसद्दहणा, मोक्ष साधनकी ॥ सेव करो हित धारी ॥ समकित भ्रष्टनी संगति वरजो, कुतीर्थी परिहारी रें ॥ ना० ॥ १० ॥ तीन लिंग वली समकित केरा ॥ सुणजो आलस वारी ॥ तरुण पुरुषजिम नोगमें राचे, तिम प्रभु वाणी विचारी रे ॥ ना० ॥ ११ ॥ नूख्यो क्षीरनोजन करें आदर, तिम जिनवाणी सुप्यारी ॥ नणवाकी इछा मिले तस दाता, हरखे जिनवचन संनारी रे ॥ ना० ॥ १२ ॥ दशको विनय करें मनरंगें, अरिहंत सिद्ध नगवानो ॥ आचारिज उवझाय थविरनो, गण संघ सातमो जाणो रे ॥ ना० ॥ १३ ॥ साधर्मी शुद्ध क्रिया धारकनो, बहुमान नक्ति करीजें ॥ तीन शुद्धताकरो नवि प्राणी, नवसागरसुं तरीजें रे ॥ ना० ॥ १४ ॥ मन शुद्धता श्रीजिन ध्यावो, वचन थकी गुण गावो ॥ नमस्कार सो करो कायासुं, अवर देव मत चावो रे ॥ ना० ॥ १५ ॥ पंच लक्षणथी उलख थावे, शत्रु मित्र

सम जावे ॥ संसारथुं उदास रहे मन, धाय ज्युं बाल रमावे रे ॥ ना० ॥ १६ ॥ आरंन परिग्रह त्यागणो वंछे, अनुकंपा चित्त मांई ॥ सूक्ष्मनाव सुणी नहिं मुरफे, दिढताई आणे सवाई रे ॥ना०॥ ॥ १७ ॥ पंच अतिचार टाले समकितना, प्रभु दाख्यो सत माने ॥ पाखंमीकी महिमादेख विशेषी, वंछे नही कबु जाने रे ॥ न० ॥ १८ ॥ करणी फल संदेह न आणे, परपाखंमी नही परसंसे ॥ जावे नही तिण पासे चलाइ, संगे सुगुण सो विध्वंसे रे ॥ना० ॥१९॥ पंच नूषण पहेलो धीरजवंतो, दीपावे मारग नारी ॥ नक्ति करे वलि चतुर विचक्षण, श्रीसंघ सेवे हुसियारी रे ॥ ना० ॥२०॥ आठ प्रनाविकना गुण तामें, सर्वसिध्धांत सो जाणे ॥ धर्मकथा केहवे विस्तारी, न्यायसुं वाद सो गणे ॥ ना० ॥ २१ ॥ तीन काल सर अवसर जाणे, तप करे दुःकर कारी ॥ अनेक विद्याना जाण सो होवे, कवितामें बुध नारी रे ॥ ना० ॥ २२ ॥ छे आगार विचारसुं राखे, दान अन्यतीर्थीने देवे ॥ राजा बलवंत जातिना नयथी, मावित्र स्वयमुख कहेवे रे ॥ ना० ॥ २३ ॥ देवता अटवी काल दुकालें, देवे पण धर्म न माने ॥ जयणा षट करे धरमीसुं, बोले पहेली प्रेम आने रे ॥ना०॥ २४ ॥ अधिक मिगससुं प्रीति जणावे, प्रतिलान्ने बहुमानो ॥ नमस्कार सो करे यथातथ, करत वडाई सयानो रे ॥ ना० ॥ २५ ॥ षट थानक वली धारो हियामें, धर्मरूपी तरु केरो ॥ समकित मूल कह्यो जगदीशें, संवर वृक्ष रहे गहेरो रे ॥ ना० ॥ २६ ॥ धर्म सो नगर समकित गढ सम, धर्म आनूपण जाणो ॥ सम दरिसण पेटी जिम कहियें, राखे अवेरीय नाणो रे ॥ ना० ॥ २७ ॥ धर्म सो मंदिर नियम सो समकित, इण विण ठेरे नांइ ॥ धर्म पदारथ समकित हाटमें, जतनसुं रहे तिणमांई रे ॥ ना० ॥ २८ ॥ धर्म सो नोजन थाली ज्युं स

मकित, राखो सुघड सदाई ॥ भावना खट वली बे समकितनी, भाव भव बे सुखदायी रे ॥ भा० ॥ २९ ॥ चेतना लक्षण जीव को परथम,सासतो एहिज युक्तें॥कर्मको कर्त्ता एहीज जाणो,पुण्य पाप एहि भुक्तें रे ॥ भा० ॥ ३० ॥ भवि जीव कर्म खपावे तो मुगति, नही तो भमे गति चारी ॥ ज्ञान दरिसण चारितर करणी, एही उपाय विचारी रे ॥ भा०॥ ३१ ॥ सतसठ बोल विवहार समकितना, धारो हियामें तोली ॥ भव घटे सो समकित सेव्यां, आगममें इम खोली रे ॥ भा० ॥ ३२ ॥ अंक विना जिम शून्यज वरथा, जेसो लिंपण बारो ॥ तप जप किरिया लेखे न आवें, पराल कूटे जिम भारो रे ॥ भा० ॥ ३३ ॥ जिम सुई दोरा सहितज होवें, सो न खोवावे पावे ॥ तिम समकित फरसे एक विरियां, निश्चेइ मोक्ष सीधावे रे ॥ भा० ॥ ३४ ॥ देव अदोषी गुरु निर्लोभी, धर्मदयामें सदाइ ॥ ए शुद्ध सरधा परम पदारथ, राख्यो चित्त दृढताइ रे ॥ भा० ॥३५॥ समकित विण कोई मुक्ति न पहोचां, वर्त्तमान नहीं जावे ॥ नहीं जावे वली आवते कालें, आगममें दरसावे रे ॥ भा० ॥ ३६ ॥ संवत उगणीसें बत्तिस सालें, किनी एह बत्तीसी ॥ तिलोकरिख कहे समकित धारो, चढति रहे धर्म विसी रे ॥ भा०॥३७॥ इति समकितउत्पत्तिफर्सणसंख्या नाम व्यवहारसमकितका ६७ बोलाधिकारसहित समकितबत्तिसीसंपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक बत्तिशी प्रारंभः ॥

॥ सिद्ध चक्रजीने पूजोरे भविका ॥ ए देशी ॥ देव निरंजन केवल धारी, वर्जित दोष अढारा ॥ चोतिश अतिशय पेंतिश वाणी, भवजल तारण हारा रे ॥ भविका श्रीजिन आज्ञा आराधो, शिवपुर मारग साधो रे ॥ भविका श्रीजिन० ॥ १ ॥ गुरु गुण सागर परम उजागर, सत्यावीश गुण बाजे ॥ धर्म देवकी सेवन करतां,

सकल नरम नय नाजे रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ २ ॥ धर्मजिन आज्ञा निरवद्य करणी, तरणी नवजल पारी ॥ इणसम अवर नहीं सुख दाता, तरिया अनंत संसारी रे ॥ न० ॥श्री०॥३॥ देव गुरु धर्मए तिहुं तत्त्व,निश्चल नावे सेवीजें ॥ अवर मत परचित्त न दीजें, न रनव सफल करीजें रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ दशेरो दिवाली रा खी ने होली, मिथ्या पर्व न कीजें ॥ धर्म पर्व सो सर्व मनावो,सु कृत लाहो लीजें रे ॥न०॥श्री०॥५॥ देव गुरु धर्म शास्त्र ए चारू, रत्न परख करो नाई ॥ यत्न करीने राखो हियामें, नव नवमें सु खदाई रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ निज आतम सम जीव जगतका, जाणी दया घट आणो ॥ सचेत माटीसूं अंग नही धोजें, निर र्थक पाप घटाणो रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ अणगण्या जलमें नहीं न्हाणो,पीणो पण वर्जीजें ॥ मांसको नांगो घात पचेंद्रिय, निरर्थक नहीं ढोलीजें रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ घृतसुं मोंघो जल ने यें लेखो, पूंजे सो आग न दीजें ॥ उघाडो दीपक मति मेलो, जयणासें जतन करीजें रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ए ॥ पाणीसुं लकडी न बूझाणी, झटक फटक नहीं करियें ॥ बतें मारग हरिकाय न चांपो, निरर्थक रंच न फरियें रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ १० ॥ रात्रि स्नान अरु नोजन वर्जो, रात्रे लीपणो टालो ॥ सलियो धान ता वडे नहीं दीजें, सलियो लकड मत वालो रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ आटो वेसण दाल अरू नाजी, मत रांधो विण जोई ॥ महोटो फल अथवा बहु बीजो, बेदो मत जन कोई रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ १२ ॥ दूंध दहीं घी तेलको वासण, उघाडो मत मेलो ॥ जूं माकण तावडे मत नाखो, चोपड जुवा मत खेलो रे ॥ न० ॥ श्री० ॥१३॥ निरदयी पणे गाढे प्रहारें, मत मारो पर प्राणी ॥ गाढो बंधण बजन घणेरो, लादो मति दया आणी रे ॥ न० ॥

श्री० ॥ १४ ॥ आंधो काणो बहेरो पांगुलो, घेलो गुंगो नर जेह ने ॥ कठिण वचन वलि हांसी न करियें, दुःख लागे जिम तेह ने रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १५ ॥ होय कलेश तो उपति खमावो, परकी पडिक्कमणा मांही ॥ हद चोमासी जावा न दीजें, श्रावक व्रत कीजो चाही रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १६ ॥ राज दंमे वलि लोकमें जंमे ॥ तेहवो कूड निवारो ॥ विना विचारे वात न कीजें, मर्म मोसो मत उच्चारो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १७ ॥ विश्वास घात करो मत किणसूं, थापण मत राखो पराई ॥ लांच लेई कूडी साख न जरिये, परनिंदा दुःखदाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १८ ॥ रागद्वेष वश आल न दीजें, पर अवगुण मत गावो ॥ पापको कारज होय कदापि, मनमें मति पोमावो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १९ ॥ खोटो लेख लिखो मत कोई, मोटकी चोरी न कीजें ॥ कूडा तोलां मापां ते वर्जो, चोरकूं साज न दीजें रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २० ॥ कुंवारी विधवा परनारी, वेश्या गम न तज दीजें ॥ तीव्र अजिलाषा न किजें जोगकी, शीयलव्रत रस पीजें रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २१ ॥ परधनकी अजिलाष न करियें, निजधन समता राखो ॥ अधिक द्रव्य जो वधे त्यागसूं, पाप मांही मत नाखो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २२ ॥ दिशि मर्याद करी तिण ऊपर, अधिक मत जावो आगें ॥ पंच आश्रवको त्यागन करियें, जावतां त्याग न जागे रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २३ ॥ अन्नक्ष्य आहार ठोडो तुछ जोजन, कर्मादान तज दीजें ॥ अनर्थदंम कुचेष्टा कामकी, हिंसा उपदेश न दीजें रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २४ ॥ घट्टी ऊखल मूशल सरोता, पावडा डंर कोदाली ॥ छुरा कटारी खड्गादिक शस्त्र, संग्रह करण दो टाली रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २५ ॥ गइ वस्तुको सोच न कीजें, दुःख उपजे कोई

आई ॥ निज कर्मोको दोष बतावो, धीरज धरो मनमांई रे ॥ज० ॥ श्री० ॥ २६ ॥ धर्मकाममें होजो अगवानी, पापमें मौन करीजें ॥ जोजन वस्तर हाट हवेली, शोजाकूं शोजा न कहिजें रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २७ ॥ वृक्षने मनुष्यकी उपमा दीनी, सूत्र आचारंग मांई ॥ महादूषण इणमांहि जाणकें, झाड कटावणो नांई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २८ ॥ तीन वखत समजाव राखीने, सामायिक नित्य कीजें ॥ विकथा वात करो मत सुगुणा, दूषण दूर हरीजें रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २९ ॥ दोष अगारा टालो पोसामें, मुनि जिम जाव धरीजें ॥ निर्दूषण प्रासुक अहार सो, जावशुं साधु पडिलाजीजें रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥३०॥ चउदा नेम नित प्रतें चितारो, तीन मनोरथ कीजें ॥ दुःखियो देख दया दिल लावो, शक्ति जिम सहाज सो दीजें रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥३१॥ ज्ञान ध्यान तप जपको उद्यम, सदा करो जाव धरीनें ॥ क्रोध कपट बल बेद न कीजें, वरीजें मुगतिस्त्रीने रे ॥ ज० ॥श्री० ॥ ३२ ॥ नवतत्त्वकी पहिछाण करीजें, विनय जगति शुद्ध साधो; चिंतामणि सम नरजव दुर्लज, समकित रत्न आराधो रें॥ ज० ॥श्री०॥३३॥ तन धन जोवन सर्व अथिर हे, सजन स्नेही परिवारो ॥ पुण्य उदय सब जोग जो पायो, पाप उदय नहिं थारो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ३४ ॥ दुःख आया शरणागत नांइ, जटके जीव संसारो ॥ तारक बे जैनधर्म जगतमें, इम जाणी उर धारो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ३५ ॥ अनंत जीव तरिया उर तरसी, वरसी शिवसुख प्राणी ॥ तिलोकरिख कहे समजो जविका, साची श्रीजिन वाणी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ३६ ॥ संवत उगणीशें साल सेतीशें, महाशुद्ध दशमी जाणी ॥ वारजोम करमालापेठमें, श्रावकबत्तिशी वखाणी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ३७ ॥ इति श्रावक बत्तीसी संपूर्णा ॥

॥ अथ नोलपचत्तिशी प्रारंभः ॥

॥ संता देखो डुनीया नोली ॥ ए देशी ॥ नविका देखो न्याय विचारी ॥ सुगुणा देखो० ॥ नोली डुनीया नूलि नरममें, जाय ज मारो हारी ॥सु०॥ ए टेक॥ वीतरागको मारग तारक, जीवदया अ गवानी ॥ हिंसा धरममें अधिकाराचे, करे जीवाकी हानी ॥न० ॥ १ ॥ दया दान विनयमूल धर्मसो, तिनुही वात उगावे ॥ नग वंत चूकां कहे अज्ञानी, नव नव में डुःख पावे ॥ न० ॥ २ ॥ सामायिक पोसाके मांही, विकथा मांझे कूडी ॥ धरमकथामें चि त्त न राखे, रह्यो पापमें बूडी ॥ न० ॥ ३ ॥ ज्ञानसीखतां गलो ज डुखे, लडतां बुंबडी पाडे ॥ तवन सजाय केहतां सरमावे, ख्याल गावे अति गाडें ॥ न० ॥ ४ ॥ धर्मदलाली पगलां डुःखे, पापदलाली दोडे ॥ धर्मीने तो दूर बेगावे, पापीने राखे गोडे ॥ न० ॥ ५ ॥ ताव तेजारी आवे तनमें, सात दिवस नहिं खावे ॥ धर्मनिमित्तें एक उपवासके, करतां मन सुकडावे ॥ न० ॥ ६ ॥ व्याह मोछवमें खरचे सइकडा, धनमें आग लगावे ॥ जीवदयामें खरचण काजें, दमडीमे नट जावे ॥ न० ॥ ७ ॥ धर्मकाममें का यर अधिको, पाप करणने शूरो ॥ ले लोटो ने खावण दोडे, पर उपगारथी दूरो ॥ न० ॥ ८ ॥ सजन कुटुंबी मिलिया हरके, संत देख टल जावे ॥ मुनिवर वंदतां सरमज आवे, नीचने शीश नमा वे ॥ न० ॥ ९ ॥ पर्व पजूसण धर्मध्यानदिन, खेले चोपड पासा ॥ पापीकी तो करे बडाई, धर्मीका करे हासा ॥ न० ॥ १० ॥ रांम नांम नट ख्याल करे जठे, सगली रात जगावे ॥ ग्यान ध्या नकी होय जहां चर्चा, फुक फुक झोलां खावे ॥ न० ॥ ११ ॥ हो य लडाइ चर्चा विकथा, विण तेड्यो चल जावे ॥ धर्मकाज बोला वे कोई, सुखसें पट नट जावे ॥ न० ॥ १२ ॥ पोतें तो अवगुण को सागर, परनिंदामें राजी ॥ लोक बुराइसुं नही डरपे, आल दे

त पर गाजी ॥ ज० ॥ १३ ॥ अक्रोधी अमानी अमायी, अलो भी जिनराया ॥ जिनको समरण करेन घेहला, भेरु जवानी भाया ॥ ज० ॥ १४ ॥ लोक चडावे फूल फलादिक, देव देवे राखोडी ॥ तो पण विवेक अंध नहिं समझे, फिर फिर जावे दोडी ॥ज०॥१५॥ वाजे जैनी ब्राह्मण वाण्या, मानता करे फकीरी ॥ वे बिन पाणी परवश मरीया, सो कांई देगा अमीरी ॥ ज० ॥ १६ ॥ भेरु जवा नी कालिका चंमी, बोकडा भेंसा चडावे ॥ आप मारिने आपही खावे, देवी नाम बतावे ॥ ज० ॥ १७ ॥ बेटा बेटी काजें पापी, बकरा भेंसा मारे ॥ परकूं छुःख देकरके मूरख, अपनी शाता वि चारे ॥ ज० ॥१८॥ करे गणगोर पहेरावे गरेणां, गोरडी मंगल गा वे ॥ पूजा कर पाणीमें पटकी, बेटा बेटी चावें ॥ ज० ॥ १९ ॥ देवकी गई हरि निरखण काजें, वछपूजन मिश करकें ॥ सो तेहे वार मनावे भोली, बालकवंठा धरकें ॥ ज० ॥ २० ॥ घणा मनुष्य अरु रावण मरियो, वाज्योनाम दशेरो ॥ सो दिन हरख मनावे अधिको, बांधे पाप घणेरो ॥ ज० ॥ २१ ॥ वीरजिनेश्वर मुगति विराज्या, दिवस दिवाली जाणो ॥ दया धर्मतो पाले नहीं ओर, करे जीवकी हाणो ॥ ज० ॥ २२ ॥ व्यभिचारिणी हुई होलिका, भांम हुई जगमांही ॥ कुंमोततें मारी गई पापिणी, सो तेहेवार थपाई ॥ ज० ॥ २३ ॥ धूल उडावे कीच मचावे, वणे होलीका पंमा ॥ बोले खोटा निर्लज हुईने, सजे नरकका फंमा ॥ ज० ॥ २४ ॥ पांचसें साधुको होमज करतो, ब्राह्मणनाम नमुची ॥ वि ष्णुकुमर वामन रूप धरकें, दियो पगा तलें कुची ॥ ज० ॥ २५ ॥ हेमाचल नृप आई तेहने, मारताके दियो राखी ॥ मंगत तेहेवार थाप कर भोला, हाथमें बांधें राखी ॥ ज० ॥ २६ ॥ घरको म नुष्य मरे जिणदिवसें, सोग कहे मुखसेंती ॥ श्राद्ध ठेराइ माल जे खावे, उलटी रीत ए चेती ॥ ज० ॥ २७ ॥ मछ अवतार धर्यो

कहे प्रभुजी, मब खावण नहीं गेडे ॥ वराह अवतार कहे वली धास्यो, वराहा मारण दोडे ॥ज०॥२७॥ गउ माताके लाठी मारे, तुलशी माता तोडे ॥ जवार माता कही पीसिने खावे, मनकी बाता जोडे ॥ ज० ॥ २ए ॥ पृथ्वी पाणी तेउ वायु, दीश वड पिंपल पूजे ॥ गाय गधेडा कन्या पूजे, अंतरज्ञान न सूजे ॥ज०॥३०॥ इत्यादिककी पूजन थापे, करें न न्यायपरीक्षा ॥ घणा तुष्ट जो तुज पर एता, करशो आपसरीखा ॥ ज० ॥ ३१ ॥ देह अपावन परतक्ष सारी, उपर खाल पखाले ॥ न्हाया धोया धर्म होवे तो, मबलां जलमे चाले ॥ ज०॥ ३२ ॥ श्रीजिन मारग उज्वल परतक्ष, तिणने मेलो बतावे ॥ हिंसाधर्म मलीन सदाही, जिणने अधिक सरावे ॥ ज० ॥ ३३ ॥ गावे बजावे तानज तोडे, जेहनी महिमा सखरी ॥ होय उदासी जगमायासुं, तिणकी करे मस्करी ॥ ज० ॥ ३४ ॥ मोह करमके उदय करीने, भोलप कर दुःख पावे ॥ भोलप बत्तीसी सुण कर शाणा, श्रीजिनमारग आवे ॥ज०॥३५॥ इत्यादिक भोलपता तजकें, धर्म ध्यान करो खासा ॥ तिलोक रिखजी कहे सुकृतकीधां, होय मुगतिमें वासा ॥ज०॥ ३६ ॥ संवत् उगणीसें बत्तिस फागण, वदि दशमी शनीवारें ॥ सांईखेडामें एह निपाई, करवा पर उपगारें ॥ज०॥३७॥ इति भोलपबत्तिसी संपूर्ण ॥

॥ अथ पांच प्रकारना वैराग्यभाव उपर सवैया ॥

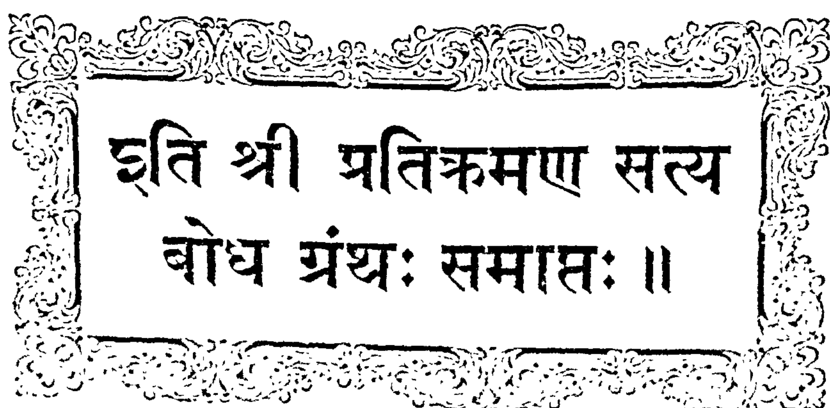
॥ आवत हे तहेवार, तब करत स्नान, लोक करे अलंकार, केश समारे नर नारी हे ॥ पहेरत भूषण निज, वित्तके मुजब सब, खावत सरस माल, फिरत हुशियारी हें ॥ वीतत तेहेवार तब, फिरत निज रुपहीसे, आवत मोबब तब, फिर वोही त्यारी हे ॥ कहत तिलोकरिख, मटक बेरागी रीत, आवत परव धर्म, करे नर नारी हे ॥ १ ॥ डंस मसक मबर जू, माकण अरु दूष्ट जीव, तनपे चटको देत, दूःखत ते वारी हे ॥ हाथसें खुंजाल

कर, माने समाधान सुख, घडी पल वीत्या बाद, दुःख न लगारी हे ॥ तेसी रीत चटक, बेरागी नर जाणीयत, परत संकट माने, संसार दुखीयारी हे ॥ मिटत हे कष्ट तब, भूलत हे धरम ध्यान, कहेत तिलोकरिख, सोहीबी असारी हे ॥ २ ॥ लागत भूख वेग, मिलत न अन्न नित, मनमें विचारे सुखी दीसे अणगारी हे ॥ परखदामें कर जोड, कहे मुनिराजसेंती, दीजीयें संजम मोय, संसार असारी हे ॥ मात कहे नंदणसें, अगन्या हे मेरी तुज, जो जन जिमीने फिर, होजो दिक्ष धारी हे ॥ खीचडी घृत खूब, जीमतही भूल्यो धर्म, खिचड्यो बेरागी रिख तिलोक उच्चारी हे ॥ ॥ ३ ॥ तरुण उमरमांही, मर जावे कोइ जण, होवत उदास मन, झूरे नर नारी हे ॥ संसार असार सब, सपनाकी माया सम, एकदीन सबहीकुं, जाणो निरधारी हे ॥ छोडीयें संसार फंद, करत विचार जन, बालके स्नान करी आवे घरबारी हे ॥ मोह मदीरामें अंध, करे फिर घर धंध, मसाण्यो बेरागी रिख, तिलोक उच्चारी हे ॥ ४ ॥ चटक मटक तीजो, खिचड्यो बेरागी जाण, मसाण्यो बेरागी चोथो, कह्यो सुविचारी हे ॥ एसे जो बेरागी सोतो, कायरके मांही जाण, छोडे न संसार चारी, मुखके लबारी हे ॥ करत वडाइ खाली, ढफोल संखकी रीत, आतमापें जोर सोतो, देत न लगारी हे ॥ केत हे तिलोकरिक्, चारीकुं न लागे शिख, सुका चूना उपर जो, टीपनीणी सारी हे ॥५॥ कीरमची रंग जेसे, धोवे कोइ खोम देवे, तार तार होवे रंग, उडे न लिगारी हे ॥ तेसे भव जीव हीये, धर्मरूपी लागे रंग, जाणत असार जग, नागणीसी नारी हे ॥ धन सब धूलसम, परवार फांस रूप, जानत अनीत वीत, होय व्रत धारी हे ॥ करणी तो करे शुद्ध, मन वच काय करी, कहेत तिलोक रिक, वंदणा हमारी हे ॥ ६ ॥ इति पांच प्रकारना वैराग्यभाव ऊपर सवैया समाप्त ॥

॥ अथ उपदेशिक तथा ३२ असजाय उपर सवइया ॥

॥ सचित्त पृथिवी खंम, पारेवासो करे तन्न, जंबुद्वीपमें न मावे, जीव एता जाणीयें ॥ जलबिंदु मधुकर, तेउ सरसव सम, वाउ एक जबुकडे, खस खस गाणीयें ॥ प्रत्येक वनसपती, असंख्यात गुणाकर, साधारण सूई अग्र, अनंत प्रमाणीयें ॥ त्रस देह जिन्न जिन्न, कहत हे तिलोक चिन, निज प्राण सम जाण, अणुकंपा आ णीयें ॥ १ ॥ बारे सहस्र आठशें, चोवीश एक मुहूर्तमें, जनम मरण पृथ्वी, पाणी तेउ वायमें ॥ साडी पेंसठ सहेंस, ठतिस करे निगोदीया, बतिस हजार सो, प्रत्येक हरिकायमें ॥ बेंडीमांही असी साठ, तेंडीमांहि मरण होय, चौंडीमें चालीस संख्या, कही सूत्र रायमें ॥ असन्नी चोवीश सन्नी, एक जव होये हद, केत हे तिलोकरिख, धर्मी सो न जायमें ॥ २ ॥ अषाढ जाड्व मास, का र्त्तिक पूनम चेत, असजायी चार एह, उरमें विचारीयें ॥ श्रावण आसोज विद, अगणवैशाख धुर, पढवा चारुही अठम, आठए सं जारीयें ॥ प्रातःकाल मध्यदिन, संजा उर मध्यरात, असजायी चार नित, दो दो घडी टारीयें ॥ एवं बारे असजाय, कही चोथा गणामांही, ज्ञान आराधक जन, सूत्रपाठ वारीयें ॥ ३ ॥ आका शकी दश अस, जाइ फरमाइ प्रज्ञु, उल्कापात दिशिदाह, गाज विज जाणीयें ॥ कडकें गगन बाला, बीज चंद जकु चेन, घुंवर शाम श्वेतरज, घात पहिचाणीयें ॥ दश औदारिक फुनि, हाम मां स रुद रसी, त्रष्टा स्मशाण चंद, रवि ग्रहण गणीयें ॥ राजमृत्यु विग्रह सबि, मिलके बत्तीस एह, केंत हे तिलोकरिख, प्रज्ञु वेण मानीयें ॥ ४ ॥ दोहो ॥ अशुन कर्मके हरणकुं, मंत्र बडो नवका र ॥ वाणी द्वादश अंगमें, शोध लियो तंतसार ॥ १ ॥ सवैय्या ए कत्रीशा ॥ सिरिअरिहंत जगवंत बारे गुणवंत, श्री सिद्धमहाराज

मूल, अष्टगुण धारी हे ॥ आचारज सो तो गुण छत्तिस विराजमा न,पच्चीस गुण उवझाय,ज्ञानके भंमारी हे ॥ साधु साधे आतमा सो सत्ताविश गुण जुक्त, सब मीली एक शत आठविस तारी हे ॥ कहत हे तिलोकरिख मन वच काय करी, सदाहि उगत सूर वंदणा हमारी हे ॥ १ ॥ ज्ञान बधे ज्ञानी जोग, अनुभो प्रकाश भए, समकित वढे एक, निश्चलता धारेतें ॥ संजम बढत सो तो, आश्रव तजत जेतो, तपस्या वधत तन, ममत निवारेतें ॥ कलेस बढत टेक करत न खावे गम, अहंकार बढे परहीणताके भारेतें ॥ आपके उगण पर गुण ढांके छल वडे, केत हे तिलोक लोभ, त्रसना वधारेतें ॥ २ ॥ क्रोध घटजाय एक, क्षमाके खडग ग्रहे, मान घट जात भाव, विनय गुण धारेतें ॥ कपट घटत सो तो, सरल सभाव कीय, लोभ घट जात एक, त्रसना निवारेतें ॥ हास घट जात मुख, मून कर लेत तदा, भय घट जात एक, धीरजता धारेतें ॥ केत हे तिलोक रिख, ज्ञानसों प्रमाद कीय,कीमत घटत एक, हिमतते हारेतें ॥ ३ ॥ दोहो ॥ जब लग मेरु अभग हे, जब लग शशि अरु सूर ॥ तब लग आ पुस्तक सदा, रहेजो गुण भरपूर ॥ १ ॥



इति श्री प्रतिक्रमण सत्य बोध ग्रंथः समाप्तः ॥

शुद्धिपत्रक.

पानुं.	उंल.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४	१४	आंख्य.	आंख.
५	२३	नियाणांशल्य.	नियाणाशल्य.
१९	२२	परिग्रहपरिमाणव्रतना.	परिग्रह परिमाणविरमण०
४०	१४	मगप्रमुखनीदालनाप्रकारनुं	चावलतथाधान्यना प्रका०
४०	१४	शाल चावलना प्रकारनुं.	मगप्रमुखनीदालना प्रका०
४५	१८	ते जोगववी ते उपरांत.	ते उपरांत.
४५	२०	न करेमि, न कारवेमि.	न करेमि.
४६	१७	न करेमि न कारवेमि.	न करेमि.
५६	८	विचरी श के.	विचरीश.
५९	२६	जघवंत.	जगवंत.
६४	१२	समाइवत्ता.	खमावइत्ता.
७१	२१	मच्चरकाण.	पच्चरकाण.
८१	१०	पश पच्चरकाण.	दश पच्चरकाण.
८४	४	अतराय.	अंतराय.
८४	१७	हवडां.	हिवडां.
८५	८	बीजसुद्धिकोठसुद्धि.	बीजबुद्धि,कोठबुद्धि.
९०	२०	महाकष्ट.	महाकुष्ट.
९०	२६	आघो.	आतो.
९५	१३	सर्व.	सर्प.
९६	३	कियां.	किहां.
९६	१०	जूख्या ॥	जूख्या.
९६	२२	यह तो.	पहुंतो.
८५	२३	समां.	सह्या.
८९	२५	मर्म.	नर्म.

शुद्धिपत्र.

पानुं.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१०१	१०	मान.	नाम.
१०२	४	ए प्रमाण.	प्रमाण.
१०३	४	मर्यादिक	मर्यादित.
१०३	२३	प्राकार.	प्रकार.
१०४	३	ग्रंथाका.	ग्रंथाकार.
१०४	२	उस्तंग.	उत्तिंग.
१०५	ए	शुंजनावें.	शुंजनावें.
१०६	७	नीरत.	निरंतर.
१०८	७	चारित रतपतधार.	चारित्रतपधार.
११०	१६	इगियार मांसें.	इग्यारमासें.
११०	२१	समकित.	सुमति.
१११	१०	संवछ.	संवछर.
१११	१३	पिंमसंलीनता.	पडिसंलीनता.
११२	१	जंपता.	जपतां.
११२	१ए	आदितिर्थंकरे.	आदि तीर्थंकरें.
११३	१	संयमजित वदायक.	संयमजितवदायक.
११३	२६	जीली.	झेली.
११७	२१	सितांशु.	सीतासुं.
१२०	१२	वारसज ह्वारो	वारस जह्वारो.
१२२	२१	वसुधर.	विशुद्ध विशुद्ध.
१२३	८	सुवर्णनो.	सुवणनो.
१२८	१२	चक्रराज १७ पुरगाइ १८॥	चक्र१७ राजपुर १८ गाइ॥
१३०	३	तेज अनुकर्मे विचारो ॥१८	तीज अनुक्रमें.
१३०	३	१ए	१८
१३०	४	२०	१ए

पानुं.	ओल.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१३०	४	२१	२०
१३०	४	माघशुद्धइग्यारस जह्लारो ॥	मा०इग्यारसजह्लारो ॥२१॥
१३०	२	चैत्र शुद्ध नौमी १७	चैत्रशुद्धनौमी.
१३९	११	सात.	शांति.
१४५	१९	विवहार पन्नत्ति.	विवहापन्नत्ति.
१४५	२५	नेम प्रभुयें.	नेम प्रभुपें.
१४६	२	श्रेणिकराय.	सेनक राय.
१४७	६	वृस्निसुत.	विष्णुसुत.
१४९	२४	नन्याव.	निन्याणुं.
१४९	८	पांचपांचसे.	पचास पचास.
१५०	२०	जाले.	झाले.
१५२	२०	ए सकलाइ.	एसी कलाइ.
१५५	३	प्राभात.	प्रभात.
१५८	१७	निरर्थ.	निरर्थक.
१५८	२०	बरुद.	बिरुद.
१५९	९	पाये.	पायो.
१६०	४	भे० ॥ ७ ॥	झे० ॥ ७ ॥
१६०	२०	गभरामणी.	घबरावणी.
१६०	२१	शांतिसुगुणा वणा ॥ मा० ॥	संतसुगुणाघणा ॥मा०॥सं॥
१६०	२२	बिरुद.	वृद्ध.
१६३	१२	कौलव.	कुविश्व.
१६३	१७	मृगशाला.	मृगढाला.
१६३	१८	कपाल.	कपोल.
१६३	२३	पाण.	पाह्ण.
१६३	२४	साचो.	सोचो.

पानुं.	लैन.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१६६	४	प्पारा.	प्यारा.
१६८	९	सागर.	सागर नागर.
१७१	२२	संतत.	सततंत.
१७२	१२	निर्वेद.	निर्वेद्य.
१७७	१४	फीलो.	फेलो.
१७३	२२	जुहारी.	जहारी.
१७४	२४	चउगतियें.	चउगतिमें.
१७६	११	क्रयाकर.	क्रयकर.
१७७	२	राया.	फराया.
१८१	११	अरजन.	अर्जुन.
१८२	१८	करताता.	करता.
१८४	१	दशशो दशशो.	दश दशशो.
१८४	३	ह्रेरे.	ह्रे.
१८४	८	देखी.	देइ.
१८५	१८	अपराया.	पराया.
१८६	३	पेदलत.	पेदल.
२००	२२	साहेब नखें बिराजोजी.	साहेब नखें बिराजोजी २
२०२	१५	प्रणमोनितनित.	प्रणमो नित प्रणमो नित.
२०३	७	जुहारी.	जहारी.
२०७	५	दया करुं.	दयागरु.
२०७	१०	सुणयाजी.	सुणायाजी.
२०७	२२	समुजाया रे.	समजाया रे.
२०८	१०	जयोजी.	जपोजी.
२०८	१७	श्रीमुनिसुव्रत व्रत.	श्रीमुनिसुव्रत.
२०९	२२	मेरे मेरे.	मेरे.

पानुं.	ओळ.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२१०	११	मसहूर.	महशूर.
२१५	१३	आवे.	जावे.
२१८	१९	अतीव.	अताप.
२१९	२०	खेलैया.	खेवैया.
२२४	८	देयो.	देवो.
२२४	१०	देयो.	देवो.
२२४	१७	ह्यावेगा.	होवेगा.
२२५	१	कह्.	कहे.
२३३	१८	त्रात्रा.	त्राता.
२३३	२०	हगाया.	मिटाया.
२३८	२५	सेरेतं.	सेरेतांइ.
२४३	१३	माल.	मोल.
२४९	१३	उपातवकी.	उपड्वकी.
२४९	२२	सेवा.	खेवा.
२५६	१२	कर तुंबी बन.	कसुंबीवन.
२५८	५	कोसी.	कीसी.
२६२	९	विनाधर्मको.	विनयधर्मको.
२६२	२१	पर्बे.	पद्म.
२६३	६	सफी लगीरी.	सफील गीरी.
२६४	१८	आगे.	अंगे.
२६४	२२	उलटाली.	उलाढाली.
२६५	१	गुरि, बालां.	गुरिबालां.
२६५	४	विडपैजाचा.	विडापैजाचा.
२६५	१३	तुझेही.	तुजही.
२६६	१	आगी वमनी.	आरवी मनी.

पानुं.	ओल.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२६६	१५	वाराहक.	वराहक.
२६ए	१०	गुं० ॥ १० ॥	ग० ॥ १० ॥
२७३	२४	निक्षायें खणी.	निक्षा एषणिक.
२७५	१७	वाणी, आदेरे.	वाणी आदरे ॥
२७ट	१३	वोरावण.	बेरावण.
२ट०	२०	निदीसहु.	निंदीसहू.
२ट१	१७	सुगंधिके.	सुगंधादिकें.
२ट२	२१	वचन केह्णो.	वचन न केह्णो.
२ट४	२६	सुविलास.	खुलास.
२टट	१६	कुविस्त.	कुविश्न.
२ए२	६	पुब्रता.	पूज्यता.
२ए४	२१	दयामांही.	धर्मदयामांहि.
२ए६	२	धरतिअ कनकवारी.	धरति अकन कुंवारी.
३०५	१३	क्रियानें.	क्रियासुं.
३०५	२०	किरियो.	किरिया.
३०५	२४	आरोजी.	आहारोजी.
३०६	१४	रिद्धरिद्ध.	रिद्धसिद्ध.
३०ए	२	लगा.	लागा.
३०ए	४	गुण वालिशजी.	गुणचालिशजी.
३०ए	१०	नर पाइ.	नर नव पाइ.
३०ए	२०	देखावे.	देखावेगा.
३१०	६	हियसूं.	हाथसूं.
३११	१३	खाजा.	खाज.
३१३	ए	ठम्रस्थ.	ठमोठम.
३१४	१	आवेगा.	आवे.

पानुं.	लीन.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३१५	४	दोपद	चोपद.
३१६	१७	जति कुलादिक.	जाति कुलादिक.
३१७	१७	काकिणीके.	कांगुणीके.
३१७	२०	बोडेमती.	बोडे मती.
३१७	२३	मनवाडा.	मनवाड.
३१७	२३	घाट सरम.	घाटसरस.
३१८	१०	पुडादिक.	पुरीदिक.
३१८	१४	अदकी.	अधिकी.
३१८	१७	करोलाइ.	करीजें.
३१८	२१	वायण.	वाहन.
३१८	२२	संखा करोसे वस.	संख्या करो स्ववश.
३१८	२४	संखा.	संख्या.
३१९	२	संखा, त्यागो कुशल.	संख्या, त्यागो कुशील.
४१९	१५	लाकिक पर्व.	लौकिक पर्व.
३२०	१०	द्वितीय ध्यात्मपर्व.	द्वितीयाऽध्यात्म पर्व.
३२६	३	बंधनमाल.	बंदरमाल.
३२६	२०	टाटो.	धाटो.
३२६	२५	घुंट घुंट.	घोंट घोंट.
३२७	४	लोलरूपें लोजी.	लोलरूप इलोजी.
३२८	५	अयोगका.	अपोगका.
३२८	९	लज नयकोडी.	लजन पकोरी.
३२९	१६	अयोगका.	अपोगका.
३२९	२३	तुसी.	तुसी.
३३१	२२	बाधो.	बांधो.
३३१	२३	राधो.	रांधो.

पानुं.	उल.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३३५	५	बंधावो.	बधावो.
३३७	१९	गानेरें.	गजेरे.
३३९	१५	दूधपेंडा.	दूधपेडा.
३३९	१६	ताजी.	ताजा.
३३९	१६	खाजी.	खाजा.
३३९	२३	पेडा.	पेग.
३४१	२२	पुरबो.	मुरबो.
३४३	१५	मंम्फिल.	मंदिल.
३४४	१५	किह्राह्नी.	कह्नीहे.
३४७	२	कूतां.	कूता.
३४७	३	बंध.	बध.
३४७	४	खोडीया.	खोन्निया.
३४८	१६	मोफारीरे.	मफारीरे.
३५२	२३	मागे आगना.	मांगे आज्ञा.
३५३	२६	लेवो.	लेणो.
३६०	७	पह्नोंची.	पोंची.
३६२	१९	श्री.	श्रे.
३७९	२५	उत्पादन.	उत्पातन.